Hindi Aur Malayalam Kriyaom Ka Vyatireki Sanrachanatmak Adhyayan

(A Study Of Contrastive Verbal Structure Of Hindi And Malayalam)

Thesis Submitted to the Cochin University of Science and Technology for the Degree of Doctor of Philosophy

By

SOBHANA KOKKADAN

Professor and
Head of the Department
Dr. P. V. VIJAYAN

Supervising Teacher
Dr. N. RAMAN NAIR

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
KOCHI-682 022

1991

CERTIFICATE

This is to certify that the thesis "HINDI AUR MALAYALA KRIYAOM KA VYATIREKI SANRACHANATMAK ADHYAYAN is a bonafide recor of work carried out by SOBHANA KOKKADAN under my supervision fo Ph.D. and no part of this thesis has hitherto been submitted for degree in any other university

Department of Hindi
Cochin University of
Science & Technology
Kochi 682 022

04.09.1991

Prof. (Dr.) N. Raman Nair
(Supervising Teacher)

DECLARATION

I hereby declare that the thesis entitled "HINDI AUR MALAYALAM KRIYAOM KA VYATIREKI SANRACHANATMAK ADHYAYAN" is a bona fide record of the research work done by me under the supervision of Dr. N.Raman Nair, in the Department of Hindi, Cochin University of Science and Technology and that no part of thereof has been presented for any other degree.

Cochin - 682 022

04.09.1991

SOBHANA KOKKADAN

Dedicated
to
My Parents

" हिन्दी और मलयालम क्रियाओं का

व्यतिरेकी संरचनात्मक अध्ययन "

प्रस्तावना

नियमित रूप से किसी भाषा का अध्ययन करना हो तो उसकी संरचनात्मक विशेषताओं का सम्यक ज्ञान अनिवार्य है । यदि द्वितीय भाषा के रूप में किसी भाषा का अध्ययन करना हो तो मातृभाषा के व्याकरणिक विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करना अधिक उपयोगी होगा ।

यद्यपि स्वतंत्रता प्राप्ति के काफी पहले से ही मलयालम भाषियों द्वारा हिन्दी का अध्ययन हो रहा था तो भी उपर्युक्त दृष्टि से दोनों भाषाओं का जो तुलनात्मक अध्ययन किया गया है वह नगण्य है । जैसे - "हिन्दी और बंगला भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन", -- (डॉ. संतोष जैन), "हिन्दी और मणिपुरी की व्याकरणिक कोटियों का अध्ययन" (तोम्बा सिंह) "आधुनिक हिन्दी तथा तमिल की समान शब्दावली का अध्ययन" (डॉ. सुरेन्द्र कुमार कुलश्रेष्ठ), "आधुनिक तमिल और हिन्दी की व्याकरणिक संरचना का व्यतिरेकी अध्ययन" (डॉ. जे. पार्थ सारथी), "हिन्दी और मराठी की व्याकरणिक कोटियों का अध्ययन" (डॉ. अम्बा-प्रसाद देशमुख) "हिन्दी और मलयालम समान शब्दों का अध्ययन" (डॉ. ईश्वरी) संपूर्ण भाषा की संरचनाओं का अध्ययन या व्याकरण के मुख्य अंगों का याने संज्ञा तथा संज्ञा पद, कारक, क्रिया पद, काल रूप वाक्य रचना आदि का गंभीर अध्ययन नहीं हुआ है ।

इस कमी को दृष्टि में रखकर मैं ने एम. फिल. में हिन्दी मलयालम संज्ञा पदों पर लघु-प्रबन्ध तैयार किया था । पी एच. डी. केलिए अपनी

इच्छा और निर्देशन डॉ. रामन नायर के सुझाव से इसी से संबन्ध विषय क्रियाओं का अध्ययन का कार्य उठा लिया ।

हिन्दी और मलयालम भारतीय भाषाएँ होने पर भी दोनों दो अलग-अलग भाषा परिवारों की भाषाएँ हैं । हिन्दी भारतीय आर्य परिवार की और मलयालम द्रविड़ परिवार की । इसके अतिरिक्त हज़ारों वर्षों के विकास क्रम में उस पर पड़े हुए प्रभाव भी अलग अलग है । स्वाभाविक परिवर्तन के फलस्वरूप विकसित इनके रूपों में काफी अन्तर दृष्टिगत हो तो आश्चर्य की बात नहीं है । इन अंतरों का नियमित विश्लेषणात्मक अध्ययन भाषा शिक्षण में अत्यधिक उपयोगी होगी । इसी दृष्टि से इस शोध ग्रंथ में हिन्दी और मलयालम की क्रिया तथा क्रियापदों की संरचनाओं का व्यतिरेकी अध्ययन किया गया है ।

क्रिया वाक्य का मुख्य या केन्द्रीय अंग है । दोनों भाषाओं की क्रियाओं की रूप-रचना तथा प्रयोग में अनेक अन्तर दृष्टिगोचर होते हैं, जिनमें अच्छा ज्ञान भाषा में दक्षता प्राप्त करने केलिए उपयोगी होगा । मुख्यत: मलयालम भाषियों के लिए हिन्दी पाठ्यक्रम तथा शिक्षा-विधियाँ तैयार करने केलिए इससे सहायता ली जा सकती । उसी तरह हिन्दी भाषियों को मलयालम सीखनी हो तो भी इसका उपयोग किया जा सकता है । याने प्रस्तुत विषय का उद्देश्य अधिक प्रायोगिक है सैद्धांतिक नहीं । इसकेलिए विवरणात्मक (डिस्क्रिप्टिव) पद्धति का उपयोग किया गया है ।

व्यतिरेक शब्द संस्कृत "रिच्" धातु से बना है । रिच्" धातु ' का अर्थ होता है "अलग करना" "रिच्" के पूर्व "वि" (विशेष) तथा

"अति" (अत्यधिक) उपसर्ग और अंत में भाव-वाचक प्रत्यय "घ जोडने से "व्यतिरेक" (वि + अति + रिच् + घ) शब्द बनता है । इसका अर्थ है "विरोध" या असमानता । व्यतिरेक से ही व्यतिरेकी शब्द बना है, जिसका अर्थ है "विरोध" या "असमानता" दिखानेवाला।[1] विभिन्न कोशों में प्रस्तुत शब्द के भिन्नार्थ हुए हैं । जैसे - अभाव, भेद, अतिक्रम (व्यतिरेक), वह जो किसी को अतिक्रमण करके जाता हो (व्यतिरेकी)[2], वगेशन (negation)[3] "व्यतिरेक"(an interception (व्यतिरेकी)[4] अंतर (व्यतिरेक), अंतर दिखानेवाला (व्यतिरेकी), भेद, अंतर (व्यतिरेक), भिन्न, आगे बढ़ जानेवाला (व्यतिरेकी)[5] आदि । प्रस्तुत अध्ययन में दोनों भाषाओं की तुलना करके समानताओं और विरोधों या अंतर को अलगाया गया है । प्रस्तुत अध्ययन इस शब्दार्थ के मुख्य अंशों पर ध्यान रखता है । इसमें मलयालम तथा हिन्दी क्रियाओं की प्रयोगात्मक समानताओं एवं अंतर को दिखाने के साथ साथ इन दोनों भाषाओं के प्रयोगात्मक तत्वों पर अब तक प्राप्त सामग्री के आधार पर नयी दिशा दर्शायी भी गई है । इस कारण यहाँ मौलिक चिंतन को अवसर प्राप्त हुआ है ।

---

1. भोलानाथ तिवारी- व्यतिरेकी भाषा विज्ञान - पृ. 11
2. नागरी प्रचारिणी सभा, शब्द सागर- पृ. 1154
3. Bhargava's Standard illustrated Dictionary of Hindi Language - पृ 1010.
4. जी. पद्मनाभ पिळ्ळै - शब्दतारावली, पृ. 1328
5. वामन शिवराम आप्टे - संस्कृत हिन्दी कोश - पृ. 984

यह शोध प्रबन्ध छः अध्यायों में विभक्त है । प्रथम अध्याय है "हिन्दी और मलयालम भाषा का सामान्य परिचय" । इसमें हिन्दी और मलयालम के क्रिया रूपों का जो ऐतिहासिक परिचय दिया गया है, वह पूर्ण ऐतिहासिक व्याकरण नहीं है । उसमें केवल उन्हीं तत्वों का अध्ययन हुआ है, जो प्रायोगिक दृष्टि से उपयोगी है, और प्रस्तुत व्यतिरेकी अध्ययन के सन्दर्भ में प्रासंगिक हो ।

द्वितीय अध्याय में हिन्दी और मलयालम क्रियाओं की आंतरिक संरचना प्रस्तुत है । दोनों भाषाओं में मूल क्रिया, व्युत्पन्न क्रिया और संयुक्त क्रियायें हैं । दोनों में प्रत्यय जोड़कर सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रियायें बनायी जाती है । इसके अलावा दूसरी प्रक्रिया है जिसमें संज्ञा, विशेषण, और अन्य क्रियाओं के साथ भी प्रत्यय जोडकर क्रियायें व्युत्पन्न कर सकते हैं । ऐसी क्रियाओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन इसमें हुआ है ।

तीसरा अध्याय है, हिन्दी और मलयालम की क्रियाओं के भेद । दोनों भाषाओं में मुख्य क्रियाओं के साथ सकर्मक, अकर्मक और प्रेरणार्थक क्रियाओं का प्रयोग होता है । इसके अलावा ऐसी अनेक सहायक क्रियायें हैं जो काल, रीति और प्रकार्थक को सूचित करती हैं । यद्यपि स्पष्ट रूप से दोनों भाषाओं में काफी समानताएँ हैं , तो भी रूपरचनात्मक भिन्नताएँ भी अधिक हैं ।

चौथे अध्याय में हिन्दी और मलयालम क्रियाओं के रूपान्तर का विस्तृत विश्लेषण किया है । काल, अर्थ, रीति के अनुसार क्रिया रूपों में

अनेक प्रकार का अंतर दिखाई पडता है । मलयालम और हिन्दी में कर्तृ वाच्य , कर्म वाच्य के प्रयोग में समानता है, लेकिन यह उल्लेखनीय है कि हिन्दी में भाव वाच्य का प्रयोग है , जो सामान्यतया अकर्मक क्रियाओं का होता है, इसका मलयालम में पूर्णतया अभाव है । इन सभी बातों का विवेचन यहाँ किया गया है ।

पंचम अध्याय "कृदन्त" पर आधारित है । दोनों भाषाओं में कृदन्तों का प्रयोग होता है । मलयालम में पेरेच्चं अथवा विशेषण, कृदन्तों के रूप अनेक हैं और इसका प्रयोग भी व्यापक है । दोनों भाषाओं के कृदन्तों के प्रयोगों में उनकी अपनी अपनी विशेषताएँ हैं । रूप रचना, अर्थ व्याप्ति, अन्वय, वाक्य रचना आदि में अनेक अंतर दृष्टिगत हैं - उनके भिन्न अर्थों और प्रयोगों में इस पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है ।

छठे अध्याय में दोनों भाषाओं का अन्वय पर विवेचन किया गया है । हिन्दी क्रियाओं की एक विस्तृत अन्वय पद्धति है । भिन्न-भिन्न स्थितियों में इसका अन्वय, कभी कर्ता, कर्म, लिंग, वचन, पुरुष आदि के साथ होता है कभी किसी के साथ नहीं होता । मलयालम में ऐसी समस्यायें नहीं हैं ।

संपूर्ण शोध प्रबन्ध प्रायोगिकता को दृष्टि में रखकर तैयार किया गया है । अतः भाषा विज्ञान के नवीन सिद्धांतों व आधार विश्लेषण करने का, और जटिल विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है । वर्तमान परिस्थिति में यही अधिक उचित लगता है । आशा है कि इस रूप में

ग्रंथ हिन्दी के शिक्षण में उपयोगी सिद्ध होगा ।

प्रस्तुत शोध-कार्य की तैयारी कोच्चिन वैज्ञानिक व प्रौद्योगिकी-विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. एन. रागन् नायर जी के निदेशन से हुआ है । उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ जिन्होंने मुझे मार्ग दर्शन, प्रोत्साहन करके प्रस्तुत शोध कार्य को सफल बनाने में सहायता प्रदान की । इस विभाग के प्रोफेसर डा. एल. सुनीता बाई के प्रति मैं आभारी हूँ, जिनकी प्रेरणा से निश्चित कालावधि के अन्दर इस शोध कार्य को संपन्न करने में मुझे सहायता मिली है । हिन्दी विभाग के अध्यक्ष माननीय डॉ. विजयन जी के प्रति मैं सर्वाधिक कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस कार्य को पूरा करने में प्रेरणा दी है । साथ ही मद्रास विश्वविद्यालय के भूतपूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. एस. एन्. गणेशन जी ने इस शोध कार्य में कई निर्देश देकर तथा पुस्तकें प्रदान कर सहायता की है, उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ ।

प्रस्तुत शोध के सामग्री संकलन में कोच्चिन विश्वविद्यालय, मद्रास-विश्वविद्यालय, कन्निमरा पब्लिक लाइब्रेरी, केरल विश्वविद्यालय का ग्रंथालय आदि से विशेष सहायताएँ प्राप्त हुई हैं । उन ग्रन्थालयों के अधिकारियों से मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ ।

हिन्दी और मलयालम की संरचनाओं के कुछ प्रमुख अंशों की यह अध्ययन, दोनों भाषाओं को एक दूसरे के निकट ला सके और एक भाषा बोलनेवालों को दूसरी भाषा सीखने में सहायक हो, तथा विद्वज्जनों को रुचे तो मैं अपने को चरितार्थ मानूँगी ।

हिन्दी और मलयालम क्रियाओं का व्यतिरेकी संरचनात्मक अध्ययन

विषयानुक्रम

पहला अध्याय । हिन्दी और मलयालम भाषा का सामान्य परिचय 1

1. 1.	हिन्दी भाषा का सामान्य परिचय	1
1. 1. 1.	भारतीय आर्य भाषाएँ	2
1. 1. 1. 1.	प्राचीन भारतीय आर्य भाषा	3
1. 1. 1. 1. 1.	संस्कृत की रचनात्मक एवं भाषागत विशेषतायें	5
1. 1. 1. 1. 2.	शब्द भण्डार	6
1. 1. 1. 1. 3.	शब्द रूप	7
1. 1. 1. 2.	मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा	9
1. 1. 1. 2. 1.	प्रथम उत्थान-पालि	10
1. 1. 1. 2. 1. 1.	संरचनात्मक विशेषताएँ	11
1. 1. 1. 2. 1. 1. 1.	शब्द रूप	11
1. 1. 1. 2. 1. 1. 2.	शब्द भण्डार	11
1. 1. 1. 2. 2.	द्वितीय उत्थान- प्राकृत	13
1. 1. 1. 2. 2. 1.	संरचनात्मक विशेषताएँ	13
1. 1. 1. 2. 2. 1. 1.	शब्द रूप	13
1. 1. 1. 2. 2. 1. 2.	शब्द भण्डार	14
1. 1. 1. 2. 3.	अपभ्रंश	16
1. 1. 1. 2. 3. 1.	शब्द रूप	17
1. 1. 1. 2. 3. 2.	शब्द भण्डार	18
1. 1. 1. 3.	आधुनिक भारतीय आर्य भाषा	18
1. 1. 1. 3. 1.	प्राचीन काल	19

1.1.1.3.2.	मध्यकाल	21
1.1.1.3.3.	आधुनिक काल	22
1.1.1.3.3.1.	हिन्दी की संरचनात्मक विशेषताएँ	23
1.1.1.3.3.1.1.	लिंग	23
1.1.1.3.3.1.2.	वचन	24
1.1.1.3.3.1.3.	कारक	24
1.1.1.3.3.1.4.	क्रिया रूप	25
1.1.1.3.3.1.5.	सर्वनाम	26
1.2.	मलयालम भाषा का सामान्य परिचय	26
1.2.1.	तमिल प्रभाव काल	28
1.2.1.1.	मलयालम का तमिल से स्वतंत्र विकास	29
1.2.2.	मणिप्रवाल काल	32
1.2.2.1.	रूप	34
1.2.2.1.1.	संस्कृत क्रिया रूप	34
1.2.2.1.2.	द्रविड़ क्रिया रूप	34
1.2.3.	आधुनिक काल	36
1.2.3.1.	प्रथम उत्थान	36
1.2.3.2.	द्वितीय उत्थान	38
1.2.3.2.1.	मलयालम का शब्द समूह और क्रिया	40
1.2.3.2.1.1.	मलयालम क्रियायें	41
1.2.3.2.1.2.	संस्कृत क्रियायें	42
दूसरा अध्याय	4. हिन्दी और मलयालम क्रियाओं की आंतरिक संरचना	46
2.1.	क्रिया स्वरूप	46
2.1.1.	क्रिया की परिभाषा	46

2.1.1.1.	धातु	47
2.1.1.1.1.	धातु के भेद	48
2.1.1.1.1.1.	मूल धातु	48
2.1.1.1.1.2.	यौगिक धातु	48
2.1.1.1.1.2.1.	यौगिक धातु के प्रकार	49
2.1.1.1.1.2.1.1.	सकर्मक तथा प्रेरणार्थक	49
2.1.1.1.1.2.1.2.	नाम धातु	49
2.1.1.1.1.2.1.3.	संयुक्त धातु	50
2.1.2.	हिन्दी क्रियाओं की आंतरि संरचना	50
2.1.2.1.	आंतरिक संरचना	50
2.1.2.2.	बाह्य संरचना	51
2.1.2.3.	यौगिक धातुओं की संरचना	51
2.1.2.3.1.	"आ" प्रत्यय युक्त	51
2.1.2.3.1.1.	संज्ञा मूलक (संज्ञा + आ)	51
2.1.2.3.1.1.1.	आ > अ	52
2.1.2.3.1.1.2	ई > इ	52
2.1.2.3.1.1.3.	ओ > उ	52
2.1.2.3.1.2.	विशेषण मूलक यौगिक धातुओं की संरचना	52
2.1.2.3.1.2.1.	विशेषण + आ	52
2.1.2.3.1.2.1.1.	आ > अ	53
2.1.2.3.1.2.1.2.	आ > ∅	53
2.1.2.3.1.3.	अनुकरणात्मक धातुओं की संरचना	53
2.1.2.3.1.3.1.	धातु + आ	53
2.1.2.3.1.4.	क्रिया विशेषण मूलक धातुओं की संरचना	54
2.1.2.3.1.4.1.	क्रियाविशेषण शब्द + आ	54
2.1.2.3.2.	"इया" प्रत्यय युक्त	54

2. 1. 2. 3. 2. 1.	संज्ञा + इया	54
2. 1. 2. 3. 2. 2.	विशेषण + इया	54
2. 1. 2. 3. 3.	"ना" प्रत्यय युक्त	54
2. 1. 2. 3. 4.	शून्य प्रत्यय युक्त	55
2. 1. 2. 3. 4. 1.	संज्ञा + Ø	55
2. 1. 2. 3. 4. 1. 1.	अकर्मक	55
2. 1. 2. 3. 4. 1. 2.	सकर्मक	55
2. 1. 2. 4.	प्रेरणार्थक	56
2. 1. 2. 4. 1.	प्रथम प्रेरणार्थक	56
2. 1. 2. 4. 1. 1.	"आ" प्रत्यय युक्त	56
2. 1. 2. 4. 1. 1. 1.	अकर्मक से व्युत्पन्न	56
2. 1. 2. 4. 1. 1. 1. 1.	धातु + आ	56
2. 1. 2. 4. 1. 1. 1. 2.	आ > अ	56
2. 1. 2. 4. 1. 1. 1. 3.	ई > इ	56
2. 1. 2. 4. 1. 1. 1. 4.	ऊ > उ	57
2. 1. 2. 4. 1. 1. 1. 5.	ए > ई	57
2. 1. 2. 4. 1. 1. 1. 6.	ओ > उ	57
2. 1. 2. 4. 1. 1. 2.	सकर्मक से व्युत्पन्न	57
2. 1. 2. 4. 1. 1. 2. 1.	धातु + आ	57
2. 1. 2. 4. 1. 1. 2. 1. 1.	आ > अ	57
2. 1. 2. 4. 1. 1. 2. 1. 2.	ई > इ	58
2. 1. 2. 4. 1. 1. 2. 1. 3.	ऊ > उ	58
2. 1. 2. 4. 1. 1. 2. 1. 4.	ए > इ	58
2. 1. 2. 4. 1. 1. 2. 1. 5.	ओ > उ	58
2. 1. 2. 4. 1. 2.	"ला" प्रत्यय युक्त	58
2. 1. 2. 4. 1. 2. 1.	अकर्मक से व्युत्पन्न	58

2, 1, 2, 4. 1. 2. 2.	सकर्मक से व्युत्पन्न	59
2. 1. 2. 4. 1. 3.	'ø' प्रत्यय युक्त	59
2. 1. 2. 4. 1. 3. 1.	अकर्मक	59
2. 1. 2. 4. 1. 3. 2.	सकर्मक	60
2. 1. 2. 4. 2.	द्वितीय प्रेरणार्थक	60
2. 1. 2. 4. 2. 1.	"वा" प्रत्यय युक्त	60
2. 1. 2. 4. 2. 1. 1.	अकर्मक	60
2. 1. 2. 4. 2. 1. 2.	सकर्मक	61
2. 1. 2. 4. 2. 2.	"लवा" प्रत्यय युक्त	62
2. 1. 2. 4. 2. 2. 1.	अकर्मक से व्युत्पन्न	62
2. 1. 2. 4. 2. 2. 2.	सकर्मक से व्युत्पन्न	63
2. 1. 3.	मलयालम क्रियाओं की आंतरिक संरचना	63
2. 1. 3. 1.	मूल धातु	63
2. 1. 3. 1. 1.	अकर्मक	63
2. 1. 3. 1. 2.	सकर्मक	64
2. 1. 3. 2.	व्युत्पन्न धातु (यौगिक)	64
2. 1. 3. 2. 1.	नामधातु	64
2. 1. 3. 2. 1. 1.	प्रत्यय सहित	64
2. 1. 3. 2. 1. 2.	प्रत्यय रहित	65
2. 1. 3. 2. 1. 3.	अनुकरण शब्द से	65
2. 1. 3. 2. 1. 4.	सामासिक	65
2. 1. 3. 2. 2.	सकर्मक तथा प्रेरणार्थक	65
2. 1. 3. 2. 3.	संयुक्त धातु	66
2. 1. 3. 2. 3. 1.	आंतरिक संरचना	67
2. 1. 3. 2. 3. 1. 1.	संज्ञा + प्रत्यय	67
2. 1. 3. 2. 3. 1. 1. 1.	अकारित	67
2. 1. 3. 2. 3. 1. 1. 1. 1.	अ + य्	67

2.1.3.2.3.1.1.1.2. इ + य् 68

2.1.3.2.3.1.1.2. कारित 68

2.1.3.2.3.1.1.2.1. अ [अय्/+ क्क 68

2.1.3.2.3.1.1.2.2. इ + य् + क्क 69

2.1.3.2.3.1.1.2.3. अम् इ + क्क 70

2.1.3.2.3.1.2. अनुकरणात्मक शब्द + प्रत्यय 71

2.1.4. प्रयोजक [प्रेरणार्थक] क्रियायें 71

2.1.4.1. केवल प्रयोजक [प्रथम प्रेरणार्थक] 71

2.1.4.1.1. अकारित 71

[य् + क्क]

2.1.4.1.2. कारित + प्पि 72

2.1.4.1.3. अकारित/कारित + त्तु 73

2.1.4.1.4. द्वित्तीकरण 74

2.1.4.2. द्विगुण प्रयोजक [द्वितीय प्रेरणार्थक] 75

2.1.4.2.1. सकर्मक से 75

2.1.4.2.2. अकर्मक से 76

2.1.5. हिन्दी और मलयालम क्रियाओं की आंतरिक संरचना- साम्य एवं वैषम्य 77

<u>तीसरा अध्याय</u> 3. हिन्दी और मलयालम क्रियाओं के भेद 81

3.1. हिन्दी क्रियाओं के भेद 81

3.1.1. मुख्य क्रिया 81

3.1.1.1. अकर्मक क्रिया 81

3.1.1.2. सकर्मक 82

3.1.1.3. अपूर्ण क्रियाएँ 84

3.1.1.3.1. अपूर्ण अकर्मक क्रिया 84

3. 1. 1. 3. 2.	अपूर्ण सकर्मक क्रिया	84
3. 1. 1. 3. 2. 1.	एक कर्मक	86
3. 1. 1. 3. 2. 2.	द्विकर्मक	86
3. 1. 1. 3. 4.	पूर्ण क्रियाएँ	87
3. 1. 1. 3. 4. 1.	पूर्ण अकर्मक	87
3. 1. 1. 3. 4. 2.	पूर्ण सकर्मक	87
3. 1. 1. 3. 4. 3.	अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में प्रयुक्त क्रियाएँ	88
3. 1. 1. 3. 4. 4.	अकर्मक क्रियाओं से सकर्मक बनाने के नियम	89
3. 1. 1. 3. 5.	प्रेरणार्थक क्रिया	91
3. 1. 1. 3. 5. 1.	प्रथम प्रेरणार्थक	92
3. 1. 1. 3. 5. 2.	द्वितीय प्रेरणार्थक	92
3. 1. 1. 3. 5. 3.	प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाने के नियम	93
3. 2.	मलयालम क्रियाओं के भेद	98
3. 2. 1.	अर्थानुसार क्रिया-भेद	99
3. 2. 1. 1.	अकर्मक क्रिया	100
3. 2. 1. 2.	सकर्मक क्रिया	100
3. 2. 1. 2. 1.	अकर्मक से सकर्मक बनाने के नियम	101
3. 2. 1. 3.	केवल क्रिया और प्रयोजक क्रिया	102
3. 2. 1. 3. 1.	केवल क्रियाएँ	102
3. 2. 1. 3. 1. 1.	कारित	105
3. 2. 1. 3. 1. 2.	अकारित	106
3. 2. 1. 3. 2.	प्रयोजक (प्रेरणार्थक) क्रिया	107
3. 2. 1. 3. 2. 1.	केवल प्रयोजक	108
3. 2. 1. 3. 2. 2.	द्विगुण प्रयोजक	109
3. 2. 1. 4.	मूल कर्मक क्रियाएँ	109
3. 2. 1. 5.	प्रयोजक (प्रेरणार्थक) क्रियाएँ बनाने के नियम	110

3. 2. 1. 6.	हिन्दी और मलयालम क्रिया भेदों के साम्य एवं वैषम्य	112
3. 3.	सहायक क्रियायें	116
3. 3. 1.	हिन्दी सहायक क्रियाएँ	116
3. 3. 1. 1.	काल सूचक सहायक क्रियायें	117
3. 3. 1. 2.	प्रकार सूचक सहायक क्रियाएँ	120
3. 3. 1. 3.	रीति या प्रकर्षार्थिक सहायक क्रियाएँ	121
3. 4.	मलयालम सहायक क्रियाएँ अथवा अनुप्रयोग	125
3. 4. 1.	काल सूचक	126
3. 4. 2.	प्रकार सूचक	128
3. 4. 3.	प्रकर्षार्थक	132
3. 4. 4.	हिन्दी और मलयालम सहायक क्रियाएँ-तुलना	136
3. 5.	क्रिया संयोग	141
3. 5. 1.	हिन्दी और मलयालम क्रिया संयोग-तुलना	143
3. 6.	संकर क्रियाएँ	145
3. 6. 1.	हिन्दी और मलयालम संकट क्रियाओं की तुलना	147
3. 7.	निषेध सूचक क्रिया रूप	150
3. 7. 1.	हिन्दी और मलयालम निषेध रूपों की तुलना	151
3. 8.	निष्कर्ष	155

चौथा अध्याय

4. हिन्दी और मलयालम क्रियाओं के रूपान्तर 157

4. 1.	हिन्दी क्रियाओं के रूपान्तर	157
4. 1. 1.	काल	157
4. 1. 1. 1.	वर्तमान काल	160
4. 1. 1. 1. 1.	सामान्य वर्तमान काल	160
4. 1. 1. 1. 2.	संदिग्ध वर्तमान काल	161
4. 1. 1. 1. 3.	अपूर्ण या तात्कालिक वर्तमान काल	162

4.1.1.1.4.	पूर्ण वर्तमान	163
4.1.1.1.5.	हेतुहेतुमद् वर्तमान	164
4.1.1.1.6.	संभव्य वर्तमान	164
4.1.1.2.	भूत काल	164
4.1.1.2.1.	सामान्य भूत	165
4.1.1.2.2.	आसन्न भूत	166
4.1.1.2.3.	संदिग्ध भूत	169
4.1.1.2.3.1.	प्रत्यय सहित रूप के साथ	169
4.1.1.2.4.	पूर्ण भूत	169
4.1.1.2.5.	अपूर्ण भूत	170
4.1.1.2.6.	हेतुहेतुमद् भूत	171
4.1.1.2.7.	वर्तमान संकेतार्थ	171
4.1.1.2.8.	संभव्य भूत	172
4.1.1.3.	भविष्यत् काल	172
4.1.1.3.1.	सामान्य भविष्यत् अथवा पूर्ण भविष्यत् काल	173
4.1.1.3.2.	संभव्य भविष्यत्	173
4.1.1.3.3.	हेतुहेतुमद् भविष्यत्	174
4.1.1.3.4.	अपूर्ण भविष्यत्	174
4.2.	मलयालम क्रियाओं के रूपान्तर	175
4.2.1.	काल	175
4.2.1.1.	वर्तमान काल	176
4.2.1.2.	भूत काल	176
4.2.1.3.	भविष्यत् काल	184
4.2.1.3.1.	सामान्य भविष्यत्	184

4.2.1.3.2.	अवधारक भविष्यत्	186
4.3.	हिन्दी और मलयालम क्रियाओं के कालों की तुलना	186
4.3.1.	सामान्य काल	187
4.3.1.1.	सामान्य वर्तमान	187
4.3.1.2.	सामान्य भूत	188
4.3.1.3.	सामान्य भविष्यत्	188
4.3.2.	तात्कालिक काल	188
4.3.2.1.	तात्कालिक वर्तमान	188
4.3.2.2.	तात्कालिक भूत	189
4.3.2.3.	तात्कालिक भविष्य	189
4.3.3.	अपूर्ण काल	189
4.3.3.1.	अपूर्ण भूत	189
4.3.3.2.	अपूर्ण संकेतार्थ	190
4.3.4.	पूर्ण काल	190
4.3.4.1.	पूर्ण वर्तमान अथवा आसन्न भूत	190
4.3.4.2.	पूर्ण भूत	190
4.3.4.3.	पूर्ण भविष्यत्	191
4.3.5.	संदिग्ध काल	191
4.3.5.1.	संदिग्ध वर्तमान	191
4.3.5.2.	संदिग्ध भूत	191
4.3.5.3.	संदिग्ध भविष्यत्	191
4.3.5.4.	हेतुहेतुमद् भूत	192
4.3.6.	संभव्य काल	192
4.3.6.1	,, भूत	
4.3.6.2.	संभव्य वर्तमान	192
4.4.	वाच्य-हिन्दी में	193

4.4.1.	कर्तृ वाच्य	194
4.4.2.	कर्म वाच्य	195
4.4.3.	भाव वाच्य	196
4.4.4.	अकर्तृ वाच्य	197
4.5.	मलयालम में वाच्य	198
4.5.1.	कर्तरि प्रयोग	199
4.5.2.	कर्मणि प्रयोग	199
4.5.3.	हिन्दी और मलयालम में कर्तृवाच्य से कर्म वाच्य बनाने के नियमों की तुलना	200
4.6.	प्रयोग-हिन्दी में	203
4.6.1.	कर्तरि प्रयोग	204
4.6.2.	कर्मणि प्रयोग	205
4.6.2.1.	कर्तृवाच्य कर्मणि प्रयोग	205
4.6.2.2.	कर्म वाच्य कर्मणि प्रयोग	206
4.6.3.	भावे प्रयोग	206
4.6.3.1.	कर्तृवाच्य भावे प्रयोग	206
4.6.3.2.	कर्म वाच्य भावे प्रयोग	207
4.6.3.3.	भाव वाच्य भावे प्रयोग	207
4.7.	प्रकार-हिन्दी में	207
4.7.1.	निश्चयार्थक प्रकार	208
4.7.2.	संभावनार्थक	208
4.7.3.	सन्देहार्थक	209
4.7.4.	आज्ञार्थक	209
4.7.5.	संकेतार्थक	209
4.8.	प्रकारम्-मलयालम में	210

4.8.1.	निर्देशक प्रकार	210
4.8.2.	नियोजक प्रकार	210
4.8.3.	विधायक प्रकार	211
4.8.4.	अनुज्ञायक प्रकार	211
4.8.5.	हिन्दी और मलयालम प्रकारों (अर्थों) की तुलना	212

पंचम अध्याय

5.	कृदन्त	215
5.1.	हिन्दी कृदन्त	215
5.1.1.	परिभाषा	215
5.1.2.	रूपान्तर के अनुसार कृदन्त के प्रकार	217
5.1.2.1.	विकारी	217
5.1.2.1.1.	क्रियार्थक	217
5.1.2.1.1.1.	क्रियार्थक संज्ञा की विशेषतायें	218
5.1.2.1.2.	वर्तमानकालिक कृदंत	219
5.1.2.1.2.1.	वर्तमानकालिक कृदन्त की प्रयोग-विशेषतायें	219
5.1.2.1.2.1.1.	विशेषण के रूप में विशेषतायें	219
5.1.2.1.2.1.2.	संज्ञा के रूप में प्रयोग	219
5.1.2.1.2.1.3.	क्रिया के रूप में विशेषतायें	220
5.1.2.1.3.	भूतकालिक कृदन्त	221
5.1.2.1.3.1.	भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग- विशेषतायें	221
5.1.2.1.3.1.1.	विशेषण के रूप में विशेषतायें	222
5.1.2.1.3.1.2.	संज्ञा के रूप में विशेषतायें	223
5.1.2.1.3.1.3.	क्रिया के रूप में विशेषतायें	223
5.1.2.1.4.	कर्तृ वाचक संज्ञा	224
5.1.2.1.4.1.	कर्तृवाचक कृदन्त की विशेषतायें	225

5.1.2.1.4.1.1.	संज्ञा के रूप में विशेषतायें	225
5.1.2.1.4.1.2.	विशेषण के रूप में विशेषतायें	225
5.1.2.1.4.1.3.	क्रिया के रूप में विशेषतायें	226
5.1.2.2.	अविकारी कृदन्त	227
5.1.2.2.1.	अपूर्ण क्रिया द्योतक	227
5.1.2.2.1.1.	विशेषतायें	228
5.1.2.2.2.	पूर्ण क्रिया द्योतक	229
5.1.2.2.3.	विशेषतायें	230
5.1.2.2.3.	तात्कालिक कृदंत	231
5.1.2.2.4.	पूर्वकालिक कृदन्त	231
5.1.2.2.2.4.1.	विशेषतायें	232
5.2.	मलयालम में कृदन्त	234
5.2.1.	अपूर्ण क्रिया §परेच्विना §	236
5.2.1.1.	संज्ञा विशेषण §पेरेच्चं§ कृदन्त	236
5.2.1.1.1.	वर्तमानकालिक कृदन्त	236
5.2.1.1.2.	भूतकालिक कृदन्त	237
5.2.1.1.3.	संभाव्य सूचक कृदन्त	238
5.2.1.1.4.	कर्तव्य बोधक	238
5.2.1.2.	क्रिया विशेषण कृदन्त §विनयेच्चं§	241
5.2.1.2.1.	मुन् विनयेच्चं §पूर्वकालिक कृदन्त§	241
5.2.1.2.2.	पिन् विनयेच्चं §ध्येयार्थक या संकेतार्थक कृदन्त§	244
5.2.1.2.3.	तन् विनयेच्चं §तात्कालिक कृदंत§	246
5.2.1.2.4.	नट्टु विनयेच्चं §क्रियार्थक संज्ञा§	247
5.2.1.2.5.	पाक्षिक विनयेच्चं §हेत्वर्थक कृदन्त§	249

5.3.	हिन्दी और मलयालम कृदन्तों की तुलना	251
5.3.1.	रूप रचना और विकार की तुलना	251
5.3.2.	रूप रचना की भिन्नता	253
5.3.3.	अर्थ की तुलना	255
5.3.3.1.	हिन्दी कृदन्तों के मलयालम अर्थ	255
5.3.3.2.	मलयालम कृदन्तों के हिन्दी अर्थ	256
5.3.4.	अन्वय की तुलना	257
5.3.4.1.	वर्तमान कालिक कृदन्त	258
5.3.4.2.	भूतकालिक कृदन्त	258
5.3.4.2.1.	कर्ता के साथ अन्वय	258
5.3.4.2.2.	कर्म के साथ अन्वय	259
5.3.4.3.	कर्तृवाचक संज्ञा	259
5.3.4.4.	अपूर्ण क्रिया द्योतक	260
5.3.4.5.	पूर्ण क्रिया द्योतक	260
5.3.4.6.	तात्कालिक कृदन्त	260
5.3.4.7.	पूर्व कालिक कृदन्त	260
5.3.5.	वाक्य रचना की भिन्नता	

छठा अध्याय

6. हिन्दी और मलयालम क्रियाओं का अन्वय — 266

6.1.	हिन्दी और मलयालम क्रियाओं का अन्वय	266
6.1.1.	विविध कालों के अन्वय	266
6.1.1.1	विधि रूप	266
6.1.1.1.1.	हिन्दी	266
6.1.1.1.2.	मलयालम	267

6.1.1.2.	संभव्य भविष्यत्	267
6.1.1.2.1.	हिन्दी	267
6.1.1.2.2.	मलयालम	268
6.1.1.3.	वर्तमान कालिक कृदन्त	268
6.1.1.3.1.	मूल क्रिया	268
5.1.1.3.1.1.	हिन्दी	268
6.1.1.3.1.2.	मलयालम	269
6.1.1.3.2.	मूल क्रिया + सहायक क्रिया	269
6.1.1.3.2.1.	पुरुष, लिंग, वचनान्वय	270
6.1.1.4.	भूतकालिक कृदन्त	271
6.1.1.4.1.	केवल मूल क्रिया	271
6.1.1.4.2.	मूलक्रिया + सहायक क्रियायें	271
6.1.2.	अन्वय से संबन्धित शब्द और परिस्थितियाँ	276
6.1.2.1.	कर्ता के साथ क्रिया का अन्वय	276
6.1.2.1.1.	वर्तमान काल	276
6.1.2.1.1.1.	सामान्य वर्तमान	276
6.1.2.1.1.2.	संदिग्ध वर्तमान	277
6.1.2.1.1.3.	तात्कालिक वर्तमान	277
6.1.2.1.2.	भूतकाल	278
6.1.2.1.2.1.	सामान्य भूत	278
6.1.2.1.2.2.	आसन्न भूत	278
6.1.2.1.2.3.	पूर्ण भूत	279

6. 1. 2. 1. 2. 4.	अपूर्ण भूत	279
6. 1. 2. 1. 2. 5.	संदिग्ध भूत	280
6. 1. 2. 1. 2. 6.	हेतुहेतुमद् भूत	280
6. 1. 2. 1. 2. 7.	पूर्ण संकेतार्थ	281
6. 1. 2. 1. 3.	भविष्यत् काल	281
6. 1. 2. 1. 3. 1.	सामान्य भविष्यत्	281
6. 1. 2. 1. 3. 2.	संभव्य भविष्यत्	282
6. 1. 2. 1. 4.	सकर्मक क्रियाओं के वर्तमान कालिक कृदन्त अथवा धातु	28
6. 1. 2. 3.	कर्म के साथ क्रिया का अन्वय	285
6. 1. 3.	अन्वय रहित प्रयोग	287
6. 1. 3. 1.	"को" प्रत्यय सहित	287
6. 1. 3. 2.	लुप्त कर्मक	287
6. 1. 3. 3.	"को" प्रत्यय रहित	289
6. 1. 3. 4.	कर्म "को" प्रत्यय सहित	289
6. 1. 3. 5.	लुप्तक कर्मक	289
6. 1. 4.	हिन्दी की संयुक्त क्रियाओं के साथ	289
6. 1. 4. 1.	अकर्मक	290
6. 1. 4. 2.	सकर्मक	290

पहला अध्याय

हिन्दी और मलयालम भाषा का

सामान्य परिचय

पहला अध्याय

हिन्दी और मलयालम भाषा का

सामान्य परिचय

1.1. हिन्दी भाषा का सामान्य परिचय :-

संसार में जो भाषाएँ बोली जाती हैं उनकी कोई निश्चित संख्या ज्ञात नहीं है। भाषाओं का वर्गीकरण और विवेचन भी काफी कठिन है। किंतु प्राप्त सूचनाओं के आधार पर विद्वानों ने भाषाओं को भिन्न-भिन्न परिवारों में बाँट दिया है। उनके अनुसार मुख्य कुल ये हैं --
1. भारोपीय 2. सेमिटिक 3. हेमेटिक 4. तिब्बती चीन्
5. यूराल अलटाइक 6. द्रविड़ 7. मैलेपालीनेशियन 8. बाँटू
9. मध्य आफ्रीकी 10. अमरीकी 11. आस्ट्रेलियायी प्रशान्तमहासागरीय और 12. शेष। [1]

इन सभी परिवारों में भारोपीय कुल की भाषाएँ अधिक समृद्ध, उन्नत एवं महत्वपूर्ण हैं। इस कुल की भाषाएँ संपूर्ण यूरोप, ईरान, अफगानिस्तान तथा उत्तर भारत में फैली हुई हैं। संस्कृत, ईरानी, ग्रीक और लैटिन इस शाखा की मुख्य प्राचीन भाषाएँ हैं और अंग्रेज़ी तथा हिन्दी इसकी दो प्रधान आधुनिक भाषाएँ हैं।

भारोपीय भाषा का प्राचीनतम नमूना एशियामाइनर के बोगोज़कोय मृत्तिका - लेखों में प्राप्त हुआ है, जिसका आविष्कार और अध्ययन ह्यूगो विन्कल {Hugo Winkel} ने इस शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में किया था।

---

1. धीरेन्द्रवर्मा - हिन्दी भाषा का इतिहास - 1958- पृ. 35

इसे हित्ती (Hittite) नाम दिया गया है । मूल भारोपीय भाषा इससे भी प्राचीन रही होगी ।[1]

जिस मूल भाषा से भारोपीय परिवार की विविध भाषाओं का विकास हुआ है , उसके नमूने आज उपलब्ध नहीं हैं । फिर भी इस परिवार की प्राचीन भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् विद्वानों ने उस मूल भाषा को पुनर्निर्मित किया है । इस निर्माण के आधार पर कहा जा सकता है कि अनुमानतः 2700-2900 वर्ष ईसा पूर्व, उस मूल भाषा से इस परिवार की प्राचीन भाषाओं की उत्पत्ति हुई होगी और समय की प्रगति के साथ ये भाषाएँ यूरप और एशिया के विभिन्न देशों में फैली होंगी ।[2] इसकी अनेक शाखाओं में एक प्रमुख शाखा है भारतीय आर्य भाषा ।

1. 1. 1. भारतीय आर्य भाषाएँ :-

आर्यों के भारत में प्रविष्ट होने के पश्चात् उनके द्वारा भारत में व्यवहृत भाषाओं को भारतीय आर्य भाषाएँ माना जाता है । हिन्दी भारतीय आर्य भाषा परिवार की एक प्रमुख भाषा है, जिसका संबन्ध भारोपीय कुल से है । सिंधी, लहंदा, पहाड़ी, पंजाबी, बिहारी, उड़िया बंगाली, असमी, राजस्थानी आदि भी इसके अंतर्गत आती है ।

आर्यों का आगमन काल और मूल स्थान आदि विवादास्पद हैं । माना जाता है कि आर्य भारत में कई दलों में आये । भाषा वैज्ञानिक

---

1. Hugo Winkel - Greek and Latin
2. उदयनारायण तिवारी- हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास-1961-पृ. 7

प्रमाणों के आधार पर भोलानाथ तिवारी आदि का कहना है कि कम से कम दो बार तो आर्य अवश्य आये । [1] प्राय: यह माना जाता है कि 1500 ई. पू. के लगभग आर्य आ चुके थे । याने भारतीय आर्य भाषा का इतिहास 2500 ई.पू. से लेकर 20 वीं सदी तक व्याप्त है । इन साढ़े चार हज़ार वर्षों में भाषा का क्रमिक विकास और उसके रूप में परिवर्तन होते रहे हैं । शाखाओं और उपशाखाओं में विभाजित होकर उनसे अनेक भाषाओं का विकास भी हुआ है । अत: भारतीय आर्य भाषाओं के विकास को तीन कालों में विभक्त किया जा सकता है ---

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा
2. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा
3. आधुनिक भारतीय आर्य भाषा

1.1.1.1. प्राचीन आर्य भाषा :-

भारत में आर्य भाषा का आरंभ 2500 ई. के पूर्व माना जाता है । इसके दो प्राचीन रूप मिलते हैं -- वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत । वैदिक संस्कृत का प्राचीनतम रूप ऋग्वेद में मिलता है । ऋग्वेद का रचनाकाल ईसा के एक सहस्र वर्ष से भी अधिक पहले माना जाता है । [3] ऋग्वेद की भाषा में एकरूपता नहीं है जिससे अनुमान किया जा सकता है कि ऋग्वेद की ऋचाओं की रचना भिन्न-भिन्न प्रदेशों में और भिन्न भिन्न कालों में हुई है और बाद में ई.पू. 1500 के पहले इसका संकलन किया गया है ।

---

1. भोलानाथ तिवारी- हिन्दी भाषा - पृ. 50
2. --वही-- (द्वि. सं.) -पृ. 41
3. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा का इतिहास-1983, पृ. 7

वैदिक भाषाओं में समानता लाने का प्रयत्न धीरे-धीरे होता रहा । फलत: एक ओर लौकिक एवं साहित्यिक भाषा में और दूसरी ओर जन सामान्य की भाषा में परिवर्तन आता रहा । साहित्यिक भाषा का परिवर्तन ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक और उपनिषदों में क्रमिक रूप से लक्षित होता है । लगभग ईसापूर्व छठी शताब्दी में पाणिनि ने अष्टाध्यायी नामक व्याकरण ग्रंथ की रचना करके साहित्यिक संस्कृत का परिनिष्ठित रूप स्थिर किया । प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का वह रूप जिसका विवेचन पाणिनी ने किया है वह साहित्यिक संस्कृत या संस्कृत कहलाता है । देव-भाषा भी इसी को कहते हैं । परिनिष्ठित रूप प्राप्त संस्कृत भाषा विविध विषयों में महत्त्वपूर्ण ग्रंथों से समृद्ध होकर आज तक बनी रहती है । माक्समूलर के अनुसार पाणिनि के पश्चात् संपूर्ण साहित्य की भाषा उसके द्वारा निर्मित नियमों के अनुसार शासित है । [1]

इस तरह परिनिष्ठित होने पर उस भाषा का विकास अवरुद्ध हो गया । केवल विशिष्ट वर्ग के विद्वानों, पण्डितों आदि के व्यवहार में ही इस भाषा का प्रयोग होता रहा । हार्नलि तथा ग्रियर्सन आदि कतिपय पाश्चात्य विद्वान उसे जन-भाषा से सर्वथा भिन्न एक कृत्रिम भाषा मानते हैं । किंतु अष्टाध्यायी तथा अन्य कृतियों के आधार पर अनेक भारतीय विद्वानों ने इसे तत्कालीन जन-प्रचलित भाषा सिद्ध किया है ।

एक व्याकरणिक के अनुसार - अष्टाध्यायी संस्कृत के एकमात्र ऐसा

- -

1. माक्समूलर - भाषा विज्ञान: अनुवादक - उदयनारायण तिवारी, मोतीलाल बनारसीदास-1970, पृ. 14

व्याकरण है जिसमें वैदिक और लौकिक संस्कृत दोनों की व्याकृति एक साथ की गयी है । लौकिक संस्कृत में भी भारत के विभिन्न भागों में जो प्रयोग-भेद प्रचलित थे, उनका भी निर्देश है । [1]

1.1.1.1.1. संस्कृत की रचना परक एवं भाषागत विशेषतायें :-

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा की धातु प्रक्रिया और रूप-विधान में दुरूहता पाई जाती है । वैदिक भाषा में रूप रचना अत्यंत जटिल थी और रूप बहुत अधिक थे , अपवादों की भरमार थी, लौकिक संस्कृत में आकर रूप कुछ कम हो गये और अपवाद भी बहुत कम हो गये । उदाहरण केलिए वैदिक श्रुधि, श्रुणुहि, श्रुणुधि के स्थान पर केवल श्रमः, ईष्टयं, ईष्टे, ईशे, ईशते, इन चार एकार्थी वैदिक रूपों के स्थान पर केवल ईष्टे रूप प्रयोग में आये । [2] वैदिक भाषा के स्वराघात संस्कृत में आकर लुप्त हो गये कई शब्द रूपों का व्यवहार भी वहीं तक सीमित रह गया, उनका प्रयोग संस्कृत में न हो सका । वैदिक भाषा में प्रचलित ऐसे बहुत से शब्द हैं जिनके स्थान पर संस्कृत में केवल एक ही शब्द गृहीत हुआ है । [3]

वाक्य में शब्द का स्थान निश्चित नहीं था । शब्द प्रायः कहीं भी आ सकते थे । [4] वैदिक संस्कृत में तो यह भी आवश्यक नहीं है कि उपसर्ग और क्रिया एक ही स्थान पर हो । लौकिक संस्कृत में उनका प्रयोग

---

1. अनन्त चौधरी - हिन्दी व्याकरण का इतिहास- 1972, पृ. 46
2. जयकुमार जलज- ऐतिहासिक भाषा विज्ञान: सिद्धांत और व्यवहार- 1982, पृ. 243
3. बालमुकुन्द - हिन्दी क्रिया स्वरूप और विश्लेषण-1970, पृ. 48

क्रिया के ठीक पूर्व मिलता है ।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा में शब्दों के दो भेद मिलते हैं -- स्वरांत और व्यंजनांत । इसमें तीन लिंग, तीन वचन तथा आठ कारक हैं । लिंग निर्णय अर्थाश्रित और व्याकरणिक दो स्तरों पर होता है -- लेकिन अर्थ की दृष्टि से लिंग पद्धति कुछ अव्यवस्थित है ।

1.1.1.2. शब्द भण्डार :-

प्राचीन युग में भारतीय आर्य भाषा, आर्येतर भाषा-भाषियों के संपर्क से उसके शब्द भण्डार से भी प्रभावित होकर ज़रूरत के अनुसार शब्द लेती रही । द्रविड़ तथा आस्ट्रिक भाषाओं से अनेकानेक शब्द ग्रहण किये गये । उदा- पिनाक , ताम्बूल, कपोल, कोसल, कदम्ब आदि शब्द आस्ट्रिक से और अनल, चन्दन, कुवलय, मयूर, अणु, नीर, मीन आदि द्रविड़ भाषाओं से संस्कृत में आये हैं । प्राचीन भाषा शब्द भण्डार की दृष्टि से समृद्ध थी तथा उसमें नवीन शब्दों के निर्माण की असीम शक्ति थी ।[1] अनेक वैदिक शब्द लौकिक संस्कृत में लुप्त भी हो गये । जैसे :- दृशीक, दर्शत, अमीवा, तृप आदि । जिनका अर्थ क्रमशः सुन्दर रमणीय, रोग और घी था ।[2] कुछ वैदिक शब्दों के अर्थ परिवर्तित हो गये ।[3]

---

1. कानता प्रसाद गुरु - शती स्मृति ग्रंथ - पृ...
2. बाबूराम सक्सेना , सामान्य भाषा विज्ञान , पृ. 353
3. --वही-- पृ. 354

शब्द	वैदिक अर्थ	लौकिक अर्थ
वध	कोई भयंकर शस्त्र	मार डालना
न	इव	नहीं
अरि	ईश्वर, निवास स्थान	शत्रु
क्षिति	गृह, मनुष्य	पृथ्वी
मृडीक	अनुग्रह	शिव का नाम

1.1.3. शब्द रूप :-

ंज्ञा :-

वैदिक संस्कृत जिन संज्ञाओं से सुसज्जित है वे अधिकांशतः भारतीय-रानी है और उनकी रचना उन्हीं सिद्धांतों और अधिकांश में उन्हीं अंशों ा हुई है जिनसे ईरानी और भारोपीय संज्ञाओं की रचना हुई है । संज्ञा ामान्य हो सकती है या संयुक्त । उसकी रचना प्रायः भारतीय ईरानी ाल और उससे भी पहले से चली आ रही है । वास्तव में, वैदिक संस्कृत भारोपीय शब्दों की रचना के सभी रूप सुरक्षित और विकसित हुए हैं ।

क्रिया :-

आत्मनेपद और परस्मैपद का प्रयोग - जब क्रिया का कर्ता स्वयं कर्म फल का भोक्ता होता है, तो आत्मनेपद का प्रयोग होता है और इसके भाव में परस्मैपद का । उदा- घटं करोति "घटा बनाता है" का प्रयोग कुम्हार घटे को बनाता है" दूसरे के बनाने के अर्थ में है, परंतु "घटं कुरुते" ा प्रयोग उस व्यक्ति के लिए होगा जो घडा स्वयं अपने लिए बनाता है ।

- -

आत्मनेपद का प्रयोग उन अवस्थाओं में भी देखा जाता है जबकि क्रिया का मुख्य कर्म स्वयं के शरीर का एक अंग बन जाता है, जैसे - नखानि निकृन्तते । वह अपने नाखून काटता है, "दतो धावते"- वह अपने दाँतें साफ करता है । धातुओं के दूसरे वर्ग सकर्मक {परस्मैपद} और अकर्मक {आत्मनेपद} में अन्तर देखा जाता है । जैसे --बर्धति - बढ़ाता है , अधिक बडा बनाता है, बधति - बढ़ता है - {अकर्मक} - बडा बनता है, यह कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के अंतर को स्पष्ट करता है , कर्मवाच्य के अर्थ को अभिव्यक्त करने के हेतु भूत और भविष्यत्काल में आत्मनेपद का प्रयोग दिखलाई पड़ता है । इतना होते हुए भी सभी धातुओं के दोनों पदों में रूप उपलब्ध नहीं होते, कुछ का केवल आत्मनेपद में और कुछ का केवल परस्मैपद में तथा कुछ का दोनों में रूप चलते हैं । [1]

इस भाषा की विशेषता है कि बोलचाल की भाषा न होते हुए भी आज जो श्रेय इसे प्राप्त है, वह संसार की किसी अन्य भाषा को प्राप्त नहीं । आज भी इस भाषा में साहित्यिक रचनाएँ होती हैं, समाचार पत्र छपते हैं भारत की सभी भाषाओं के शब्द कोश का मूल स्रोत संस्कृत का मूल शब्द भण्डार ही है ।

हिन्दी के मूल शब्द भण्डार में भी संस्कृत शब्द प्रचुर मात्रा में मिलते हैं । लेकिन हिन्दी का मूल शब्द भण्डार उन संस्कृत शब्दों का नहीं । मध्य-कालीन आर्य भाषा काल में बहुत से शब्दों के रूप बदल गए हैं । ऐसे ही शब्द हिन्दी के मूल शब्द भण्डार के मुख्य अंग हैं । संस्कृत के शब्दों में कुछ

- -

1. बालमुकुन्द - हिन्दी क्रिया स्वरूप और विश्लेषण-1970- पृ. 50-51

ा ध्वनि समूह के कारण सभी कालों में अपरिवर्तित रह गये ।
- सरल, कमल, ताल, पद्, सम्- और ये शब्द हिन्दी में भी सुरक्षित
गये । दूसरी ओर आधुनिक काल में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से
संस्कृत के मूल शब्दों को हिन्दी में पुनः स्वीकार किया गया है ।

पाणिनि व्याकरण के द्वारा मानकीकरण होने से यह लाभ हुआ कि
विध गंभीर विषयों की चर्चा के लिए उपयुक्त माध्यम मिल गया और
ले दो हज़ार वर्षों में दर्शन् वैदक (आयुर्वेद) साहित्य आदि विषयों में
खत ग्रंथ अब भी पठनीय रहते हैं । यही नहीं, परिनिष्ठित रूप रचना
के कारण आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के शब्द भण्डारों का विकास
केलिए इसी भाषा का आश्रय लिया जाता है ।

2. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा :-

जब परिनिष्ठित भाषा का रूप निश्चित हो गया और उसके
ग का क्षेत्र सीमित हो गया, तब भी लोक-भाषा के विभिन्न रूपों का
ा होता रहा । लगभग ई. पू. 500 से ई. 1000 तक का काल इस तरह
विकास का काल था । इस काल की भाषाओं को समग्र रूप में मध्य-
न भारतीय आर्य भाषाएँ कहा जाता है । मध्यकालीन भाषा का स्वरूप
क ही न रहा और इसमें भी परिवर्तन आये । भाषा के इस विकास क्रम
न दशाओं का समावेश होता है ---

प्रथम उत्थान - पालि युग
द्वितीय उत्थान - प्राकृत युग
3. तृतीय उत्थान - अपभ्रंश युग

1.1.2.1. प्रथम उत्थान (पालि-युग)

यह मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं की प्रथम अवस्था समझी जाती है । इसमें तत्कालीन जन-भाषाओं का सामान्य रूप भी है और वैदिक का सरलीकृत रूप भी है । संस्कृत के साथ पालि की तुलना करने पर विदित होता है कि संस्कृत में बहुत से शब्दों के मध्य भारतीय आर्य भाषा के रूप सुरक्षित है और पालि में उन्हीं का कोई प्राचीन रूप बना हुआ है ।[1] डॉ. बाबूराम-सक्सेना के अनुसार - पाली में कुछ लक्षण ऐसे मिलते हैं जिनसे हम यह निश्चय-पूर्वक कह सकते हैं कि इसका विकास उत्तर कालीन संस्कृत की अपेक्षा वैदिक संस्कृत और तत्कालीन बोलियों से मानना अधिक,उचित है ।[2] पालि साहित्य का संबन्ध प्रमुखतः भगवान बुद्ध से हैं । धर्म प्रचार केलिए इस भाषा का उपयोग करने से उसके रूप में अधिक सरलता आ गयी है और वह जन सामान्य के निकट आ गयी ।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा और नव्य आर्य भाषा के बीच की स्थितियों को समझने केलिए पालि का महत्व बहुत अधिक है । संस्कृत ध्वनियों का जन-साधारण में कैसे उच्चारण होता था, उसकी व्याकरणिक जटिलताओं को सुलझाने का लोगों में क्या प्रयत्न हो रहा था, आदि की जानकारी पाली के अध्ययन से प्राप्त होता है । याने संस्कृत से हिन्दी तक पहुँचने केलिए पालि पहली सीढ़ी है ।

---

1. उदयनारायण तिवारी- हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास- पृ.सं. 68
2. डॉ. बाबूराम सक्सेना- सामान्य भाषा विज्ञान-1943, पृ. 362

1.1.1.2.1.1. संरचनात्मक विशेषताएँ :-

1.1.1.2.1.1.1. शब्द रूप :-

ध्वनि और रूप दोनों की दृष्टियों से पालि वैदिक भाषा के अधिक निकट है। लिंग तीन हैं। पालि में द्विवचन की समाप्ति हो गयी, इससे रूपों की संख्या कुछ कम हुई। कर्म वाच्य क्रिया - रूप, कर्तृ वाच्य के रूपों के समान घटित होने लगे। पूर्ण (Perfect) का बिलकुल लोप हो गया। कालों में वर्तमान मुख्य हो गया। इसकी परंपरा आगे भी चलती रही। कालों की संख्या 8 रह गई।[1]

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा काल के पालि उपकाल में ही भाववाच्य का प्रायः लोप हो गया और वाच्य केवल दो - कर्तृ और कर्म रह गये।[2]

पालि में व्यंजनांत संज्ञाएँ प्रायः समाप्त हो गयी और स्वरांत ही प्रयुक्त होती थीं। जैसे - शरत्-शरद, विद्युत् - विज्जु आदि।

1.1.1.2.1.1.2. शब्द-भण्डार :-

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल में गृहीत द्राविड तथा आस्ट्रिक भाषाओं के अधिकांश शब्द पालि में भी सुरक्षित हैं। लेकिन इस भाषा में तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है और विदेशी शब्दों का बहुत कम।[3]

---

1. डॉ० चन्द्रभान रावत्- हिन्दी भाषा-विकास और विश्लेषण- पृ. 294
2. जयकुमार-जलज"- ऐतिहासिक भाषा विज्ञान: सिद्धांत और व्यवहार-पृ. 25

शब्द भण्डार की दृष्टि से देखा जाय तो पालि में ध्वनि परिवर्तनों के कारण अनेक संस्कृत शब्दों का रूपांतर हो गया । ध्वनि समीकरण स्वरागम, व्यंजन-लोप आदि ध्वनि प्रक्रियाओं के कारण सभी क्लिष्ट या संयुक्त व्यंजनवाले शब्दों का सरलीकरण हो गया । पर संस्कृत के वे शब्द उसमें सुरक्षित रहे, जो स्वयं सरल थे , और जिन में ध्वनि परिवर्तन की संभाव नहीं थे । जैसे -- कर, कुसुम, दल आदि ।

इसके परिणाम-स्वरूप पालि के शब्द भण्डार अधिकांश शब्द संस्कृत शब्दों के तद्भवों के रूप में और कुछ शब्द तत्सम रूप में मिलते हैं । गिरनार, जोगडा, मानसेहरा आदि स्थानों से अशोक के जो शिलालेख मिले हैं , उनकी भाषाओं में एकरूपता नहीं है ।[1] उनके अनुसार इन शिलालेखों में दो से अधिक बोलियाँ है । गिरनार के एक शिलालेख का नमूना है :--

"इयं धमलिपि देवानं प्रियेनं प्रियदसिना राजा लेखापिता
इध न किंचि जीवं आराभित्वा प्रजूहितव्यं न च
समाजो कतव्यो । बहूकं हि दोसं समाजम्हि पसति
देवानं प्रियो प्रिय दसि राजा । अस्ति पि तु एकचा
समजा साधुमता देवानं प्रियस प्रियदसिनो राजो ।[2]

--इससे स्पष्ट है कि प्रथम प्राकृत (पालि) के काल में ही संस्कृत के अधिकांश शब्दों और रूपों में काफी परिवर्तन आ गये ।

- -

1. गुणे- तुलनात्मक भाषा विज्ञान- एक अवलोकना- 1958- पृ. 225
2. --वही--- पृ. 222

1.1.1.2.2. द्वितीय उत्थान (प्राकृत युग)

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं का प्रथम शती से पाँच वीं शती तक का दूसरा काल विशेष महत्त्व रखता है । इस काल में प्राकृत भाषाओं का बोलबाला रहा । संस्कृत के प्रयोग के सीमित हो जाने के बाद जो जन-भाषाएँ साहित्य में प्रतिष्ठित हुई उनका नाम प्राकृत पड़ा । अनेक विद्वानों ने आग्नेय तथा द्राविड़ भाषाओं का मूल भी प्राकृत विशेष से माना है और कुल छब्बीस प्राकृतों का उल्लेख भी किया है । परंतु वास्तव में साहित्यिक तथा व्याकरणिक दृष्टि से पाँच प्राकृतों को ही मान्यता प्राप्त हुई है ।[1]

बौद्ध और जैन धर्म के ग्रन्थ प्राकृत में ही लिखे गये हैं । प्राकृत के कवि और लेखकों का संस्कृत पर अच्छा अधिकार था । इनमें से कुछ तो दोनों भाषाओं में समानांतर रचनाएँ भी करते थे । इस तरह उनके पढ़ने और सोचने की भाषा तो संस्कृत थी पर सामान्य अभिव्यक्ति की भाषा के रूप में उन्होंने प्राकृतों को चुना था जो उस समय की जनभाषा थी ।

1.1.2.2.1. संरचनात्मक विशेषताएँ :-

1.1.2.2.1.2. रूप :-

प्राकृत भाषा में ध्वनि परिवर्तन की प्रवृत्ति अधिक है । प्राकृत काल में आते आते सादृश्य के कारण नाम और धातु दोनों ही रूपों में और भी कमी हुई । इस प्रकार भाषा अधिक सरल हो गई ।[2]

---

1. ये हैं - शौरसेनी, पैशाची, महाराष्ट्री, मागधी और अर्ध मागधी ।
2. भोलानाथ तिवारी- हिन्दी भाषा-1984, पृ. 145

प्राकृत में व्यंजनांत शब्द नहीं है । नपुंसक लिंग के शब्दों को प्रायः पुल्लिंग और स्त्रीलिंग बना दिया और लिंग भी दो रह गये । पालि की तरह प्राकृत में भी द्विवचन लुप्त है ।

वाच्य दो हैं - कर्तृवाच्य और कर्म वाच्य । लेकिन धातुओं के कर्मवाच्य रूप भी प्राकृत में प्रायः परस्मैपद में ही मिलते हैं । उदा- सं- गम्यते - प्रा० गमीअदि, गच्छीआदि । इसीलिए दोनों वाच्यों का अन्तर केवल मूल-धातु तक ही सीमित रह गया । [1]

कालों में भी और विकास हुआ । पूर्ण भूत समाप्त हो गया । हेतुहेतुमद्भूत पूर्णतः लुप्त हो गया । इन कालों की रचना क्रिया में कृदन्तीय रूपों एवं सहायक क्रियाएँ जोडकर बना लिए जाते थे । इस तरह प्राकृत काल में भाषा विश्लेषण की ओर तेज़ी से बढ़ने लगी । फलस्वरूप लकारों की संख्या छह रह गयी है जिन्हें अब लकारों के स्थान पर वर्तमान, भूत, भविष्य, विधि, आज्ञा और क्रियातिपत्ति ये नाम दे देना ही अधिक उचित है । [2] अन्य सब कालों की अपेक्षा वर्तमान काल के मूल शब्दों का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ गया है । इनसे नाम धातु (क्रियार्थक संज्ञा) और कर्मवाच्य के रूप बनाए जा सकते हैं । [3]

1.2.2.1.2. शब्द भण्डार :-

ध्वनिपरिवर्तन के कारण प्राकृत में बहुत से संस्कृत शब्द रूपांतरित हो

---

1. जयकुमार जलज-1972, पृ.सं. 258
2. -वही- 258
3. डॉ. चन्द्रभान रावत,-1969 -पृ. 294-295

गये और उसमें बहुत कम तत्सम शब्द मिलते हैं । प्राकृत में अधिकांश शब्द तद्भव हैं । इनमें उन शब्दों के भी तद्भव हैं , जो आस्ट्रीक या द्रविड़ आदि से संस्कृत में लिए गये थे । [1] प्राकृत शब्द भण्डार के बारे में गुणे का कहना है ---

प्राकृत शब्द भण्डार में अधिकतः वे शब्द हैं जो संस्कृत से ध्वनि परिवर्तन से विकसित हुए हैं । व्याकरण कारों से इसको तद्भव शब्द कहा जाता है - इनके अतिरिक्त अनेक उधार लिए हुए शब्द हैं जिनको तत्सम कहा जाता है । लेकिन तद्भव और तत्सम शब्दों के अतिरिक्त प्राकृत में कुछ अन्य शब्द भी है जिन्हें देश्य अथवा देशी, याने, देश के शब्द कहा जाता है । [2]

इन देशी शब्दों के मूल के बारे में मतभेद है , पर संभव है कि इनमें अनेक अनार्य भाषाओं के , विशेषकर द्राविड भाषाओं के हो । [3]

- -

1. भोलानाथ तिवारी- भाषा विज्ञान- पृ. 145

2. The Prakrit vocabulary mostly contains words that have phonetic ly developed from the sanskrit. These are called by grammarian tatbhava words. There are besides many borrowed words which are called tatsames. But besides the tadbhava and tatsama words, the prakrit show an amount of others that are called Desya or Desi. ie. country words.

3. गुणे. पि. डि. तुलनात्मक भाषा विज्ञान: पृ. 277

1.1.2.3. तृतीय उत्थान {अपभ्रंश}

प्राकृत भाषाओं के साहित्य में प्रयुक्त होने पर उनको भी कठिन अस्वाभाविक नियमों से बाँध दिया गया, किंतु जिन बोलियों के आधार पर उनकी रचना हुई थी, वे बाँधी नहीं जा सकती थी । लोगों की ये बोलियाँ विकसित होती रहीं । 500 ई. तक आते उनका बोलचाल का रूप साहित्य में सुरक्षित रूप से बहुत भिन्न हो गया । इनको समग्र रूप में अपभ्रंश कहा जाता है । प्राकृत कालीन जन-भाषाओं का विकसति रूप है अपभ्रंश । स्वाभाविक रूप से अलग प्रकृति के अनुसार बोली जानेवाली यही प्राकृत भाषा अपना विकास करती हुई और आगे चलकर हमारी हिन्दी के निर्माण में सहायक हुई । वैयाकरणों ने साहित्यिक प्राकृत की तुलना में इन्हें "अपभ्रंश" का नाम दिया जिसका अर्थ है भ्रष्ट हुई भाषा । भले ही वैयाकरणों ने अपने व्याकरण के सिद्धांत से उसे भ्रष्ट हुई साबित कर दिया, पर वस्तुत: उसे प्राकृत की विकसित अवस्था का ही रूप समझना चाहिए । [1] इसका प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में अपभ्रष्ट और अपभ्रंश तथा प्राकृत अपभ्रंश ग्रन्थों में अपभ्रंश, अवहट्ठ आदि नाम मिलते हैं । [2] समस्त आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास विविध अपभ्रंशों से हुआ है ।

अपभ्रंश	आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ
शौरसेनी	पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती
पैशाची	पंजाबी, लहंदा
व्राचड	सिन्धी
महाराष्ट्री	मराठी
अर्ध मागधी	पूर्वी हिन्दी

1.1.1.2.3.1. रूप :-

अपभ्रंश में सरलीकरण एवं एकीकरण की प्रवृत्ति बहुत आगे बढ़ गयी अपभ्रंश की भाषागत विशेषताओं के बारे में उदय नारायण तिवारी का यह मत है । अपभ्रंश का जो साहित्य मिलता है, उसमें भाषागत भेद बहुत कम है । यह समस्त साहित्य एक ही परिनिष्ठित भाषा का है ।[1]

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के व्यंजनांत प्रातिपादिक पालि के समय से ह लुप्त होने लगे थे, अपभ्रंश ने अंतिम व्यंजन का लोप कर सभी शब्दों को स्वरांत ही बना दिया । नपुंसक लिंग पूर्णतः समाप्त हो गया । अकार पुल्लिंग शब्दों की प्रमुखता हो गई । द्विवचन का पूर्णतया अभाव है । कारकों के रूप बहुत कम हो गये । मात्र तीन कारक समूह रह गये । जैसे :-

1. कर्ता - कर्म -संबोधन
2. करण -अधिकरण
3. संप्रदान, अपादान, संबन्ध

क्रिया की धातुओं के काल रूपों की विविधता में कमी हो गयी क्रिया में वर्तमान काल (लट), सामान्य भविष्यत् (लृट) और आज्ञा (लोट के ही रूप रहे ।[2] क्रिया रूपों के क्रिया समूह संस्कृत के वर्तमान(Presen के रूप पर आधारित होने लगे - कुछ कुछ भविष्य और आज्ञा वाचक रूपों प्रभाव भी रहा ।[3] संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग प्रबल हो गया । अपभ्रं

---

1. उदयनारायण तिवारी- तृतीय सं. -पृ. 127
2. अमर बहादुर सिंह - भाषाशास्त्र प्रवेशिका - पृ. 236
3. चन्द्रभान रावत- हिन्दी भाषा विकास और विश्लेषण- पृ. 295

धातुएँ या तो अकर्मक होती थी या सकर्मक साथ ही धातुओं को साधारण और प्रेरणार्थक रूपों में भी विभक्त किया जा सकता था, वाच्य दो - कर्तृ-वाच्य और कर्मवाच्य ।

1.1.2.3.2. शब्द भण्डार :-

तद्भव और देशज शब्दों की बहुलता के साथ-साथ नये शब्दों का निर्माण होने लगा । मुसलमानी शासन के कारण शब्द भण्डार में विदेशी शब्दों का मिश्रण भी होने लगा । प्राकृत और अपभ्रंश काल की भाषा में संस्कृत के बहुत से शब्दों में रूप परिवर्तन हो गये थे । पर जिन शब्दों में ध्वनियाँ अत्यन्त सरल थीं और परिवर्तन की गुंजाइश कम थी, ऐसे शब्द तत्सम रूप में स्वीकृत किये गये । सरल शब्दों में भी कभी कभी तनिक परिवर्तन हो गया । जैसे - पाप- पापु, अपरिवर्तित शब्दों की संख्या बहुत कम है ।

1.1.3. आधुनिक भारतीय आर्य भाषा :-

अपभ्रंश के विविध रूपों से ई. 1000 के लगभग विविध आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास होने लगा । इन भाषाओं के प्रारंभिक रूप अपभ्रंश भाषाओं से बहुत भिन्न नहीं है । मुख्यत: शैरसेवी अपभ्रंश से हिन्दी का विकास हुआ । लेकिन उसमें अन्य अपभ्रंशों के कुछ रूप भी मिलते हैं । पुरानी हिन्दी ध्वनि पद्धति, शब्द भण्डार और व्याकरण की दृष्टि से शैरसेनी अपभ्रंश से बहुत मेल खाती है ।

हिन्दी भाषा के विकास क्रम को तीन कालों में विभाजित कर सकते हैं ---

प्राचीन काल	§1000 ई. से 1500 ई. तक§
मध्य काल	§ 1500 ई. से 1800 ई. तक§
आधुनिक काल	§ 1800 ई. के बाद §

1.1.1.3.1. प्राचीनकाल :-

इस काल में भाषा प्राचीन रूप से नवीन रूप में संक्रमण कर रही थी एक ओर उसके प्राचीन रूप अवहट्ठ [1] का प्रभाव उतर रहा था और दूसरी ओर प्रारंभिक हिन्दी का नवीन रूप निखर रहा था । भाषा की दृष्टि से इसे प्रारंभिक हिन्दी युग कहा जा सकता है । [2]

यह काल अध्ययन संबन्धी सामग्री की दृष्टि से अत्यंत संदिग्ध है । शिला लेख, धातुपत्र लेख, सिद्धों नाथों और जैनियों का धार्मिक साहित्य, चरण काव्य आदि से संबन्धित जो सामग्री उपलब्ध होती है - वह पूर्ण प्रामाणिक नहीं है । अतः इस काल की भाषा का पूर्ण वैज्ञानिक अध्ययन संभव नहीं है । किंतु प्राप्त नमूनों के आधार पर यह समझा जा सकता है कि इस काल में दो भाषाएँ मिलती हैं -- परवर्ती अपभ्रंश और देशी ।

अपभ्रंश साहित्य के उत्तर काल में प्राचीन हिन्दी के नमूने प्राप्त हैं । पण्डित राहुल सांकृत्यायन ने अपभ्रंश की रचनाओं को पुरानी हिन्दी कहा है । उन्होंने हिन्दी "काव्य धारा" नाम के संग्रह में आठवीं से तेरहवीं

- -

1. - "अवहट्ठ"-भोलानाथ तिवारी के अनुसार यह शब्द केवल संस्कृत के "अपभ्रष्ट" का तद्भव रूप है जो मान्य शब्द अपभ्रंश का ही पर्याय है । भोलानाथ तिवारी- हिन्दी भाषा- पृ. 63

2. सत्यनारायण त्रिपाठी -हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक-

शताब्दी तक के अपभ्रंश या पुरानी हिन्दी की रचनाओं का संकलन किया है ।[1] नाथों, सिद्धों जोगियों निर्गुणवादी संत कवियों और अमीर खुसरो की रचनाओं में खड़ी बोली का आदि स्वरूप देखा जाता है । इस काल का रचनाओं में दृष्टिपात करने पर यह मालूम होती है कि इन सभी रचनाओं के मूल रूप बहुत परिवर्तित हो गये है और इनकी भाषा इनके युग का सही प्रतिनिधित्व नहीं करती । इन रचनाओं के संबन्ध में धीरेन्द्र वर्मा का कहना है --"भाषा शास्त्र की दृष्टि से इन ग्रन्थों की भाषा के नमूने अत्यंत संदिग्ध है । इनमें से किसी भी ग्रंथ की इस काल की लिखी प्रामाणिक हस्तलिखित प्रति उपलब्ध नहीं है । बहुत दिनों तक मौखिक रूप में रहने के बादे लिखे जाने पर भाषा में परिवर्तन का हो जाना स्वाभाविक है, अतः हिन्दी भाषा के इतिहास की दृष्टि से इन ग्रंथों के नमूने बहुत मान्य नहीं हो सकते ।[2]

इस काल की अधिकतर काव्यों में एक ऐसी भाषा का प्रयोग मिलता है जिसमें अपभ्रंश, डिंगल, ब्रजभाषा, राजस्थानी, खड़ीबोली और दक्षिण बोलियों का मिश्रित रूप है । विविध स्रोतों से शब्दों का आगमन इन भाषाओं के विकास में बहुत सहायक हुआ है । विद्यापति नरपति नाल्ह, चन्दबरदाई, कबीर आदि की रचनाओं में यह मिश्रण प्रक्रिया द्रष्टव्य है ।

रूप :-

व्याकरण की दृष्टि से अपभ्रंश काफी हद तक संयोगात्मक भाषा थी । लेकिन आदिकाल की हिन्दी में वियोगात्मक रूपों का प्राधान्य हुआ । सहायक क्रियाओं और परसर्गों का प्रयोग इस काल की हिन्दी में बढने लगी ।

- -

1. शिवशंकर प्रसाद वर्मा- हिन्दी भाषा की भूमिका-पृ. 55
2. धीरेन्द्र वर्मा- हिन्दी भाषा का इतिहास- पृ. 79-80

वाक्य रचना में शब्द क्रम निश्चित होने लगा ।

अधिकांश शब्द तद्भव हैं । तत्सम और देशज शब्द कम । वीर - गाथा काव्यों में मुसलमानों के शासन के कारण कुछ अरबी, फारसी और तुर्की शब्द भी मिलते हैं ।

1.1.1.3.2. मध्यकाल :-

इस काल में हिन्दी ने स्वतंत्र विकास प्राप्त किया । अवधी और व्रज में प्रचुर मात्रा में रचनाएँ हुईं । खड़ी बोली एक बोली के रूप में विकसित होने लगी । पर अमीर खुसरो आदि दो एक लेखकों के अतिरिक्त और किसी की साहित्यिक कृतियाँ नहीं मिलती ।

मध्यकाल की प्रारंभिक शतियों के साहित्य की प्रमुख प्रवृत्ति थी भक्ति और दर्शन । इसलिए साहित्य में धर्म संबन्धी भावों की प्रमुखता थी । इसके कारण तद्भव और देशी शब्दों का प्रयोग कुछ कम हो गया और अधिक तत्सम शब्दों का प्रयोग होने लगा । विदेशी शब्दों का प्रयोग भी मिलता _ । एक गणना के अनुसार हिन्दी में इस समय 3500 फारसी, 2500 अरबी ᷇ सौ से कुछ कम तुर्की शब्दों का प्रयोग देख सकते हैं । [1]

भक्ति साहित्य अधिकांश व्रज और अवधी में है । कृष्णभक्ति शाखा के सूरदास और अन्य कवियों ने व्रज में विशाल साहित्य प्रस्तुत किया । रामभक्त तुलसीदास ने और प्रेमभक्त कवि जायसी ने अवधी में रचना की । लेकिन तुलसी की अवधि अधिक लोकभाषा के समीप थी और जायसी की अधिक टकसाली एवं साहित्यिक थी । डॉ. बाबूराम सक्सेना के अनुसार -

- -

भोलानाथ तिवारी- हिन्दी भाषा-1966, पृ. 139

"तुलसीदास की तुलना में जायसी की अधिक शुद्ध है यद्यपि बोली की सर्वांगीण शुद्धता नहीं है और न अपेक्षित ही है ।" [1]

1.1.1.3.3. आधुनिक काल :-

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में 1850 के बाद परिस्थितियाँ बहुत कुछ भिन्न हो गयीं जिसका प्रभाव भाषा एवं साहित्य पर अधिक पडा अंग्रेज़ी शासन तथा भारतीय धार्मिक सुधारकों के कार्यों से राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में नयी चेतना आयी । पाश्चात्य संपर्क के कारण जीवन दृष्टि अधिक व्यापक हो गयी शिक्षा का अधिक प्रसार हुआ और विविध विषयों का अध्ययन होने लगा । इस दशा में भाषा कुछ उच्च वर्गों तक सीमित काव्य मात्र का माध्यम नहीं रह सकती थी, उसे जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के विविध कार्यों में भी संप्रेषण माध्यम का दायित्व उठाना पड अब तक काव्य मात्र केलिए प्रयुक्त भाषा को छोड़कर नये दायित्वों की पूर्ति करनेवाली एक भाषा के स्वरूप का निर्णय आवश्यक हो गया । इसके फलस्वरूप हिन्दी के खडीबोली रूप का विकास हुआ और वह गद्य साहित्य का मूलाधार बन गयी ।

लल्लूलाल, सदलमिश्र, इंशा अल्लाखाँ, सदासुखलाल आदि ने खडीबोली की अनेक शैलियों की नींव डाली । लल्लूलाल की प्रेमसागर में व्रज मिश्रित खडी बोली थी । राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्दी तथा राजा लक्ष्मण सिंह ने उसके विकास को आगे बढाया । बाद में राजा शिवप्रसाद उर्दू की ओर चले तो विरोध में राजा लक्ष्मण सिंह एकदम संस्कृतनिष्ठ हिन्दी की ओर ।

---

1. बाबूराम सक्सेना- अवधी का विकास-1972, पा. 9

इसी समय साहित्य के क्षेत्र में भारतेंदु हरिश्चन्द्र के प्रभाव से और धार्मिक क्षेत्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रभाव से खड़ी बोली गद्य का खूब प्रचार हुआ । भारतेंदु हरिश्चन्द्र से लेकर खड़ी बोली कविता का आधुनिक काल माना जाता है । इस काल में खड़ी बोली गद्य भी चरम उत्कर्ष पर पहुँचा । भाषा को शुद्ध और परिनिष्ठित बनाने में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का बडा योगदान रहा । सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय, प्रसाद, पंत, महादेवी, निराला, नवीन, सोहनलाल द्विवेदी, दिनकर आदि को आधुनिक काल की खडीबोली के ही कवि मान सकते हैं । अयोध्यासिंह उपाध्याय के प्रियप्रवास में और पंत और निराला की कुछ कविताओं में संस्कृत तो प्राय: वैसी ही खड़ीबोली हिन्दी पायी जाती है जैसी भारतेंदु की कृतियों में मिलती हैं । [1]

वर्तमान काल में भी उसी खडीबोली हिन्दी ने अपने ढंग का विकास प्राप्त किया है

1.3.3.1. हिन्दी की संरचनात्मक विशेषताएँ

1.3.3.1.1. लिंग :-

नपुंसक लिंग पूर्णत: लुप्त हो गया है । शब्दों में लिंग-भेद की थोडी बहुत भिन्नता सभी भाषाओं में है जिनमें लिंग भेद सजीवत्व तथा निर्जीवत्व तथा शब्दों के रूपों के आधार पर हुआ है । लेकिन हिन्दी में विशेष जटिलता का कारण यह है कि एक तो स्वयं संज्ञाओं के लिंग निर्णय की विधियाँ पूर्णत: अर्थाश्रित और रूपाश्रित नहीं है, और बहुत से अपवाद हैं । कौन सा शब्द

---

1. अम्बाप्रसाद सुमन - भाषाविज्ञान सिद्धांत और प्रयोग, पृ. 60

पुल्लिंग है और कौन सा स्त्रीलिंग - इस संबन्ध में कोई निश्चित नियम नहीं है । उदा: मूँछ और दाढ़ी जैसे शब्द स्त्रीलिंग है लेकिन घाघरा, लहंगा, पेटीकोट जैसे शब्द पुल्लिंग हैं । मोती शब्द पुल्लिंग है, मोती से बनी माला स्त्रीलिंग । हिन्दी में लिंग संबन्धी यह जटिलता अधिकांशत: ऐतिहासिक क्रम विकास या परंपरा की देन है ।

लिंग व्यतियान के उदाहरण प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं की तरह हिन्दी में भी विद्यमान है । संस्कृत में देह, बाहु, आत्मा शब्द पुल्लिंग है लेकिन हिन्दी में स्त्रीलिंग, संस्कृत में देवता, तारा आदि शब्द स्त्रीलिंग है , हिन्दी में पुल्लिंग

1.3.3.1.2. वचन :-

वचन प्राकृत और अपभ्रंश की तरह दो ही है -एक-वचन और बहुवचन । बहुवचन के रूप बनाने केलिए संज्ञा के लिंग की जानकारी आवश्यक है । उदा- "पत्ता" का बहुवचन "पत्ते" है पर "लता " का लताएँ । "घर" का बहुवचन घर ही है और "दीवार" का "दीवारें" । इस भेद का कारण लिंग ही है ।

1.3.3.1.3. कारक :-

कारक आठ माने जाते हैं और कारक चिह्न शब्दों से प्राय: अलग रहते हैं । कुछ कारकों के एक से अधिक चिह्न हैं । जैसे - कर्म कारक केलिए "को" अथवा शून्य , संप्रदान कारके केलिए "को", "केलिए" और "के वास्ते" । और कभी कभी एक ही चिह्न से एक से अधिक कारकों की सूचना होती है । जैसे- कर्म और संप्रदान केलिए "को" करण और अपादान केलिए "से" ।

1.1.3.3.1.4. क्रिया रूप :-

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं ने क्रियापद प्रक्रिया को अधिक सरल कर दिया । परसर्गों और संयुक्त क्रियाओं का प्रचुर प्रयोग इनकी मुख्य विशेषता है । यह प्रवृत्ति मध्य भारतीय आर्य भाषा काल के अपभ्रंश काल में आरंभ हो गयी थी, आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल में यह अत्यंत विकसित हुआ । हिन्दी क्रियाओं की सरलता के बारे में केल्लाग का विचार है ---

The Hindi verb is very simple. There is but one conjuction and all verbs, whatever, both in High Hindi, and in local dialects, take the regular termination belonging to several tenses.

डॉ सुनीतिकुमार चाटर्जी ने हिन्दी की धातुओं को दो भागों में विभक्त किया है - सिद्ध धातुएँ और साधित धातुएँ ।

1. सिद्ध धातुएँ :-

वे धातुएँ जो मूल रूप में सुरक्षित हैं - यथा - कर् ॥ना॥, काँप ॥ना॥ घिस् ॥ना॥ इत्यादि ।

2. साधित धातुएँ :-

धातुएँ जो मूल धातु में किसी प्रत्यय के योग से बनी है , यथा- कराना ॥कर + आ, वा प्रेरणार्थक प्रत्यय॥ बैठाना ॥बैठ + आ ॥, लिखना ॥लिख + आ ॥ इत्यादि ।[1]

---

1. उदयनारायण तिवारी- हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास- पृ. 466

1.1.1.3.3.1.5. सर्वनाम :-

सर्वनामों में मध्यकालीन आर्य भाषाओं में ही द्विवचन लुप्त हो गया और केवल एकवचन और बहुवचन रह गये । यही दशा हिन्दी में भी मिली है सभी सर्वनाम सुरक्षित हैं लेकिन उनके रूपों में काफी परिवर्तन हो गया ।

कारकों के प्रयोग में संज्ञाओं में जो विश्लिष्टता आ गयी है वह सर्वनामों में पूर्ण रूप से नहीं आयी । अतः सर्वनामों के कुछ कारक रूप संश्लिष्ट है । (उसे, जिसे, किसे, मुझे, मेरा, तेरा आदि) और कुछ अन्य रूप विश्लिष्ट । (उसको, किसको, उससे, जिससे, मुझसे, मुझमें , जिसमें, उसमें, किसमें)

इस तरह हम देखते हैं कि भारतीय आर्य भाषाओं में हज़ारों वर्षों में जो परिवर्तन आये हैं । उनके फलस्वरूप ही हिन्दी की संरचना निर्मित हुई है । पाली प्राकृत अपभ्रंश से होकर आये परिवर्तनों ने शब्दों को तथा प्रत्ययों को काफी प्रभावित किया है । दूसरी ओर आर्य भाषा की अन्य आधुनिक शाखाओं से भी हिन्दी अनेक संरचनात्मक भिन्नतायें प्रकट करती है । इस तरह ऐतिहासिक दृष्टि से तथा आधुनिक रूप रचना की दृष्टि से हिन्दी की अपनी विशेषतायें हैं अपनी स्वतंत्र सत्ता है ।

1.2. मलयालम भाषा का सामान्य परिचय

द्रविड़, भाषाओं में चार भाषाएँ प्रमुख मानी जाती है --तमिल, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम । अन्य लगभग बीस से अधिक भाषाएँ भी हाल में प्रकाश में आयी हैं । [1] फिर भी लिखित साहित्य के अभाव के कारण उनको

- -

उतना महत्वपूर्ण नहीं माना जाता ।[1] उपर्युक्त चार संपन्न भाषाओं में विविध कालों में लिखित समृद्ध साहित्य प्राप्त होता है । सबसे प्राचीन तमिल में लगभग ईसवीं शताब्दी के प्रारंभ से लेकर और अन्य भाषाओं में ईसवीं दसवीं शताब्दी के आसपास से लिखित सामग्री मिलती है ।

मलयालम भाषा की उत्पत्ति के संबन्ध में विद्वानों में मतभेद है । इनमें तीन मत प्रसिद्ध हैं ।

1. मलयालम की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है और तमिल से मिलकर उसका स्वतंत्र विकास हुआ है ।
2. तमिल से मलयालम का विकास हुआ है, अतः वह तमिल की पुत्री है ।
3. मूल द्रविड भाषा से तमिल और मलयालम का विकास हुआ है, अतः वह तमिल की बहिन है ।

पहला मत कोवुण्णि-नेटुङ्ङाडि की केरल कौमुदी नामक व्याकरण रचना में मिलता है । उनके अनुसार हिमालय से निकली हुई संस्कृत द्रविड भाषा की कालिन्दी से मिलकर मलयालम गंगा का आविर्भाव हुआ ।

"संस्कृत हिमगिरि गलिता
द्राविड़ भाषा कलिन्दजा मिलिता
केरल भाषा गंगा
विहरतु में हृत्सरस्वदासंगा"

---

1. जार्ज के. एम. - तमिल साहित्यम्- पृ. 5

इस मत को अब कोई नहीं मानता लेकिन इससे इस तथ्य की ओर संकेत होता है कि मलयालम में संस्कृत शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में होता है और इसलिए संस्कृत से उसके निकट संबन्ध का आभास हो सकता है ।[1]

2.1. तमिल प्रभाव काल :-

दसवीं शताब्दी के पहले केरल में भी तमिल का प्रचार था । तमिल का आदिम साहित्यिक रूप "संघम्" कालीन है । "संघम्" रचनाएँ "चेंतमिल" में लिखी गयी हैं । बोलचाल की भाषा को कोटुं तमिल कहते थे । "संघम्" साहित्य के अंतर्गत पतिट्टुप्पत्तु" (दस दशक), "पत्तुप्पाट्टु आदि में केरल के अनेक राजाओं के बारे में गीत मिलते हैं । ईसवीं दूसरी शताब्दी की रचना "चिलप्पतिकारम" (नूपुर कथा) नामक महाकाव्य के रचयिता केरल के चेर-राजा चेंकुट्टुवन् के भाई इलंको अड़िकळ् थे । इसके अनेक भाषा प्रयोग अब भी मलयालम भाषा में मिलते हैं जो वर्तमान तमिल में नहीं मिलते ।

भाषागत विशेषताओं एवं व्याकरण आदि की दृष्टि से देखने पर भी यह स्पष्ट हो जाता है कि तमिल भाषा में लुप्त द्रविड़ भाषा के कई रूप मलयालम में सुरक्षित हैं । उदा- तमिल में शब्दों के अंत में "ऐ" कार में परिणत होनेवाला जो अंश है, वह मलयालम में मूल द्रविड़ भाषा की तरह "अ" कार में ही रहता है । क्रियापदों के साथ लिंग तथा वचन के प्रत्यय लगाने का क्रम (उदा- अवन् वन्दान् - वह आया) अवर् पोयार् - वे गये , अवळ् पोयाळ् - वह गयी ।) तमिल ने तो अपनाया है पर मलयालम में आज भी वही मूल द्रविड़ वाला पुराना क्रम चालू है । तेल्लु (थोडा),

---

1. परमेश्वरन् नायर. पी.के. -मलयालम् साहित्य चरित्रम्- पृ. 6

निन् (तेरा), आई (बना, हुआ) आदि शब्द रूप "ट्ट" (दन्त्य व तालव्य के बीच में उच्चारण) जैसे उच्चारण, जो केवल मूल द्रविड़ में उपलब्ध है तमिल में नहीं, परंतु मलयालम में पाये जाते हैं ।[1]

1.2.1.1. मलयालम का तमिल से स्वतंत्र विकास :-

तमिल से स्पष्टत: मलयालम के भिन्न होने का समय ईसवीं दसवीं शताब्दी है । प्राचीनतम प्राप्य मलयालम रचना "रामचरितम् पाट्टु" है । (रामचरितम गीत) इसके रचयिता ही रामवर्मा हैं, जो 1195 ई. से 1208 ई. तक तिरुवितांकूर[2] के शासक थे ।[3]

रामचरितम की भाषा को एक मिश्र भाषा मान सकते हैं । इसमें केरल की तमिल के साथ मलयालम को मिलाकर एक मिश्र भाषा शैली का प्रयोग किया गया है । लेकिन इसमें तमिल भाषा का प्रभाव ही अधिक है । और तमिल शब्दों के साथ तमिल व्याकरण नियमों का प्रयोग भी मिलता है ।

ईसा पूर्व काल में कुछ आर्य ब्राह्मण उत्तर भारत से केरल में आये । उन लोगों की भाषा संस्कृत थी । वे व्यवहार में मलयालम का प्रयोग करने लगे और उनकी मलयालम में संस्कृत शब्दों की प्रचुरता थी । इसके प्रभाव से साधारण लोगों की मलयालम में भी संस्कृत शब्द आ गये । इसलिए रामचरितम् में भी हम कुछ संस्कृत शब्द देख सकते हैं ।

- -

1. "पाट्टु" शब्द का अर्थ गीत है और यह केरल में सबसे पहले प्रचलित काव्य शैली थी । इसमें तत्कालीन व्यावहारिक भाषा का रूप मिलता है ।
2. वर्तमान केरल का दक्षिण भाग । तिरुवितांकूर, कोच्चि और मलबार के संयोजन से वर्तमान केरल बनाया गया है ।
3. परमेश्वरय्यर. एस. उळ्ळूर- केरल साहित्य चरित्रम्-पृ. 303

रामचरितम् पाट्टु में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों के प्रयोग दो प्रकार के हैं --तमिल में भी प्राप्य लिपियों से बने संस्कृत शब्दों को तत्सम रूप में और तमिल में अप्राप्य ध्वनियों (सघोष, महाप्राण तथा कुछ संयुक्त व्यंजन) से बने संस्कृत शब्दों को तद्भव रूप में स्वीकृत किया गया है । उदा- वनं, कमलं, करि आदि शब्दों की ध्वनियाँ तमिल याने मूल द्रविड़ में भी है इसलिए संस्कृत से ऐसे शब्दों को प्राचीन मलयालम में या किसी द्रविड़ भाषा ने अथवा अब भी तमिल में उन्हीं रूपों में स्वीकृत किया गया है । लेकिन जब धन, रथ, गान, जल आदि शब्दों को जिनकी कुछ ध्वनियाँ तमिल या मूल द्रविड़ भाषा में नहीं हैं, प्राचीन मलयालम में या किसी भी प्राचीन द्रविड़ में, स्वीकृत करते समय उनमें ध्वनि परिवर्तन की आवश्यकता होती है । महाप्राण ध्वनियाँ अल्पप्राण हो जाती हैं और सघोष ध्वनियाँ अघोष हो जाती हैं । जैसे - धन्-तनम्, रथ-रतम्, गान्-कानम्, जल्- चलम् ।

संस्कृत शब्द मलयालम में दो तरह से आये हैं --कुछ शब्द पहले मलयालम की प्राचीन दशा में आये , जब मलयालम और तमिल भिन्न नहीं थीं। जब मलयालम तमिल से अलग हुई तब भी ऐसे शब्द बने रहे । ऐसे संस्कृत शब्द जिन रूपों में तमिल में मिलते हैं, उन्हीं रूपों में मलयालम में भी मिलते हैं । ऐसे शब्दों को प्राचीन व्याकरण कारों ने तत्सम माना है, क्योंकि तमिल से मलयालम में लेते समय इन शब्दों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है । दूसरी ओर संस्कृत शब्दों को सीधे लेकर कुछ ध्वनि परिवर्तनों के साथ मलयालम में प्रयुक्त किया गया है । इस तरह परिवर्तित रूप में आए हुए शब्दों को तद्भव माना गया है । [1] उदा- चीरामन, चीता ।

---

1. आधुनिक काल में इन शब्दोंके अर्थों में कुछ अंतर आ गया है । संस्कृत के शब्दों को ध्वनि परिवर्तन के बिना प्रयुक्त करें तो तत्सम माना जाता है और मलयालम की प्रकृति के अनुसार बदलकर प्रयुक्त करें तो तद्भव

इस तरह प्राचीन काल में आये हुए बहुत से शब्द अब भी मलय में तत्सम और तद्भव रूप में प्रयुक्त होते हैं ।

"मलयालम भाषा में संस्कृत का प्रभाव रामचरितम्पाट्टु"के काल भी स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाता है । "रामचरितम्," "रामकथापाट्टु" आदि पुराने गीत काव्यों में तद्भव रूप में और परिवर्तित रूप में ही संस्कृत शब्द घुस गया है । [1]

उदा:-

अरन् (हरन्)	मानतम् (मानसम्)
अतिकम् (अधिकम्)	अपिषेकम् (अभिषेकम्)
इट्टम् (इष्टम्)	अरचन् (राजा)

लगभग पच्चीस प्रतिशत संस्कृत शब्दों का तत्सम और तद्भव दोनों प्रयोग हम पाट्टु में देख सकते हैं । [2]

रामचरितम् के साथ और बाद में अनेक पाट्टु की रचना हुई है । उनमें अनेक अप्राप्य हैं । जो कुछ मिली है अनेक अपूर्ण एवं अप्रामाणिक है । मिली हुई पाट्टु में अय्यपिल्ला आशान की "रामकथा पाट्टु" और रामपणिक्कर का "रामायण" महत्वपूर्ण है । इसमें तमिल का प्रभाव तो है, फिर भी मलयालम की प्रधानता दिखाई पड़ती है । साथ ही संस्कृत के शब्दों और समासों का भी समावेश मिलता है । जैसे -मेता (मेधा), कुस्वरम्(गुस्वर) पातं (पादं) आदि ।

---

1. वेळ्ळायणि अर्जुनन् -गवेषण मेखला -1972- पृ.47
2. ईश्वरी-एम. - comparative study of the vocabulary of Hindi and Malayalam. P 62

.2. मणिप्रवाल काल :-

आठवीं शती के बाद संस्कृत का प्रभाव मलयालम पर अत्यधिक पड़ने लगा और यह प्रभाव इतना बढ़ता गया कि एक समय संस्कृत और द्रविड़ की एक मिश्रित शैली का प्रभाव हुआ जिसे मणिप्रवालम कहा जाता है। मणिप्रवाल शैली के लक्षण बतानेवाला ग्रन्थ है "लीलातिलकम्"। "लीलातिलकम्" का रचना काल चौदहवीं शती माना जाता है।[1] याने चौदहवीं शती में केरल में बहुप्रचलित मणिप्रवाल भाषा तथा साहित्य का स्वभाव विशेष बतानेवाला शास्त्र ग्रन्थ है लीलातिलकम्।[2] इससे यह समझ सकते हैं कि इस तरह के एक लक्षण ग्रंथ की रचना हुई हो तो उसके कुछ शतियों के पहले से मणिप्रवाल शैली का प्रचलन हुआ होगा। मणिप्रवाल का अर्थ है मणि (माणिक्य) और प्रवालम् को मिलाकर गूंथी हुई माला अथवा तदनुरूप साहित्य। यहाँ मणि से मलयालम और प्रवाल से संस्कृत को सूचित की गयी है। दोनों यद्यपि दो प्रकार के रत्न हैं तो भी दोनों का रंग समान है, इसलिए दोनों को अलग-अलग करना मुश्किल है, उनमें ऐसा ही तादात्म्य रहता है। ठीक उसी तरह का संयोजन "मणिप्रवालम" में भी रहता है। देश्य भाषा और संस्कृत को मिलाकर साहित्य भाषा बनाने की रीति है मणिप्रवालम।[3]

लीलातिलकम के अनुसार मणिप्रवाल का लक्षण है "भाषा संस्कृतयोगे मणिप्रवालम्"। लीलातिलकम् यह व्यक्त करती है कि मणिप्रवालम साहित्य में प्रयुक्त भाषा शब्द ऐसे होने चाहिए जो पामर लोगों के बीच में भी प्रचलित हो

---

1. K.M. Prabhakara Varier - Theories in the origin of Malayalam Language in studies in Dravidian linguistics. p.236
2. पी.वी. वेलायुधन पिल्लै- मध्यकाल मलयाल व्याकरणम्- 1968-पृ. 19

और संस्कृत शब्द भाषा पदों के समान ही प्रसिद्ध और ललित हो ।
मणिप्रवाल में संस्कृत शब्द विपुल संख्या में मिलता है । उदाहरणार्थ देखिए-

अंग तुंगस्तनभरनतं पुलकुवानो तनाविल्
पोश पुण्यप्रतरमोन्नल्लाळेन्नुडे वल्लभाया,
निन्नेक्कोण्डेन्नभिमतनेनक्केयूत/लामेंडिरिन्नेन्
निद्रे भद्रे त्वमपि विधिना दुर्लभा वल्लभेव " ।[1]

मणिप्रवाल काव्य की विशेषता यह है कि उसमें संस्कृत शब्दों का संस्कृत रूपों में ही (लिंग, वचन, कारक प्रत्यय के साथ) प्रयोग किया जाता है ।

संस्कृत भाषा के सम्यक अध्ययन के कारण उसका प्रभाव मलयालम कवियों पर ऐसा पड़ा कि संस्कृत के अनुकरण पर मणिप्रवाल शैली में काव्य ग्रंथों का प्रणयन आरंभ किया गया । यहाँ तक कि इस शैली को अपनाने के कारण मलयालम में अत्यधिक संस्कृत शब्दों का प्रयोग होने लगा । मणिप्रवा के अंतर्गत वैशिक तंत्र, कूटियाट्टम् [2] के श्लोक, ईश्वर स्तोत्र, सन्देश काव्य आदि मिलते हैं । सन्देश काव्यों में शुक-सन्देश, उण्णुनीलि सन्देश आदि प्र हैं ।

- -

1. इलंकुलम् कुंजन् पिल्ला - लीलातिलकम मणिप्रवाल लक्षणम्- पृ. 68
2. एक तरह की नाट्य पद्धति है "कूटियाट्टम" । रंगमंच पर विदूषक ने हास्य रसपूर्ण वाक्यों से कथा की महिमा के बारे में बोलते हुए लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है । लोग आसानी से संस्कृत नाटकों का कथा-सार समझ जाते हैं ।

1.2.2.1. रूप :-

संस्कृत शब्दों की रूप रचना भी संस्कृत व्याकरण के अनुसार करने के कारण मणिप्रवालम् काव्य में प्रयुक्त क्रियाओं के रूप भी दो तरह के हैं -- याने संस्कृत क्रियाओं की रूप रचना संस्कृत के व्याकरण के अनुसार और मलयालम क्रियाओं की रूप रचना मलयालम व्याकरण के अनुसार ।

1.2.2.1.1. संस्कृत क्रिया रूप :-

करोति	- करता है {वर्तमान}
अकरोत	- किया {उसने} -भूत-
करिष्यति	- करेगा {भविष्य}
करोसि	-करते हो {वर्तमान}
अकरो:	-किया {तुम ने}-(भूत.)..

1.2.2.1.2. द्रविड क्रिया रूप :-

पुलकुवान्	- गले लगने को {कृदन्त}
इरुन्तेन्	- मैं बैठा {भूत}
नटन्तेन्	- मैं चला {भूत}
वरवेन्	- आता हूँ {वर्तमान}
अषुवार	- वे रोयेंगे {भविष्य}
निन्रनाळ्	- खड़े रहने पर {कृदन्त}

इस तरह संस्कृत व्याकरण के अनुसार मलयालम में रूप रचना करना बिलकुल अस्वाभाविक था । अतः शीघ्र ही यह प्रवृत्ति लुप्त हो गयी और

मणिप्रवाल परंपरा भी समाप्त हो गयी । इसके बाद में संस्कृत क्रियाओं की रूप रचना भी मलयालम व्याकरण के अनुसार होने लगी ।

इस तरह मलयालम व्याकरण के अनुसार रूप रचना इतनी प्रबल थी कि संस्कृत की संज्ञाओं से व्यापक रूप में क्रिया रूप बनाए गये । इसलिए यह देखा जाता है कि जहाँ हिन्दी में संज्ञा के साथ "करना" जोड़कर क्रिया बना जाती है वहाँ मलयालम में संज्ञाओं से सीधे क्रिया बनायी जाती है ।

हिन्दी संज्ञा + कर	मल: संज्ञा - क्रिया
अनुसार करना	अनुसरिक्कुक
रक्षा करना	रक्षिक्कुक
पूजा करना	पूजिक्कुक
आज्ञा करना	आज्ञिक्कुक
नियंत्रण करना	नियन्त्रिक्कुक
प्रार्थना करना	प्रार्थिक्कुक
नमस्कार करना	नमस्करिक्कुक

मणिप्रवाल के बाद याने चौदहवीं और पन्द्रह वीं शताब्दियों के बाद बिलकुल भिन्न भाषा शैली का विकास हुआ । इसके मुख्य कवि "निरणम" कवि कहलाते हैं ।[1] निरणम् कवियों ने प्रचुर मात्रा में संस्कृत के दार्शनिक शब्दों का प्रयोग किया है लेकिन मणिप्रवाल की तरह संस्कृत प्रत्ययों का प्रयोग नहीं किया है । प्रस्तुत शैली का सशक्त रूप चेरुश्शेरी की कृष्णगा

---

1. राम पणिक्कर, माधव पणिक्कर और शंकर पणिक्कर जिन्हें निरणम कवि या कण्णश्शनमार् कहा जाता है । इनकी रचनाएँ रामायणम्-भारतं, भाग (रामपणिक्कर) भगवत गीता (माधव पणिक्कर) भारत माला

में मिलता है । कृष्णगाथा में बिलकुल स्वतंत्र एक मलयालम शैली का प्रयोग किया गया है । वास्तव में कृष्णगाथा मणिप्रवाल शैली केलिए एक चुनौती थी । [1]

यह उल्लेखनीय बात है कि कृष्णगाथा के लेखक चेरुश्शेरी ने मणिप्रवाल शैली की पूरी उपेक्षा की और पाट्टु शैली को अपनाया जो देशी भाषा की प्रवृत्तियों के अनुकूल थी । सरल तथा देशज शब्दों का प्रयोग करने में कवि की सामर्थ्य अतुलनीय है । [2]

इसमें संस्कृत और मलयालम क्रियाओं की रूप-रचना मलयालम व्याकरण के अनुसार ही मिलती है । यह उल्लेखनीय है कि जहाँ मणिप्रवालम् भाषा में क्रियाओं के रूप पुरानी मलयालम अथवा तमिल की है जिसमें लिंग वचन प्रत्यय भी होते हैं पर चेरुश्शेरी की मलयालम में क्रियाओं के स्वतंत्र मलयालम रूप बने और उनमें लिंग वचन प्रत्यय नहीं है । इसे मलयालम क्रियाओं के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण माना जा सकता है ।

1.2.3. आधुनिक काल :-

1.2.3.1. प्रथम उत्थान :-

सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में साहित्य में एक नूतन सशक्त शैली का उदय हुआ । इसके प्रणेता -"एषुत्तच्छन्" । भाषा स्वरूप को संकर कर शैली को सुधारने में उनका महत्वपूर्ण योग रहा ।

---

1. ईश्वरी. एम. A comparative study of the vocabulary of Hindi and Malayalam p.74

"अध्यात्मरामायण" एषुत्तच्छन् की प्रसिद्ध रचना है । संस्कृत की रचनाओं का अनुसरण करते हुए भी इसमें कई मौलिक बातें मिलती है और इनकी भाषा में संस्कृत और द्रविड़ शब्दों का संतुलित प्रयोग मिलता है । मलयालम को मानक रूप देने का श्रेय एषुत्तच्छन को है जिसके कारण उनको आधुनिक मलयालम का जनक माना जाता है ।

एषुत्तच्छन् के बाद सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में एक नवीन काव्य रूप का उद्घाटन हुआ । वह है "कथकळि" ।[1] कोट्टयम् केरलवर्मा की कथकळियों में और उण्णायि वारियर की नलचरितम जैसी कृतियों में उच्चशैली की मलयालम तथा संस्कृत शब्दों का प्रयोग हुआ है । पर उस शैली का व्यापक विकास नहीं हो सका ।

इसके विरुद्ध अठारहवीं शताब्दी में कुंचन नंपियार ने अपनी "तुळ्ळल्" कृतिय की रचना की,तब उनमें एषुत्तच्छन् की शैली को आगे बढ़ाया गया । कुंचन नंपियार की शैली में एक ओर सामान्य मलयालम शब्दों की प्रचुरता है तो दूसरी ओर संस्कृत के सरल शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग है । संस्कृत के अच्छे विद्वान होने पर भी कुंचन नंपियार ने एक ऐसी शैली का उपयोग किया जो सामान्य लोग भी समझ सकते थे ।

उनका भाषा संबन्धी आदर्श था ----

---

1. एक विशेष प्रकार की नृत्य विधा है "कथकलि" । कोट्टयम के कल्याण-सौगन्धिकम् और किर्मीरवधं कथकलियाँ प्रसिद्ध हैं ।

2. केरल में प्रचलित एक प्रकार का नृत्य नाट्य इसमें एक नाट्यकार के द्वारा प्राय: पौराणिक कथाएँ प्रस्तुत की जाती है ।

भटजनङ्ङटे नट्टुविलुळ्ळोरु
पटयणिक्किहा पेस्वान्
वटिक्यिन्नोरु यास्केरल
भाषतन्ने चितंवरू -

अर्थात् भट-जनों के बीच में जो सैनिक समूह है - जो सामान्य शिक्षित-जन हैं, उनकेलिए सुन्दर आकार की मनोहर केरल भाषा-मलयालम ही उचित है ।

उनकी कृतियों में जो संस्कृत शब्द मिलते हैं , वे मलयालम के ही शब होकर चमक उठे । इस तरह तुंचन और कुंचन के द्वारा संस्कृत के तरल -सरल शब्दों को मलयालम में स्थायी प्रतिष्ठा मिली । साथ-साथ सभी क्रियाओं की रूप-रचना भी मलयालम व्याकरण के अनुसार मानक हो गयी ।

1.2.3.2. द्वितीय उत्थान :-

अठारहवीं शती के अंत तक मलयालम में केवल पद्य साहित्य की उन्नति ही अधिक हुई थी । मलयालम में गद्य के नमूने कई शताब्दी पहले उपलब्ध हैं, पर साहित्यिक गद्य का स्फुरण उन्नीसवीं शती के उत्तरार्ध में ही दृष्टिगत होता है । ईसाई पादरियों ने अपने धर्म के प्रचारार्थ जो कार्य किये वे भाषा के विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध हुए । मुद्रण यंत्र की स्थापना से इस प्रक्रिया में अधिक तीव्रता आई । पादरियों ने धार्मिक ग्रन्थों के अतिरिक्त मलयालम के लिए शब्दकोश, व्याकरण आदि भी तैयार किए ।

अंग्रेज़ों के शासन काल में भारत की शिक्षा और प्रणाली के क्षेत्र में नया परिवर्तन आया याने भाषा तथा साहित्य में नवीन प्रवृत्तियाँ आयीं । स्थ

स्थान पर स्कूलों की स्थापना हुई और देशी भाषाओं में पाठ्य पुस्तकों की भी आवश्यकता हुई और पुस्तकें तैयार की गयीं । केरल में भी यही हाल थी । पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त करनेवाले लोगों ने अंग्रेज़ी के अनुकरण में मलयालम में गद्य पुस्तकें लिखना शुरू किया । पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार ने गद्य के विकास को सुगम बनाया । डॉ. हर्मन गुंडर्ट का योगदान अमूल्य है - उनके कोश में शब्दों की व्युत्पत्ति, अर्थ भेद, उच्चारण की रीति आदि कई बातों पर प्रकाश डाला गया है । मलयालम की प्राचीन कृतियों का अध्ययन करने के लिए गुंडर्ट का कोश उपयोगी है । गुंडर्ट का व्याकरण तत्कालीन मलयालम पर एक प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है ।

इस समय पद्य साहित्य में भी नई चेतना का विकास हुआ पर भाषा स्वरूप और शब्द भण्डार की दृष्टि से देखा जाय तो कह सकते हैं कि मलयालम में इस युग में हिन्दी की तरह क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि जैसे पहले बताया गया है, उसके काफी पहले ही मलयालम भाषा का स्वरूप निश्चित हो चुका था ।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में केरल वर्मा वलियकोयित्तम्पुरान और ए.आर. राजराज वर्मा ने मलयालम साहित्य का पुनरुत्थान किया । ये दोनों प्रतिष्ठित विद्वान, अच्छे कवि और साहित्यकार भी थे । केरलवर्मा वलियकोयित्तम्पुरान की रचनाएँ "मयूर सन्देशम" देवयोगम्" स्तुतिशतमकम्-" में संस्कृत शब्दों का प्रचुर प्रयोग हुआ है । राजराजवर्मा की "वृत्त-मंजरी, मध्यम व्याकरण", भी उत्कृष्ट रचनाएँ हैं । ए.आर. की "केरल पाणिनीयम" आज भी करल भाषा का एकमात्र प्रामाणिक व्याकरण है । गद्य के क्षेत्र में उन्होंने अपने व्यक्तित्व की छाप अंकित की थी । उन्होंने आधुनिक ढंग से

गद्य को संवारा ही नहीं, मलयालम में लक्षण-ग्रन्थों की रचना कर गद्य तथा पद्य की व्यवस्था भी स्थिर की । [1]

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक या संभवतः इसके काफी पहले ही मलयालम भाषा का जो रूप निश्चित हो चुका था वह प्रायः स्थायी हो गया और बीसवीं शताब्दी में - अब तक रूप संबन्धी गणनीय परिवर्तन नहीं हुआ है । विविध कालों में और विविध कवियों की रचनाओं में भिन्न भिन्न शैलियाँ मिलती है, भिन्न भिन्न मात्राओं में मलयालम के {द्रविड़ के} और संस्कृत के शब्दों का प्रयोग मिलता है । किंतु उनकी रूप रचना पद्धति समान रही है । संस्कृत शब्दों को भी मलयालम ने पचा लिया है और अपनी प्रकृति के अनुसार उन शब्दों की भी रूप रचना प्रस्तुत की है ।

2.3.2.1. मलयालम का शब्द समूह और क्रिया रूप :-

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाय तो मलयालम का मूल शब्द भंडार द्रविड़ का है । आठवीं शताब्दी से उत्पर जब संस्कृत का प्रभाव पड़ने लगा तब से संस्कृत के शब्द भी मलयालम में आने लगे । यद्यपि प्रारंभ काल में ऐसे शब्दों की संख्या कम थी जैसे कि "रामचरितम" में, मणिप्रवालम काल से लेकर संस्कृत शब्दों की संख्या बहुत बढ़ गयी । इन शब्दों की रूप रचना के विकास की कुछ विशेषतायें हैं ।

पहले द्रविड़ भाषाओं के शब्दों की रूप-रचना तमिल के अनुरूप ही होती थी । माना जाता है कि प्रारंभिक काल में क्रियाओं के साथ पुरुष लिंग वचन प्रत्यय नहीं थे । "रामचरितम" काल से लेकर तमिल के समान मलयालम में भी, मलयालम की क्रियाओं में भी पुरुष लिंग प्रत्यय द्रष्टव्य है ।

---

1. पी.के. कुंजिरामन्-हिन्दी और मलयालम आधुनिक खण्डकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन- 1979- पृ.41

धीरे-धीरे इन प्रत्ययों का लोप हो गया और सोलहवीं शताब्दी में प्रत्यय रहित क्रिया रूप स्थिर हो गये । चेरुश्शेरी की कृष्णगाथा की भाषा इसका उत्तम उदाहरण है । इसकी मंजी हुई भाषा में क्रियाओं के साथ पुरुष लिंग वचन दुर्लभ ही मिलते हैं । परवर्ती भाषा में यही रूप स्थिर हो गया । भाषा स्वरूप में अन्य कुछ परिवर्तन हो गये, तो भी क्रिया रूपों में और परिवर्तन नहीं हुआ ।

1.2.3.2.1.1. मलयालम क्रियायें :-

दूसरी ओर कुछ क्रियायें ऐसी भी हैं जो संज्ञा अथवा विशेषण के साथ "पेटुका", "पेटुत्तुका" "आक्कुका" आदि जोड़कर बनाये जाते हैं ।

पेटुका

अकप्पेटुका {फँसना}
मरणप्पेटुका {मरना}
कटप्पेटुका {आभारना}
वशिप्पेटुका {वश में आना}

पेटुत्तुका

कीषुप्पेटुत्तुका {वश में लेना}
कुर.र.प्पेटुत्तुका {गालियाँ देना}
अकप्पेटुत्तुका {जाल में फँसना}
धैर्यप्पेटुत्तुका {धीरज करना}
शल्यप्पेटुत्तुका {शल्य करना}

आक्कुका

नन्न् - नन्नाक्कुका {ठीक करना}
चूट + आक्कुका = चूटाक्कुका {गरम करना}
वलुत + आक्कुका = वलुताक्कुका {बड़ा करना}

संस्कृत से आये हुए शब्दों का इतिहास कुछ भिन्न है । मणिप्रवालम् काल में जब प्रचुर मात्रा में संस्कृत के शब्दों का प्रयोग मलयालम में होने लगा तब क्रियाओं और अन्य शब्दों की रूप रचना भी संस्कृत व्याकरण के अनुसार होती थी । यह संस्कृत प्रभाव इतना अधिक था कि कहीं-कहीं द्रविड शब्दों के साथ भी संस्कृत प्रत्ययों का प्रयोग किया गया । कहने की आवश्यकता नहीं है कि संस्कृत क्रियाओं में लिंग सूचना नहीं होती केवल पुरुष और वचन की सूचना होती है ।

लेकिन यह शैली मलयालम की स्वाभाविक प्रवृत्ति के प्रतिकूल होने के कारण जल्दी ही लुप्त हो गयी । और संस्कृत क्रियाओं की रूप रचना भी मलयालम के नियमानुसार होने लगी । यही स्वाभाविक प्रवृत्ति परवर्ती भाषा में स्थिर हो गयी और अब तक चलती आ रही है । आज की भाषा में संस्कृत क्रियाओं की ही नहीं, संज्ञाओं से व्युत्पन्न क्रिया रूपों का भी प्रयोग काफी मिलता है । इन सब की रूप रचना मलयालम क्रियाओं की तरह है ।

क्रिया :-

1.2.3.2.1.2. संस्कृत :-

लभ	- लभिक्कुन्नु	-लभिच्चु	- लभिक्कुम्
	(मिलता है)	(मिला)	(मिलेगा)
पठ्	- पठिक्कुन्नु	पठिच्चु	पठिक्कुम्
	(पढ़ता है)	(पढ़ा)	(पढ़ेगा)
पूज्	- पूजिक्कुन्नु	पूजिच्चु	पूजिक्कुम्
	(पूजा करता है)	पूजा किया)	पूजा करेगा)

कोप्	- कोपिक्कुन्नु (क्रोध आता है)	- कोपिच्चु (क्रोध किया)	- कोपिक्कुम् (क्रोध करे
मोह्	- मोहिक्कुन्नु (मोहित करता है)	- मोहिच्चु (मोहित किया)	- मोहिक्कुम् (मोहित क
भ्रम्	- भ्रमिक्कुन्नु (भ्रमित होता है)	- भ्रमिच्चु (भ्रमित हुआ)	- भ्रमिक्कुम् (भ्रमित हो
अनुसरणम्	- अनुसरिक्कुन्नु (मानता है)	- अनुसरिच्चु (मान किया)	- अनुसरिक्कुम् (मानेगा)
व्यसनम्	- व्यसनिक्कुन्नु (खेद है)	- व्यसनिच्चु (खेद हुआ)	- व्यसनिक्कुम् (खेद होगा
स्वीकरणम्	- स्वीकरिक्कुन्नु (स्वीकार करता है)	- स्वीकरिच्चु (स्वीकार किया)	- स्वीकरिक्कु (स्वीका
स्नेहम्	- स्नेहिक्कुन्नु (प्यार करता है)	- स्नेहिच्चु (प्यार किया)	- स्नेहिक्कुम् (प्यार क
सन्दर्शनम्	- सन्दर्शिक्कुन्नु (दर्शन करता है)	- सन्दर्शिक्कुन्नु (दर्शन किया)	- सन्दर्शिक्कु (दर्शन करेग
अनुरकणम्	- अनुकरिक्कुन्नु (अनुकरण करता है)	- अनुकरिच्चु (अनुकरण किया)	- अनुकरिक्कुम् (अनुकरण करे

साथ साथ संस्कृत संज्ञाओं के साथ "चेय्युन्नु", "चेय्यु" आदि क्रि जोड़कर भी रूप रचना की जाती है ।

पेट्टुत्तुक

धैर्यम् - धैर्यप्पेट्टुत्तुक ॥धीरज करना ॥
अपमानम् - अपमानप्पेट्टुत्तुक ॥अपमान करना ॥
शल्यम् - शल्यप्पेट्टुत्तुक ॥तंग करना ॥
प्रीति - प्रीतिप्पेट्टुत्तुक ॥प्यार लग देना॥

चेय्यु

स्वागतम् चेय्युक - ॥स्वागत करना ॥
विवाहम् चेय्युक - ॥शादी करना॥
यात्र चेय्युक - ॥यात्रा करना ॥
सन्धि चेय्युक - ॥सन्धि करना ॥
शल्यम् चेय्युक - ॥ तंग करना ॥
पूज चेय्युक - ॥पूजा करना॥
चिकित्स चेय्युक ॥चिकित्सा करना॥
दोषम् चेय्युक - ॥दोष करना ॥
तरणम् चेय्युक - ॥पार करना॥
पानम् चेय्युक - ॥वितरण करना ॥

सीमित मात्रा में ही सही अंग्रेज़ी के कुछ शब्द भी मलयालम में आ गये हैं । प्रायः अंग्रेज़ी संज्ञाओं को स्वीकृत करके उनके साथ मलयालम की "चेय्" ॥कर॥ क्रिया जोड़कर रूप रचना की जाती है ।

जैसे :- वोट् (Vote) - वोट्टु चेय्युक
पोस्ट (Post) - पोस्ट् चेय्युक
अरस्ट् (Arrest) - अरस्ट चेय्युक
सइन (Sian) - सइन चेययक

अट्टन्द्	(Attend)	- अट्टन्द् चेय्युका
स्ट्राइक्	(Strike)	- स्ट्राइक चेय्युका
फाइल	(File)	- फाइल चेय्युका
लाक्	(lock)	- लाक् चेय्युका
ओण्	(on)	- ओण् चेय्युका
क्लोस	(Close)	- क्लोस चेय्युका

इस तरह हम देखते हैं कि भिन्न श्रोतों से आयी हुई क्रियाओं की रूप रचना में एकरूपता आ गयी है । सभी प्रकार की क्रियाओं की रूप रचना मलयालम में क्रम से विकसित स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार हो है ।

****

दूसरा अध्याय

हिन्दी और मलयालम क्रियाओं की आंतरिक संरचना

दूसरा अध्याय

2 हिन्दी और मलयालम क्रियाओं की आंतरिक संरचना

2.1. क्रिया स्वरूप :-

वाक्य में क्रिया का अत्यधिक महत्त्व है, क्योंकि बोलने या भाषण की इकाई की परिभाषा उसी को केन्द्र बनाकर दी जाती है । वाक्य में कम से कम एक क्रिया का होना अनिवार्य है, और अधिक क्रियायें हो तो संयुक्त या मिश्रित वाक्य बनते हैं । प्रथमतः क्रिया के संबन्ध में व्याकरणकारों की दी गयी परिभाषा पर विचार करेंगे ।

2.1.1. क्रिया की परिभाषा :-

क्रिया की परिभाषा अर्थ के आधार पर या वितरण या रूप के आधार पर दी जा सकती है । कामता प्रसाद गुरु के अनुसार जिस विकारी शब्द के प्रयोग से हम किसी वस्तु के विषय में कुछ विधान करते हैं उसे क्रिया कहते हैं।[1] इसमें "विधान करना" पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है । वस्तु के बारे में जो कुछ कहा जाता है, वही विधान करना है तो "वह चित्र सुन्दर है" में क्रिया "सुन्दर है" या मात्र "है" यह प्रश्न उठता है ।[2]

ज. म. दीमशित्स ने इस तरह क्रिया की परिभाषा को परिमार्जित किया है - क्रिया में ऐसे शब्दों का समावेश होता है जो व्यापार या अवस्था को व्यक्त करते हैं । वाक्य में क्रिया मुख्य रूप से विधेय का कार्य करती है

---

1. कामता प्रसाद गुरु - हिन्दी व्याकरण- पृ. 106

इन सब परिभाषाओं को स्वीकृत करने पर कोई शब्द अकेले आवे तो परिभाषा देना कठिन है । दौड़, छल, छाप, छूट, छेद, जोड़ आदि शब्द स्वतंत्र रूप में आवें तो यह कहना असंभव है कि वे क्रियायें हैं, या संज्ञायें । दोनों हो सकती है, और प्रसंगानुसार निश्चय करना पड़ेगा । व्याकरणिक संदर्भ के तत्वों के आधार पर इसका निर्णय करना मुश्किल हो जाता है ।

इसके लिए रूपाश्रित अथवा वितरण (distribution) पर आधारित परिभाषा उपयोगी होगी । इसके आधार पर §1§ जो शब्द कारक प्रत्यय स्वीकृत करता है उसे संज्ञा कहते हैं , और §2§ जो शब्द काल प्रत्यय स्वीकृत करता है, या कर सकता है, उसे क्रिया कहते हैं ।[1]

1.1.1.1. धातु :-

धातु क्रिया के मूल रूप को कहते हैं । दुनीचंद ने "धातु" की परिभाषा इस प्रकार दी है - क्रिया का मूल धातु है या यूँ कहिए कि क्रिया का वह अंश जो उसके प्राय: सभी रूपों में पाया जाए, धातु कहलाते हैं ।[2] जैसे:-

डरे, डरता, डरा, डरना आदि में "डर" समान रूप से पाया जाता है, इसलिए यही इन सबकी धातु है । इसी प्रकार जाए, जाता, जाना का धातु "जा" है और देवे, देता, दिया, देना का "दे" है ।

दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि क्रिया के सभी रूप धातु से बनाये जाते हैं ।

---

1. गणेशन. एस. एन. -हिन्दी क्रिया की जटिलता, कोचिन विश्वविद्यालय संगोष्ठी में प्रस्तुत लेख
2. दुनीचंद - हिन्दी व्याकरण - पृ. 119

क्रिया धातु में विभिन्न प्रत्यय जोड़ने से क्रिया के विभिन्न रूप बनाए जाते हैं - जैसे:-

चल - ऊं - चलूं	चल - ए - चले
चल् - आ - चला	चल - ती - चलती
चल् - ना - चलना	चल - ऐंगे - चलेंगे

यहाँ क्रमशः "ऊ," "ए", "आ", "ती", "ना", "ऐंगे" आदि प्रत्यय हैं ।

1.1.1. धातु के भेद :-

व्युत्पत्ति के अनुसार धातु दो प्रकार की हैं । §1§ मूल और §2§ यौगिक ।

1.1.1.1. मूल धातु :-

मूल धातु वह है जो किसी और धातु से नहीं बनती । जैसे:- ले, खा, पी, सुन आदि ।

1 1.2. यौगिक धातु :-

मूल धातुओं में पर-प्रत्यय के योग से यौगिक धातुएँ बनती हैं । याने जो धातु किसी दूसरे शब्द से बनायी जाती है वह यौगिक धातु कहलाती है । 1

जैसे:- चलना से चलाना
रंग से रंगना
अपना से अपनाना आदि ।

- -

०1.1.1.1.2.1. यौगिक धातुएँ तीन प्रकार की हैं :-

1. सकर्मक तथा प्रेरणार्थक
2. नामधातु
3. संयुक्त धातु

1.1.1.1.2.1.1. सकर्मक तथा प्रेरणार्थक :-

हिन्दी की अधिकांश सकर्मक क्रियायें और सभी प्रेरणार्थक क्रियायें मूल धातु से व्युत्पन्न यौगिक धातुएँ हैं ।

मूल धातु	सकर्मक	प्रेरणार्थक
चल	चला	चलवा
गिर	गिरा	गिरवा
टूट	तोडा	तुडवा
सो	सुला	सुलवा
डर	डरा	डरवा

{विस्तृत अध्ययन आगे किया जायेगा ।.......}

1.1.1.1.2.1.2. नामधातु :-

नाम धातु वह है, जो क्रिया या धातु के अतिरिक्त अन्य प्रकार के शब्द के आधार पर बनाया जाता है । याने नामधातु संज्ञा, विशेषण, अव्यय अनुकरणात्मक आदि से व्युत्पन्न है - जैसे:-

संज्ञा से :- दुख - दुखा , रिस - रिसा
लालच - ललचा , शरम - शरमा

विशेषण से :- गरम - गरमा विलग - विलगा

अनुकरणात्मक से :-

बड़बड़	- बड़बड़ा	फड़फड़	- फड़फड़ा
थरथर	- थरथरा	हिनहिन्	- हिनहिना

1.1.1.1.2.1.3. संयुक्त धातु :-

एक धातु के साथ, एक या दो धातुओं को जोड़ने से बननेवाले रूप को संयुक्त धातु कहते हैं ।

जैसे :- मर जा, चल पड़, टूट जा, लिख ले

{इसका विवेचन क्रियाओं के भेद में किया जाएगा - देखिए 3.3.1.3.}

1.2. हिन्दी क्रियाओं की आंतरिक संरचना :-

क्रिया धातु अपने अन्दर किन तत्वों के योग से बनी है, उसे उसकी आंतरिक संरचना { Derivation } कह सकते हैं । दूसरे शब्दों में कहें तो वह क्रिया के मूल रूप का आंतरिक संगठन है ।

क्रिया के साथ विविध प्रकार के प्रत्यय जोड़कर जो रूप बनाये जाते हैं उनको बाह्य संरचना अथवा रूप रचना { Inflection } कह सकते हैं । उदाहरण के लिए "चला", मूल धातु चल धातु के साथ "आ" प्रत्यय जोड़ने से बनी है । अतः "चल + आ" चला की आंतरिक संरचना है । किंतु भूतकालीन रूप "चला" "चल" धातु के साथ भूतकाल प्रत्यय "आ" जोड़ने से बना है । इसे "चल" धातु की बाह्य संरचना कह सकते हैं । अन्य कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है ।

1.2. आंतरिक संरचना :-

गरमा	- गरम + आ
दुखा	- दुख + आ
हथिया	- हाथ {हथ} + इया

.2.2. बाह्य संरचना :-

गरमाया	-	गरमा + या
दुखाया	-	दुखा + या
हथियाया	-	हथिया + या

द्रष्टव्य है कि आंतरिक संरचना में आनेवाले प्रत्ययों का रूपांतर नहीं हो सकता । §आ बदल कर "इ" नहीं बनेगा § लेकिन उसके बाद में अन्य प्रत्यय आ सकते हैं । जैसे:-

गरमा + आ /ए/ ई

किंतु बाह्य संरचना में आनेवाले "आ" प्रत्यय का रूपांतर हो सकता है । "आ"बदलकर "ए" और "ई" बन सकता है । उदा:-

गरमाया गरमाए, गरमाई

किंतु उसके बाद अन्य प्रत्यय नहीं आ सकते ।

2.3. यौगिक धातुओं की संरचना :-

2.3.1. आ प्रत्यय युक्त यौगिक धातुओं की संरचना :-

संज्ञा + §आ§ प्रत्यय - संज्ञा मूलक यौगिक धातु

2.3.1.1.

संज्ञा शब्द	प्रत्यय	यौगिक धातु
नज़र	आ	नज़रा
लहर	आ	लहरा
शरम	आ	शरमा
[illegible]	आ	[illegible]

"आ" प्रत्यय के योग से कुछ संज्ञाओं में आ> अ   ई> इ , ओ> उ आदि विकार होते हैं । जैसे :-

2. 3. 1. 1. 1. आ> अ

संज्ञा	प्रत्यय	संज्ञा मूलक यौगिक धातु
लाज {लज}	आ	लजा
आलस {अलस}	आ	अलसा
लालच {ललच}	आ	ललचा
काम {कम}	आ	कमा
हार {हर}	आ	हरा

. 2. 3. 1. 1. 2. ई> इ

कीचड़ {किचड़}	आ	किचड़ा
पीत {पित}	आ	पिता

2. 3. 1. 1. 3. ओ > उ

ठोकर {ठुकर}	आ	ठुकरा
लोभ {लुभ}	आ	लुभा

2. 3. 1. 2. विशेषण मूलक यौगिक धातुओं की संरचना

2. 3. 1. 2. 1. विशेषण + आ

विशेषण शब्द	प्रत्यय	विशेषण मूलक क्रियाधातु
अलग	आ	अलगा
गरम		गरमा

कुछ "आ"कारांत: विशेषण शब्दों में अंतिम "आ" का आ > अ और > Ø -जैसे विकार होते हैं --

3. 1. 2. 1. 1. आ > अ

आकुल	आ	अकुला
तरल		तरला

3. 1. 2. 1. 2. आ > Ø

चिकना	चिकना
दुहरा	दुहरा
लंगड़ा	लंगड़ा
तिहरा	तिहरा

3. 1. 3. अनुकरणात्मक शब्दों से व्युत्पन्न क्रिया धातु

3. 1. 3. 1. अनुकरणात्मक शब्द + आ

शब्द	प्रत्यय	क्रिया धातु
जगमग	आ	जगमगा
गुनगुन		गुनगुना
बड़बड़		बड़बडा
टिम्टिम		टिमटिमा
चहचह		चहचहा
खटखट्		खटखटा
गुद्गुद		गुद्गुदा
चमचम		चमचमा

1.2.3.1.4. क्रिया विशेषण मूलक क्रिया धातु

1.2.3.1.4.1. क्रिया विशेषण शब्द + आ

भीतर	आ	भितरा
ऊपर	आ	उपरा

1.2.3.2. "इया" प्रत्यययुक्त यौगिक धातु

हिन्दी के कुछ संज्ञा तथा विशेषण शब्दों के बाद "इया" प्रत्यय जोडने पर यौगिक धातुएँ व्युत्पन्न होती हैं । प्रत्यय लगाने के बाद इसके योग से शब्दों में आ, अ, इया जैसे परिवर्तन होते हैं ।

1.2.3.2.1. संज्ञा + इया {आ > अ > इया}

संज्ञा शब्द	प्रत्यय	संज्ञा मूलक यौगिक धातु
बात {बत}	इया	बतिया
आग {अग}		अगिया
हाथ {हथ}		हथिया

.3.2.2. विशेषण + इया

विशेषण शब्द	प्रत्यय	विशेषण मूलक क्रिया
आधा {अध}	इया	अधिया
ताढ {तढ़}		तढ़िया
काच्च {कच्च}		कच्चिया

.2.3.3. "ना" प्रत्यययुक्त क्रिया धातु

निजवाचक सर्वनाम "आप" के बाद "ना" प्रत्यय के योग से नाम धातु

क्रिया धातु व्युत्पन्न होती है । सर्वनाम से व्युत्पन्न केवल एक ही क्रिया धातु मिलती है और इसकी संरचना निम्न प्रकार की है

सर्वनाम शब्द	प्रत्यय	सर्वनाम मूल क्रिया धातु
आप (अप)	ना	अपना
अपना	Ø	अपना[1]

1.2.3.4. शून्य प्रत्यय युक्त

1.2.3.4.1. संज्ञा + Ø

कुछ संज्ञाओं का प्रयोग क्रिया धातुओं के समान होता है । प्रयोग की दृष्टि से ये मूलतः संज्ञा और इनका प्रत्यय शून्य है । जैसे :-

1.2.3.4.1.1. अकर्मक

संज्ञा शब्द	प्रत्यय	संज्ञा मूलक क्रिया धातु
चमक्	Ø	चमक
थूक		थूक
धिक्कार		धिक्कार

1.2.3.4.1.2. सकर्मक

खर्च		खर्च
पहचान		पहचान
पुकार		पुकार
विचार		विचार

---

1. इबोहलसिंह काङ•जम, हिन्दी मणिपुरी क्रिया-संरचना- पृ. 62

.2.4. प्रेरणार्थक

संरचना की दृष्टि से हिन्दी प्रेरणार्थक क्रिया धातुएँ दो प्रकार की है {1} प्रथम प्रेरणार्थक एवं {2} द्वितीय प्रेरणार्थक । {विस्तृत विवेचन केलिए दृ. 3. 1. 1. 3. 5.}

2. 4. 1. प्रथम प्रेरणार्थक

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया धातु अकर्मक एवं सकर्मक क्रिया धातुओं के बाद "आ" प्रत्यय जुड़ने से व्युत्पन्न होती हैं । "आ" प्रत्यय जोड़ने पर धातुओं में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन होते हैं । उदा:-

2. 4. 1. 1. "आ" प्रत्यय

2. 4. 1. 1. 1. अकर्मक से व्युत्पन्न प्रेरणार्थक क्रियायें

2. 4. 1. 1. 1. 1. धातु + आ

उठ्	आ	उठा
चल्		चला
जल		जला

.4.1. 1. 1. 2. आ > अ

जाग {जग}	आ	जगा
भाग {भग}		भगा
हार {हर}		हरा
काँप {कँप}		कँपा

.4. 1. 1. 1. 3. ई > इ

भीग {भिग}		भिगा

1.2.4.1.1.1.4. ऊ > उ

घूम (घुम)	आ	घुमा
डूब (डुब)		डुबा
सूझ (सुझ)		सुझा

.2.4.1.1.1.5. ए > इ

खेल (खिल)		खिला
लेट (लिट)		लिटा
रेत (रित)		रिता

.2.4.1.1.1.6. ओ > उ

सोच (सुच)	आ	सुचा
लोट (लुट)		लुटा

.2.4.1.1.2. सकर्मक से व्युत्पन्न

.2.4.1.1.2.1. धातु + आ

सकर्मक शब्द	प्रत्यय	प्रथम प्रेरणार्थक
कह	आ	कहा
चर	आ	चरा
भर	आ	भरा
पढ़	आ	पढ़ा

2.4.1.1.2.1.1. आ > अ

काट (कट)	आ	कटा

2.1.2.4.1.1.2.1.2. ई > इ

तीख (तिख)	आ	तिखा
पीट (पिट)		पिटा
पीत (पित)		पिता
रीझ (रिझ)		रिझा

2.1.2.4.1.1.2.1.3. ऊ > उ

भूल (भुल)		भुला
छू (छुन)		छुना
लूट (लुट)		लुटा

1.2.4.1.1.2.1.4. ए > इ

घेर (घिर)	आ	घिरा
फेर (फिर)	आ	फिरा
बेच (बिच)		बिचा
खेल (खिल)		खिला

1.2.4.1.1.2.1.5. ओ > उ

तोड़ (तुड़)	आ	तुड़ा
बोल (बुल)		बुला
खोल (खुल)		खुला
जोड़ (जुड़)		जुड़ा

1.2.4.1.2. "ला" प्रत्ययुक्त

1.2.4.1.2.1. अकर्मक

ऐ > इ

बैठ (बिठ)	ला	बिठला

ओ > उ

रो (रुला)	ला	रुला
सो (सुला)	ला	सुला

1.2.4.1.2.2. सकर्मक से व्युत्पन्न

कह्	ला	कहला

ई > इ

पी (पि)	ला	पिला
सीख (सिख)	ला	सिखला

ऊ > उ

छू (छु)	ला	छुला

आ > इ

खा (खि)	ला	खिला

ए > ई

दे (दि)	ला	दिला
देख (दिख)		दिखला

1.2.4.1.3. शून्य प्रत्यय युक्त

कुछ "आ" अंतवाले अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं का प्रयोग प्रथम प्रेरणार्थक के रूप में होता है, वहाँ ऐसे शब्दों का प्रत्यय "शून्य" माना जाता है। जैसे :-

1.2.4.1.3.1. अकर्मक से व्युत्पन्न

अकर्मक क्रिया	प्रत्यय	प्रथम प्रेरणार्थक
गरमा	∅	गरमा
लहरा		लहरा
घबरा		घबरा
शरमा		शरमा
तंकुचा		तंकुचा

1.2.4.1.3.2. सकर्मक से व्युत्पन्न

कमा	∅	कमा
दुखा		दुखा
डरा		डरा
चमका		चमका
ठुकरा		ठुकरा

1.2.4.2. द्वितीय प्रेरणार्थक

अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं के अंत में "वा" एवं "लवा" प्रत्यय जोडकर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनायी जाती है ।

1.2.4.2.1. "वा" प्रत्यय-युक्त

1.2.4.2.1.1. अकर्मक शब्द	प्रत्यय	द्वितीय प्रेरणार्थक
गिर	वा	गिरवा
उठ		उठवा
लड़		लड़वा
पक		पकवा
उड़		उडवा

> अ

जाग (जग)	वा	जगवा
हार (हर)		हरवा

> उ

घूम (घुम)	वा	घुमवा
झूल (झुल)		झुलवा

> इ

लेट (लिट)	वा	लिटवा
खेल (खिल)		खिलवा
घेर (घिर)		घिरवा

> इ

भीग (भिग)		भिगवा
भीज (भिज)		भिजवा

> इ

बैठ (बिठ)	वा	बिठवा
तैर (तिर)		तिरवा

> उ

सोच (सुच)	वा	सुचवा
लोट (लुट)		लुटवा

4.2.1.2. सकर्मक से व्युत्पन्न

सकर्मक	प्रत्यय	द्वितीय प्रेरणार्थक

"वा" जोड़ने के बाद विभिन्न क्रियाओं में होनेवाले परिवर्तन :-

आ > अ

काट	{कट}	वा	कटवा
छाप	{छप}		छपवा
चाख	{चख}		चखवा

ए > इ

भेज	{भिज}	भिजवा
ले	{लि}	लिवा

ओ > उ

ओढ़	{उढ़}	उढ़वा
जोड़	{जुड}	जुड़वा
मोड़	{मुड़}	मुड़वा

2.1.2.4.2.2. "लवा" प्रत्यय युक्त

2.1.2.4.2.2.1. अकर्मक और सकर्मक से व्युत्पन्न धातुएँ और उनमें "लवा" जोड़ने पर होनेवाले परिवर्तन निम्न प्रकार की है ।

ई > इ

ऊ > उ

ओ > उ

रो	{रु}	लवा	रुलवा
सो	{सु}		सुलवा

2. 1. 2. 4. 2. 2. 2. सकर्मक से व्युत्पन्न

कह	लवा	कहलवा
आ > इ		
खा (खि)	लवा	खिलवा
ई > इ		
पी (पि)	लवा	पिलवा
सी (सि)		सिलवा
ऊ > उ		
छू (छु)	लवा	छुलवा
ओ > उ		
धो (धु)	लवा	धुलवा
ए > इ		
दे (दि)	लवा	दिलवा

1. 3. मलयालम क्रियाओं की आंतरिक संरचना (

संरचना की दृष्टि से मलयालम में भी दो तरह की धातुएँ हैं -- मूल और व्युत्पन्न । मलयालम में इसे मूल प्रकृति और व्युत्पन्न प्रकृति कहते हैं ।

1. 3. 1. मूल धातु

1. 3. 1. 1. अकर्मक (देखिए पृ. 3. 1. 1. 1.)

पो (जा)	वर् (आ)
ओद (दौड़),	कूम्ब (बन्द हो)
आद (झूम)	नद (चल्)

1.3.1.2. सकर्मक

तिन्न् (खा)	काण् (देख)
उण् (खा)	चेय् (कर)
एरि (फेंक)	एट् (ले)

1.3.2. व्युत्पन्न धातु

व्युत्पन्न धातु तीन प्रकार के हैं :-

1. नाम धातुएँ
2. सकर्मक तथा प्रेरणार्थक
3. संयुक्त धातु

1.3.2.1. नाम धातु

नाम या संज्ञा से उत्पन्न होनेवाली धातुएँ हैं नामधातु [1] अथवा नाम या संज्ञा के साथ प्रत्यय जोड़ने पर, या प्रत्यय के बिना जो धातु बनती है उसे नाम धातु कहते हैं । [2] व्याकरणकार शेषगिरि प्रभु ने ऐसे शब्दों को नाम धातु माना है जो संज्ञाओं के साथ "क्क" अथवा इक्क जोड़कर बनाया जाता है । [3]

1.3.2.1.1. नाम धातुएँ (प्रत्यय सहित)

संज्ञा + क्क

तटि (मोटा)	-	तटिक्कु (मोटा हो)
चुम्म (खाँसी)	-	चुमयक्क् (खाँस
पोटि (धूल)	-	पोटिक्क् (पीस)
तल्लु (मार, पीट)	-	तल्लियक्क् (पिटवा)
मरा (परदा)	-	मरयक्क् (परदा कर, छिपा)
वला (जाल)	-	वलयक्क् (फँसा - तकलीफ दे)

- -

1.3.2.1.2. प्रत्यय के बिना

पोटि §धूल§	-	पोटि §पिस§
तल्लु §मार§	-	तल्लु §मार§
अटि §पीट §	-	अटि §पीट§

1.3.2.1.3. अनुकरण शब्द से

मुरुमुरु	-	मुरुमुरुक्क्
§कुड़बुड् §		§कुड़बुडा §
पिरुपिरु	-	पिरुपिरुक्क्
§गुनगुन§		§गुनगुना§
करुकरु	-	करुकरुक्क्
§काला §		काला हो §

1.3.2.1.4. सामासिक

"पेद्" धातु के साथ "समास" करके भी नाम धातु बनायी जाती है ।

पणि	-	पणिप्पेटु
§काम §		§कोशिश कर §
अटि	-	अटिप्पेटु
§मार§		§फँस§
तीर्च्च	-	तीर्च्चप्पेटु
§जरूर§		§मालुम हो §
वषि	-	वषिप्पेटु
§रास्ता§		(वंश में हो §

.3.2.2. सकर्मक तथा प्रेरणार्थक

हिन्दी की तरह अधिकांश सकर्मक क्रियायें और सभी प्रेरणार्थक

मूल धातु	सकर्मक	प्रेरणार्थक
ओटु	ओट्टु	ओट्टिप्पिक्क्
(दौड़)	(दौड़ा)	(दौड़वा)
परऽ	परयिक्क्	परयिप्पिक्क्
(कह)	(कहा)	(कहलवा)
एटु	एटुक्क्	एटुप्पिक्क्
(ले)	(लिवा)	(लिवा)
मूटु	मूट्टु	मूट्टिप्पिक्क्
(ओढ़)	(ओढ़ा)	(ओढ़वा)
तेय्	तेय्क्क्	तेय्प्पिक्क
(लग)	(लगा)	(लगवा)
तल्ल्	तल्लिक्क्	तल्लिप्पिक्क्
(पीट)	(पिटा)	(पिटवा)

1.3.2.3. संयुक्त धातु

एक क्रिया के साथ (कृदन्त के साथ) दूसरी क्रिया धातु के योग से संयुक्त क्रिया बनती है । यहाँ हिन्दी की तरह धातु के साथ धातु का योग नहीं होता ।

जैसे :-

मरि - मरिच्चु पो -
(मर) (मर जा)

एषुतु - एषुति एटु -
(लिख) (लिख ले -)

कटऽ - कटन्नु कळऽ -

(भूल)		(भूल जा -)
एषुति	-	एषुति वयु -
(लिख)		(लिख दे -)

3.2.3.1. आंतरिक संरचना (प्रत्यय जोड़कर)

यौगिक क्रियाओं की संरचना

स्वरांत वाली संज्ञाओं के साथ "क" "क्क" प्रत्यय लगाने पर क्रिया धातु बनायी जा सकती है। "मलयालम व्याकरणकारों ने ऐसी क्रियाओं को केवल क्रिया माना है (देखिए -पृ. 3.2.1.3.1.1.)

3.2.3.1.1. अकारित

3.2.3.1.1.1. संज्ञा + प्रत्यय

3.2.3.1.1.1.1. अ + यु

संज्ञा	प्रत्यय	क्रिया धातु
वरऽ	अ + यु	वरयु - (वरयुन्न)
(खींच)		(खींच)
वलऽ		वलयु
(भटक)		(भटक-)
पुकऽ		पुकयु
(धुआ)		(धुआ उठ-)
उरऽ		उरयु.
(जम)		(जम हो जा)
पतऽ		पतयु

विळ्	अ+ य्	विळय्
(पक्का)		(पक्का हो -)
मर्		मरय्
(पर्दा)		(पर्दा कर-)
वळ्		वळय्
(मोड-)		(फेर हो-)

3.2.3.1.1.2. इ + य्

संज्ञा	प्रत्यय	धातु
करि	इ + य्	करिय् (करियुक)
(कोयला)	--	(जल-, बुझ जा-)
चोरि.		चोरिय्
(खुजली)		(खुजला)
नुरि		नुरिय्
तिरि		तिरिय्
(पर्दा)		(घूम -)
पोरि		पोरिय्
(चिनगारी)		(भून -)

3.2.3.1.1.2. कारित क्रिया

3.2.3.1.1.2.1. अ (अय्) + क्क

संज्ञा	प्रत्यय	धातु
चुम्	(अय्) + क्क	चुमयुक्क् -
(खाँसी)		(खाँस कर-)

वर्/	(अय्) + क्क	वरय्क्क्-
(खींच)		(खींच -)
चुव्/		चुवय्क्क् -
(स्वाद)		(स्वाद हो -)
नट्/		नटक्क्
(चाल)		(चल-)
नर्/		नरय्क्क्

2.3.1.1.2.2. इ + य् + क्क

संज्ञा	प्रत्यय	धातु
पेटि	इ+ क्क्	पेटिक्क्
(डर)	-	(डर हो-)
तटि		तटिक्क् -
(मोटापन)		(मोटा हो)
पनि		पनिक्क् -
(बुखार)		(बुखार हो-)
कळि		कळिक्क्
(खेल)		(खेल-)
विळि		विळिक्क्
(पुकार)		(पुकार कर-)
चिरि		चिरिक्क्
(हँसी)		(हँस-)
काटि		(काटिक्क्-
(काट)		(काट-)

जिन संज्ञाओं के अंत में संवृत या अनुस्वार हो, वहाँ अंतिम अनुस्वार या संवृत्तों का लोप करके, उनके साथ "इ" और "क्क" जोड़कर धातुएँ बनायी जाती है ।

.2.3.1.1.2.3. अम इ+ क्क

संज्ञा	प्रत्यय	क्रिया धातु
वीतन् (भाग)	अम इ + क्क	वीतिक्क् (बाँट कर-)
सम्मतन् (अनुमति)		सम्मतिक्क् (अनुमति दे-)
तामतन् (रहना)		तामतिक्क् (रह-)
व्यतनन् (दुःख)		व्यतनिक्क्- (दुःख -)
बहुमानन् (आदर)		बहुमानिक्क् - (आदर कर-)
गणनम् (गिनाव)		गणिक्क् (गिनकर-)
कोपन् (क्रोध)		कोपिक्क् (क्रोध कर-)
ओन्न् (एक)		ओन्निक्क् (एक हो जा-)
तष़म्ब (चिह्न)		तष़म्बिक्क् (कड़ा हो)

2.3.1.2. अनुकरणात्मक शब्द + प्रत्यय

संज्ञाओं के समान अनुकरण शब्दों के साथ भी "क्क" प्रत्यय जोड़कर
ु बनायी जाती है ।

नुकरण शब्द	प्रत्यय	क्रिया धातु
रमुर	क्क	मुरमुरक्क्
ड़बुड -)		(कुड़बुड़ा-)
. पर/		परपरक्क्
)		( )
लचिल		चिलचिलप्क्क्
चहचह)		(चहचहा)
नु मिनु		मिनुमिनुक्क्
टिमटिम)		(टिमटिमा)
कल		कलकलक्क्
काला काला)		(काला काला)
ळु		वेळुवेळुक्क्
गोरा गोरा)		(गोरा गोरा)
शु		कुशुकुशुक्क्
फुस फुस)		(फुसफुसा)

प्रयोजक (प्रेरणार्थक) क्रियायें

प्रयोजक (प्रथम प्रेरणार्थक)

1. अकारित (यु-कारांत) + क्क

यु + क्क

अकारित	प्रत्यय	केवल प्रयोजक
उटय् -	क्क	उटयक्क्-
(टूट-)		(तोड़-)
तिरय्		तिरयक्क्
(ढूँढ-)		(ढूँढ-)
चमय्		चमयक्क्
(तज्)		(सजा)
वरय्		वरयक्क् -
(खींच)		(खींच-)
वलय्		(वलयक्क् -
(थक-)		(थका-)
तेर.र्.		तेरि.र.क्क्
(गलत-)		(गलति कर-)
पर.र्.		परि.र.क्क्
(धोखा)		(धोखा दे-)

.1.4.1.2. कारित + प्पि

कारित धातुओं में "प्पि" के योग से केवल प्रयोजक धातु व्युत्पन्न होती है ।

कारित धातु	प्रत्यय	केवल प्रयोजक
तोल्क्क्	"प्पि"	तोल्प्पिक्क्
(हार-)		(हरा-)

कारित धातु	प्रत्यय	केवल प्रयोजक
केळ्क्क्	प्प	केळ्प्पिक्क्
(सुन्)		(सुना)
विल्क्क्		विल्प्पिक्क्
(बेच)		(बेच-)
तिळय्क्क्		तिळप्पिक्क्
(उबल-)		(उबला)
उर॰ यक्क्		उरप्पिक्क्
(जम हो -)		(जक करा-)
विळिक्क्		(विळिप्पिक्क्
(पुकार)		(बुला)
चिरिक्क्		चिरिप्पिक्क्
(हँस -)		(हँसा-)

1.4.1.3. अकारित/कारित + त्तु

मलयालम में कुछ अकारित और कारित धातुओं के साथ "त्तु" जोड़कर केवल प्रयोजक (प्रथम प्रेरणार्थक) धातुएँ बनायी जाती है ।

अकारित	प्रत्यय	केवल प्रयोजक (प्र.प्रे)
वर॰	त्तु	वरुत्त् -
(आ)		(आ)
ताष़्		ताष़्त्त्
(डूब-)		(डुबो-)
वीष़् (गिर)		वीष़्त्तु
(गिर)		(गिरा-)

कारित

नट/ (नटक्)	त्तु	नटत्तु
(चल)		(चला)
कट/ (कटक्)		कटत्त् -
(प्रवेश कर)		(प्रवेश करा)
किट/ (किटक्)		किटत्त्
(लेट)		(लिटा -)

4.1.4. द्वित्तीकरण :-

कुछ अकारित धातुओं को प्रयोजक बनाते समय अंत्य व्यंजन का द्वित्व हो जाता है ।

र > र्. र.

धातु	द्वित्व	प्रथम प्रेरणार्थक
मार्.	र > र्. र	मार्. र्.
(बदल-)		(बदला-)
पोक् -	क > क्क	पोक्क्
(जा -)		(जा -)
ओट् -	ट > ट्ट	ओट्ट -
(दौड़ -)		(दौड़ा)
आट् -	ट > ट्ट	आट्ट -
(झूल-)		(झुला -)

कुछ धातुओं के अंत्य अनुनासिक "ङ.ङ." के स्थान पर "क्क" का प्रयोग किया जाता है ।

धातु		प्रेरणार्थक
पोड़्ड़्	ड़ड़ क्क	पोक्क् -
(उठ-)		(उठा-)
कलड़्ड़्		कलक्क्-
(गल-)		
तूड़्ड़्		तूक्क्-
(हाँक -)		
करड़्ड़्		करक्क्-
(घूम -)		(घुमा-)
पुरड़्ड़्		पुरक्क् -
(छोटा हो-)		(छोटा कर-)
ओरड़्ड़्		ओरक्क्
(सज-)		(सजा)
कुटुड़्ड़्		कुरक्क्
(फँस-)		(फँसा -)

.4.2. द्विगुण प्रयोजक (द्वितीय प्रेरणार्थक)

द्विगुण प्रयोजक क्रियायें, सकर्मक एवं अकर्मक धातु के साथ "प्प" जोड़ने से व्युत्पन्न होती है ।

.4.2.1. सकर्मक से

धातु	प्रत्यय	द्वितीय प्रेरणार्थक
काण्	प्प	काणिप्पक्क्
(देख -)		(दिखा-)

धातु	प्रत्यय	द्वितीय प्रेरणार्थक
एरि (फेंक)	प्पि	एरियिप्पिक्क् (फेंक -)
पणि (न)		पणियिप्पिक्क् (बना-)
नूद (ओढ़-)		नूटिप्पिक्क् - (ओढ़-)
चूद (पहन)		चूटिप्पिक्क् (पहना-)

..2. अकर्मक ते

ओद (दौड़)	प्पि	ओटिप्पिक्क् (दौड़वा-)
पोक् (जा)		पोयिप्पिक्क् (जा-)
उणर्. (-)		उणर्त्तिप्पिक्क् (जगा -)
(लंबा कर)		नीट्टिप्पिक्क् (लंबा कर-)
ताष् - (डूब -)		ताष्त्तिप्पिक्क् - (डुबवा -)

हिन्दी और मलयालम क्रियाओं की आंतरिक संरचना - साम्य एवं वैषम्य

व्युत्पत्ति के अनुसार दोनों भाषाओं में क्रिया धातु दो प्रकार की होती है - मूल और व्युत्पन्न । मूल धातु वे हैं जो किसी दूसरे शब्द से नहीं बनती और व्युत्पन्न धातु वे हैं जो किसी दूसरे शब्द से बनायी जाती हैं ।

मूल धातु

हि	चल,	आ,	दौड़
	गा,	कर,	जा....

म:	नट्,	वर् ,	ओद्
	पाद् ,	चेय् ,	पोक्

व्युत्पन्न धातु

हि	चल	- चला
	पकड़	- पकड़ा
	गिर	- गिरा
	गरम	- गरमा

म	नट्	-नटत्तिक्क् -
	(चल)	(चला -)
	वीष्	- वीषुत्तिक्क्
	(गिर)	(गिरा-)
	वर्.	- वरुत्तिक्क्
	(आ)	(आ-)
	एषुत्	- एषुतिक्क्
	[illegible]	[illegible]

दोनों भाषाओं में व्युत्पन्न धातुओं के तीन भेद होते हैं --

1. सकर्मक तथा प्रेरणार्थक
2. नाम धातु
3. संयुक्त धातु

मूल धातु	सकर्मक	प्रेरणार्थक
चल्	चला	चलवा -
गिर	गिरा	गिरवा -
जाग	जगा	जगवा-
उठ	उठा	उठवा-
डर	डरा	डरवा-

हिन्दी में "आ" जोड़कर प्रथम प्रेरणार्थक और "वा" जोड़कर द्वितीय प्रेरणार्थक बनायी जाती है । मलयालम में इनके स्थान पर बहुत से प्रत्यय है । (देखें पृ. 3. 2. 1. 5.) नीचे कुछ उदाहरण मात्र दिये जाते हैं ।

वीष़्	वीष़्त्त्	वीष़्त्तिक्क् -
(गिर)	(गिरा)	(गिरवा)
पर्	परयिक्क्	परयिप्पिक्क्
(कह)	(कहला)	(कहलवा)
वर.	वरुत्तु	वरुत्तिप्पिक्क् -
(आ)	(आ)	(आ)
ननय्	ननयुक्क् -	ननप्पिक्क् -
(भीग)	(भिगो)	(भिगवा)
मुङ्ङ्	मुक्क्-	मुक्किक्क्-
(डूब)	(डूबो)	(डुबवा)

दोनों भाषाओं में नाम धातु- क्रियायें संज्ञा से, विशेषण से, अथवा अनुकरणात्मक शब्दों से बनायी जाती है ।

<u>संज्ञा से</u>

हि   दुःख   - दुखा
      शरम   - शरमा
      लाज   - लजा

म   तटि   (मोटेपन) - तटिक्क् (मोटा- हो)
      चुमा   (खाँसी) - चुमक्क् - (खाँस)
      पुक   (धुंआ) - पुकय्- (धुआ हो)

<u>विशेषण से</u>

हि   गरम   - गरमा
      मस्त   - मस्ता

म   चूट   (गरम) - चूटाक्क् - (गरमा)
      नल्   (अच्छा) - नन्नक्क् - (अच्छा बना)

<u>अनुकरणात्मक शब्द से</u>

हि   बड़बड़   - बड़बड़ा-
      थरथर   - थरथरा-

म: मुरुमुरु   - मुरुमुरुक्क्
      (कुड़बुड)   (कुड़बुड़ा)
      चिलचिल्   - चिलचिलयुक्क्
      (चहचह)   (चहचहा-)

<u>संयुक्त धातु से</u>

म: वीणु पोकुक (गिर जाना)
एऴुति रटुक्क्- (लिख ले-)
कोन्नु कळयुक (मार डालना)

इस तरह हम देखते हैं कि दोनों भाषाओं की क्रियाओं की आंतरिक संरचना में अत्यधिक साम्य है । दोनों में मूल धातु , (अकर्मक और सकर्मक) व्युत्पन्न धातु (सकर्मक और प्रेरणार्थक) नाम धातुओं तथा संयुक्त धातुओं का प्रयोग होता है । व्युत्पन्न धातुएँ और नाम धातुएँ प्रत्यय जोड़कर बनायी जाती हैं । संयुक्त धातुओं में एकाधिक क्रियाओं का प्रयोग होता है । प्रत्ययों तथा संयुक्त धातुओं में प्रयुक्त क्रियाओं के रूप भिन्न होते हैं तो भी सामान्य रचना पद्धति में अधिक समानतायें हैं ।

****

तीसरा अध्याय

हिन्दी और मलयालम क्रियाओं के भेद

तीसरा अध्याय

3.0. हिन्दी और मलयालम क्रियाओं के भेद

3.1. हिन्दी क्रियाओं के भेद

प्रयोग की दृष्टि से हिन्दी क्रियाओं को दो विभागों में विभक्त किया जा सकता है - (1) मुख्य क्रिया जो स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त हो सकती है और (2) सहायक क्रिया जो मुख्य क्रिया के साथ ही आ सकती है ।

3.1.1. मुख्य क्रिया :-

अर्थ की दृष्टि से मुख्य क्रियाओं के दो भेद है - अकर्मक और सकर्मक ।

3.1.1.1. अकर्मक क्रिया :-

व्यापार या कार्य करनेवाले को कर्ता और उस व्यापार का फल कर्ता से निकल कर जिस वस्तु पर पड़ता है उसे कर्म कहते हैं ।[1] जिस क्रिया का कर्म न हो वह अकर्मक कहलाती है ।[2] याने जिन क्रियाओं के व्यापार और फल - दोनों कर्ता में ही होते हैं अर्थात् जहाँ कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं ।[3]

जैसे :- लड़का आता है ।
गाड़ी चलती है ।
मोहन सो रहा है ।

-यहाँ "आता है", "चलती है", "सो रहा है" अकर्मक क्रियाएँ हैं जिनका कर्म नहीं, और इनके फल क्रमशः "लड़का" "गाडी" और "मोहन" पर ही पड़ता है , जो कर्ता है ।

---

1. रामदेव, व्याकरण प्रदीप -पृ. 84

अकर्मक क्रियाओं को अर्थ के अनुसार तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है । सक्रिय अकर्मक क्रिया (Active Intransitive) निष्क्रिय अकर्मक क्रिया (Passive Intransitive) और अस्तित्व सूचक अकर्मक क्रिया (Extensial Intransitive) सक्रिय अकर्मक क्रिया सभी क्रियाओं के द्वारा सूचित कार्य एक की तरह के नहीं होते । आना, जाना, तैरना आदि के द्वारा ऐसे कार्य सूचित होते हैं जो स्पष्टतः किये जाते हैं । ऐसी क्रियाओं को सक्रिय अकर्मक क्रियायें कह सकते हैं । इसके विपरीत सोना, रहना आदि क्रियायें ऐसी है जिनके द्वारा कोई सक्रिय कार्य सूचित नहीं होता। ऐसी क्रियाओं को निष्क्रिय अकर्मक क्रिया कह सकते हैं । कई एक ऐसी क्रियायें हैं (होना) जो केवल अस्तित्व को सूचित करते हैं ऐसी क्रियाओं को अस्तित्व सूचक अकर्मक क्रिया कह सकते हैं ।

कुछ व्याकरणकारों ने अकर्मक क्रियाओं को स्थिति सूचक (Stative) अस्थिति सूचक या गति सूचक (non - stative) इन दो प्रकारों में विभक्त किया है । सोचना, देखना, सोना, सुनना आदि स्थिति सूचक है पर जाना, चलना, दौड़ना, भागना, भेजना आदि गति-सूचक ।

5.1.1.2. सकर्मक क्रिया :-

सकर्मक क्रिया की - सामान्यतः मानी हुई परिभाषा है - जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड कर्म पर पड़ता है वह सकर्मक क्रिया है । याने जिस धातु से सूचित होनेवाले व्यापार का फल कर्ता से निकलकर किसी दूसरी वस्तु पर पड़ता है , उसे सकर्मक धातु कहते हैं ।

बच्चा दूध पीता है ।

सीता चिट्ठी लिखती है ।

माँ बच्चे को पीटती है ।

-इन वाक्यों में पीना, पीटना, लिखना क्रियाओं का फल क्रमशः बच्चा, माँ, सीता पर पड़ता है । इन धातुओं से सूचित व्यापारों का फल कर्ता से निकल कर क्रमशः दूध, चिट्ठी और बच्चे पर है, जिन्हें कर्म माना जाता है ।

किंतु इस परिभाषा से सकर्मकता का भाव और उसके भेद पूर्णतः स्पष्ट नहीं होते । निम्नलिखित वाक्यों को देखिए ---

राजू ने मेज़ तोड़ी।
लड़के ने आम खाया।
राजू ने मेज़ बनायी।
मैं ने चिट्ठी लिखी।

इनमें पहले दो वाक्यों में और अंतिम दो वाक्यों में स्पष्टतः अंतर है । पहले दो वाक्यों में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है । लेकिन तीसरे और चौथे वाक्यों मे ं यथाकथित कर्म से सूचित वस्तु का अस्तित्व पहले नहीं या क्रिया के फलस्वरूप ही उनका निर्माण होता है । वस्तु पहले नहीं थी इसलिए उसपर क्रिया के प्रभाव की समस्या नहीं उठती । इस दशा में दोनों प्रकार के कर्मों को समान मानना ठीक है यह समस्या उठती है ।

इनको क्रमशः प्रभावित कर्म (affectum) और उत्पादित कर्म (effectum) कहा जाता है ।

- -

चार्ल्स् जे फिल्मोर ने ग्रीक के इन शब्दों से ऐसी क्रियाओं के भेद को दिखाया है । जर्मन् में इनको 'affiziertes object' and'effiziertes object' कहते हैं । chales J Fillmoore - The case for case, Universals in Linguistic theory edited by Emmon Batch and Robert T.Harms - p.4.

3.1.1.3. अपूर्ण क्रियायें :-

अर्थ पूर्णता की दृष्टि से अपूर्ण क्रियायें दो प्रकार की होती हैं -- अपूर्ण अकर्मक और अपूर्ण सकर्मक ।

3.1.1.3.1. अपूर्ण अकर्मक क्रिया

जिन अकर्मक क्रियाओं का आशय स्वयं पूर्ण नहीं होता और उसके लिए संज्ञा या विशेषण शब्दों की आवश्यकता रहती है, उन्हें अपूर्ण अकर्मक क्रियायें कहते हैं । ऐसी अकर्मक क्रियायें कर्ता के होते हुए भी पूर्ण अर्थ प्रकट नहीं कर पातीं ।

उदा: मोहन क्लर्क हो गया ।
चन्द्रशेखर प्रधान मंत्री बने ।
दादी बीमार हो गयी ।

इन वाक्यों में "क्लर्क", "प्रधान मंत्री", "बीमार", - इन शब्दों के न होने पर वाक्य पूर्ण भाव नहीं देते । क्रिया के अर्थ को पूर्ण बनाने केलिए इन शब्दों की अपेक्षा है । अत: इन शब्दों को पूरक कहते हैं । "क्लर्क" और "मंत्री" पूरक संज्ञाये हैं , "बीमार", पूरक विशेषण है । क्रियायें अपूर्ण अकर्मक क्रियायें हैं । अत: पूरक कर्ता की ओर संकेत करता है और कर्तृ-पूरक माने जाते हैं ।

होना, रहना, बनाना, दीखना, निकलना, कहलाना, ठहरना आदि अपूर्ण अकर्मक क्रियायें हैं ।

3.1.1.3.2. अपूर्ण सकर्मक :-

जिन सकर्मक क्रियाओं का आशय एक कर्म के होने पर भी पूर्ण नहीं होता और आशय को पूर्ण करने केलिए संज्ञा या विशेषण की आवश्यकता पड़ती

है, उनको अपूर्ण सकर्मक क्रिया कहते हैं । अथवा जो सकर्मक क्रियाएँ कर्म के होते हुए भी पूर्ण अर्थ नहीं कर पाती, वे अपूर्ण सकर्मक कहलाती है । [1]

जैसे :- 1. कौन तुझे कहता है ।

2. प्रधान मंत्री ने पुत्र को बनाया ।

-- इन वाक्यों में कर्ता, कर्म और क्रिया तीनों विद्यमान हैं । पर वाक्य अधूरा सा ज्ञात होता है । वाक्य के आशय को व्यक्त करने केलिए कोई शब्द जोड़ना पड़ता है । याने आशय को पहले वाक्य में "देशद्रोही" या "देश भक्त" शब्द जोडकर और दूसरे वाक्य में "निजी सचिव" या "अपने उत्तरदायी" शब्द जोड़कर -

1. कौन तुझे देश द्रोही कहता है या
   कौन तुझे देश-भक्त कहते हैं - तथा

2. प्रधान मंत्री ने पुत्र को निजी सचिव बनाया या
   प्रधान मंत्री ने पुत्र को अपना उत्तरदायी बनाया ---

बनावें तो वाक्य पूर्ण हो जाता है । अत: "कहता है", और "बनाया" क्रिया यहाँ अपूर्ण सकर्मक हैं और "देश द्रोही", "देश भक्त" तथा "निजी - सचिव", "उत्तरदायी" कर्म पूरक हैं । सकर्मक क्रियाओं के दो भेद हैं

1. एक कर्मक 2. द्विकर्मक

---

1. सनतुखराम गुप्त ॥ सरल हिन्दी व्याकरण, 1989, पृ. 206
   ओमप्रकाश शर्मा ॥

1.1.3.2.1. एककर्मक :-

एक कर्मक क्रिया का एक ही कर्म होता है ।

जैसे :- मैं ने चाय पी ।

अध्यापक कविता पढाते हैं ।

दादी कहानी कहेगी ।

मैं ने चिट्ठी लिखी थी ।

.3.2.2. द्विकर्मक :-

जिन सकर्मक क्रियाओं के दो कर्म होते हैं उन्हें द्विकर्मक कहते हैं । ऐसी क्रियाओं की अर्थ पूर्ति एक कर्म से नहीं होती ।

उदा:- उसने गरीबों को वस्त्र दिये ।

राम मोहन को पत्र लिखता है ।

मैं ने उसको एक गाय दी ।

माता ने बच्चे को कहानी सुनाई

-इनमें देना, लिखना सुनाना आदि द्विकर्मक क्रियायें हैं । द्विकर्मक क्रियाओं का एक कर्म प्राणिवाचक होता है जिसे गौण कर्म कहते हैं, तथा दूसरा कर्म अप्राणिवाचक या प्राणिवाचक हो सकता है, जिसे मुख्य कर्म कहते हैं । उपर्युक्त उदाहरणों में "गरिब", "मोहन", "वह", और "बच्चा" गौण कर्म है । दूसरे कर्मों में "वस्त्र", "पत्र", "कहानी", अप्राणिवाचक है । गाय प्राणिवाचक तथा "वस्त्र", "पत्र" ,"गाय" और "कहानी" मुख्य कर्म हैं ।

कुछ धातुएँ कभी एक कर्मक होती हैं तो कभी द्विकर्मक ।

उदा: राम पत्र लिख रहा है । (एक कर्मक)

राम अपने मित्र को पत्र लिख रहा है । (द्विकर्मक)

गौण कर्म के साथ कारक चिह्न (ए, उसे, इसे, एँ, उन्हें इन्हें, को - मित्र को) अवश्य आता है, किंतु मुख्य कर्म के साथ नहीं आता ।[1]

3.1.1.3.4. पूर्ण क्रियायें :-

अपूर्ण क्रियाओं की तरह पूर्ण क्रियायें भी दो प्रकार की हैं -- पूर्ण अकर्मक और पूर्ण सकर्मक ।

3.1.1.3.4.1. पूर्ण अकर्मक :-

पूर्ण अकर्मक क्रिया वह है, जिससे पूर्ण अर्थ का बोध होता है । याने उसके अर्थ को स्पष्ट करने केलिए कर्ता और क्रिया के अलावा और कोई अन्य शब्द अनिवार्य नहीं होते ।

उदा: घोड़ा दौड़ता है ।

मैं सोता हूँ ।

3.1.1.3.4.2. पूर्ण सकर्मक

पूर्ण सकर्मक क्रिया वह है, जिसका आशय कर्म सहित होने पर पूर्ण से प्रकट होता है । याने पूर्ण सकर्मक क्रिया को किसी दूसरे कर्म या पूर्ति शब्द की अपेक्षा नहीं होती ।

उदा:- बच्चा रोटी खाता है ।

--इसमें "खाना" क्रिया पूर्ण सकर्मक है क्योंकि उसका व्यापार करनेवाला "बच्चा" कर्ता है और रोटी कर्म है और ये वाक्य के आशय को पूर्ण प्रकट करते हैं ।

---

1. भोलानाथ तिवारी- हिन्दी भाषा की संरचना- पृ. 16।

3.1.1.3.4.3. अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में प्रयुक्त क्रियायें

हिन्दी में कुछ क्रियाएँ ऐसी हैं जो अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में प्रयुक्त होती हैं। जैसे

अकर्मक	सकर्मक
उसका सिर खुजलाता है	वह सिर खुजलाता है ।
तुम्हारी बातों से मेरा जी भरता है ।	वह लड़की पानी भरती है ।

घबराना, खुजलाना, ललचाना, भरना आदि ऐसी क्रियाएँ हैं जिनका प्रयोग अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार से होता है ।

व्याकरणकारों ने माना है सकर्मक क्रियाओं में जब कर्म को प्रकट करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, तब वे सकर्मक होते हुए भी अकर्मक बन जाती हैं । लेकिन इसे ठीक नहीं माना जा सकता, क्योंकि वस्तुतः कर्म के न होने पर भी प्रयोग में वे सकर्मक जैसी ही है । भूतकाल में यह स्पष्ट प्रकट है, क्योंकि कर्ता के साथ "ने" प्रत्यय अनिवार्य होता है ।

उदा:- लडके ने पढा

सीता ने गाया -- यहाँ कर्म के न होने पर भी सकर्मक मानना पडेगा क्योंकि "ने" प्रत्यय आया है ।

इसी तरह जब अकर्मक क्रिया में उसी की भाव-वाचक संज्ञा बनाकर जोड़ दी जाती है, तब अकर्मक होते हुए भी सकर्मक बन जाती है ।

जैसे वह चाले चलता है ।

मैं लम्बी दौड दौड सकता हूँ ।

"चलना" क्रिया की 'चाल' और "दौडना" क्रिया की 'दौड़' को भाव वाचक संज्ञा बनाकर वाक्यों में जोड दिया गया है ।

प्राय: अकर्मक क्रियाओं के प्रधान कर्म ऐसे भाव-वाचक संज्ञा शब्द होते हैं जो क्रियाओं जैसे व्यापार व्यक्त करते हैं जैसे -"खेलना" अकर्मक क्रिया है, किंतु "खेल खेलना" में खेल सकर्मक क्रिया है। "लडना" अकर्मक क्रिया है, किंतु"लडाई लड़ना" में लड़ाई सकर्मक क्रिया है।

यदि कर्म की विवक्षा न रहे अर्थात् सकर्मक क्रिया के व्यापार का फल किसी विशेष पदार्थ पर न पड़कर सभी पर पडे और सकर्मक क्रिया का केवल कार्य ही प्रकट हो, तो कर्म प्रकट करने की आवश्यकता नहीं होती, इससे वह सकर्मक क्रिया अकर्मक सी जान पड़ती है। पर प्रयोग में सकर्मक ही रहती है। जैसे :-

तुम्हारा छोटा भाई कहाँ पढ़ता है।
(तुम्हारे छोटे भाई ने कहाँ पढ़ा।)
झाड पर तोता बोलता है।[1]

3.1.1.3.4.4. अकर्मक क्रियाओं से सकर्मक बनाने के नियम

(क) ह्रस्व प्रथमाक्षरयुक्त द्विअक्षरी मूल अकर्मक धातुओं में कुछ के प्रथम अक्षर दीर्घ बनाने से सकर्मक क्रिया बनती है।

कटना	- काटना	लुटना	- लूटना
दबना	- दाबना	लदना	- लादना
बँधना	- बाँधना	फँसना	- फाँसना
पिटना	- पीटना	मरना	- मारना

(ख) इसी रूप की कुछ अन्य धातुओं के द्वितीय अक्षर को दीर्घ बनाने से सकर्मक क्रिया बनती है।

---

1. लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी, हिन्दी व्याकरण कौमुदी-पृ. 147

चलना - चलाना गिरना - गिराना

दुखना - दुखाना खिलना - खिलाना

चरना - चराना

अपवाद: "सिलना" का सकर्मक रूप सीना है ।

2. तीन ह्रस्व अक्षरों के मूल अकर्मक धातु के द्वितीय अक्षर को दीर्घ बनाने से सकर्मक क्रिया बनती है ।

निकलना - निकालना उखड़ना - उखाड़ना

बिगड़ना - बिगाड़ना संहलना - संहालना

3. (क) यदि मूल अकर्मक धातु का प्रथम वर्ण "इकार" युक्त व "उ"कार युक्त हो तो "इ" और "उ" को क्रम से "ए" कार और "ओ" कार बनाने से सकर्मक क्रिया बन जाती है ।

जैसे फिरना - फेरना मुडना - मोड़ना

दिखना - देखना खुलना - खोलना

धुलना - धोलना जुड़ना - जोड़ना

(ख) यदि इस तरह की मूल अकर्मक धातु के अंत में "ट" हो, तो उसे "ड" करके सकर्मक बनाते हैं और प्रथम वर्ण के स्वर को दीर्घ करते हैं, एवं प्रथम वर्ण के अन्त में "उ" वा "ऊ" हो तो इसे "ओ" कर देते हैं ।

उदा: छुटना - छोड़ना फटना - फाडना

फूटना - फोड़ना जुड़ना - जोड़ना

4. कुछ अकर्मक धातुओं से अनियमित रूप से सकर्मक धातु बनती है ।

जैसे: बिकना रहना (अक) तुडना

बेचना रखना (सक) तोडना

कुछ धातुओं के अकर्मक से सकर्मक और प्रथम प्रेरणार्थक [1] के रूपों में वा उसके अर्थ में अंतर होता है । यथा:---

उदा:	अकर्मक	सकर्मक	प्रथम-प्रेरणार्थक
	गडना	गाडना	गडाना
	दबना	दाबना	दबाना

3.1.1.3.5. प्रेरणार्थक क्रिया

जब कर्ता स्वयं कोई क्रिया नहीं करता, बल्कि किसी दूसरे से कोई क्रिया कराता है अथवा किसी और को कोई क्रिया करने में प्रवृत्त करता है, तो ऐसी अवस्था में क्रिया का जो रूप बनता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।[1] मलयालम व्याकरण में इसे प्रयोजक क्रिया कहा जाता है ।

1. मोहन पत्र लिखता है ।
2. मोहन पत्र लिखाता है ।
3. सीता पुस्तक देती है ।
4. सीता पुस्तक दिलाती है ।

पहले और तीसरे वाक्यों में "मोहन और "सीता" स्वयं क्रियायें करते हैं पर दूसरे और चौथे वाक्यों में वे ही क्रियाएँ दूसरों से कराते हैं । अत: "लिखता है" और देती है" सकर्मक है और "लिखाता है" और "दिलाती" है प्रेरणार्थक ।

जिनकी प्रेरणा से क्रिया का व्यापार होता है उसे प्रेरक कर्ता और जो किसी की प्रेरणा से प्रेरित होकर कार्य करता है उसे प्रेर्य कर्ता कहते हैं ।

जैसे लड़की माली से माला बनाती है ।

राजा नौकर से काम कराता है ।

पिता पुत्र से गाडी चलाता है ।

-इन उदाहरणों में प्रेरक कर्ता क्रमश: "लड़की", राजा" और "पिता" है और प्रेर्य कर्ता "माली", "पुत्र" और 'नौकर' है । (मलयालम में इनको

क्रमशः प्रयोजक कर्ता और प्रयोज्य कर्ता कहा जाता है ।

कुछ प्रेरणार्थक क्रियाओं के दो प्रेरक कर्ता आते हैं ।

जैसे :- पंडितजी शिष्यों से लोगों को कथा पढ़वाते हैं ।

-यहाँ पंडित जी शिष्यों को प्रेरित करते हैं तथा शिष्य लोगों को। इस तरह इसमें दो प्रेरक है । अतः पढ़वाना क्रिया द्वितीय प्रेरणार्थक है ।

मूल क्रिया - लोग कथा पढ़ते हैं ।

.1.1.3.5.1. प्रथम प्रेरणार्थक - शिष्य लोगों को कथा पढ़ाते हैं ।

.1.1.3.5.2. द्वितीय प्रेरणार्थक - पंडितजी शिष्यों से लोगों को कथा पढ़वाते हैं ।

<u>अन्य उदाहरण :-</u>

नौकरानी बच्चे को दूध पिलाती है । -(प्रथम प्रेरणार्थक)

माता नौकरानी से बच्चे को दूध पिलवाती है (द्वितीय प्रेरणार्थक)

माता पुत्र को रुपया दिलाती है । (प्र प्रे)

पिताजी माता से पुत्र को रुपया दिलवाता है (द्वि: प्रे)

राम लड़कों को पढ़ाते हैं (प्र:प्रे)

अध्यापक राम से लड़कों को पढवाते हैं (द्वि: प्रे)

जब अकर्मक क्रिया का प्रयोग प्रेरणार्थक के अर्थ में होता है, तब पहले अकर्मक से सकर्मक क्रिया फिर सकर्मक क्रिया से यथार्थ प्रेरणार्थक क्रिया बनायी जाती है ।

उदा:- बच्चा कथा सुनता है ।

आया बच्चे को कथा सुनाती है ।

माता आया से बच्चे को कथा सुनवाती है ।

आना, जाना, सकना, होना, पाना, लेना, खोना - इन क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप नहीं होते । कुछ क्रियाओं से दो दो प्रकार की प्रेरणार्थक

क्रियाएँ बनती हैं। संपूर्ण प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक ही होती हैं। पर सकर्मक से बनी प्रेरणार्थक क्रियाएँ द्विकर्मक होती हैं।

सकर्मक	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक (द्विकर्मक)
पीना	पिलाना	पिलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
धोना	धुलाना	धुलवाना
सीना	सिलाना	सिलवाना
सीखना	सिखाना	सिखवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना

कुछ अकर्मक क्रियायें ऐसी हैं जिनके सकर्मक और दो प्रेरणार्थक रूप बनते हैं -- इनके तीन व्युत्पन्न रूप संभव हैं।

अकर्मक	सकर्मक	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणा
सिलना	सीना	सिलाना	सिलवाना
खुलना	खोलना	खुलाना	खुलवाना
मरना	मारना	मराना	मरवाना
मुड़ना	मोड़ना	मुड़ाना	मुड़वाना

3.1.1.3.5.3. प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाने के नियम

1. क्रिया के दो अक्षरों की मूल धातु के अंत में "आ" जोड़ने से पहला प्रेरणार्थक और मूल धातु में "वा" जोड़ने से द्वितीय प्रेरणार्थक बनता है।

मूल धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
उड़ना	उड़ाना	उड़वाना

मूल धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
चलना	चलाना	चलवाना
दबना	दबाना	दबवाना
सुनना	सुनाना	सुनवाना
डरना	डराना	डरवाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना

2. दो अक्षरों की धातु में "प्रथमाक्षर दीर्घ हो तो उसे ह्रस्व बनाकर द्वितीयाक्षर के साथ "आ" जोड़ा जाता है ।

मूल धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
जागना	जगाना	जगवाना
ओढ़ना	उढ़ाना	उढ़वाना
जीतना	जिताना	जितवाना
डूबना	डूबाना	डुबवाना [1]
बोलना	बुलाना	बुलवाना
भीगना	भिगाना	भिगवाना [2]
हारना	हराना	हरवाना
जोड़ना	जुड़ाना	जुड़वाना
लेटना	लिटाना	लिटवाना
छोड़ना	छुड़ाना	छुड़वाना

3. यदि क्रिया की मूल धातु तीन अक्षरों की हो तो पहली प्रेरणार्थक धातु के दूसरे अक्षर का "अ" अनुच्चरित रहता है और पहली प्रेरणार्थक के धातु के अंत में "वा" जोड़ने से द्वितीय प्रेरणार्थक रूप बनता है ।

---

1. "डूबना" का रूप डुबोना और

2. "भीगना" का रूप भिगोना भी होता है ।

जैसे :-

मूल धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
चमक - ना	चमकाना	चमकवाना
पिघल - ना	पिघलाना	पिघलवाना
भटक - ना	भटकाना	भटकवाना
बदल - ना	बदलाना	बदलवाना
समझ - ना	समझाना	समझवाना

4. एकाक्षरी धातु के अंत में "ला" और "लवा" लगाते हैं और दीर्घ स्वर को ह्रस्व कर देते हैं ।

मूल धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
छूना	छुलाना	छुलवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना [1]
सीना	सिलाना	सिलवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
धोना	धुलाना	धुलवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना

5. कुछ धातुओं के प्रेरणार्थक रूप "आ" अथवा "ला" जोड़ने से बनते हैं परंतु दूसरे प्रेरणार्थक में "वा" जोड़ा जाता है ।

जैसे धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
कहना	कहाना या कहलाना	कहवाना [2]

---

1. "खाना" में आद्य स्वर "इ" हो जाता है । इसका एक प्रेरणार्थक

धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
देखना	दिखाना या दिखलाना	दिखवाना
सीखना	सिखाना या सिखलाना	सिखवाना
सूखना	सुखाना या सुखलाना	सुखवाना
बैठना	बिठाना या बिठलाना	बिठवाना [1]

6. कई क्रियाओं के मूल धातु के प्रथम व द्वितीय प्रेरणार्थक धातु - नियम विरुद्ध होते हैं । उदा: [2]

मूल धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
फटना	फाड़ना	फड़वाना
फूटना	फोड़ना	फुड़वाना
बिकना	बेचना	बिकवाना
टूटना	तोड़ना	तुड़वाना
रहना	रखना	रखवाना
छूटना	छोड़ना	छुड़वाना

7. कुछ धातुओं से बने हुए प्रथम एवं द्वितीय प्रेरणार्थक रूप समानार्थी होते हैं जैसे :-

धातु	प्रेरणार्थक (प्रथम व द्वितीय)
कटना	कटाना -कटवाना
खुलना	खुलाना - खुलवाना
गड़ना	गड़ाना - गड़वाना

---

1. "बैठना" के कई प्रेरणार्थक रूप होते हैं जैसे: बैठना- बिठाना, (बैठाना) बैठालना, पिठालना, बैठवाना ।

धातु	प्रेरणार्थक (प्रथम व द्वितीय)
रखना	रखाना - रखवाना
सिलना	सिलाना - सिलवाना
देना	दिलाना - दिलवाना
बँधना	बँधाना - बँधवाना

8. कुछ सकर्मक धातुओं के केवल दूसरे प्रेरणार्थक के रूप बनते हैं - जैसे [1]

गाना	-	गवाना
लेना	-	लिवाना
खोना	-	खोवाना
बोना	-	बो आना

9. कुछ धातुएँ वास्तव में मूल अकर्मक व सकर्मक होती हैं - परंतु स्वरूप में प्रेरणार्थक जान पड़ते हैं - जैसे :-

घबराना   इठलाना   फहराना

मचलाना ,   कुम्हलाना ,   जगमगाना

ख. कुछ अकर्मक क्रियायें ऐसी हैं जिनके सकर्मक और प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते -- जैसे :-   चीखना   अखरना

जँचना   खलना

ग. अकर्मक क्रियायें जिनके केवल सकर्मक रूप बनते हैं --प्रेरणार्थक नहीं ऐसी क्रियायें निम्नलिखित हैं --जैसे :-

बीतना - बिताना   लपकना - लपकाना

फड़कना - फड़काना   सिकुड़ना - सिकुड़ाना

---

1. कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण- पृ. 113

थकना	-	थकाना	,	उपजना	-	उपजाना
अफरना	-	अफराना		काँपना	-	कँपाना
चूना	-	चुनाना	,	पसरना	-	पसराना
छलकना	-	छलकाना	,	डिगना	-	डिगाना

मोटे तौर पर अकर्मक, सकर्मक तथा प्रेरणार्थक रूपों के रचनाएँ (formative) इसप्रकार किया जा सकता है ।

ø - अकर्मक

-आ - सकर्मक

-वा - प्रेरणार्थक

सकर्मक तथा प्रेरणार्थक बनाने की हिन्दी में निम्न लिखित रूपात्मक प्रक्रियायें हैं ।

क) प्रत्यय - (आ-वा)

ख) ø प्रत्यय - "खो" वर्ग - जैसे खोना - खोना
जगमगाना - जगमगाना आदि ।

ग) रूप ध्वनि परिवर्तन सहित प्रत्यय - (आ-वा)[1]

3.2. मलयालम-क्रियाओं के भेद

क्रिया- (कृति)

मलयालम व्याकरणकारों ने क्रिया को कृति भी कहा है और उसकी परिभाषा इस प्रकार दी है --

"फलानुकूलम् व्यापारम्
क्रिययिल् पोरूळायतु "

---

1. सूरजभान सिंह, "गवेषणा", जुलाई-1974- पृ. 12.

--किसी प्रवृत्ति को क्रिया कहते हैं - याने फलानुकूल व्यापार (प्रवृत्ति) क्रिया का लक्षण है ।[1] अथवा कोई एक कार्य करता है अथवा कोई किसी स्थिति में हो - उसको दिखानेवाले शब्द को भी क्रिया (कृति) कहा जाता है ।

उदा: बालकन् पुस्तकम् वायिक्कुन्नु ।
(बालक पुस्तक पढता है)
बालकन् उर० इड्डुन्नु ।
(बालक सोता है)

--यहाँ वायिक्कुन्नु (पढता है), उरङ्डुन्नु (सोता है) ये शब्द बालक की क्रिया (कार्य), को सूचित करते हैं । इसलिए ये शब्द कृतियाँ अथवा क्रियाएँ हैं ।

बालकन् समर्थनाकुन्नु ।
(बालक समर्थ है ।
बालकन् अम्मयोटुकूटे उण्टु ।
(बालक माता के साथ है)

-यहाँ आकुन्नु (है) , उण्टु (है) यह बालक की स्थिति अथवा अवस्था को दिखाने का शब्द होने के कारण ये भी क्रियाएँ (कृतियाँ) हैं ।

3.2.1. अर्थानुसार क्रिया-भेद

अर्थ के अनुसार क्रिया के दो भेद होते हैं -- 1.अकर्मक और 2. सकर्मक ।

---

1. ए.आर. राजराजवर्मा, केरल पाणिनीयम्-पृ. 135
2. फादर जोण् कुन्नप्पल्लिल, शब्द सौभगम, पृ. 218

3.2.1.1. अकर्मक क्रिया :-

यदि क्रियाओं का फल कार्य करनेवाले पर (कर्ता पर) निर्भर है तो वह अकर्मक है ।[1]

उदा: लीला उरङ्ङुन्नु । (लीला सोती है)

पक्षि चिलय्क्कुन्नु । (चिडिया चहकती है)

–इसमें पहले वाक्य में "उरङ्ङु" (सो) का व्यापार लीला करती है, और उसका प्रभाव और किसी पर नहीं पड़ती । तथा दूसरे वाक्य में "चिलय्क्क" (चहक) का कार्य पक्षी करता है । इसलिए "उरङ्ङुक " (सोना) चिलय्क्कुक (चहकना) दोनों क्रियायें अकर्मक हैं ।

3.2.1.2. सकर्मक क्रिया :-

सकर्मक क्रियाओं को कर्म के साथ रहने की शक्ति है ।[2] अथवा जिस क्रिया में कर्म की आकांक्षा है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं ।[3] क्रिया का विषय अथवा कर्म है अथवा हो सकता है तो वह सकर्मक है ।

उदा: ञान् रोट्टि तिन्नुन्नु ।

(मैं रोटी खाता हूँ)

कुट्टि पाठम् पठिक्कुन्नु ।

(बच्चा पाठ पढ़ता है)

–इन वाक्यों में तिन्नुक (खाना) और पठिक्कुक (पढ़ना) क्रिया का फल क्रमशः "रोट्टि" (रोटी) और "पाठम्" (पाठ) पर पडता है । इसलिए ये सकर्मक हैं ।

उसी प्रकार ञान् तिन्नुन्नु (मैं खाता हूँ)

कुट्टि पठिक्कुन्नु (बच्चा पढ़ता है)

–इनमें कर्म न होते हुए भी कर्म का होना संभव है ।

- -

2.1.2.1. अकर्मक से सकर्मक बनाने के नियम

मलयालम अकर्मक क्रियाओं से सकर्मक बनाने की विधियाँ कुछ संकुल हैं। ऐतिहासिक कारणों से कुछ क्रियाओं में कुछ अनियमित रूप भी आ गये हैं। इनका स्पष्टीकरण ऐतिहासिक विकास के उल्लेख के बिना केवल ध्वनि रूप के आधार पर नहीं किया जा सकता। अधिकांश क्रियाओं के सकर्मक रूपों को निम्नलिखित नियमों के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

जिन क्रिया धातुओं के अंत में "अ" अथवा "इ" हो उनके साथ "युक्क्" जोडकर सकर्मक रूप बनाये जाते हैं। [1]

अकर्मक		सकर्मक	
उट/-	(टूट)	उटयुक्क् -	(तोड्)
पोटि-	(पिस्-)	पोटियुक्क्-	(पिसा-)
अर/-	(पीस्-)	अरयुक्क्-	(पिसा-)
तिक/-	(पूरा हो)	तिकयुक्क्-	(पूरा करा)
तुल/-	(नष्ट हो-)	तुलयुक्क्-	(नष्ट करा -)
वल/ -	(कष्ठ उठ-)	वलयुक्क्-	(कष्ठ उठा-)
पति-	(डाल-)	पतियुक्क्-	(डाल-)
अट -	(बन्द हो-)	अटयुक्क्-	(बन्द कर)
तिर	(ढूढ़-)	तिरयुक्क्-	(ढूढ़-)

---

1. वस्तुत: इन अकारांत धातुओं के रूप भी मूलत: ऐकारांत (याने अ+इ) होने से उनको भी इकारांत मानना पडेगा। ("ऐ"कारांत रूप तमिल में सुरक्षित है) इसलिए वे "पोटि" जैसे "इ" कारांत धातुओं के समान

2. जिन अकर्मक धातुओं के अंत में "ऱ", "ष़" हो उनके साथ "त्तु" प्रत्यय जोडकर सकर्मक रूप बनाये जाते हैं ।

अकर्मक	सकर्मक
निवऱ - (सीधा हो)	निवऱत्त् - (सीधा कर-)
पकऱ- (नकल हो -)	पकऱत्त् (नकल कर-)
विटऱ - (खिला हो)	विटऱत्त् - (खिला कर-)
वीष़ - (गिर-)	वीष़त्त्-(गिरा-)
ताष़ - (डूब-)	ताष़त्त्-(डुबा-)
बाष़- (जी)	वाष़त्त्-(आशंसा कर-) (मूल अर्थ "जिला" रहा होगा)
उणऱ (उठ-)	उणऱत्त्- (उठा-)

3. जिन धातुओं के अंत में "र्", "ल्", "ळ्" और "द्द्" हो उनके साथ "त्त्" जोड़कर सकर्मक रूप बनाये जाते हैं । यह "त्त्" ध्वनि समीकरण के कारण पूर्व ध्वनि से मिलकर सवर्गीय द्वित्व ध्वनि बन जाती है ।

अकर्मक	सकर्मक
माऱ - (बदल)	माऱऱ (बदल-)[1]
कयऱ (चढ़)	कयऱऱ (चढा-)

---

1. "माऱ" "कयऱ" आदि में "ऱ + त्" समीकरण के द्वारा "ऱऱ" हो जाता है । "अकल्" में "ल्+त्त्" पश्चगामी पुरोगामी समीकरण द्वारा "ऱऱ" बनता है "ळ्+त्" पश्चगामी पुरोगामी समीकरण द्वारा तथा "ओद्" में "द्+त्" पुरोगामी समीकरण द्वारा "द्द्" बनते हैं ।

अकल् - (दूर हो-)	अकर्र. - (दूर कर -)
नीळ् - (लम्बा हो-)	नीट्ट् - (लम्बा कर-)
पुरळ् - (लग -)	पुरट्ट् - (लगा -)
उरूळ् - (ठुलक-)	उरूट्टु-(ठुलका -)
ओर् - (दौड-)	ओट्ट् - (दौडा-)

4. अनुनासिकांत धातुओं की अंतिम अनुनासिक ध्वनि को सवर्णीय स्पर्श ध्वनि बनाकर उनको द्वित्व बनाने से सकर्मक क्रिया बनती है ।

अकर्मक	सकर्मक
मुङ्. (मुङ्ङ्. -) (डूब-)	मुक्क् - (डुबा -)
पोङ्. -(पोङ्ङ् -) (उठ-)	पोक्क् - (उठा-)
उरङ्. - (उरङ्ङ्.) (सो-)	उरक्क् - (सुला-)

3. 2. 1. 3. केवल क्रिया और प्रयोजक क्रिया

कर्ता के स्वभाव को आधार बनाकर मलयालम क्रियाओं को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है । [1]

1) केवल क्रिया और

2) प्रयोजक क्रिया

3. 2. 1. 3. 1. केवल क्रियायें :-

केवल क्रिया वह है जो बिना किसी प्रेरणा के किसी का कुछ करना या होना प्रकट होता है । [2] धातु का मूल रूप ही केवल क्रिया है । [3]

---

1. टि. पि. बालकृष्णन नायर- भाषा प्रदीपम्- पृ. 12-13

केवल क्रियाओं के मुख्य दो भेद होते हैं - अकर्मक और सकर्मक, जिनकी चर्चा पहले की जा चुकी है । दूसरे शब्दों में कहें तो केवल क्रिया अथवा मूल क्रिया अकर्मक अथवा सकर्मक होगी । इस दृष्टि से प्रेरणार्थक क्रिया (पृ. ९३..) द्विकर्मक हो सकती है ।

(मूल) केवल क्रिया		प्रेरणार्थक (प्रयोजक क्रिया)
अकर्मक	सकर्मक	द्विकर्मक
वीष़ु	वीष़ुत्तु -	वीष़ुत्तिक्क्-, वीष़ुत्तिप्पिक्क्-
(गिर)	(गिरा-)	(गिरवा-)
मुङ्ङ्	मुक्क् -	मुक्किक्क् - , मुक्किप्पिक्क्-
(डूब)	(डुबा-)	(डुबवा-)
	पणिय् -	पणियिक्क् -, पणियिप्पिक्क्-
	(बना-)	(बनवा-)
	पढ़िक्क्-	पढ़िप्पिक्क्-
	(पढ़)	(पढ़ा - पढ़वा-)
निल्क्क्	निरत्त्-	निरत्तिक्क्-, निरत्तिप्पिक्क् -
(उठ-)	(उठा-)	(उठवा)

केवल क्रियाओं को रूप के आधार बनाकर दो वर्गों में विभाजित किया जाता है । (1) कारित
(2) अकारित ।[1]

जिन केवल क्रियाओं में वर्तमान और भविष्य प्रत्यय जोड़ने के पहले "क्कु" आता है , वे कारित मानी जाती हैं और जिन धातुओं में "क्कु"

---

1. Karita stems are those which take the link morph -kk- before the non-past markers, Akkarita stems are

का प्रयोग नहीं होता वे अकारित मानी जाती है ।[1] शेषगिरि प्रभु ने कारित क्रियाओं को "बल क्रिया" और अकारित क्रियाओं को अबल क्रिया की संज्ञा दी है ।[2]

3.2.1.3.1.1. कारित धातुएँ

धातु	कारित रूप	भविष्य रूप
कर.	कर. क्क्-	कर. क्कुम्
§दुह-§	§दुह§	§दुह जायेगा§
का-	काक्कू-	काक्कुम्
§इंतज़ार-§	§इंतज़ार कर-§	§इंतज़ार करेगा§
अट्टु-	अट्टुक्क्-	अट्टुक्कुम्
§मिल-§	§मिल-§	§मिलेगा§
-	मूक्क्-	मूक्कुम्
§पका हो-§	§पक्का हो-§	§पक्का हो जायेगा§
एतिर्. -	एतिर्. क्क्-	एतिर्क्कुम्
§विरोध हो-§	§विरोध कर-§	§विरोध करेगा§
ओर्. -	ओर्. क्क्-	ओर्. क्कुम्
§याद-§	§याद कर-§	§याद करेगा§
एल्-	एल्क्क्-	एल्क्कुम्
§निभा-§	§निभा-§	§निभायेगा§
तोल्-	तोल्क्क्-	तोल्क्कुम्
§हार-§	§हार-§	§हारेगा§

---

1. वासुदेव भट्टतिरि, भाषाशास्त्रम्, पृ. 227-228
2. शेषगिरिप्रभु, व्याकरणमित्रम्- पृ. 133

केळ् -	केळ्क्क्-	केळ्क्कुम्
(सुन-)	(सुन-)	(सुनेगा)
मुळय्-	मुळय्क्क्-	मुळय्क्कुम्
(उग-)	(उग-)	(उग जायेगा)

3.2.1.3.1.2. <u>अकारित धातुएँ :-</u>

धातु	अकारित रूप	भविष्य रूप
तोष् -	तोषु	तोषुम्
(प्रणाम कर-)	(प्रणाम कर-)	(प्रणाम करेगा)
उष्-	उषुक्-	उषुकुम्
(विचा-)	(बिचा-)	(बिचायेगा)
काण्-	काणु-	काणुम्
(देख-)	(देख-)	(देखेगा)
आक् -	आकु-	आकुम्
(बन-)	(बन-)	(बनेगा)
पोक्-	पोकु-	पोकुम्
(जा-)	(जा-)	(जायेगा)
इट्-	इटु-	इटुम्
(डाल-)	(डाल-)	(डालेगा)
आट्-	आट्-	आटुम्
(झूम)	(झूम-)	(झूमेगा)
एषुत्-	एषुतु-	एषुतुम्
(लिख-)	(लिख-)	लिखेगा)
उण्-	उण्णु-	उण्णुम्
(खा-)	(खा-)	(खायेगा)

पोड्. -	पोड्. डु. -	पोड्. डु. म्
(उठ-)	(उठ-)	(उठेगा)
तिन्-	तिन्नु-	तिन्नुम्
(खा-)	(खा-)	(खायेगा)
चिम्म्-	चिम्मु-	चिम्मुम्
(मूंद-)	(मूंद-)	(मूंद करेगा)
उयर्. -	उयरु-	उयरुम्
(उद्-)	(उठ-)	(उठेगा)
आळ्-	आळु-	आळुम्-
(थथक-)	(थथक-)	(थथक जायेगा)
अकल् -	अकलु-	अकलुम्
(दूर हो-)	(दूर हो)	(दूर होगा)
पूश्-	पूशु-	पूशुम्
(लग-)	(लग-)	(लगेगा)
अलिय्-	अलियु-	अलियुम्
(गल-)	(गल-)	(गल जायेगा)
वीष्-	वीषु	वीषुम्
(गिर-)	(गिर-)	(गिरेगा)

2. 1. 3. 2. प्रयोजक क्रिया (प्रेरणार्थक)

जहाँ कोई कार्य अन्य अथवा बाह्य प्रेरणा से किया जाना प्रकट होता है, तो वहाँ प्रयोजक अथवा प्रेरणार्थक क्रिया है । [1] वैयाकरण शेषगिरि प्रभु के अनुसार -" दूसरों की प्रेरणा, सहायता आदि के बिना जो अपनी पसन्द के अनुसार काम करता है वह स्वतंत्र कर्ता है । किसी काम

- -

करनेवाले दो कर्ताओं में से एक, दूसरे की प्रेरणा या आदेश से कार्य करता दीखता है तो प्रेरणा देनेवाले को प्रयोजक कर्ता कहते हैं । इस तरह दो कर्ताओं से युक्त क्रिया को प्रयोजक (प्रेरणार्थक) क्रिया कहते हैं ।[1]

उदा: कुट्टि पाल् कुटिक्कुन्नु ।
(बच्चा दूध पीता है)

3.2.1.3.2.1. केवल प्रयोजक

कुटि (पीना) - केवल क्रिया ।
अम्म कुट्टिये पाल् कुटिप्पिक्कुन्नु
(माँ बच्चे को दूध पिलाती है)
कुटिप्पिक्क्- (पिला-) प्रयोजक क्रिया ।

जो कार्य करने केलिए प्रेरणा देता है वह प्रयोजक "कर्ता" है, और जो प्रयोजक कर्ता की प्रेरणा से "क्रिया" करता है वह प्रयोज्य कर्ता है । उपर्युक्त उदाहरण में अम्म (माँ) प्रयोजक कर्ता और "कुट्टि" (बच्चा) प्रयोज्य "कर्ता" है ।[2]

प्रयोजक (प्रेरणार्थक) क्रियाओं में आनेवाली सभी धातुएँ सकर्मक हैं । रूप में भी ये प्रयोजक धातुएँ प्राय: समान होती हैं । सकर्मक और प्रयोजक में अंतर यह है कि जहाँ स्वयं काम करने योग्य वस्तु को अन्यों की प्रेरणा से काम कराता है, वहाँ प्रयोजक क्रिया है, और जहाँ काम या प्रवृत्ति की फल प्राप्ति मात्र दिखाता है वहाँ सकर्मक है ।[3]

- -

1. शेषगिरिप्रभु, व्याकरण मित्रम्- पृ. 134
2. -वही- पृ. 134
3. के. सुकुमारपिल्लै, आधुनिक मलयाल व्याकरणम् -पृ. 70

जैसे:- वण्डिक्कारन् कुतिरये ओटिक्कुन्नु - प्रेरणार्थक
§गाडीवान घोडे को चलाता है §
वेलक्कारि चुळ्ळियोटिक्कुन्नु - सकर्मक
§नौकरानी डाली काटती है §

2.1.3.2.2. द्विगुण प्रयोजक

प्रयोजक का केवल प्रयोजक, और द्विगुण प्रयोजक दो भेद माना जा सकता है ।[1] यदि क्रिया में एक प्रयोज्य कर्ता हो तो उसे केवल प्रयोजक और, दो प्रयोज्य कर्ता हो तो द्विगुण प्रयोजक मान सकते हैं ।

उदा: कुट्टिकळ् सिनिमा काणुन्नु - केवल अकर्मक
§ बच्चे सिनेमा देखते हैं §
वेलक्कारन् कुट्टिकळे सिनिमा काणिक्कुन्नु -केवल प्रयोजक
§नौकर बच्चों को सिनेमा दिखाता है §

अच्छन् वेलक्कारेक्कोण्टु कुट्टिकळे सिनिमा काणिप्पिक्कुन्नु-
§ द्विगुण प्रयोजक§

-यहाँ केवल क्रिया के साथ "क्क" जोड़कर केवल प्रयोजक और केवल प्रयोजक के साथ "प्पि" जोड़कर द्विगुण प्रयोजक बनाया गया है ।

.2.1.4. मूल कर्मक क्रियायें :-

कुछ क्रियायें मूल रूप में ही सकर्मक होती हैं । उनको मूल-कर्मक § Basic - transitive § कहा जा सकता है । जैसे:

तिन्नु - §खा-§ पठि - §पढ़-§
एषुत् - §लिख-§ कळिक्कु- §खेल-§

अन्य सकर्मक क्रियायें अकर्मक क्रियाओं से बनती हैं । अथवा जिन अकर्मक

- -

क्रियाओं को रूप-भेद करके सकर्मक बनायी जाती है ऐसी क्रियाओं को प्राप्त कर्मक (Derived transitive) कहलाते हैं ।[1]

अकर्मक	प्राप्त कर्मक
1. कुटम् वेळ्ळत्तिल मुङ्ङुन्नु । (घड़ा पानी में डूबता है)	कुटम् वेळ्ळत्तिल मुक्कुन्नु । (घड़ा पानी में डुबाता है)
2. माम्पषम् वीषुन्नु । (आम गिरता है)	माम्पषम् वीषत्तुन्नु । (आम गिराता है)
3. पात्रम् उटयुन्नु । (बर्तन टूटता है)	पात्रम् उटयक्कुन्नु । (बर्तन तोड़ता है)
4. कम्पु वळयुन्नु । (डाली मुड़ती है)	कम्पु वळयक्कुन्नु । (डाली मुड़ाता है)

2.1.5. प्रयोजक (प्रेरणार्थक) बनाने के नियम

1. "कारित" क्रियाओं के साथ "प्पि" प्रत्यय जोडकर प्रयोजक क्रिया बनायी जाती है ।

उदा:- कळिक्क्- (खेल्-) — कळिप्पिक्क्- (खिलाना)
तोल्क्क्- (पराजय कर) — तोल्प्पिक्क् - (पराजित करन)
कोटुक्क्- (दे-) — कोटुप्पिक्क् - (दिलवा-)
पिटिक्क्- (पकड़्-) — पिडिप्पिक्क्- (पकड़वा-)
वयक्क्- (रख-) — वयप्पिक्क्- (रखवा-)

---

1. जोण् कुन्नप्पळ्ळि, शब्द सौभगम- पृ. 220

2. अकारित एवं व्यंजनांत धातुओं के साथ "इ" प्रत्यय लगाकर प्रयोजक क्रि बनायी जाती है ।

परय्- §कह-§ — परयिक्क्- §कहला-§

पणिय् - §बन-§ — पणियिक्क्- §बनवा-§

ओटु- §दौड़-§ — ओटिक्कु- §दौडा-§

तोड्- §छू-§ — तोडुविक्क्- §छूना-§

विट् - §छोड्§ — विटुविक्क्- §छुडा-§

3. एक स्वर अथवा एक ह्रस्व स्वर के साथ व्यंजन जोड़कर निर्मित एकाक्षरी § Monosylleblic § धातुओं के साथ उच्चारण लाघव के लिए "उ' जोडकर प्रयुक्त किया जाता है ।

उदा:- तरॅ §दे§ - तरु- §दे-§ - तरुविक्क्- §दिला-§

विट् §छोड़§- विटु- §छोड़-§ - विटुविक्क्- §छुडा§

पेर्. -§प्रसूद§- पेरु. - § प्रसूद- § पेरुविक्क्- § प्रसव क

"उवि" का लोप होने से बने हुए तरीक्क् §दिला§ विटीक्क्- §छुड़ा§, पेरी §प्रसव कराना§ आदि रूप भी बोलचाल की भाषा में मिलते हैं ।

4. जिन धातुओं के अंत में र ल 'ळ' हो और ह्रस्व "अ"कार हो - इनके साथ "त्तु" प्रत्यय जोड़कर प्रयोजक क्रिया बनायी जा सकती है ।

उदा:- वर्- §आ-§ — वरुत्तु- §ला- §

निर्. - §खडा§ — निर्.त्तु- §खडा कर§

वळर्.- §बडा हो § वळर्त्त् §बडा- §

इरि - §बैठ्-§ — इरित्त् §बिठा-§

उलƒ §चिक्-§ — उलत्त् §चिका- §

नटƒ §चल्-§ — नटत्त् §चला- §

वस्तुतः इन सब में प्रत्यय "त" है जो मूर्धन्य "ळ" के साथ मिलक

"ट" बनता है और वर्त्स्य "ल" के साथ मिलकर "र.र." बनता है ।

अकल्- (अलग हो , दूर हो) — अकल्त्त् - अकर.र्.-

विल्- (बेच्-) — विल्त्त् - विर.र्.-

5. उण्, (खा) तिन् (खा-) आदि क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप निम्नलिखित है:-

उण्णुक (खा-) — ऊट्टुक (खिलाना, खिलवाना)

तिन्नुक (खा-) — तीट्टुक ( )

क्रियाओं से जो कृदन्त रूप बनते हैं उनकी चर्चा अन्यत्र की जाती है ।

3.2.1.6. हिन्दी और मलयालम क्रिया भेदों के साम्य एवं वैषम्य

हिन्दी में जिसे क्रिया कहते हैं , उसे मलयालम में "कृति" कहते हैं । हिन्दी में क्रिया धातु से काल, पुरुष, लिंग और वचन के प्रत्यय लगाकर क्रियाएँ बनायी जाती हैं । (इसका विचार अन्यत्र किया गया है) किन्तु मलयालम क्रिया रूपों में लिंग, वचन आदि केलिए प्रत्यय नहीं आते । कर्तृरूप में आनेवाली संज्ञा या सर्वनाम से ही लिंग वचन प्रकट होते हैं ।

अर्थानुसार क्रिया-भेद

अर्थानुसार दोनों भाषाओं में क्रियाओं के दो भेद माने जाते हैं - अकर्मक और सकर्मक ।

यद्यपि दोनों भाषाओं में अकर्मक और सकर्मक दोनों क्रियाओं की परिकल्पनायें हैं तो भी दोनों में तनिक अंतर है । प्रयोग की दृष्टि से मलयालम में इनकी अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं में केवल यही अंतर है कि अकर्मक क्रिया के साथ कर्म नहीं आता और सकर्मक क्रिया के साथ कर्म आता है । रूप रचना की दृष्टि से सकर्मक और अकर्मक क्रिया के बीच में कोई अंतर नहीं है ।

हिन्दी में क्रिया का अकर्मकत्व और सकर्मकत्व अधिक महत्वपू है। क्योंकि सकर्मक क्रियाओं के भूतकालीन रूपों के प्रयोग हो, तो कर्ता के साथ "ने" प्रत्यय अपेक्षित होता है और क्रिया लिंग वचनों में कर्म का अनुसरण करती है।

उदा:- मल: अवन् इविटे वरुन्नु - §अकर्मक वर्तमान§

§वह यहाँ आता है §

अवन् इविटे वन्नु - अकर्मक भूत

§वह यहाँ आया§

मल: लील पाठम् पठिक्कुन्नु - सकर्मक वर्तमान

§लीला पाठ पढती है §

लील पाठम् पठिच्चु

§लीला ने पाठ पढ़ा § - सकर्मक भूत

हि: वह यहाँ आता है §अकर्मक वर्तमान§

वह यहाँ आया §अकर्मक भूत§

लीला पाठ पढती है। §सकर्मक वर्तमान§

किंतु लीला ने पाठ पढ़ा §सकर्मक भूत§

द्रष्टव्य है कि हिन्दी के सकर्मक क्रिया की वर्तमान तथा भूत कालीन संरचनाओं में अंतर है। किंतु मलयालम में दोनों की संरचनाएँ समान हैं।

दूसरी उल्लेखनीय बात है कि प्रत्यक्ष रूप से कर्म उपस्थित न रहनेपर भी हिन्दी की सकर्मक क्रियाएँ सकर्मक ही रहती हैं और उपर्युक्त नियम का पालन करना आवश्यक है।

उदा: गोपाल पढ़ता है। §वर्त§

लीला पढ़ती है।

गोपाल ने पढ़ा। §भूत§

लीला ने पढ़ा।

इस तरह का अंतर मलयालम के प्रयोग में नहीं है ।

जैसे:- गोपालन् पठिक्कुन्नु ।

लीला पठिक्कुन्नु ।

गोपालन् पठिच्चु ।

लीला पठिच्चु ।

2. कुछ क्रियायें दोनों भाषाओं में अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में प्रयुक्त की जाती है । हिन्दी में अकर्मक और सकर्मक प्रयोगों में क्रिया के रूप समान ही होते हैं ।

हि: अकर्मक	सकर्मक
छड़ी घिसती है ।	पुजारी चंदन घिसता है ।
मेरा मन ललचाता है ।	उसने बच्चे को ललचाया ।
रस्सी ऐंठती है ।	लडका रस्सी को ऐंठता है ।
कुआँ भरता है ।	नौकर पानी भरता है ।

मलयालम में भी कुछ धातुएँ अकर्मक और सकर्मक होती हैं लेकिन क्रियाओं के साथ जो विकिरण प्रत्यय आते हैं -- उनके क्रिया अकर्मक से सकर्मक बन जाती है । अत: दोनों की रूप रचना में अंतर रहता है । सकर्मक बनाने केलिए कुछ क्रियाओं के साथ "क्कु" जोड़ा जाता है । अन्यों में "ड.ङ्." को बदल कर "क्कु" बनाया जाता है ।

अकर्मक	सकर्मक
अटः - {बन्द-}	अटः + क्क् - अटक्क् - {बन्द कर}
कुरः {घट-}	कुरः + क्क् - कुरक्क् {घट जा-}
निरः {भर-}	निरः + क्क् - निरक्क् {भर जा}

अकर्मक	सकर्मक
करड्.ड्. {घूम-}	कर. + क्क् - करक्क् - {घूम जा}
ओरड्.ड्. {सज- }	ओरुड्.ड्. + क्क् - ओरुक्क् {सजा-}
वातिल् अटयुन्नु ।	कुट्टि वातिल् अटक्कुन्नु ।
{दरवाज़ा बन्द होता है ।}	{बच्चा दरवाज़ा बन्द करता है }
वेळ्ळम् निरयुन्नु ।	अम्मा वेळ्ळम् निरक्कुन्नु ।
{पानी भरता है }	{माँ पानी भरती है }
पंका करड्.ड्डुन्नु ।	लीला पंका करक्कुन्नु ।
{पंखा चलता है }	{लीला पंखा चलाती है }
चेच्चि ओरुड्.ड. ।	अम्म चेच्चियेये ओरुक्कि ।
{दीदी सज गई । }	{माँ दीदी को सजाया }

प्रेरणार्थक क्रियाएँ :-

प्रेरक या प्रयोजक {प्रेरणार्थक} धातुओं की बनावट की विधि दोनों भाषाओं में कुछ बराबर हैं । मूल धातु या क्रियाओं के साथ प्रत्यय त प्रेरणार्थक क्रिया बनायी जाती है ।

हिन्दी में अकर्मक या सकर्मक क्रिया धातु के साथ "अ" जोडकर सकर्मक और "वा" जोडकर प्रेरणार्थक क्रिया बनायी जाती है ।

जैसे	{सकर्मक}	पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
		लिखना	लिखाना	लिखवाना
	{अकर्मक}	चलना	चलाना	चलवाना
		सोना	सुलाना	सुलवाना

-लेकिन मलयालम में प्रेरणार्थक बनाने केलिए अनेक प्रत्यय है । जैसे:- "क्क्", "प्पि", "व्यंजन का द्वित्तीकरण" आदि ।

उदा: एषुत्त्	एषुतिक्क् -	एषुतिप्पिक्क्-
﴾लिख﴿	﴾लिखा-﴿	﴾लिखवा﴿
परऩ्	परऩियिक्क् -	परऩियिप्पिक्क्-
﴾कह﴿	﴾कहा﴿	﴾कहवा-﴿

द्वित्तीकरण

ओद्	ओट्टिक्क् -	ओट्टिप्पिक्क्-
﴾दौड़्-﴿	﴾दौड़ा-﴿	﴾दौड़वा-﴿
उण्णु -	ऊट्टु -	ऊट्टिप्पिक्क्-
﴾खा-﴿	﴾खिला-﴿	﴾खिलवा-﴿
तिन्न्-	तीऱ्ऱ	तीऱ्ऱिप्पिक्क्-
﴾खा﴿	﴾खिला﴿	﴾खिलवा﴿

﴾विस्तृत विवरण केलिए देखिए -पृ. 2. 1. 3. 2. 3. 1. 3. ﴿

3. 3. सहायक क्रियायें

सहायक क्रियाओं का प्रचुर प्रयोग हिन्दी और मलयालम की विशेषता है । दोनों भाषाओं में काल, रीति आदि को सूचित करने केलिए तरह तरह की सहायक क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है । सामान्य रूप में देखा जाय तो दोनों भाषाओं में समानता है तो भी विश्लेषण करने पर ज्ञात होगा कि सहायक क्रियाओं के रूपों में और प्रयोगों में अनेक अंतर है ।

3. 3. 1. हिन्दी सहायक क्रियायें

सहायक क्रिया उस क्रिया को कहते हैं जो क्रिया पदबन्ध में मुख्य न होकर किसी न किसी रूप में सहायक मात्र ﴾लड़का गिर गया ﴿ होती है मुख्य क्रिया के रूप को पूरा करने में सहायक होती है वह सहायक क्रिया है दूसरे शब्दों में कहें तो मुख्य क्रिया के साथ आकर उसके व्यापार के काल को

क्रियाओं को सहायक क्रिया कहा जाता है । लेकिन कार्य और प्रयोग की दृष्टि से देखा जाय तो हिन्दी की सभी सहायक क्रियायें एक की तरह की नहीं मानी जा सकती । हिन्दी क्रियाओं को उनके कार्य अथवा अर्थ के आधार पर तीन भेदों में विभक्त किया जा सकता है ।

1. काल सूचक सहायक क्रियायें
2. रीति या प्रकार सूचक सहायक क्रियायें
3. पृथगर्थक अथवा रंजक सहायक क्रियायें

3.3.1.1. काल सूचक सहायक क्रियायें

हिन्दी क्रियाओं के काल रूप काल सूचक प्रत्यय (ता, या आदि) जोड़कर अथवा प्रत्यय एवं एक या दो सहायक क्रियाएँ जोड़कर बनाये जाते हैं । काल रूपों की विशद चर्चा अन्यत्र की जायेगी । (देखें -- अध्याय चार - 4.1.1.) यहाँ केवल काल रूप निर्माण केलिए प्रयुक्त सहायक क्रिया की चर्चा की जाती है ।

हिन्दी क्रिया के काल रूपों में भूत, वर्तमान और भविष्य ये तीन काल तथा सामान्यता, तात्कालिकता, पूर्णता, संदिग्धता और व्यवस्था ये पाँच रीतियाँ प्रकट की जाती हैं । काल तथा रीतियों को सूचित करने केलिए प्रत्ययों और सहायक क्रियाओं का उपयोग किया जाता है । संक्षेप में उनका रूप देखिए:--

क्रिया	+	रीति	+	सहायक क्रिया	काल - रूप
जा	+	-ता	+	है	जाता है
गा	+	-या	+	था	गाया था ।
चल	+	-आ	+		चला ।

लेकिन सभी क्रिया रूपों को लेने पर यह पूर्णतः ठीक नहीं लगता। किस प्रत्यय या सहायक क्रिया से काल सूचना होती है, और किससे रीति सूचना यह कुछ अनियमित है। निम्न लिखित जोड़ों का परीक्षण किया जाय --

			काल	रीति
1.	सामान्य वर्तमान	आता है	है	-ता- (सामा-पूर्ण)
2.	अपूर्ण भूत	आता था	था	-ता- (अपूर्ण)
3.	अपूर्ण भूत	आता था	था	-ता- (अपूर्णता)
4.	पूर्ण भूत	आया था	था	-या- (पूर्णता)
5.	आसन्न भूत	आया है	या	-है- (आसन्न)
6.	पूर्ण भूत	आया था	या	था (पूर्णता)
7.	तात्कालिक वर्तमान	आ रहा है	है	रह (तात्कालिकता
8.	तात्कालिक भूत	आ रहा था	था	रहा (तात्कालिकता
9.	तात्कालिक संदिग्ध-वर्तमान	आ रहा होगा	होगा	रहा (तात्कालिकता होगा (संदिग्धता)

इससे स्पष्ट है कि कुछ रूपों में

अ) काल सहायक क्रिया से सूचित है, रीति प्रत्यय से -

1-2, 3-4, 7-8

आ) कुछ में काल प्रत्यय से सूचित है, रीति सहायक क्रिया से 5-6

इ) कुछ में काल और रीति दोनों सहायक क्रियाओं के द्वारा सूचित है -9

वाक्य 1, 2 और 3, 4 से स्पष्ट होता है कि "ता" और "या" रीति सूचक है पर सहायक क्रिया "है" और "था" काल सूचक। लेकिन 5-6 की तुलना से ज्ञात होता है कि प्रत्यय "या" काल-सूचक है और सहायक क्रियायें "है" और "था" रीति सूचक।

इन सबसे यही प्रमाणित होता है कि प्रत्यय तथा सहायक क्रियाओं का सुनिश्चित अर्थ निर्णय (Semantic assignment) संभव नहीं है । इस दशा में प्रत्यय सहायक क्रिया दोनों को मिलाकर ही अर्थ निर्णय करना पड़ता है । पूर्ण विश्लेषण संभव नहीं है ।

इस तरह देखा जाय तो सहायक क्रियाओं तथा प्रत्ययों का अर्थ निर्णय निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है ।

ता है	-	सामान्य वर्तमान
रहा है	-	तात्कालिक वर्तमान
ता होगा	-	संदिग्ध वर्तमान
रहा होगा	-	तात्कालिक संदिग्ध वर्तमान
आ/या +ϕ	-	सामान्य भूतकाल
आ/या है	-	आसन्न भूत
आ/या था	-	पूर्ण भूत
आ/या होगा	-	संदिग्ध भूत
ता था	-	अपूर्ण भूत
रहा था	-	तात्कालिक भूत
ता + ϕ	-	हेतुहेतुमद्भूत (कोई सहायक क्रिया नहीं)

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि "था" पूर्णता सूचक है और "रहा" तात्कालिक सूचक ।

इन सहायक क्रियाओं का लिंग, वचन परिवर्तन भी समान नहीं होते वचन और पुरुष में बदल सकता है (है, हैं, हो हूँ) । "था" लिंग वचन बदल सकता है (था, थे, थी, थीं) । "होना" लिंग वचन एवं पुरुष में बदल सकता है । (होगा, होगी, होंगे, होंगी, हूँगा, हूँगी, होगे, होगी) ।

(पूर्ण उदाहरणों केलिए देखिए क्रियाओं की रूप रचना-अध्याय.3)

3.3.1.2. प्रकार सूचक सहायक क्रियायें

हिन्दी में कुछ ऐसी क्रियायें हैं जो मुख्य क्रिया के साथ आकर उसे करने की शक्यता अथवा समाप्ति को सूचित करती है। इनको प्रकार सूचक modal ॥ सहायक क्रियायें कहा जा सकता है। "सक", "चुक", "पा", और "चाह", ऐसी सहायक क्रियायें हैं। इनका प्रयोग क्रिया धातु के साथ होता है। विविध कालों में इनका प्रयोग संभव है।

"सक" उदा: मैं गा सकती हूँ।
मेरा भाई बी.ए. तक पढ़ सका।
क्या तुम कल यहाँ आ सकोगे।
वह राजु से मिल सका था।

"चुक" :- उदा:
सीता काम कर चुकी।
वह दिल्ली जा चुका होगा।
वह एम.ए. पास हो चुकी है।
मैं लिख चुका हूँ।

"पा" क्रिया का प्रयोग क्रिया धातु के साथ अथवा क्रियार्थक संज्ञा के विकृत रूप के साथ किया जाता है।

उदा:- हम लोग वहाँ जा पायेंगे।
वह उसे मिल पायेगा।
क्या तुम वह काम कर पाओगे।
हम लोग वहाँ जाने पायेंगे।

"चाह" का प्रयोग क्रियार्थक संज्ञा के विकारी रूप के साथ होता है।

मेरा भाई हिन्दी सीखना चाहता है ।

मेरे भाई ने हिन्दी सीखनी चाही ।

उसने बंबई जाना चाहा था ।

क्या तुम दिल्ली जाना चाहते हो ।

"चाह" क्रिया का रूप चाहिए अविकारी रूप में प्रयुक्त होता है । मुख्य क्रिया के विकारी रूप के साथ उसका प्रयोग होता है । "होना", "पड़ना" इनका प्रयोग भी इसी तरह होता है लेकिन इनके विकारी रूपों का प्रयोग भी संभव है ।

चाहिए :

तुम्हें हिन्दी पढ़नी चाहिए ।

उसको फल खाना चाहिए

तुम्हें कल यहाँ आना चाहिए ।

सीता को काम करना चाहिए ।

पड़ना

हमें रोज वहाँ जाना पड़ता है / पड़ा/ पड़ेगा

उसको दवा खानी पड़ती है/पड़ेगी/पड़ी ।

राजू को काम छोड़ना पड़ा/पड़ेगा/पड़ता है ।

होना

"होना" का प्रयोग क्रियार्थक संज्ञा के साथ होता है। दोनों क्रि विकारी रहती है ।

मुझे स्कूल जाना है ।

पिताजी को दिल्ली जाना था ।

हमें कई भाषाएँ पढ़नी होंगी ।

उसको ख़त भेजना होगा ।

3.3.1.3. रीति या प्रकर्षार्थक सहायक क्रियाएँ

आकस्मिकता, बल आदि प्रकार्थों को सूचित करती है । मुख्य क्रियाओं के साथ जब ऐसी क्रियायें मिलती हैं तब संयुक्त क्रियायें बनती है । इस तरह प्रयुक्त होनेवाली क्रियायें हैं -पड़, डाल, उठ, बैठ, ले, दे, मार, जाना आदि । इन क्रियाओं का ठीक उपयोग सर्वथा व्यवहार के अनुसार है । [1] यह भी उल्लेखनीय है कि संयुक्त क्रियाओं द्वारा विशेष भावों का प्रकाशन भी होता है - इस भाव प्रकाशन का व्याकरणिक दृष्टि से काफी महत्व है । [2]

सहायक क्रिया	प्रयोग	सूचना
जा	मर गया, टूट जायेगा भाग गया, खो गया भूल गया (जाना)	अचानकता, आकस्मिकता
पड़	गिर पड़ा, निकल पड़ा, देख पड़ा, चौंक पड़ा, जान पड़ा	अचानकता असंतुष्टि
डाल	तोड़ डालेगा, काट डाला, मार डाला, कर डाला	उग्रता
बैठ	कर बैठा, खो बैठा, मार बैठा, भूल बैठा	धृष्टता, अचानकता
ले	समझ ले, लिख लो, खा लिया, छीन लिया	व्यापार का फल कर्ता ही को प्राप्त होता है ।
उठ	चौंक उठा, बोल उठा, रो उठा, रो उठी	अचानकता
दे	छोड़ दिया, कर दिया, दे दी, कह दिया	व्यापार का फल दूसरे को मिलता है ।

मार	लिख मारा, कह मारा ले मारा, दे मारा	असंतुष्ट प्रवृत्ति
रख	रोक रखा, लिख रखा पढ़ रखा, समझ रखा है	व्यापार का फल कर्ता को प्राप्त होता है
रह	बैठ रहो, पड़ तो रहा: हम पड़ रहेंगे	

पीटर हेड्विन हूक ने हिन्दी संयुक्त क्रियाओं के बारे में निम्न-लिखित मत प्रकट किये हैं :--

1. संयुक्त क्रियायें, संयोजित क्रियायें नहीं है ।
2. निषेध में जिसको लुप्त किया जाता है वह दिशा सूचक (रीति) (Vector) क्रिया है ।
3. Vector क्रियायें मुख्य क्रिया के बाद में और कभी कभी पहले आती हैं ।
4. ऐसी क्रियायें (Vector verbs) बाईस हैं । आ, उठ, खड़ा, हो, चल, चुक, छोड़, छोड़ दे, जा, डाल, दे, धर, निकल, निकाल, पड़, बैठ, मर, मार, रख दे , रह, ले, और ले जा ।

- -

ound verbs are not compounds. Nor are they conjugations.

element delected under nigation is the vector verb.

vector follows on, occasionally, Precedes the main verb.

e are 22 vector verbs: a, uth, khara ho, cal, cuk, chor, de, dal, de, dhar, nikal, nikal, par, breth, mar, mar, rakh de, le and le Ja.

5. हर संयुक्त क्रियाओं के लिए एक असंयुक्त क्रिया भी होती है और हर असंयुक्त क्रियाओं के लिए कम से कम एक संयुक्त क्रिया होती है ।

6. संयुक्त क्रियाओं के प्रयोग के अनुसार मुख्य क्रियाओं को आठ विभागों में विभक्त किया जा सकता है ।

7. संयुक्त क्रियाओं में रीति § aspect § की सूचना होती है ।

8. संयुक्त क्रिया असंयुक्त क्रिया की तुलना में क्रिया की पूर्णता को प्रकट करती है ।

9. अगर कोई क्रिया स्थिरता सूचक § Stative § हो तो वह संयुक्त क्रिया नहीं हो सकती ।

10. किसी क्रिया या संभव के होने की संभावना नहीं हो तो उसे असंयुक्त क्रिया के रूप में ही प्रकट किया जाता है ।

:y compound verb correspounds to some non-compound verb, and :y non-copound , to at least one compound verb.

;he basis of the vector they occur with when compound, main verb levided in to the eight lasses.

compound verb is aspectually marked.

compound verb expresses completion of activity relative to the -compound or anteriority.

ın expression is stative then its verb is non-compound.

there is no possibility of an action or events being anticipated is expressed with a non-compound verb.

ɔasankar singh - Readings in Hindi veder.
guistics - P. 130.

3.4. मलयालम की सहायक क्रियायें अथवा अनुप्रयोग

मलयालम में भी मुख्य क्रिया के साथ विविध अर्थों को प्रकट करने केलिए सहायक क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है। पहले बताया जा चुका है - सहायक क्रियायें जब मुख्य क्रिया के साथ आती है तो, अपना स्वतंत्र अर्थ खो देती हैं और मुख्य क्रिया के अर्थ में कुछ जोड़ती हैं। मलयालम की सहायक क्रियायें जब स्वतंत्र मुख्य क्रियाओं के रूप में आती हैं तब अपने स्वतंत्र अर्थ भी होते हैं। इस तरह सहायक क्रियाओं से युक्त प्रयोगों को मलयालम में "अनुप्रयोग" कहा जाता है।[1] मलयालम के वैयाकरण जोर्ज - मात्तन् ने इसको "सहायक वचनं" कहा है।[2] और शेषगिरि प्रभु ने "उपपद" की संज्ञा दी है।[3]

वैयाकरण वासुदेव भट्टतिरि के अनुसार "अनुप्रयोग का अर्थ होता है पीछे प्रयोग करना। किसी क्रिया के अर्थ-भेद अर्थ पूर्ति अथवा काल की पूर्ति को सूचित करने केलिए प्रधान क्रिया के बाद प्रयुक्त अप्रधान क्रिया ही "अनुप्रयोग" है।[4]

कार्य की दृष्टि से मलयालम की सहायक क्रियाओं को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. काल सूचक सहायक क्रियायें
2. रीति सूचक सहायक क्रियायें
3. विशेषार्थक या बलसूचक सहायक क्रियायें। (प्रकर्षार्थक या रंजक)

---

1. हर्मन गुण्डर्ट, मलयालभाषा व्याकरण
2. जोर्ज मात्तन, मलयाण्मयुटे व्याकरणम् - पृ. 151
3. शेषगिरि प्रभु, व्याकरण मित्रम् - पृ. 239-240

3.4.1. काल सूचक सहायक क्रियायें

मलयालम क्रियाओं के काल रूपों का विशद अध्ययन अन्यत्र किया जाता है ।(देखिए अध्याय चार- 4.1.1. पृ 157) यहाँ केवल काल-रूपों के निर्माण केलिए प्रयुक्त सहायक क्रियाओं की चर्चा की जाती है । विशेष उल्लेखनीय है कि कभी-कभी दो या तीन सहायक क्रियायें भी आती हैं । काल-रूप के निर्माण के लिए मलयालम में प्रयुक्त सहायक क्रियाएँ निम्न-लिखित हैं --

1. इरि (हो-)
2. कोण्टु + इरि (रहा हो-)
3. इट्टु + उण्टु (या हो -)
4. उण्टु + आयी + इरि (-या हो-)
5. आ - आकु-((हो-)

कोण्टु, "कोळ्" धातु का भूतकालिक कृदन्त रूप है । उण्टु, 'उळ्' धातु का वर्तमान रूप है । इस धातु के सामान्य और भविष्य रूप नहीं है ।

इरि, इरु

आसन्न भूत (Present Perfect) पूर्ण भूत तथा संभावनार्थक भूत में "इरि धातु के तीन काल रूप "इरिक्कुन्नु" (या है) इरुन्नु (या था) इरिक्कुम् (या होगा) का प्रयोग होता है ।

उदा: अवन् वन्निरिक्कुन्नु ।
(वह आया है)
अवन् वन्निरुन्नु ।
(वह आया था)
अवन् वन्निरिक्कुम् ।

कोण्टिरि
-------- ॥रहा-॥ - कोण्टु + इरि - कोण्टिरि

तात्कालिकता की सूचना केलिए इसका प्रयोग किया जाता है । "इरि" धातु काल रूप में बदलती है पर "कोण्टु" नहीं बदलता । इस तरह "कोण्टिरिक्कुन्नु ॥रहा है॥, कोण्टिरुन्नु ॥रहा था॥ और "कोण्टिरिक्कुम्" ॥रहा होगा॥ क्रमशः तात्कालिक वर्तमान, तात्कालिक भूत तथा तात्कालिक भविष्य अथवा संभावनार्थक को सूचित करते हैं ।

उदा:- कार.रु वीशुन्नु ।

॥हवा चल रही है ॥

कार.रु वीशिक्कोण्टिरुन्नु ।

॥हवा चल रही थी ॥

कार.रु वीशिक्कोण्टिरिक्कुम् ।

॥हवा चल रही होगी ॥

इट्टुण्टु ॥-या है ॥

इट्टु + उण्टु - इट्टुण्टु

आसन्न भूत केलिए "इट्टुण्टु" का प्रयोग किया जाता है । "इट्टुण्टु"॥-या है ॥ का प्रयोग "इरिक्कुन्नु" ॥-या है॥ के अर्थ में भी कर सकते हैं ।

जैसे :- अच्छन् वन्निट्टुण्टु ।

॥पिताजी आये हैं ॥

अच्छन् वन्निरिक्कुन्नु ।

॥पिताजी आये हैं ॥

पय्यन् कटयिल् पोयिट्टुण्टु ।

॥लड़का दूकान में गया है । ॥

पय्यन् कटयिल् पोयिरिक्कुन्नु ।

॥लड़का दूकान गया है ॥

उण्टायिरि (-या हो)

उण्टु + आयि + इरि-

संदिग्धता की सूचना केलिए इसके भविष्य रूप "उण्टायिरिक्कुम्" (-या/-ता होगा) प्रयोग किया जाता है । वर्तमान और आसन्न भूत में संदिग्धार्थ सुचित करने केलिए इसका प्रयोग होता है ।

उदा: लीला सिनेमा काणुन्नुण्टायिरिक्कुम् ।

(लीला सिनेमा देख रही होगी ।)

लीला सिनेमा कण्टिट्टुण्टायिरिक्कुम् ।

(लीला ने सिनेमा देखी होगी ।)

उण्टाकु- (-रहा/आ-होगा)

इसका प्रयोग "उण्टायिरि" जैसा ही किया जाता है ।

उदा: लीला सिनेमा काणुन्नुण्टाकुम् ।

(लीला सिनेमा देख रही होगी ।)

लीला सिनेमा कण्टिट्टुण्टाकुम् ।

(लीला ने सिनेमा देखी होगी ।)

3.4.2. रीति या प्रकार सूचक सहायक क्रियायें

हिन्दी की तरह मलयालम में भी ऐसी क्रियायें हैं जो मुख्य क्रिया के साथ आकर उसे करने की शक्यता अथवा समाप्ति को सूचित करती है । ये प्रकार सूचक (Modal) सहायक क्रियायें हैं --

-काषि (सक), तीरु (चुक), आग्रहिक्क्- (चाह) वेणम् (चाहिए), वेण्डिवरिक (पड़ना/होना) तुटङ्ङुक (लगना) आदि ।

प्रत्यय युक्त क्रियाओं (धातुओं के साथ आनेवाली प्रकार सूचक सहायक क्रियायें हैं -- कषियुक (सकना), आग्रहिक्कुक (चाहना),

तुटङ•ङु•क/ ¶लगना¶ आदि । विविध कालों में इनका प्रयोग संभव है ।

कष़ियुक/ ¶सकना¶

धातु के साथ "आन्" प्रत्यय जोड़ने के बाद "कष़ि" ¶सक-¶ के विभिन्न रूप जोड़े जाते हैं ।

उदा:- एनिक्कु आ जोलि चेय्यान् कष़िञ्ञु ।

¶मैं वह काम कर सका । ¶

अवनु नन्नायि पाटान् कष़ियुम् ।

¶वह अच्छी तरह गा सकेगा । ¶

निङ्•ङ•ळ्क्कु पोकान् कष़ियुमो ?

¶क्या तुम जा सकते हो ? ¶

आग्रहिक्कुक/ ¶चाह- ¶

धातु के साथ "आन्" प्रत्यय जोडकर फिर आग्रहिक्कुक ¶चाह-¶ जोड़ा जाता है ।

उदा:- ञान् कवित/ एष़ुतान् आग्रहिक्कुन्नु ।

¶मैं कविता करना ¶लिखना ¶ चाहता हूँ ।¶

ई काष़्च/ काणान् आर• आग्रहिक्कुम् ?

¶यह दृश्य देखने को कौन चाहेगा ? ¶

अवळ् ताजमहळ् काणान् आग्रहिच्चिरुन्नु ।

¶वह ताजमहल देखना चाहती थी । ¶

तुटङ्•ङ्• ¶ लग-¶

धातु के साथ "आन्" प्रत्यय जोडकर फिर ¶ "तुटङ्•ङ्• " ¶लग-¶

जोड़ा जाता है अथवा भूतकालिक कृदन्त के साथ जोड़ा जाता है ।

उदा:- कुट्टि करयान् तुटङ्ङि ।

(बच्चा रोने लगा ।)

अम्पलत्तिल पूजा तुटङ्ङि ।

(मन्दिर में पूजा होने लगी ।)

अवळ् पाटान् तुटङ्ङुन्नु ।

(वह गाने लगती है ।)

भूतकालिक कृदन्त के साथ

उदा:- कुट्टि करञ्ञु तुटङ्ङि ।

(बच्चा रोने लगा)

अच्छन् आरु मणिक्कु वायिक्कान् तुटङ्ङुम् ।

(पिताजी छे बजे को पढने लगेंगे)

अवन् कत्तु एषुत्तित्तुटङ्ङि ।

(वह चिट्ठी लिखने लगा है)

अवळ् पाटित्तुटङ्ङि ।

(वह गाने लगी)

कषियुक (चुकना)

मलयालम में "चुक" के अर्थ में जहाँ "कषियुक" का प्रयोग होता वहाँ भूतकालिक कृदन्त के साथ ही सहायक क्रिया जोड़ी जाती है ।

इन संयुक्त क्रियाओं में "आन्" के साथ सहायक क्रिया जोड़ने से बननेवाली क्रियाओं को संयुक्त मानना सन्देह रहित नहीं है । "आन्"

अंग्रेज़ी " to " के अर्थ में आता है, और उससे युक्त, मुख्य क्रियाओं के बाद भी "उद्देशि-", "विचारि-", "आलोचि-", "साधि"- अनेक क्रियाओं का प्रयोग हो सकता है । अतः इसे एक अलग प्रयोग मानना उचित है । पर हिन्दी की संयुक्त क्रियाओं के समान क्रियाओं के रूप में इनको लिया जा सकता है ।

कषियुक/ ﴾चुकना﴿

अध्यापकन् क्लासिल् एत्तिक्कषिञ्ञिरिक्कुन्नु ।

﴾अध्यापक क्लास में पहुँच चुके हैं । ﴿

ञान् पाठम् पठिच्चु कषिञ्ञु ।

﴾मैं पाठ पढ चुका । ﴿

सीता कविता एषुतिक्कषिञ्ञु ।

﴾सीता कविता लिख चुकी । ﴿

इन्नले ई समयत्तु ञान् अविटे एत्तिक्कषिञ्ञिरुन्नु ।

﴾कल इस समय मैं वहाँ पहुँच चुकी थी । ﴿

वेण्टि वरिक/ ﴾पड़ना﴿

धातु + एण्टि के साथ जोडा जाता है । एण्ड वस्तुतः "वेण्ट" ﴾केलिए﴿ का संक्षिप्त रूप है ।

उदा:- एनिक्कु कळ्ळम् परयेण्टिवन्नु ।

﴾मुझे झूठ बोलना पड़ा । ﴿

चेट्टनु आशुपत्रियिल पोकेण्टि वरुन्नु ।

﴾भाई को अस्पताल जाना पड़ता है । ﴿

एनिक्कु नाळे इविटम् उपेक्षिक्केण्टि वरूम् ।

§मुझे कल यहाँ छोडना पड़ेगा । §

वेणम् या णम् § चाहिए §

धातु के साथ जोड़ा जाता है । प्राय: वेणम् संक्षिप्त होकर "ण मात्र रह जाता है ।

अवर्क्कु मद्रासिल् पोकणम् ।

§उनको मद्रास जाना है । §

कुर/च्चु रूपा/ वेणम् ।

§कुछ रुपया चाहिए । §

नी इविटे वरणम् ।

§तू यहाँ आना है । §

3.4.3. प्रकर्षार्थक सहायक क्रियायें § Emphasisies)

अप्रतीक्षितता, आकस्मिकता, बल आदि को सूचित करने केलिए प्रकर्षार्थक सहायक क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है । पोक्क/ कळयु कोळ्ळुक/ तल्क/ कोट्टुक्कुक/ वय्क्कुक/ आदि सहायक क्रियायें इसके अंतर्गत आती हैं ।

पोक् §जा— §

आकस्मिकता और अचानकता को सूचित करने केलिए पोक् सहा क्रिया का प्रयोग किया जाता है । प्राय: भूतकालिक कृदन्तमेंही इसका प्रयोग होता है । जैसे "पोयि" ।

गोपालन् मरिच्चु पोयि ।

(गोपाल मर गया ।)

अवन् परीक्षयिल् तोर॰रु पोयि ।

(वह परीक्षा में हार गया ।)

ञान् कळ्ळम् परञ्ञु पोयि ।

(मैं झूठ बोल गयी ।)

चाय/ तणुत्तु पोयि ।

(चाय ठंडी हो गयी ।)

कळयुक (डालना)

पूर्ति, आश्चर्य, चैन, अप्रतीक्षितता आदि को सूचित करता है ।

उदा: पूर्ति :- अवन् कूट्टुकारने तोल्प्पिच्चु कळञ्ञु ।

(वह अपने दोस्त को पराजित कर दिया ।

आश्चर्य :- हनुमान समुद्रम् चाटिक्कळञ्ञु ।

(हनुमान समुद्र कूद डाला ।)

कुट्टि पुस्तकम् कीरिक्कळञ्ञु ।

(बच्चे ने पुस्तक फाड़ डाली ।)

असंतुष्टि :- स्कूळिलेक्कु पोयिक्कळयाम् ।

(स्कूल चल पड़ेंगे ।)

कुळिच्चु कळयाम् ।

(नहा डालें)

कोळ्ळुक (करना-डालना)

[illegible]

नम्रता :- ञान् अपेक्षिच्चु कोळ्ळुन्नु ।

(मैं निवेदन करता हूँ ।)

ञङ्ङळ् अरियिच्चु कोळ्ळुन्नु ।

(हम सूचित करते हैं ।)

उत्तरदायित्व:- अवन् परञ्ञु कोळ्ळुम् ।

(वह कह जायेगा ।)

ञान् पेय्तु कोळ्ळाम् ।

(मैं कर जाऊँगी ।)

उपयुक्तता(Suitability)(कोळ्ळुक/पररुक)

ई पेना एष़ुतान् कोळ्ळाम् ।

(यह कलम लिखने योग्य है ।)

अवळे विश्वसिक्कान् कोळ्ळाम् ।

(वह विश्वास योग्य है ।)

तरुक / कोटुक्कुक (देना)

किसी के लिए कुछ करने या देने के अर्थ में इसका प्रयोग होता है ।

उदा: अच्छन् कुट्टिक्कु कथा परञ्ञु कोट्टुत्तु ।

(पिताजी ने बच्चे को कहानी सुना दी ।)

लीला एनिक्कु पक्षिये काणिच्चु तन्नु ।

(लीला ने मुझे पक्षी को दिखा दिया ।)

वय्क्कुक (कर देना/ रखना)

यह सहायक क्रिया भूतकालिक कृदन्त के साथ आता है और इसका प्रयोग निम्न प्रकार का होता है ।

पणि तुटङ्ङि० वच्चु ।

(काम शुरू कर दिया (रखा) ।)

केसु निरत्तिवय्क्कुन्नु ।

(मुकद्दमा बन्द कर रखते हैं ।)

पुस्तकम् एटुत्तु वय्क्कू ।

(किताब ले रखो ।)

नोक्क् (देखना , कोशिश करना या प्रयोग करके देखना)

इससे कार्य प्राप्ति और असफलता की सूचना मिलती है । जब भूतकालिक कृदन्त के साथ इसका प्रयोग होता है तब सफलता (कार्य प्राप्ति) की सूचना मिलती है और जब ध्येयार्थक या संकेतार्थक कृदन्त के साथ इसका प्रयोग होता है तब असफलता की सूचना मिलती है ।[1]

सफलता :- अवऌ ओटि नोक्कि ।

(उसने दौड के देखा अर्थात् दौडने सफल प्रयत्न किया)

ञान् एषुति नोक्कि ।

(मैं ने लिख कर देखा अर्थात् लिखने का सफल प्रयत्न किया।)

असफलता:- अवऌ ओटान् नोक्कि ।

(वह दौडने की कोशिश की ।)

ञान् एषुतान् नोक्कि ।

(मैं लिखने की कोशिश की ।)

---

1. अगस्त्य लिंगम्, द्रविड सहायक क्रियायें - पृ० 274, 275

3.4.4. हिन्दी और मलयालम सहायक क्रियायें - तुलना

यद्यपि हिन्दी और मलयालम के व्याकरणों में तनिक भिन्न रूपों में सहायक क्रिया की चर्चा की गयी है तो भी उनमें कुछ समानताएँ दिखाई पड़ती हैं। हिन्दी की तरह मलयालम में भी काल सूचक, प्रकार सूचक (रीति सूचक) और प्रकषार्थिक सहायक क्रियायें हैं।

सभी क्रियायें और उनके प्रयोग पूर्ण रूप से समान नहीं है। फिर भी एक भाषा की सहायक क्रियाओं को दूसरी भाषाओं की सहायक क्रियाओं के द्वारा प्रकट किया जा सकता है।

दोनों भाषाओं में समान सहायक क्रियायें नीचे उदाहरण सहित दी जा रही हैं। इस बात का विशेष उल्लेख करना आवश्यक नहीं है कि हिन्दी की सहायक क्रियाओं का लिंग, वचन, पुरुषानुसार रूपांतर होता है (पृ. 6.1.1.3.2.) किंतु मलयालम की क्रियाओं में केवल कालभेद होता है लिंग वचनानुसार परविर्तन नहीं होता।

काल सूचक सहायक क्रियाओं की तुलना क्रियाओं के काल संबन्धी प्रकरण में दिया गया है। यहाँ केवल अन्य सहायक क्रियाओं के उदाहरण दिये जाते हैं।

प्रकार सूचक या रीतिसूचक

हिन्दी		मलयालम्
सकना		कषियुक
प्रयोग	धातु + सहायक क्रिया	धातु + आन् + सः क्रिया

उदा: गोमती गा सकती है । गोमतिक्कु पाटान् कष़ियुम् ।

मैं आज वहाँ नहीं जा सकता । एनिक्कु इन्नविटे पोकान् कष़ियिल्ला ।

विशेष :-

हिन्दी "सक" का प्रयोग कर्तृकारक संज्ञा के साथ होता है । (मैं, गोमती) । मलयालम "कष़ियुक" का प्रयोग संप्रदान कारक के कर्ता के साथ होता है । (एनिक्कु, गोमतिक्कु) । कष़ियुक के भविष्यत् काल रूप "कष़ियुम" (सकेगा) का प्रयोग वर्तमान में भी होता है ।

चुकना — कष़ियुक / तीरुक

प्रयोग धातु + सहायक क्रिया भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया

मैं लिख चुकी । ञान् एष़ुति कष़िञ्ञु ।

ञान् एष़ुति तीर्न्नु ।

लड़के स्कूल से आ चुके हैं । आण्कुट्टिकळ् स्कूलिल निन्नु वन्नु कष़िञ्ञु ।

विशेष:-

"सक" और "चुक" के लिए मलयालम में "कष़ियुक" एक ही क्रिया है पर दोनों के प्रयोग में अंतर है । "सक" के अर्थ में "कष़ियुक" का प्रयोग धातु + आन् (ध्येयार्थक या संकेतार्थ कृदन्त) के साथ होता है । "चुक" के साथ उसका प्रयोग भूतकालिक कृदन्त के साथ होता है ।

चाहना — आग्रहिक्कुक / इच्छिक्कुक

प्रयोग क्रियार्थक संज्ञा + सहायक क्रिया मल: धातु + ध्येयार्थक कृदन्त + (आन्) सहायक क्रिया

रमेश इंजनीयरिंग पढ़ना चाहता है । रमेश इंजनीयरिंग पठिक्कान् आग्रहिक्कुन्नु ।

मैं दिल्ली जाना चाहती हूँ । आन् दिल्लियिल् पोकान् आग्रहिक्कुन्

मुझे दिल्ली जाना चाहिए । एनिक्कु दिल्लियिल पोकणम् ।

उसको हिन्दी सीखनी चाहिए । अवनु हिन्दी पठिक्कणम् ।

विशेष: क्रियार्थक संज्ञा के विकार्य रूपों का प्रयोग होता है ।

4. पाना साधिक्कुक / वरिक

हि: धातु + सहायक क्रिया/ मल: धातु + प्रत्यय (आन् संकेतार्थक कृदन्
विकृत क्रियार्थक संज्ञा + सहायक क्रिया| सहायक क्रिया

शाम की बैठक में नहीं जाने पाया। एनिक्कु वैकुन्नेरत्ते मीट्टिंगिल् पोकान् साधिच्चिल्ल ।

मैं हिन्दी कविता नहीं लिखने पाया । एनिक्कु हिन्दी कवित एषुत साधिच्चिल्ल ।

चाहिए वेणम/णम

प्रयोग: विकार्य क्रियार्थक संज्ञा + सहायक क्रिया धातु + सहायक क्रिया

मुझे वहाँ जाना चाहिए । एनिक्कु अविटे पोकणम् ।

तुम्हें अभी जाना चाहिए । निङ्डळ् इप्पोळ् तन्ने पोकणम् ।

उसको हिन्दी पढ़नी चाहिए । अवनु हिन्दी पठिक्कणम् ।

मुझे कविता लिखनी चाहिए । एनिक्कु कवित एषुतणम् ।

तुम को सभा में भाषण देना चाहिए । निङ्डळ् सभयिल प्रसंगिक्कणम् ।

विशेष:- "चाहिए" का प्रयोग करते समय "को" आता है । मलयालम में "क्कु" प्रत्यय आ सकता है और उसके बिना भी प्रयोग "आ" भी हो स
ह

पड़ना, होना	वेण्डि वरिक
प्रयोग: विकार्य क्रियार्थक संज्ञा + सहायक क्रिया	क्रिया + सहायक क्रिया
हमें नौ बजे क्लास में आना पड़ता है । आना होता है ।	अइंङ्ळक्कु ओन्पतु मणिक्कु स्कूलिल्- पोकेण्टियिरिक्कुन्नु/पोकेण्ट वरुन्नु ।
तुम्हें शाम को यहाँ आना पडेगा/होगा ।	निङ्ङळ् (क्कु) वैकुन्नेरम् इविटे वरेण्डियिरिक्कुम् /वरुम् ।
गोपाल को हिन्दी पढ़नी होगी ।	गोपान् (नु) हिन्दी पठिक्केण्डिवरुम
सीता को कल कालेज जाना होगा ।	सीत (क्कु) नाळे कालेजिल् पोकेण्डि- वरुम् ।

विशेष: मलयालम में "क्कु" प्रत्यय आ सकता है नहीं भी ।

प्रकर्षार्थक

हिन्दी की प्रकर्षार्थक क्रियाओं का प्रयोग क्रिया धातु के साथ होता है, मलयालम प्रकर्षार्थक सहायक क्रियाओं का प्रयोग भूतकालिक कृदन्त के साथ होता है ।

हिन्दी	मलयालम्
जा	पोकु
मर जाना	मरिच्चु पोकुक
मर गया	मरिच्चु पोयि
गिर गया	वीणु पोयि
खो गया	नष्टप्पेट्टु पोयि

पड़	**कळयुकऽ / पोकुकऽ**
चल पड़ा	पोयिक्कळञ्ञु
कूद पड़ा	चाटिक्कळञ्ञु
गिर पड़ा	वीणु पोयि
चौंक पड़ा	पेटिच्चु पोयि
ले	**एटुक्कुकऽ / कोळ्ळुकऽ**
लिख लेना	एषुति एटुक्कुकऽ / एषुतिक्कोळ्ळुकऽ
समझलिया	मनतिलाक्कि एटुत्तु
देख लिया	कण्टेटुत्तु
दे	**कोटुक्कुकऽ / तरिकऽ**
कह दिया	परञ्ञु कोटुत्तु/ तन्नु
दिखा दिया	काणिच्चु कोटुत्तु / तन्नु
सिखा दिया	पठिप्पिच्चु कोटुत्तु / तन्नु
काट दिया	मुरिच्चु कोटुत्तु / तन्नु
डाल	**कळयुक**
फाड़ डाला	कीरिक्कळञ्ञु
कह डाला	परञ्ञु कळञ्ञु
मार डाला	कोन्नु कळञ्ञु
काट डाला	मुरिच्चु कळञ्ञु

मार-	तुलय्क्कुक्
चल मारा।	पोयित्तुलच्चु।
कह मारा।	परञ्ञु तुलच्चु।
लिख मारा।	एषुतित्तुलच्चु।

रख	वय्क्कुक्
लिख रखा।	एषुति वच्चु।
रोक रखा।	तटञ्ञु वच्चु।
देख रखा।	नोक्कि वच्चु।
कर रखा।	चेय्तु वच्चु।

5. क्रिया संयोग :-

संयुक्त क्रियाओं में जैसे ऊपर दिखाया गया है क्रिया धातु के साथ ही सहायक क्रिया का प्रयोग होता है और वह सहायक क्रिया अपना अर्थ खोकर विशेषार्थ को सूचित करती है । इनके अतिरिक्त हिन्दी में दो क्रियाओं के ऐसे संयोग भी हैं जिनको क्रिया संयोग कहा जाता है । इनमें मुख्य क्रिया के धातु के अतिरिक्त अन्य किसी रूप के साथ सहायक क्रिया का उपयोग किया जाता है और सहायक क्रिया का अर्थ भी सुरक्षित रहता है । मुख्य क्रिया के रूप के आधार पर इसके पाँच भेद हैं । [1]

1. मुख्य क्रिया का विकार्य - — वर्तमान कृदन्त + सहायक क्रिया
2. मुख्य क्रिया का अविकारी -भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया

---

1. एस. एन. गणेशन हिन्दी और तमिल का व्यतिरेकी व्याकरण -पृ. 437

3. मुख्य क्रिया का विकार्य -भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया
4. क्रियार्थक संज्ञा का विकार्य रूप + सहायक क्रिया
5. क्रियार्थक संज्ञा का विकृत रूप + सहायक क्रिया

1. वह बोलता जाता है ।
तुम क्या करते जाते हो ।
वह कहता रहा, मैं सुनती रही ।
लड़के दो घण्टे तक खेलते रहे ।

2. ललिता रोज़ गाया करती है ।
मैं रोज़ लिखा करती हूँ ।
लड़के खेला करते हैं ।
वह रोज़ वहाँ जाया करता था ।

3. माताजी लेटी रहीं मैं पास बैठा रहा ।
भाई खाता रहा और मैं देखती रही ।
पिताजी लिखे रहे और मैं देखा रहा ।
बच्चा रोता रहा और आया झुला रहा ।

4. वह यहाँ आना चाहता है ।
ये वहाँ जाना नहीं चाहते ।
मैं ने उसको एक घड़ी देनी चाही ।
हम अब सोना चाहते हैं ।

लीला गाने लगती है ।
अध्यापक पढ़ाने लगे ।
लडकियाँ नाचने लगी थी ।

3.5.1. हिन्दी और मलयालम क्रिया संयोग - तुलना

जैसे पहले दिखाया गया है --

1. हिन्दी क्रिया संयोग विकार्य वर्तमान कालिक कृदंत 2. अविकार्य भूतकालिक कृदंत 3. विकार्य भूतकालिक कृदन्त 4. विकार्य क्रियार्थक संज्ञा अथवा 5. विकृत क्रियार्थक संज्ञा के साथ एक क्रिया जोड़कर किया जाता है। मलयालम व्याकरणों में ऐसी क्रियाओं की चर्चा नहीं होती। (1) और (3) तक के लिए भूतकालिक कृदन्त के साथ अन्य क्रिया जोडी जाती है। (4) और (5) के लिए क्रिया + प्रत्यय (आन्) के साथ अन्य क्रिया जोडी जाती है। जैसे--

1. हि: तुम क्या कहते जाते हो ?
   मल: नी एन्तु परञ्ञुकोण्टु पोकुन्नु ?

2. हि: वह बोलता रहा, मैं सुनती रही।
   म: अवन् सम्सारिच्चुकोण्टिरुन्नु, ञान् केट्टुकोण्टिरुन्नु

3. हि: लड़का लेटा रहा।
   म: आण्कुट्टि किटन्निरुन्नु (किटक्कुकयायिरुन्नु)

2. के लिए मलयालम में क्रिया के साथ "आर" + "उण्टु" जोडा जाता है। अथवा क्रियार्थक संज्ञा के साथ "पतिवाणु" (आदत है) का प्रयोग करता है।

2. हि: सीता रोज़ यहाँ आया करती है।
   म: सीत दिवसवुम् इविटे वरिक पतिवाणु / वरारुण्टु।

   हि: वह हिन्दी गीत गाया करती है।
   म: अवन् हिन्दी पाट्टु पाटुक पतिवाणु / पाटारुण्टु/

हि: हम रोज़ शाम को मन्दिर जाया करते थे ।

म: अङ्.ङ.ळ् एल्ला वैकुन्नेरवुम् अम्बलत्तिल पोकुक पतिवायिरुन्नु/ पोकारुण्टायिरुन्नु / पोकारुण्टु

3. केलिए मलयालम में क्रियार्थक संज्ञा के साथ 'आयिरिक्कुक' का प्रयोग किया जाता है ।

3. हि: माता लेटी रही बच्चा पास बैठा रहा ।

म: अम्मः किटक्कुकयायिरुन्नु, कुट्टि अटुत्तु इरिक्कुकयायिरुन्नु

हि: लड़की पढती रही और माँ देखती रही ।

म: पेण्कुट्टि पठिचुकोण्टिरिक्कुकयायिरुन्नु , अम्म नोक्किकयिरिक्कुकयायिरुन्नु ।

4. और 5. केलिए मलयालम में प्रयोग इस प्रकार होता है - क्रिया + आन्

4. हि: वह यहाँ आना चाहता है ।

म: अवन् इविटे वरान् आग्रहिक्कुन्नु ।

हि: कल्याणि सोना चाहती थी ।

म: कल्याणि उरङ्.ङ्.ान् आग्रहिच्चिरुन्नु ।

हि: मैं ने उसे घडी देनी चाही ।

म: ञान् अवनु क्लोक् कोटुक्कान् आग्रहिच्चु ।

हि: वह यहाँ आना नहीं चाहती थी ।

म: अवन् इविटे वरान् आग्रहिच्चिरुन्निल्ल/ ।

5. हि: लड़के पढने लगे ।

म: कुट्टिकळ् पठिक्कान तटङ्ङि.ङ. ।

हि: लड़कियाँ नाचने लगीं ।
म: पेण्कुट्टिकल् नृत्तम चेय्यान् तुटङ्ङि. ।

हि: मैं तुम्हें जाने नहीं दूँगा ।
म: ञान् निन्ने पोकान् अनुवदिक्किल्ल ।

हि: वह राम को गाने नहीं देता ।
म: अवन् रामने पाटान् अनुवदिक्कुन्निल्ल ।

6. संकर क्रियायें :-

हिन्दी में कुछ ऐसे क्रियापद है जो संज्ञा अथवा विशेषण के साथ "करना" अथवा "होना" जोड़कर बनाये जाते हैं कहीं-कहीं "लेना" या "देना" भी जोडा जाता है, ऐसी क्रियाओं को संकर क्रियायें कहा जाता है । वस्तुत: ऐसे प्रयोगों में संज्ञा और क्रिया के अर्थ अलग नहीं रहते दोनों का एक ही अर्थ बन जाता है और दोनों मिलकर क्रिया का कार्य करते हैं । अत: उनको क्रियापद कहा जा सकता है । ऐसे क्रियापदों के पूर्व का "के", को", "की", "से", "पर" आदि प्रत्यय आते हैं ।

"का" संज्ञा + कर/ हो

- का सम्मान कर/ का सम्मान हो
- का आदर कर/ का आदर हो /
- का अपमान कर/ की अपमान हो ।
- का स्वागत कर / का स्वागत हो /
-की पूजा कर/ -की पूजा हो /
-की प्रतीक्षा कर/ -की प्रतीक्षा हो /
-की प्रशंसा कर/ -की प्रशंसा हो /

"को" के साथ

-को आरंभ कर

- को प्रणाम कर

- को क्षमा कर

- को याद कर

"से" के साथ

-से प्यार कर/ हो

-से घृणा कर / हो

"पर" के साथ

-पर दया कर / हो /

-पर सहानुभूति कर/ हो/

-पर सन्देह कर / हो /

-पर रहम कर/ हो /

विशेषण + क्रिया

हिन्दी में विशेषण + क्रिया, यदि क्रिया "कर" हो तो, संकर क्रिया साधारण सकर्मक सी रहती है और कर्म के साथ "को" प्रत्यय आता है याने कारक चिह्न "को" और "ø" हो सकता है ।

विशेषण + क्रिया

ø - को समाप्त कर

ø - को प्रेरित कर

जैसे :- किसी को अपमानित मत करो ।
उसने अपना काम समाप्त किया ।
मैं इस शहर को पसन्द नहीं करता ।
तुम इस काम को कब पूर्ण करोगे ?

जब विशेषण + क्रिया संयोग में क्रिया "हो" होती है तब विशेषण "पूरक" के रूप में कार्य करता है और दोनों मिलकर साधारण क्रिया के रूप में रहते हैं ।

मेरा काम समाप्त हुआ ।
प्रदर्शनी शुरू हुई ।
लेखक गाँधीवाद से प्रेरित हुआ है ।
यह साड़ी मुझे पसन्द नहीं है ।
कागज़ सस्ता होगा ।
वह उपस्थित था ।

ऊपर के वाक्यों में "समाप्त" शुरू" "प्रेरित", पसन्द", "सस्ता उपस्थित" आदि पूरक विशेषण है । साथ आनेवाली क्रिया रूप वचन में कर्ता के अनुसार बदलती है ।

3. 6. 1. हिन्दी-मलयालम-संकर क्रियाओं की तुलना

हिन्दी में जो संकट क्रियायें हैं उनमें अधिकांश सामान्य क्रियाओं के रूप में मलयालम में आती है । जैसे

हिन्दी: संकर क्रियायें	मलयालम सामान्य क्रियायें
-का सम्मान करना	-ए आदरिक्कुक/
-का अभिनन्दन करना	-ए अभिनन्दिक्कक/

हिन्दी: संकर क्रियायें	मलयालम सामान्य क्रियायें
- का शृंगार करना	-ए शृंगारिक्कुक/
- का निरोध करना	-ए निरोधिक्कुक/
-का याद करना	-ए ओर्म्मिक्कुक/
- का इंतज़ार करना	- ए प्रतीक्षिक्कुक/
- की पूजा करना	- ए पूजिक्कुक/
- की प्रतीक्षा करना	- ए प्रतीक्षिक्कुक/
- की आलोचना करना	- ए विमर्शिक्कुक/
- की प्रशंसा करना	- ए प्रशंसिक्कुक/
- की इज़्ज़त करना	- ए बहुमानिक्कुक/
- की रचना करना	- ए सृष्टिक्कुक/

2. अनेक क्रियायें ऐसे हैं जिनके संकर रूप भी मिलते हैं और सामान्य रूप भी

मलयालम: संकर रूप	सामान्य रूप
पूज/ चेय्युक/	पूजिक्कुक/
(पूजा करना)	(पूजा करना)
चिकित्स/ चेय्युक/	चिकित्सिक्कुक/
(चिकित्सा करना)	(चिकित्सा करना)
परिश्रमम् चेय्युक/	परिश्रमिक्कुक/
(परिश्रम करना)	(परिश्रम करना)
नमस्कारम् चेय्युक/	नमस्करिक्कुक/
(नमस्कार करना)	(नमस्कार करना)

एतिरु चेय्युक   एतिरुक्कुक

(विपरीत करना)   (विपरीत करना)

मलयालम में भी ऐसी कुछ क्रियायें हैं जिनका प्रयोग केवल संकर क्रियाओं के रूप में ही होती है । जैसे :-

स्वागतम चेय्युक
(स्वागत करना)

लेलम चेय्युक
(नीलाम करना)

आलिंगनम् चेय्युक
(आलिंगन करना)

दानम् चेय्युक
(दान करना)

चूषणम् चेय्युक
(चूषण करना)

मुद्रणम चेय्युक
(मुद्रण करना)

प्रकाशनम् चेय्युक
(प्रकाशन करना)

नृत्तम चेय्युक
(नाचना)

मलयालम् में संज्ञा के साथ अनेक क्रियायें जोड़ी जाती है । कुछ सामान्य प्रयोग निम्न लिखित है ।

जैसे   आवश्यप्पेटुक (मांगना)

[illegible]   [illegible]

चीतम वयक्कुक/ (चोंचारा करना)
नाशम् वरुत्तुक/ (नाश करना)
दर्शनम् नटत्तुक/ (दर्शन करना)
धैर्यप्पेटुत्तुक/ (धीरज करना)
नष्टप्पेटुत्तुक/ (नष्ट करना)

3.7. निषेध सूचक क्रिया रूप :-

वाक्य के मुख्य दो भेद होते हैं - विधेय और निषेध। जिन वाक्यों में क्रिया द्वारा कार्य होने की सूचना मिले उन्हें विधानार्थक वाक्य कहते हैं, और जिन वाक्यों में कार्य का निषेध पाया जाता है उन्हें निषेधार्थक वाक्य कहते हैं। [1]

विधानार्थक - हम ने पाठ पढाया।
भारत एक महान राष्ट्र है।

निषेधार्थक गुस्सा मत करो
हम ने गीत नहीं गाया।

मलयालम में दी गयी परिभाषा के अनुसार - जहाँ किसी एक कार्य "उण्टु" (है) कहा जाता है तो वहाँ विधेय (विधानार्थक) है और जहाँ कार्य के न होने के माने "इल्ल/" (नहीं) के बारे में कहा जाता है तो उसे निषेधात्मक माना जाता है। [2]

उदा: मेशप्पुरत्तु पुस्तकम् उण्टु - विधेय
(मेज़ पर किताब है)
मेशप्पुरत्तु पुस्तकम् इल्ल/ - निषेध
(मेज़ पर किताब नहीं है)

आन् सिनिमा काणान् वरुन्नू (विधेय)
(मैं सिनेमा देखने केलिए आती हूँ)

आन् सिनिमा काणान् वरुन्निल्ल / - निषेध
(मैं सिनेमा देखने नहीं आती)

3.7.1. हिन्दी और मलयालम निषेध रूपों की तुलना:-

हिन्दी की तुलना में मलयालम निषेध सूचना अधिक वैविध्यपूर्ण और जटिल है। जहाँ हिन्दी में विधि रूप में "मत" और अन्य रूपों में "नहीं" का प्रयोग किया जाता है मलयालम में कई रूप मिलते हैं - उनका अध्ययन नीचे किया जाता है।

मलयालम् में वर्तमान, भूत, भविष्य इन तीनों कालों में क्रिया का निषेध रूप संभव है।[1] वर्तमान और भूतकाल में क्रिया रूप के साथ सीधे "इल्ल/" (नहीं) जोड़ा जाता है लेकिन भविष्य में क्रियार्थक संज्ञा के साथ "इल्ल/" नहीं जोड़ा जाता है और उसमें कभी कभी "क" का लोप हो जाता है।

विधेय	निषेध
वर्तमान: रामन् पोकुन्नु ।	रामन् पोकुन्निल्ल/ ।
(राम जाता है)	(राम नहीं जाता)
अवन् भक्षणम् कष़िक्कुन्नु ।	अवन् भक्षणम् कष़िक्कुन्निल्ल ।
(वह खाना खाता है)	(वह भोजन नहीं खाता)
कुट्टि चित्रम् वरय्क्कुन्नु ।	कुट्टि चित्रम् वरय्क्कुन्निल्ल/ ।
(बच्चा चित्र खींचता है)	(बच्चा चित्र नहीं खींचता है)
पक्षि चिलय्क्कुन्नु ।	पक्षि चिलय्क्कुन्निल्ल/ ।
(चिड़िया चहकती है)	(चिड़िया नहीं चहकती है)

1. रोबर्ट काल्ड्वल्-परिभाषा-एस. के. नायर- द्रविड भाषा व्याकरणम- पृ. 535

भूत

रामन् पोयि ।	रामन् पोयिल्लै ।
(राम गया)	(राम नहीं गया)
अवन् भक्षणम् कषिच्चु ।	अवन् भक्षणम् कषिच्चिल्लै ।
(उसने खाना खाया)	(उसने खाना नहीं खाया)
कुट्टि चित्रम् वरच्चु ।	कुट्टि चित्रम् वरच्चिल्लै ।
(बच्चे ने चित्र खींचा)	(बच्चा चित्र नहीं खींचा)
पक्षि चिलच्चु ।	पक्षि चिलच्चिल्लै ।
(चिडिया चहकी)	(पक्षी नहीं चहका)

भविष्य

रामन् पोकुम् ।	रामन् पोकिल्लै ।
(राम जायेगा)	(राम नहीं जायेगा)
अवन् भक्षणम् कषिक्कुम् ।	अवन् भक्षणम् कषिक्किल्लै ।
(उसने खाना खायेगा)	(उसने खाना नहीं खायेगा)
कुट्टि चित्रम् वरय्क्कुम् ।	कुट्टि चित्रम वरय्क्किल्लै । वरय्क्कुकयिल्लै
(बच्चे ने चित्र खींचेगा)	(बच्चे ने चित्र नहीं खींचेगा)
पक्षि चिलय्क्कुम्	पक्षि चिलय्क्किल्लै / चिलय्क्कुकयिल्लै
(चिड़िया चहकेगी)	(पक्षि नहीं चहकेगा)

विधि रूप में (क) क्रिया धातु के साथ "अरुतु" जोड़कर [1] (ख) भूतकालिक कृदंत के साथ "कूटा" जोड़कर और [2] (ग) ध्येयार्थक या संकेतार्थक कृदन्त के साथ "पाटिल्ला" [3] जोड़कर निषेध रूप बनाये जाते हैं ।

अरुतु:

नी अविटे पोकरुतु (तू वहाँ मत जाना)

निङङळ् अवऩ्क्कु ओरु सहायवुम् चेय्यरुतु

(तुम उसके लिए सहायता मत करना)

आ पऴम् कऴिक्करुतु । (वह फल मत खाना)

आरुम् आरेयुम् कळियाक्करुतु ।

(कोई किसी का मत हंसी उड़ाना)

कूटा

नी अङ्ङिङने परयरुतु कूटा ।

(तू ऐसा मत कहा ।)

मरम् वेरुते नशिप्पिच्चु कूटा ।

(पेड़ का नाश नहीं करना ।)

पेना कळयरुतु कूटा ।

(कलम को नहीं छोड़ना ।)

पाटिल्ला

नी अङ्ङिङने परयान् पाटिल्ला ।

(तुझे ऐसा कहना नहीं चाहिए)

मरम वेरुते नशिप्पिक्कान् पाटिल्ला ।

(पेड़ का नाश बेकार नहीं किया जाना चाहिए ।)

पेना कळयान् पाटिल्ला ।

(कलम खोयी नहीं जाय)

विधायक, अनुज्ञायक, निर्योजक आदि प्रकारों का निषेध रूप बनाने के लिए "ओक्का", "अरुतु", "वेण्टा" आदि धातुओं का प्रयोग किया जाता है ।[1] विधायक में "वेण्" धातु का निषेध प्रत्यय से जुड़ा हुआ शील भा (सामान्य भविष्यत्) का ही प्रयोग होता है ।[2]

विधायक   नी अविटे पोकणम ।   निषेध: नी अविटे पोकण्टा ।
(तू वहाँ जाना)   (तू वहाँ मत जाना)

अनुज्ञायक

आन् आ कार्यम् परयाम् ।   आन् आ कार्यम् परयोला ।
(मैं वह कार्य कहूँगा)   (मैं वह कार्य नहीं कहूँगा)

निर्योजक

अवन् परयट्टे ।   अवन् परयरुतु ।
(भला वह कहे)   (वह नहीं कहे)

5. अशक्यता को सूचित करने के लिए इच्छार्थक कृदन्त के साथ "वहिया" या "वय्या" जोड़कर निषेध रूप बनाया जाता है ।

उदा: एनिक्कु नटक्कान् वहिया /वय्या ।
(मैं चल नहीं सकता)
अवळ्क्कु पाटान् वहिया / वय्या ।
(वह गा नहीं सकती)
एनिक्कु कटयिल् पोकान् वय्या / वहिया ।
(मैं दूकान जा नहीं सकता)

---

1. शेषगिरि प्रभु, व्याकरण मित्रम्-पृ. 238
2. वासुदेव भट्टतिरि, भाषाशास्त्रम्- पृ. 245

"आ" प्रत्यय जोडकर भी निषेध रूप बनाया जाता है ।[1] अथवा पेरच्चम् (नामांग), विनयेच्चम् (क्रियांग) आदि रूपों के साथ "आ" प्रत्यय जोडने पर निषेध आ सकता है ।[2]

पोयि – पोकात्ति
(गया-) – (न गया-)
पोकुन्नु – पोकात्ति
(जाता) – (नहीं जाता-)
चेय्योन् – चेय्याय्कान्
(करने को-) – (नहीं करने)
चेय्तान् – चेय्याञ्ञाल्
(किया तो -) (नहीं किया तो)

द्रष्टव्य है कि मलयालम में "इल्ल", "कूटा", "पाटिल्ल", "अरुतु" "ओल्ल", "वय्य" "वेण्टा" आदि विविध अविकारी शब्दों के द्वारा निषेध सूचित किये जाते हैं वहाँ हिन्दी में केवल "मत" और "नहीं" से काम चला जाता है ।

3. निष्कर्ष

हिन्दी और मलयालम दोनों भाषाओं की क्रिया में कुछ सामान्य समानतायें हैं तो भी रूपों और प्रयोगों में अनेक अंतर भी दृष्टिगत होते हैं । सकर्मक और अकर्मक क्रियायें दोनों में हैं पर हिन्दी सकर्मक क्रियाओं के भूतकालीन प्रयोगों में कुछ विशेषता है । कर्ता के साथ "ने" प्रत्यय का प्रयोग और क्रिया का कर्म के अनुसार होना अथवा किसी के साथ न होना हिन्दी की

---

1. ए. आर. राजराजवर्मा- केरल पाणिनीयम्- पृ 291
2. वासुदेव भट्टतिरि- भाषाशास्त्रम्- पृ. 245

विशेषता है । मलयालम में सकर्मक क्रिया का प्रयोग अकर्मक क्रिया के प्रयोग से भिन्न नहीं है ।

दोनों में अकर्मक, सकर्मक, प्रथम प्रेरणार्थक, द्वितीय प्रेरणार्थक - इन चार श्रेणियों की क्रियायें हैं । अकर्मक से सकर्मक और अकर्मक और सकर्मक से प्रेरणार्थक क्रिया, प्रत्यय जोड़कर बनायी जाती है ।

दोनों भाषाओं में विविध प्रकार की सहायक क्रियायें तथा संयुक्त क्रियायें भी हैं । क्रियाओं में भेद होने पर भी उनकी रचना पद्धति में काफी समानता दिखाई पड़ती है । काल सूचक, प्रकार सूचक, प्रकर्षार्थक सहायक क्रियायें दोनों भाषाओं में मिलती हैं । यह शायद सभी आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की विशेषता है ।

हिन्दी और मलयालम दोनों भाषाओं की क्रिया संयोग एवं संकर क्रियाओं का विशेष महत्व है । हिन्दी की तरह "क्रिया संयोग" का समान प्रयोग मलयालम में भी होता है । हिन्दी में जो संकर क्रियायें हैं उनमें अधिकांश सामान्य क्रियाओं के रूप में मलयालम में प्रयुक्त होती हैं ।

निषेधात्मक क्रियाओं में मलयालम में कुछ संकुलता है मगर हिन्दी के प्रयोग कुछ सरल हैं ।

****

चौथा अध्याय

हिन्दी और मलयालम क्रियाओं के रूपांतर

चौथा अध्याय

4.0. हिन्दी और मलयालम क्रियाओं के रूपांतर

4.1. हिन्दी क्रियाओं के रूपान्तर :-

विकारी शब्दों में क्रिया का एक मुख्य स्थान है और वाक्य में वह सब से प्रधान शब्द होती है । यद्यपि हिन्दी और मलयालम दोनों भाषाओं में वह विकारी रूप में प्रयुक्त होती है तो भी उनके विकारों में और प्रयोगों में अनेक अंतर दिखाई पड़ते हैं ।

प्रथम दृष्टि में भी यह स्पष्ट होता है कि पुरुष , लिंग और वचन के अनुसार परिवर्तन न होने के कारण मलयालम की क्रिया रचना पद्धति अत्यंत सरल है और पुरुष , लिंग, वचनानुसार विकार होने के कारण हिन्दी की क्रिया-रचना-पद्धति कुछ जटिल है । इनके अतिरिक्त क्रियाओं में काल, वाच्य प्रयोग और प्रकार की सूचना के विधान भी हैं । इनमें दोनों भाषायें कुछ समानतायें प्रकट करती हैं तो भी दोनों में कई अंतर भी हैं । इन सब का अध्ययन इस अध्याय में किया जायेगा ।

4.1.1. काल :-

हिन्दी में काल क्रियापरक रूपों का ऐसा समवाय है जो भाषा में प्रत्यक्ष एवं वास्तव में विद्यमान समय को प्रतिबिम्बित करता है और क्रिया से अभिव्यक्त व्यापार या अवस्था के सम्बन्ध को कथन के क्षण के प्रति निर्देश करता है । [1]

---

1. दीमशित्स- हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा- पृ. 125

कामता प्रसाद गुरु ने काल की परिभाषा इस प्रकार दी है -" क्रिया के उस रूप को काल कहते हैं, जिससे क्रिया के व्यापार का समय तथा उसकी पूर्ण या अपूर्ण अवस्था का बोध होता है ।[1]

काल बोध को हम दो स्तरों पर ग्रहण करते हैं - एक वह स्तर है जिससे यह पता चलता है कि समय के धरातल पर व्यापार कहाँ घटित हो रहा है । अगर क्रिया व्यापार "अब और आज" के बोध से संयुक्त होकर व्यक्त होता है तो वर्तमान काल और वह वर्तमान से पूर्व की स्थिति में है, तो भूतकाल तथा उसके बाद की स्थिति में है तो भविष्यत्काल के रूप से स्वीकृत होता है ।[2]

क्रिया किस समय हुई और वह पूर्ण हो गयी या नहीं हुई, या उसके होने में सन्देह है, उसका अर्थ क्या है - इन सब बातों का पता भाव और काल के योग से माना जाता है, जैसे -- वह आयगा, वह आया था, वह आता होगा ।[3]

डा. सूरजभान सिंह के शब्दों में "काल कार्य व्यापार के समय को किसी अन्य संदर्भ-समय से जोड़ता है । यह संदर्भ समय उक्ति समय भी हो सकता है और उक्ति में वर्णित या निहित कोई अन्य समय बिन्दु भी ।
उदा:- 1. मोहन सोया हुआ है । (उक्ति समय अव्यक्त)
2. जब मैं वहाँ पहुँचा तो मोहन सोया हुआ था - (अन्य समय बिंदु व्यक्त)

---

1. कामता प्रसाद गुरु- हिन्दी व्याकरण- पृ. 221
2. जगतपाल शर्मा, मण्डियाली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन- पृ. 225
3. हरदेव बाहरी- व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण- पृ. 122

उक्त पहले वाक्य में व्याकरणिक काल उक्ति समय के संदर्भ में , तथा दूसरा वाक्य कार्य व्यापार के समय बिंदु के संदर्भ में स्थापित होता है । तथा उक्ति समय वाक्य में अव्यक्त रहता है ।

वक्ता कभी-कभी समय के धरातल पर अपने को घटना के आगे या पीछे भी रख लेता है, जहाँ से उसे घटनाएँ भूत या भविष्य में घटित होती दिखाई देती है । जैसे:-

1. तब आप पाएँगे कि आपका सब कुछ लूट चुका है ।
2. मैं ने उसे बताया, काम कैसे होता है ।

-यहाँ काल संबन्ध में यह धारणाएँ स्पष्ट होती है कि काल समय नहीं, समय बोध है - यह समय संदर्भ का एक संकेत साँचा है । इसका स्वरूप वक्ता निष्ठ है, वस्तुनिष्ठ नहीं और इसका आधार लौकिक जगत् वही वक्ता का मनोभाषिक जगत् है । काल बोध एक मिश्रित प्रक्रिया का परिणाम है । इस प्रक्रिया में घटना समय, उक्ति समय और संदर्भ समय के बीच विद्यमान संबन्ध का व्याकरणीकरण है । संरचनात्मक स्तर पर काल-क्रिया रूपों की एक कोटि है, लेकिन अर्थ संरचना के स्तर पर यह एक वाक्यात्मक कोटि है । [1]

यद्यपि काल अनंत और अखण्ड है, पर क्रिया के व्यापार के होने के समय के अनुसार काल के तीन मुख्य भेद माने जाते हैं - 1. वर्तमान काल 2. भूतकाल और 3. भविष्यत् काल । वर्तमान काल से बीतते रहे समय का, भूतकाल से बीते हुए समय का, और भविष्यत् से आनेवाले समय का बोध होता है ।

- -

दीमशित्स, हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा- पृ. 125

4. 1. 1. 1. वर्तमानकाल

वर्तमान काल से यह पता चलता है कि क्रिया तत्कालीन स्थिति में विद्यमान है अथवा कोई कार्य इस समय हो रहा है । जैसे -

सीता रोटी खा रही है ।

सुरेश पढ़ता है ।

वर्तमान काल में क्रिया व्यापार का आरंभ तो हो चुका होता है, लेकिन उसकी समाप्ति नहीं होती । वर्तमान काल ऐसे व्यापार या अवस्था का निर्देश करता है जो कथन के क्षण में होता है या शाश्वत सत्य होता है ।[1]

जैसे :- वह एक अखबार पढ़ता है ।

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है ।

इसके मुख्य तीन भेद होते हैं --

1. सामान्य वर्तमान काल 2. संदिग्ध वर्तमान काल और
3. अपूर्ण या तात्कालिक वर्तमान काल ।

1. 1. 1. 1. सामान्य वर्तमान-काल

क्रिया के जिस रूपान्तर से उसके व्यापार का वर्तमान समय में होना पाया जावे, उसे वर्तमानकाल का रूप कहते हैं ।[2]

---

1. दीमशित्स- हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा- पृ. 125
2. लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी- व्याकरण कौमुदी- पृ. 164

वर्तमान काल क्रिया का आरंभ वर्तमान समय में अर्थात् वक्ता के समय से होता है ।

जैसे :- हवा चलती है ।
लड़का खेलता है ।

यह क्रिया का वह व्यापार है जिससे जाना जाता है कि क्रिया का आरंभ बोलने के समय हुआ है । सामान्य क्रिया पर पुरुष लिंग वचनानुसार "ता हूँ", "ता है", "ती है "- आदि लगाने से सामान्य वर्तमान काल की क्रिया बनती है । कर्ता के पुरुष और वचन के अनुसार रूपांतर होता है ।

जैसे:- मैं खाता हूँ । लड़की खाती है । लड़के खाते हैं --

	एकवचन	बहुवचन
1. उत्तम पुरुष:	(मैं) हूँ	(हम) हैं ।
2. मध्यम पुरुष:	(तू) है	(तुम) हो ।
3. अन्य पुरुष:	(वह) है	(वे) हैं ।

.1.1.2. संदिग्ध वर्तमान काल :-

यह क्रिया का वह रूप है जिससे वर्तमान काल में क्रिया के होने में सन्देह या अनिश्चय पाया जाता है ।

सामान्य क्रिया पर पुरुष, लिंग, वचनानुसार "ता हूँगा", ता होगा" "ती होगी" आदि लगाने से संदिग्ध वर्तमान काल की क्रिया बनती है ।

जैसे:- मैं पढता हूँगा ।
लड़की पढ़ता होगा ।
लड़की पढती होगी ।

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	(मैं) हूँगा	(हम) होंगे ।
मध्यम पुरुष	(तू) होगा	(तुम) होगे ।
अन्य पुरुष	(वह) होगा	(वे) होंगे ।

.1.1.3. अपूर्ण या तात्कालिक वर्तमानकाल

अपूर्ण वर्तमान-कालिक क्रिया से यह प्रकट होता है कि कार्य अभी हो रहा है और उसकी समाप्ति नहीं हुई है । जैसे:-

गाडी आ रही है ।
बच्चा सो रहा है ।
श्याम दौड़ रहा है आदि ।

सामान्य क्रिया के साथ पुरुष लिंग वचनानुसार "रहा हूँ", "रहा है", "रही है" आदि लगाने से अपूर्ण या तात्कालिक वर्तमानकाल की क्रिया बनती है ।

पुल्लिंग

		एकवचन	बहुवचन
1.	उ0	मैं पढ़ रहा हूँ ।	हम पढ़ रहे हैं ।
2.	म0	तू पढ़ रहा है ।	तुम पढ़ रहे हो ।
3.	अ0	वह पढ़ रहा है ।	वे पढ़ रहे हैं ।

स्त्रीलिंग

1.	उ0	मैं पढ़ रही हूँ	हम पढ़ रही हैं ।
			तुम पढ़ रही हो ।

किसी-किसी ने वर्तमान काल का पूर्णवर्तमान, हेतुहेतुमद् वर्तमान, संभाव्य वर्तमान आदि अलग रूप माने हैं ।

4.1.1.1.4. पूर्ण-वर्तमान काल :-

पूर्ण वर्तमान से तात्पर्य कार्य की पूर्णता से हैं, जिसका प्रभाव अब तक अर्थात् वर्तमान में भी है ।[1] पूर्ण वर्तमान काल में कार्य की पूर्णता व्यक्त होती है, जिसका प्रभाव अब तक भी है । वास्तव में यह भूत का ही काल है, मगर यह भूत में हुए कार्य को वर्तमान से जोड़ता है । पूर्ण वर्तमान में जिस व्यक्ति या चीज़ को व्यक्त किया जाता है, जीवित होनी चाहिए या उसका अस्तित्व अब तक होना चाहिए, और इस प्रकार वर्तमान से जुडी होती है ।[2]

पूर्ण वर्तमान काल की रचना क्रिया धातु के पूर्ण वर्तमान कालिक कृदंत के साथ "हो" धातु का कोई रूप जोड करके बनाया जाता है ।

जैसे:- मैं चला हूँ । हम चले हैं ।
(अधिकांश व्याकरणकार इसे आसन्न भूत मानते हैं ।)

रामचन्द्र वर्मा के अनुसार -" पूर्ण वर्तमान काल से सूचित होता है कि जो काम भूतकाल में आरंभ किया गया था, वह वर्तमान काल में समाप्त हुआ है । जैसे :- राम ने रोटी खायी है ।
लड़का गया है । आदमी आया है ।

---

1. जगतपाल शर्मा, मण्डियाली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन- पृ. 226
2. ए. शर्मा- आधुनिक हिन्दी व्याकरण - पृ. 95

-अतः पूर्ण वर्तमान को आसन्न भूतकाल कहना अधिक उपयुक्त है। क्योंकि यह भूतकाल का अभी बीतना सूचित करता है।[1]

1.1.5. हेतुहेतुमद् वर्तमान :-

यह क्रिया का वह रूप है जिससे जाना जाए कि किसी एक क्रिया का होना वर्तमान काल की किसी दूसरी क्रिया के समाप्त होने पर निर्भर है।

उदा: यदि वह हमें जानता हो तो उसे यहाँ आने दो।
यदि वह भोजन करता हो, तो करने दो।

1.1.6. संभाव्य वर्तमान :-

यह क्रिया का वह रूप है जिससे वर्तमान काल में क्रिया के होने की संभावना पाई जाए[2] सामान्यतः "ता हो", "ते हो" आदि लगाने से संभाव्य वर्तमान काल की क्रिया बनती है।

जैसे:- मैं जाता होऊँ। लड़की जाती हो।
लड़का जाता हो। लड़के जाते हो।

1.2. भूतकाल :-

भूतकाल से क्रिया के कार्य की समाप्ति का बोध होता है। भूतकाल ऐसे व्यापार या अवस्था का निर्देश करता है जो कथन के क्षण से पूर्व हो रहा था

---

1. रामचन्द्र वर्मा- मानक हिन्दी व्याकरण- पृ. 117-118
2. जीवनाथ शास्त्री तथा धर्मपाल शास्त्री, सुगम हिन्दी व्याकरण-पृ. 112

या हुआ था । [1]

जैसे:- जमुना सागरा में रहती थी ।

भूतकाल में व्यापार या तो अभ्यसित रूप में होता है या हो रहा होता है, या किसी के विषय में अभी सन्देह ही है कि वह अभी पूर्ण नहीं हुई या नहीं । याने भूतकाल के भी मुख्यत: छ: भेद होते हैं ।

1. सामान्य भूत	2. आसन्न भूत	3. पूर्ण भूत
4. अपूर्ण भूत	5. संदिग्ध भूत	6. हेतुहेतुमद् भूत

4.1.1.2.1. सामान्य भूतकाल :-

सामान्य भूत का अर्थ होता है कि व्यापार लिखने अथवा बोलने से पूर्व समाप्त हो चुका । इससे यह पता नहीं चलता कि क्रिया कब समाप्त अथवा उसे समाप्त हुए कितना समय बीत चुका है ।

उदा:- पिताजी कलकत्ता गये ।
अध्यापक आये ।
मैं ने पढ़ा. ।

मूल-क्रिया के आगे "आ" जोड़ देने से सामान्य भूत बनता है । बहुवचन में "ए" जोड़ा जाता है । स्त्रीलिंग एकवचन में "ई" और बहुवचन में "ईं" का प्रयोग होता है ।

जैसे:- लिख + आ = लिखा, लिख + ए= लिखे
बोल + ई = बोली बोल + ईं = बोलीं

---

1. दीमशित्स- हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा- पृ. 125

"आ" कारांत धातुओं में पुल्लिंग एकवचन केलिए "या", बहुवचन केलिए "ये", स्त्रीलिंग एकवचन के लिए "यी" और स्त्रीलिंग बहुवचन केलिए "यी" जोड़े जाते हैं। "ई" और "ओ" कारांत धातुओं के साथ भी "या", "ये", "यी", "यीं" जोड़कर सामान्य भूत बनाया जाता है।[1]

खा + या = खाया	खा + ये = खाये
खा + यी = खायी	खा + यीं = खायीं
पी + या = पीया ,	पी + ये = पीये
पी + ई = पी ,	पी + ईं = पीं
खो + या = खोया ,	खो + ये = खोयें
खो + यी = खोयी ,	खो + यीं = खोयीं

भूत कृदंत का रूप ही सामान्य भूत का काम देता है - जैसे :- खाया, गयीं आदि[2]। सामान्य भूतकालिक क्रिया में लिंग भेद और वचन भेद होता है - पुरुष भेद नहीं होता।

एकवचन	बहुवचन
मैं चला / चली	हम चले, चलीं
तू चला / चली	तुम चले , चलीं
वह चला / चली	वे चले , चलीं

---

1. कभी कभी "ये" को "ए" और "यी" को "ई" भी लिखा जाता है।
2. हरदेव बाहरी, व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण- पृ. 124

नोट:
---- अकर्मक क्रिया लिंग वचन और पुरुष में कर्ता के अनुसार होती है ।
जैसे :- मैं रोया, वह सोया आदि ।

लेकिन सकर्मक क्रिया कर्म के अनुसार होती है
जैसे:- लड़की ने आम खाया ।
लड़के ने रोटी खायी ।
लड़की ने फल खाये ।
लड़की ने जलेबियाँ खायीं ।

-इन रूपों के विविध रूपों की चर्चा अन्यत्र की जाती है ।

हिन्दी के छः मुख्य भूतकालों में अपूर्ण और हेतुहेतुमद् भूतकाल को छोड़कर सामान्य, आसन्न, पूर्ण और संदिग्ध भूतकालों में क्रिया सकर्मक हो तो कर्ता के साथ "ने" जोड़ा जाता है । लेकिन ऐसी कुछ क्रियाएँ भी हैं ये सकर्मक होते हुए भी अकर्मक क्रिया की तरह व्यवहृत होती है अर्थात् कर्ता के साथ "ने" प्रत्यय नहीं लगता । वे क्रियाएँ हैं --
लाना, बोलना, भूलना ।

मैं लाया/लायी	हम लाये/लायीं ।
तू बोला / बोली	तुम बोले/बोलीं ।
वह भूला /भूली ।	हम भूले / भूलीं ।

1.2.2. आसन्न भूत :-

क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि अमुक कार्य अभी-अभी समाप्त हुआ है, उसे आसन्न भूत कहते हैं ।

जैसे:- वह गया है उसने लिखा है, उसने पढा है आदि ।

§गया है, गयी है, आदि §

दीमशित्स के अनुसार हिन्दी में आसन्न भूतकाल ऐसे व्यापार का निर्देश करने केलिए प्रयुक्त होता है जो एक निश्चित क्षण में सम्पादित हुआ होता है तथा अपने परिणाम के रूप में जारी है । यह काल सूचित करता है कि व्यापार कथन के क्षण में विद्यमान है । इस प्रकार आसन्न भूतकाल से निर्दिष्ट व्यापार का समय भूत तथा वर्तमान दोनों कालों से संबन्धित होता है । जैसे :- 1. अब पाँच बजे हैं ।

2. बातों से भी लगता है कि अब समझ आ गयी है ।

3. एक दफा ठोकर खाकर उसकी आँखें खुल गयी हैं । [1]

आसन्न भूत काल में मुख्य क्रिया सामान्य भूत और सहायक क्रिया सामान्य वर्तमान में होती है - तथा क्रिया का प्रयोग कर्ता या कर्म के अनुसार होता है ।

नौकर आया है । लड़के आये हैं । लड़कियाँ आयी हैं ।
मैं ने / उसने / उन्होंने फल खाये हैं ।
मैं ने लड़कों को / लड़के को बुलाया है । आदि ।

	पुल्लिंग एक वचन/स्त्री. ए.	पुल्लिंग बहुवचन/स्त्री. बहु.
उत्तम पुरुष:	मैं ने पढ़ा है ।	हम ने पढ़ा है ।
मध्यम पुरुष:	तू ने पढ़ा है ।	तुम ने पढ़ा है ।
अन्य पुरुष	उसने पढ़ा है ।	उन्होंने पढ़ा है ।

---

1. दीमशित्स-हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा- पृ. 143

4.1.1.2.3. संदिग्ध भूतकाल :-

संदिग्ध भूतकाल का प्रयोग वहाँ होता है जहाँ इस बात का सन्देह प्रकट होता है कि कार्य बीते हुए समय में पूर्ण हुआ है कि नहीं ।

जैसे:- लड़की गयी होगी ।

उसने पढ़ा होगा ।

बच्चा सोया होगा ।

सामान्य भूत के रूप के पीछे पुल्लिंग शब्दों में होगा, होंगे, और स्त्रीलिंग शब्दों में होगी, होंगी जोड़ने से संदिग्ध-भूत बनता है ।

वह चला होगा	वे चले होंगे ।
लड़की गयी होगी	लड़कियाँ गयी होंगी ।

4.1.1.2.3.1. प्रत्यय सहित रूप के साथ :-

एकवचन :- मैं ने पढ़ा होगा, तू ने पढ़ा होगा, उसने पढ़ा होगा ।

बहुवचन :- हम ने पढा होगा, तुम ने पढा होगा, उन्होंने पढा होगा

4.1.1.2.4. पूर्ण भूतकाल :-

पूर्ण भूतकाल का अभिप्राय है कि कार्य भूतकाल में ही सम्पूर्ण हो चुका था । "पूर्ण भूतकाल से ज्ञात होता है कि क्रिया किसी भूतकालीन संभव के पहले घटी थी ।

जैसे :- नौकर चिट्ठी लाया था ।

सेना लडाई पर भेजी गयी थी ।[1]

---

1. कामता प्रसाद गुरु- हिन्दी व्याकरण- पृ. 223

सामान्य भूतकाल की क्रिया के आगे था, थे , थी, थीं जोडने से पूर्णभूतकाल बनती है । इसमें मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया दोनों भूतकाल में होती है । दोनों कृदन्त हैं इसलिए दोनों में पुरुष भेद नहीं होता ।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
वह/तू/मैं/गया था ।	वह/तू/मैं/ गयी थी ।
वे/ तुम/ हम/ गये थे ।	वे / तुम/ हम/ गयी थी ।

इसमें दोनों (मुख्य और सहायक) भूतकालीन कृदन्तीय रूप में है, इसलिए कर्ता या कर्म के अनुसार उन दोनों का प्रयोग वैसा ही होता है जैसा सामान्य भूत के प्रयोग में होता है ।

1.1.2.5. अपूर्ण भूतकाल :-

यदि क्रिया का व्यापार भूतकाल में चल रहा हो और अभी समाप्त नहीं हुआ या होने का निश्चय न हो, तो वहाँ अपूर्ण भूत होता है ।

मूल क्रिया के साथ "ता था" (रहा था), "ती थी (रही थी), (ते थे", (रहे थे) जोडने से अपूर्ण भूतकाल की क्रिया बनती है ।

वह पढ़ता था / पढ़ रहा था ।
गाडी आती थी / आ रही थी ।
लड़का जाता था / जा रहाथा ।

इसमें मुख्य क्रिया वर्तमान कृदन्त में और सहायक क्रिया अपने भूत कृदन्त रूप में रहती है, इसलिए दोनों में लिंग भेद और वचन भेद होता है,

पुरुष भेद नहीं होता ।

एकवचन पुल्लिंग	मैं बोलता था, तू बोलता था, वह बोलता था ।
एकवचन स्त्रीलिंग	मैं बोलती थी तू बोलती थी, वह बोलती थी ।
बहुवचन पुल्लिंग	हम बोलते थे, तुम बोलते थे, वे बोलते थे ।
बहुवचन स्त्रीलिंग	हम बोलती थीं, तुम बोलती थीं, वे बोलती थीं ।

1.1.2.6. हेतुहेतुमद् भूत :-

यह क्रिया का वह रूप है जिसमें बाद में होने वाली क्रिया का हेतु पहली क्रिया हो । "क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में एक क्रिया का होना और न होना दूसरी क्रिया पर निर्भर पाया जाय, उसे हेतुहेतुमद्भूत कहते हैं । [1]

वह आता तो मैं उसके साथ जाता होता ।
यदि वह परिश्रम करता तो पास हो सकता ।

धातु पर पुरुष-लिंग-वचनानुसार "होता", "होती", "होते" अथवा "ता", "ती", "तें, तीं" लगाने से हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के रूप बनते हैं । इसमें मुख्य क्रिया मात्र होती है सहायक क्रिया नहीं ।

1.1.2.7. वर्तमान संकेतार्थ :-

वर्तमान काल में हेतु का बोध होता है । इसमें मुख्य क्रिया सहायक क्रिया दोनों वर्तमान कृदन्त रूप में होती है । दोनों में पुरुष-भेद नहीं होता, वचन और लिंग भेद होता है ।

एकवचन :पु: मैं / तू/ वह/ चलता होता ।
एकवचन: स्त्री: मैं / त/ वह/ चलती होती ।

उपर्युक्त भूतकाल रूपों के अलावा किसी-किसी ने संभाव्य भूत का प्रयोग भी किया है ।

+. 1.1.2.8. संभाव्य भूत

यह क्रिया का वह रूप है जिससे भूतकाल में क्रिया के होने की संभावना समझी जाए । [1]

सामान्य भूतकालिक क्रिया पर पुरुष, लिंग, वचनानुसार "हो", हों" आदि जोडने से संभाव्य भूतकालिक क्रिया बनती हैं । जैसे

शायद वह गयी हो ।
संभवत: लडका गया हो ।
कदाचित् लड़के गये हो ।

1.1.3. भविष्यत् काल

भविष्य में होनेवाले क्रिया व्यापार का बोध करानेवाला क्रिया रूप है भविष्यत्काल । "यह ऐसे व्यापार या अवस्था का निर्देश करता है जो कथन के क्षण के पश्चात् होगा । [2]

जैसे:- मैं कल वापस मेरठ चला जाऊँगा ।

"क्रिया के जिस रूपान्तर से उसके व्यापार का आगे आनेवाले भविष्य समय में आरंभ होनेवाला जाना जावे, उसे भविष्यत् काल का रूप कहते हैं । [3]

उदा: वे यहाँ आयेंगे । मैं आम खाऊँगा ।

---

1. धर्मपाल शास्त्री, सुगम हिन्दी व्याकरण-पृ.111

2. [illegible]

भविष्यत् काल के दो भेद है --

1. सामान्य भविष्यत् 2. संभाव्य भविष्यत्

4.1.1.3.1. सामान्य भविष्यत्काल अथवा पूर्ण भविष्य :-

जहाँ यह प्रकट होता है कि क्रिया सामान्यत: भविष्य में होगी, वहाँ सामान्य भविष्यत् काल होता है ।

मैं करूँगा । वह खाएगा आदि ।

क्रिया के मूल अंश के आगे ऊँगा, एगा, ओगे आदि जोडने से सामान्य भविष्यत् काल की क्रिया बनती है ।

जैसे:- मैं जाऊँगा वह करेगा ।

तुम पढोगे वे पढेंगे ।

यहाँ व्यापार का आरंभ भविष्य समय में जाना जावे, पर पूर्ण व अपूर्ण अवस्था अथवा संभावना न जानी जाती है ।

4.1.1.3.2. संभाव्य भविष्यत् :-

क्रिया के जिस रूप से भविष्य में कार्य होने की संभावना हो, उसे संभाव्य भविष्यत् कहते हैं । क्रिया के पहले कदाचित्, संभव, शायद आदि जोडने से संभाव्यता का अर्थ मिल सकता है ।

उदा:- कदाचित् वह आयेगा

हो सकता है पिताजी कल आयेंगे ।

संभव है, कल रमेश दिल्ली जायेगा ।

ये कृदन्तीय {आकारान्त} रूप नहीं है, इसलिए लिंग भेद नहीं होता ।

एकवचन	बहुवचन
मैं खाउँ	हम खाएँ
तू खाए	तुम खाओ
वह खाए	वे खाएँ ।

उपर्युक्त भविष्यत् काल के अलावा किसी-किसी ने भविष्यत् काल को हेतुहेतुमद् भविष्यत् , अपूर्ण भविष्यत् आदि भेद भी माने हैं ।

4. 1. 1. 3. 3. हेतुहेतुमद् भविष्त् :-

यह क्रिया का वह रूप है जिससे भविष्यत् काल में एक क्रिया का दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर रहना पाए जाए ।[1] क्रिया के अंत में "ऐ" "हूँ" लगाने से हेतुहेतुमद्भविष्यत् काल की क्रिया बनती है ।

जैसे :- मैं जाऊँ तो वह आए । आप आ जायेंगे तो हम मिल ही जायेंगे
लड़की जाए तो लड़का आए ।

1. 1. 3. 4. अपूर्ण भविष्यत् :-

क्रिया के जिस रूप से इस बात का पता चले कि कोई क्रिया वर्तमान में आरंभ होकर भविष्यत् में भी चलती रहेगी, क्रिया के उस रूप को अपूर्ण भविष्यत् कालिक क्रिया कहते हैं ।[2]

जैसे:- मैं लिखता रहूँगा ।
वे पढते रहेंगे ।

------

1. धर्मपाल शास्त्री, सुगम हिन्दी व्याकरण-पृ. 114
2. डा बलभीमराज गोरे, हिन्दी भाषा व साहित्य: स्वरूप एवं सिद्धां

4.2. मलयालम क्रियाओं के रूपान्तर

4.2.1. काल :-

व्यापार का काल दिखानेवाला क्रियारूप है काल । जो बीते हुए व्यापार को दिखाता है वह भूतकाल, जो आनेवाले काल के व्यापार को दिखाता है वह भाविकाल (भविष्यत्) और जो होते हुए व्यापार को दिखाता है वह वर्तमान काल है ।[1]

भूतकाल	भविष्यत्	वर्तमान
पठिच्चु (पढ़ा)	पठिक्कुम् (पढेगा)	पठिक्कुन्नु (पढता है)
नटन्नु (चला)	नटक्कुम् (चलेगा)	नटक्कुन्नु (चलता है)
पर्ञ्ञु (कहा)	पर॰युम् (कहेगा)	पर॰युन्नु (कहता है)

मलयालम के वैयाकरण ए.आर. राजराजवर्मा ने काल की परिभाषा इस प्रकार दी है - काल एक क्रिया के होने के समय को सूचित करता है । जो बीत चुका है वह भूत, जो हो रहा है वह वर्तमान और जो होनेवाला है वह भावि-काल है । इस प्रकार तीन काल है ।

भूत, भविष्यत्, वर्तमान आदि कालों को सूचित करने केलिए "इ", "उम्", "उन्नु", प्रत्यय क्रमशः आते हैं ।

भूत	भविष्यत्	वर्तमान
इळकि (हिला)	इळकुम् (हिलेगा)	इळकुन्नु (हिलता है)
मिन्नि (चमका)	मिन्नुम् (चमकेगा)	मिन्नुन्नु (चमकता है)[2]

---

1. शेषगिरि प्रभु, व्याकरणमित्रम, पृ. 143
2. ए.आर. राजराजवर्मा, केरल पाणिनीयम्-II, 220

.2.1.1. वर्तमान काल :-

वर्तमानकाल से क्रिया के बीतते हुए समय का बोध होता है । मलयालम में क्रिया धातु के साथ "उन्नु" प्रत्यय जोडकर वर्तमान काल बनाया जाता है ।

उदा:- वर् (आ) + उन्नु - वरुन्नु (आता है)
पोक् (जा)+ उन्नु - पोकुन्नु (जाता है)
इरि (बैठ)+ उन्नु - इरिक्कुन्नु (बैठता है)
तर. (दे)+ उन्नु - तरुन्नु (देता है)

कारित धातुओं में "क्क्" प्रत्यय जोड़कर उसके बाद वर्तमान प्रत्यय जोड़ा जाता है । यदि क्रिया स्वत: कारित नहीं है तो भी सकर्मक, प्रयोजक आदि के कारण कारित रूप धारण करने पर ऐसे धातुओं के साथ भी "उन्नु" प्रत्यय जोडा जाता है ।

उदा:- इरि + क्क् + उन्नु - इरिय्क्कुन्नु (बैठता है)[1]
पठि + क्कु + न्नु - पठिक्कुन्नु (पढता है)
अटि + क्क् + उन्नु - अटिक्कुन्नु (मारता है)
चति + क्क् + उन्नु = चतिक्कुन्नु (धोखा करता है)

+.2.1.2. भूतकाल :-

मलयालम क्रियाओं के भूतकाल रूप काफी जटिल हैं । भूतकाल की सूचना केलिए अनेक प्रत्यय हैं । प्राय: क्रिया-धातुओं के ध्वनि रूपों के अनुसार

---

1. "इ" के बाद "क्क" आने पर उसके पहले "य" श्रुति आ जाती है । जो

अपवाद:

उरुळ् {डोल्} - उरुण्डु {डोला} = {उरुळ् -+ तु }

इरुळ् {अन्धेरा हो } - इरुण्डु {अन्धेरा छा गई } [इरुळ्+तु}

विरळ् {डर } - विरण्डु {डरा} [विरळ् + तु }

उ. संयुक्ताक्षर में अंत होनेवाले धातुओं के साथ भी "इ" प्रत्यय जुड़ता है ।

तुप्प् {थूक्} + इ - तुप्पि {थूका }

इरम्बु {गरज } + इ - इरम्बि { गरजा}

उरुम्म् {घिस } + इ - उरुम्मि {घिसा}

तेकट्ट् {मितली आ } + इ - तेकट्टि {मितली आयी }

"तु" प्रत्यय लेनेवाली क्रियायें :-

जिन धातुओं के साथ "तु" प्रत्यय जोड़ा जाता है, उनमें से कुछ धातुओं में द्वित्व, तालव्यादेश, "न"कारगम आदि वर्ण परिवर्तन के कारण "त्तु", "च्चु", "ट्टु", "न्दु" "ञ्ञु", "न्नु" आदि रूप-भेद होते हैं ।

अ. जिन अक [illegible]रत धातुओं का अंत य्, र्, ष् आदि में हो, उनके साथ "तु" किसी [illegible]र्तन के बिना जोड़ा जाता है ।

एय् {तीर मार् }+ तु -एय्तु {तीर मारा}

कोय् {काट-} + तु - कोय्तु { काटा}

नेय् {बुन-} + तु - नेय्तु {बुना}

ओर्. {याद} + तु - आर्त्तु {याद किया}

कोर्. {गूँथ }+ तु - कोर्त्तु {गूँथा}

उष् {जोत} + तु - उष्तु - [जोता }

पिष् {उखाड}+ तु - पिष्तु {उखाडा}

आ. "अकारित" धातुओं के साथ जब "तु" प्रत्यय लगाया जाता है तब प्रत्यय पहले "न" कार का आगम होता है । "न" और "तु" के समीकरण से "न्नु" बनता है ।

नेर्- {मनौती कर} - नेर् + न् + तु = नेर्न्नु { मनौती किया }
चोर्- {टपक्} - चोर + न् + तु = चोर्न्नु {टपका}
चेर्- {जोड़} - चेर् + न् + तु = चेर्न्नु {जुडा}

इ. कुछ कारित धातुओं में "तु" प्रत्यय के पहले "न" कार का आगम होता है । यहाँ भी समीकरण से "न्नु" बनता है ।

कटक्क् {पार कर} — कट् + न् + तु = कटन्नु {पार किया}
मर्क्क् {भूल जा } — मर् + न् + तु = मर्न्नु {भूल गया }
चुमक्क् {लाद } — चुम् + न् + तु = चुमन्नु {लाद किया}

उ. जहाँ कारित धातुओं के साथ "तु" प्रत्यय जोड़ता है वहाँ "तु" प्रत्यय द्वित्व हो जाता है । उदा:-

अरुक्क् {मार} - अरु + तु - अरुत्तु {मारा}
कुरुक्क् { गूँथ } - कुरु + तु - कुरुत्तु { गूँथा}
तीर्क्क् {बन } —तीर् + तु - तीर्त्तु {बनाया}
तटुक्क् {रोक्} — तटु + तु - तटुत्तु {रोका }

ऊ. जिन धातुओं के अंत में तालव्य स्वर युक्त कारित क्रिया हो ऐसी क्रियाओं में "त" कार के स्थान पर "च" कार का आदेश होता है ।

ईकारांत में - कळिक्क् {खेल्} - कळि + तु - कळिच्चु {खेला }
अषिक्क् {निकाल} - अषि + तु - अषिच्चु {निकाल लिया}
वलिक्क् {खींच} - वलि+ तु - वलिच्चु { खिंचा }

2. ऐसी कुछ धातुएँ जो अकारित हो और इकारांत भी हो वहाँ "न" कार मध्यवर्ती रूप में आने के कारण उसके साथ "तु" प्रत्यय "ञ्ञु" बन जाता है

पणि-(बना) + तु = पणिञ्ञु (बनाया) पणितु भी है ।
अरि.- (जान) + तु = अरिञ्ञ् (जान लिया)
अणि-(पहन्) + तु = अणिञ्ञु (पहना)
करि- (भुन्-) + तु = करिञ्ञु (भुना)

3.अ."य" कारांत कारित क्रियाओं में "य"कार का लोप होता है । "य"कार तालव्य होने के कारण "तु" प्रत्यय का तालव्यादेश होता है ।

उदा:- मेय्क्क्- (चर) - मेय्+तु = मेय्च्चु (चराया)
कायक्क्-(फल) - काय् + तु = काय्च्चु (फला)
विरय्क्क्-(कांप्) - विरय् + त्तु - विरच्चु (काँपा)
चमय्क्क्-(खाँस) - चुमय् + त्तु - चुमच्चु (खाँसा)

(आ) यकारांत अकारित क्रियाओं में :-

मेयुक (चराना) - मेञ्ञु (चराया)- मेय् + न्+ तु
तेयुक (घिस्) -तेञ्ञु (घिसा)
तटयुक (रोकना) - तटञ्ञु -(रोका)
मर.युक (गायब हो) - मरञ्ञु (गायब हुआ)

इ. एक ही ह्रस्व स्वर युक्त टकारांत धातुओं के साथ भी "तु" प्रत्यय जोडा जाता है । तब "तु" "टु" बन जाता है ।

चुट् + तु = चुट्टु [जला-]
इट् + तु = इट्टु (डाला)
नट् + तु = नट्टु [लगा]

किन यदि धातु दीर्घ स्वर हो तो "इ" प्रत्यय जुडता है ।

वाटुक्र् ‖मुझाना‖ - वाद्ऋ- वाटि ‖मुझा‖

तेटुक्र् ‖ढूँढना ‖ -तेद् - तेटि ‖ढूँढा‖

मूटुक्र् ‖ढकना‖ - मूद् - मूटि ‖ढका‖

छ "ण" कारांत धातुओं में भी "तु" प्रत्यय जोडा जाता है ।

काणुक्र् ‖देखना‖ - कण् + तु - कण्टु ‖देखा‖

उण्णुक्र् ‖ खाना ‖ - उण् + तु - उण्टु ‖खा लिया ‖

ादि धातु एक ह्रस्व स्वर सहित है तो प्राय: "इ" प्रत्यय ही जोडा जाता
।

एण्णुक्र् ‖गिनना‖ - एण् - एण्णि ‖ गिना‖

जेन धातुओं के अंत में र, ल, ळ, ष्, ऱ. हो उसके साथ भी "तु" प्रत्यय जोडा
ाता है ।

उरुळ् - उरुळ् + तु - उरुण्टु ‖लोटा‖

इरुळ् - इरुळ् + तु - इरुण्टु ‖ काला होना‖

वरळ् - वरळ् + तु - वरण्टु ‖सूखा‖

ापवाद -
------- काळ् - काळि ‖ रोया ‖

अरुळ् - अरुळि ‖ फरमाया ‖

्फांत -
------- कारित क्रियाओं में "तु" प्रत्यय का द्वित्व होता है ।

ओर्॰क्कुक/ §याद करना §- ओर्.   - ओर्त्तु §याद किया§

वियर्॰क्कुक/ §पसीना आना §- वियर्.   - वियर्त्तु §पसीना आया§

अ"कारित धातुओं में "न" के आगम और "तु" से समीकरण के कारण "न्नु"
त्यय आता है ।

यरुक/ §उठना§- उयर्. + न् + तु - उयर॰न्नु §उठा§

टरुक/ § जारी रहना- § - तुटर् - तुटर्न्नु

ळरुक/ §बढना§ - वळर् - वळर्॰न्नु

'ल" कारांत कारित धातुओं के साथ जुडनेवाला "तु" प्रत्यय - "र्॰र॰"
न जाता है ।

विल्क्कुक/ §बेचना§ §विल् + तु - विर्॰रु॰ §बेचा§

तोल्क्कुक/ §हारना § तोल् + तु - तोर्॰रु॰ §हारा§

"ल"कारांत अकारित धातुओं के साथ भी "तु" प्रत्यय जोड़ा जाता
है । तब "तु" प्रत्यय के मध्यवर्ती रूप में आनेवाले "न" कार के साथ दोनों
का समीकरण होता है ।

अकलुक/ §जताना §- अकल् + न् + तु - अकन्नु §जताया§

चेल्लुक/ §जाना§ - चेल् - चेन्नु §गया§

चोल्लुक/ § रटना § - चोल् - चोन्नु §रटा §

अपवाद :-

तल्लुक/ §पीटना§- तल्लि §पीटा§

"षु" कारांत धातुओं के साथ "तु" प्रत्यय जोडने पर -

ताष् + न् + तु - ताष्न्नु ॥उतरा ॥

कमिष् - कमिष्न्नु ॥उलटा ॥

वाष् + न् + तु - वाणु ॥जिया ॥

केष् - केणु "रोया ॥

वीष् - वीणु ॥गिरा॥

एक ह्रस्ववाले "र" कारांत धातुओं के साथ "तु" प्रत्यय जोडता है ।

अर्. + तु - अर्.रु ॥ टूटा ॥

पेर्. + तु - पेर्.रु ॥ जन्म दिया ॥

2. 1. 3. भावि-काल ॥भविष्यत् ॥

मलयालम व्याकरणों में भाविकाल के दो भेद माने गये हैं -- 1. सामान्य भविष्यत् 2. अवधारक भविष्यत्

2. 1. 3. 1. सामान्य भविष्यत्

सामान्य भविष्यत् से क्रिया के कर्ता का सामान्य रूप से होना आगे आनेवाले समय में पाया जाता है । इसे मलयालम में शील-भावि भी कहते हैं । याने इससे शील-स्वभाव आदि को सूचित किया जाता है । सामान्य भविष्यत् या शील भावि ॥भविष्यत्॥ को सूचित करने का प्रत्यय "उम्" है ।

जैसे :- अवन् धाराळम् पुस्तकम् वायिक्कुम्

॥वह कई किताबें पढ़ेगा ॥

सीता नाळे वरुम् ।

(सीता कल आयेगी)

ञान् इरिक्कुम्

(मैं बैठूँगी)

अच्छन् नाळे दिल्लियिल् पोकुम्

(पिताजी कल दिल्ली जायेंगे)

निरन्तर या शाश्वत सत्य की सूचना के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है ।

अवन् नल्लवण्णम् पठिक्कुम्

(वह अच्छी तरह पढ़ेगा - पढता है)

ञान् राविले अन्चु मणिक्कु एषुन्नेल्क्कुम् ।

(मैं सबेरे पाँच बजे उठूँगा - उठता हूँ)

सूर्यन् किषक्कुदिक्कुम् पटिञ्ञारु अस्तमिक्कुम्

(सूरज पूरब में निकलेगा और पश्चिम में डूबेगा - डूबता है)

शक्ति, सामर्थ्य आदि को सूचित करने केलिए इसका प्रयोग होता है ।

गीता नन्नायि पाटुम्

(गीता अच्छीतरह गायेगी)

अ[illegible] नल्ला कथा एषुतुम्

(वे अच्छी कहानी लिखेंगे)

शक्यर्थ को सूचित करनेवाला "कषियुका " (सकना) का वर्तमान काल में प्रायः प्रयोग नहीं होता । भविष्यत् में प्रयोग वर्तमान को भी सूचित करता है ।

उदा: लतय्क्कु नन्नायि नृत्तम चेय्यान् कष़ियुम् ।

§लता अच्छे नृत्य कर सकेगी §

गोपालनु नल्ल वण्णम् पाटान् कष़ियुम् ।

§गोपाल अच्छी तरह गा सकेगा §

2. 1. 3. 2. अवधारक भविष्यत्

अवधारक भविष्यत् निश्चयार्थ को सूचित करता है । वस्तुत: यह विधि के अर्थ को प्रकट करता है । अवधारक भावि का प्रत्यय "उ" है । दीर्घ " ऊ" का प्रयोग ही अधिक है ।

उदा: सत्यमे जयिक्कू ।

§सत्य की ही विजय होगी §

अवनु ओरु कत्तु एष़ुतू

§उसे एक पत्र लिखो §

कुट्टिये कटयिल् परञ्ञयक्कू ।

§लडके को दुकान भेज दो §

3. हिन्दी और मलयालम क्रियाओं के कालों की तुलना :-

क्रिया के रूपांतरों का सबसे मुख्य आधार ही काल है । आधुनिक भाषा विज्ञान में क्रिया की परिभाषा भी क्रिया के साथ काल-प्रत्यय जोड़ने की संभावना के आधार पर की जाती है । प्राय: सभी भाषाओं में भूत, वर्तमान और भविष्य - ये काल स्वीकार्य हैं । अनेक भाषाओं में रीति §एस्पेक्ट§ की सूचना भी काल सूचना के साथ होती है ।

हिन्दी और मलयालम की क्रियाओं की तुलना करें तो दृष्टिगत होगा कि दोनों में मुख्य कालों के रूप मिलते हैं । हिन्दी में रीति या एस्पेक्ट की सूचना भी व्याकरणों में स्वीकृत है और दोनों कालों के भिन्न-भिन्न भेद माने जाते हैं । लेकिन मलयालम में मूलतः रीति या एस्पेक्ट न होने के कारण मलयालम व्याकरणों में उसकी चर्चा नहीं की जाती । अतः तीनों कालों के भेदों की चर्चा भी नहीं होती । किंतु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हिन्दी के विविध कालों के रीति सहित उप-भेदों की अभिव्यक्ति मलयालम में नहीं हो सकती । इन काल रूपों की अभिव्यक्ति केलिए अलग क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है जिनको सहायक क्रिया मानें तो अनुचित नहीं होगा । इन सहायक क्रियाओं के साथ जो काल-रूप बनते हैं उनसे हिन्दी के विविध काल-रूपों के अर्थों की अभिव्यक्ति मलयालम में संभव है । विविध कालों की रचना की तुलना नीचे दी जा रही है ।

हिन्दी क्रियाओं में लिंग वचन और पुरुष की सूचना होती है, लेकिन मलयालम क्रियाओं में ऐसी सूचना नहीं होती । नीचे के उदाहरणों में हिन्दी का एक ही रूप अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन मात्र ही दिया जाता है अन्य रूप हिन्दी काल से संबन्धित प्रकरणों में दिये गये हैं ।

4.3.1. सामान्य काल

सामान्य वर्तमान काल

हिन्दी	मलयालम
धातु + ता है	धातु + उन्नु
वह जाता है	अवन् पोकुन्नु

वह खेलता है ।	अवन् कळिक्कुन्नु ।
सीता पढ़ती है ।	सीता पठिक्कुन्नु ।

4.3.1.2. सामान्य भूत :-

हिन्दी	मलयालम
धातु + आ / या	धातु + इ/ तु
लड़का आया ।	आण्कुट्टि वन्नु ।
मैं गयी ।	ञान् पोयि ।
वह चला ।	अवन् नटन्नु ।

सूचना:- सन्धि नियम के अनुसार "तु" बदलकर "ट्टु", "च्चु", "न्नु", "ञ्ञु" आदि बनते हैं । "इ" श्रुति के साथ आकर "यि" हो जाती है ।

4.3.1.3. सामान्य भविष्यत्

हिन्दी	मलयालम
धातु + एगा	धातु + उम्
आदमी जाएगा ।	मनुष्यन पोकुम् ।
वह आयेगी ।	अवळ् वरुम् ।
वे भूलेंगे ।	अवर् मरक्कुम् ।

4.3.2. तात्कालिक काल

4.3.2.1. तात्कालिक वर्तमान

हि: धातु + रहा + है   म: भूतकालिक कृदन्त + कोण्टु + इरिक्कुन्नु

लड़का गा रहा है ।　　　　आण्कुट्टि पाटिक्कोण्टिरिक्कुन्नु /
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　पाटिक्कोण्टिरिक्कुकयाणु/
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　पाटुकयाणु ।

औरत काम कर रही है ।　　　　स्त्री जोलि चेय्तुकोण्टिरिक्कुन्नु ।
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　जोलि चेय्तुकोण्टिरिक्कुकयाणु ।
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　जोलिचेय्युकयाणु ।

4. 3. 2. 2. तात्कालिक भूत

हि: धातु + रहा + था　　　　म: भूतकालिक कृदन्त + कोण्टु + इरुन्नु /
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　क्रियार्थक संज्ञा + आयिरुन्नु

वह गा रहा था ।　　　　अवन् पाटिक्कोण्टिरुन्नु /
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　अवन् पाटुकयायिरुन्नु ।

लड़की खेल रही थी ।　　　　पेण्कुट्टि कळिच्चुकोण्टिरुन्नु /
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　पेण्कुट्टि कळिक्कुकयायिरुन्नु ।

4. 3. 2. 3. तात्कालिक भविष्य :-

हिन्दी में नहीं है ।　　　　म: भूतकालिक कृदन्त + कोण्टु+ इरिक्कुम्
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　अवन् कळिच्चुकोण्टिरिक्कुम्
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　अवळ् पठिच्चुकोण्टिरिक्कुम्

4. 3. 3. अपूर्ण काल

4. 3. 3. 1. अपूर्ण भूत

हि: धातु + ता + था　　　　म: भूतकालिक कृदन्त + कोण्टिरुन्नु

अशोक शासन करता था ।	अशोकन् भरिच्चुकोण्टिरुन्नु/ अशोकन् भरिक्कुन्नुण्टायिरुन्नु । (मलयालम में अपूर्ण भूत तात्कालिक भूतकाल से भिन्न नहीं है ।)

4.3.3.2. अपूर्ण संकेतार्थ

हि: धातु + ता + होगा	म: वर्तमान + उण्टेंकिल्
चलता होता ।	पोकुन्नुण्टेंकिल् ।
आता होता ।	वरुन्नुण्टेंकिल् ।

.3.4. पूर्ण काल

.3.4.1. पूर्ण वर्तमान अथवा आसन्न भूत

हि: धातु + आ / या + है	म: भूतकालिक कृदन्त + इट्टु + उण्टु / भूतकालिक कृदन्त + इरिक्कुन्नु ।
वह आया है ।	अवन् वन्निट्टुण्टु / वन्निरिक्कुन्नु
वह चली है ।	अवळ् पोयिट्टुण्टु / पोयिरिक्कुन्नु

3.4.2. पूर्ण भूत

हि: धातु + या + था	म: भूतकालिक कृदन्त + इरुन्नु + इट्टु + उण्टायिरुन्नु
आया था ।	वन्निट्टुण्टायिरुन्नु ।
लिखा था ।	एषुतियिट्टुण्टायिरुन्नु ।

3.4.3. पूर्ण भविष्यत्

पूर्ण भविष्यत् दोनों भाषाओं में असंदिग्ध अर्थ में प्रयोग किया जाता है।

हि: धातु + एगा	म: धातु + उम्
आयेगा।	वरूम्।
चलेगा।	नटक्कुम्।

3.5. संदिग्ध काल

3.5.1. संदिग्ध वर्तमान

हि: धातु + ता+ होगा	म: क्रियार्थक संज्ञा + आयिरिक्कुम् /
	वर्तमान काल + उण्टायिरिक्कुम्
जाता होगा।	पोकुन्नुण्टायिरिक्कुम्।
गाता होगा।	पाटुन्नुण्टायिरिक्कुम्।

5.2. संदिग्ध भूत

हि: धातु + या/ आ + होगा।	म: भूतकालिक कृदन्त + इरिक्कुम् /
	भूतकालिक कृदन्त + उण्टायिरिक्कुम्।
आया होगा	वन्निरिक्कुम् / वन्निट्टुण्टायिरिक्कुम्।
देखा होगा	कण्टिरिक्कुम् / कण्टिट्टुण्टायिरिक्कुम्।

.5.3. संदिग्ध भविष्यत्

हि: हिन्दी में नहीं है	म: सामान्य भविष्यत् + आयिरिक्कुम्
	वरुमायिरिक्कुम्।
	पोकुमायिरिक्कुम्।
	काणुमायिरिक्कुम्।

.4. हेतुहेतुमद्भूत

हि: धातु + ता — म: भूतकाल + एंकिल / भूतकालिक कृदन्त + इरुन्नेंकिल / भविष्य+ आयिरुन्नु

वह पढता तो पास होता — अवन् पठिच्चेंकिल / पठिच्चिरुन्नेंकिल/ पठिक्कुमायिरुन्नेंकिल पासाकुमायिरुन्नु ।

म बुलाते तो वह आता — नी विळिच्चेंकिल / विळिच्चिरुन्नेंकिल/ विळिक्कुमायिरुन्नेंकिल अवन् वरुमायिरुन्नु

5. संभाव्य काल

5. 1. संभाव्य भूत

हि: धातु + आ / या + हो — म: भूतकालिक कृदन्त + इरिक्कुम् / उण्टायिरिक्कुम्

आया हो । — वन्निरिक्कुम्/वन्निट्टुण्टायिरिक्कुम् ।

पहुँचा हो । — एत्तियिरिक्कुम्/एत्तियिट्टुण्टायिरिक्कुम् ।

5. 2. संभाव्य वर्तमान

हि: धातु + ए — म: धातु प्रत्यय/आल्/एयुक्कुम्

वह अभी आवे । — अवन् इप्पोळ् वरट्टे / वन्नाल्/वन्नेयुक्कुम्

मलयालम में इसके अलग अलग रूप हैं और अनेक अर्थों में इसका प्रयोग होता है ।

(क) अनुमति के अर्थ में

आन् पोकट्टे (क्या मैं जावें, जाऊँ)

अवन् पोकाम् (वह जावें)

अवन् पोयुक्कोळ्ळट्टे (वह जावें)

(ख) आशंसा, अभिलाषा, अनुग्रह, सन्देह, शर्त

भारत मातावु जयिक्कट्टे

(भारत माता की जय हो)

अवनु नल्लतु वरट्टे

(उसका भला हो)

आण्कुट्टि वन्नेयक्कुम्

(शायद लड़का आवे)

अवळ् मीट्टिंगिल संसारिच्चेक्कुम्

(वह सभा में बोले)

अवन् वन्नाल् आन् पोकुम्

(वह आवे तो मैं जाऊँगा)

4.4. वाच्य - हिन्दी

क्रिया के संबन्ध का बोध उसके जिस रूप से होता है वह वाच्य कहा जाता है। क्रिया का संबन्ध कर्ता से होता है, कर्म से होता है और कभी कभी न तो कर्ता से संबन्ध होता है न कर्म से, बल्कि क्रिया के भाव से ही ह [illegible] याने क्रिया में कार्य कर्तृत्व की प्रधानता के आधार पर वाच्य का निश्चय होता है। दीमशित्स ने वाच्य की परिभाषा इस प्रकार दी है "- वाच्य क्रिया का ऐसा रूपान्तर है, जो वाक्य में कर्ता के प्रति क्रिया

के व्यक्त व्यापार के संबन्ध का निर्देश करता है । [1] कर्ता, कर्म अथवा भाव के अनुसार क्रिया के लिंग , वचन तथा पुरुष का होना ही वाच्य कहलाता है । [2]

वाच्य क्रिया के उस रूपांतर को कहते हैं, जिससे जाना जाता है कि वाक्य में कर्ता के विषय में विधान किया गया है, व कर्म के विषय में अथवा केवल भाव के विषय में । [3]

जैसे:- स्त्री कपड़ा सीती है । (कर्ता)
कपड़ा सिया जाता है । (कर्म)
यहाँ बैठा नहीं जाता (भाव)

--यहाँ प्रकट हो जाता है कि वक्ता अपनी बात का विषय किसे बनाना चाहता है, इस पर वाच्य निर्भर है । अत: क्रिया में कार्य कर्तृत्व की प्रधानता के आधार पर वाच्य के तीन प्रकार होते हैं --

1. कर्तृवाच्य 2. कर्म वाच्य 3. भाव वाच्य

4.4.1. कर्तृ वाच्य

पहले बताया गया है - क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाता है कि क्रिया का प्रधान विषय कर्ता है उसे कर्तृवाच्य कहते हैं । कर्तृवाच्य में क्रिया का मुख्य विषय कर्ता होता है । कर्तृवाच्य सकर्मक और अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं में संभव है ।

---

1. दीमशित्स, हिन्दी व्याकरण की रूप-रेखा- पृ. 177
2. वचनदेव कुमार, व्याकरण भास्कर, पृ. 48
3. कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण - पृ. 217

मोहन पुस्तक पढ़ता है ।

वे पुस्तकें लाये ।

सीता मिठाई लायेगी ।

माली फूल तोड़ता है ।

कर्तृवाच्य के विषय में यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि यद्यपि विभक्ति सहित कर्ता (ने) की क्रिया के लिंग, वचन आदि कर्ता के अनुसार नहीं होते, तथापि क्रिया कर्तृवाच्य की ही होती है । क्योंकि उस क्रिया व्यापार का मुख्य विषय अर्थात् करनेवाला कर्ता ही होता है ।

जैसे:- राम ने पत्र लिखे ।

मोहन ने पुस्तकें खरीदी ।

बच्चों ने गीत गाए ।

सीता ने आम खाया ।

कर्मवाच्य :-

क्रिया का वह रूप जिससे यह जाना जाता है कि वाक्य की क्रिया विधान का मुख्य विषय कर्ता न होकर कर्म है, उसे कर्म वाच्य कहते हैं । कर्मवाच्य में वाक्य का उद्देश्य कर्ता न होकर कर्म होता है । कर्म वाच्य केवल सकर्मक क्रियाओं का होता है । कर्तृवाच्य का कर्म,कर्म-वाच्य में कर्ता बन जाता है ।

बढ़ई ने लकडी काटी - लकडी बढ़ई द्वारा काटी गयी ।

अथवा कर्ता का लोप हो जाता है (लकडी काटी गई)

सीता ने किताब भेजी । सीता से किताब भेजी गयी ।

1.3. भाव वाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह प्रकट हो कि विधान का मुख्य विषय कर्ता या कर्म न होकर भाव हो उसे भाव वाच्य कहते हैं । यह मूलतः कर्तृवाच्य से ही बनाया जाता है ।

जैसे:- बच्चा सोता है

बच्चे से सोया नहीं जाता ।

-यहाँ न तो कर्ता को प्रधानता दी जाती है, न कर्म को बल्कि भाव को ।

भाव वाच्य केवल अकर्मक क्रियाओं का होता है और इसकी क्रिया सदा पुल्लिंग एकवचन में रहती है ।

गोपाल से खेला नहीं जाता ।

सीता से खेला नहीं जाता ।

लड़के से खेला नहीं जाता ।

लड़कों से खेला नहीं जाता ।

लड़कियों से खेला नहीं जाता ।

यदि क्रिया सकर्मक होने पर भी बिना कर्म के होने से अकर्मकवत् हो जाती है ।

मुझसे खाया नहीं जाता ।

अब तो खाया नहीं जाता ।

यदि कर्ता रहता है तो वह करण कारक में "से" अथवा "के द्वारा" के साथ रहता है ।

जैसे :- मुझसे सोया नहीं जाता ।

मुझसे हँसा नहीं जाता ।

भोलानाथ तिवारी का यह मत स्वीकृत है कि थोडी गहराई से

देखें तो हिन्दी में मूलतः दो ही वाच्य मानना अधिक उचित है
§क§ कर्तृ वाच्य और §ख§ अकर्तृ वाच्य । [1] इन दोनों में मुख्य अंतर है
§क§ कर्तृ वाच्य में कर्ता अवश्य होता है - §मोहन लोहा काट रहा है §

-किंतु अकर्तृ वाच्य में कर्ता का होना आवश्यक नहीं है । वह हो भी सकता है - मोहन के द्वारा लोहा काटा जा रहा है । नहीं भी - लोहा काटा जा रहा है ।

4.4. अकर्तृ वाच्य :-

कर्तृ वाच्य में कर्ता पर बल होता है किंतु अकर्तृ वाच्य में उस पर बल नहीं होता । कर्तृ वाच्य का कोई वाच्यचिह्नक नहीं होता । किंतु अकर्तृ वाच्य का "जा" होता है । यों जिन सकर्मक धातुओं के व्युत्पन्न अकर्मक संभव है उनके जा-विहीन प्रयोग भी होते हैं ।

जैसे :- सचिह्नक कर्मवाच्य - अशोक से यह बन्धन तोडे नहीं गए ।
सरोज से यह छोटा सा काम भी नहीं किया जा रहा है ।
चिह्नरहित कर्मवाच्य - अशोक से यह बन्धन नहीं टूटे ।
सरोज से यह छोटा सा काम भी नहीं हो रहा ।

-हिन्दी की परंपरागत दृष्टि से ये दोनों वाक्य कर्मवाच्य है । [2]

---

1. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा की संरचना-पृ. 175
2. --वही-- पृ. 175

आगे अकर्तृवाच्य के दो भेद कर सकते हैं --कर्म वाच्य और भाव वाच्य। इन दोनों में मुख्य अंतर है (क) कर्म वाच्य में मूल कर्तृ वाच्य का कर्म अवश्य होता है, किंतु भाव वाच्य में नहीं होता । (ख) कर्म वाच्य में "जा" का प्रयोग नहीं भी हो सकता है किंतु भाव वाच्य में अवश्य होता है । (ग) कर्तृवाच्य में सकर्मक क्रिया आती है , किंतु भाव वाच्य में सकर्मक क्रिया कभी नहीं आती, यदि आती भी है तो कर्म का लोप होने से वह अकर्मकवत् होती है ।

5. मलयालम में वाच्य

हिन्दी में जिसे वाच्य कहा जाता है उसे मलयालम में प्रयोग कहते हैं । हिन्दी की तरह मलयालम में वाच्य और प्रयोग अलग नहीं है । हिन्दी में क्रिया का संबन्ध मुख्यत: कर्ता से होने पर भी - कर्तृ वाच्य होने पर भी क्रिया का रूप कर्म के अनुसार (कर्मणि) प्रयोग हो सकता है अथवा किसी के अनुसार न होकर पुल्लिंग एकवचन में (भावे प्रयोग) हो सकता है । अत: वाच्य और प्रयोग अलग अलग माने जाते हैं । पर मलयालम में कर्ता के कारक रूप से तथा क्रिया के साथ आनेवाले कर्मवाच्य रूप से ही वाच्य का बोध होता है । क्रिया में लिंग, वचनानुसार परिवर्तन न होने के कारण कर्ता अथवा कर्म के साथ उसके अन्वय की समस्या नहीं उठती । इस कारण से मलयालम में वाच्य और प्रयोग में अंतर नहीं माना जाता ।

किसी क्रिया की आकांक्षापूर्ति केलिए आवश्यक कारकों में किसको प्राधान्य दिया जाता है उस क्रिया को उस कारक में प्रयोग कहा जाता है । इसके अनुसार सभी कारकों को भाषा में प्रयोग होते हैं । लेकिन कर्तरि, कर्मणि ही भाषा ने स्वीकृत किया है कर्मणि प्रयोग में ही धातु को रूपभेद आता है ।

- -

जहाँ कर्तृ कारक प्रधान हो वहाँ कर्तरि प्रयोग (कर्तृवाच्य), जहाँ कर्मकारक प्रधान हो वहाँ कर्मणि प्रयोग (कर्म वाच्य) होता है ।

4.5.1. कर्तरि प्रयोग

1. शंकराचार्यन् अद्वैतम् स्थापिच्चु ।
   (शंकराचार्य ने अद्वैत की स्थापना की ।)
2. श्रीकृष्णन् गीत उपदेशिच्चु ।
   (श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया)
3. मनुष्यर् समत्वम् कोतिक्कुन्नु ।
   (लोग समत्व चाहते हैं)

4.5.2. कर्मणि प्रयोग

1. कर्णन् अर्जुननाल् कोल्लप्पेट्टु ।
   (कर्ण अर्जुन से मारा गया)
2. कोळ्ळक्कारन् पोलीसुकारनाल् पिटिक्कप्पेट्टु ।
   (डाकू पुलीसों से पकडा गया ।)
3. निङ्ङळाल् कवित रचिक्कप्पेटुमो ?
   (क्या, तुम से कविता लिखी जाएगी ?)
4. कुट्टियाल् पाल् कुटिक्कप्पेट्टु ।
   (बच्चे से दूध पिया गया)

कर्मणि प्रयोग द्रविड़ भाषाओं में नहीं था और यह संस्कृत भाषा के अनुकरण से बनाया गया है । इसी कारण नित्य व्यवहार में लोग साधारणत

इसका आश्रय न करके कर्तरि प्रयोग का उपयोग ही करते हैं । मलयालम पद्य में भी यह प्रयोग बहुत दुर्लभ है । [1] अथवा यह कहना उचित होगा कि भाषा में कर्मणि प्रयोग अपना नहीं है, लेकिन आजकल इसका प्रयोग कभी किया जाता है ।

5.3. हिन्दी और मलयालम में कर्तृवाच्य से कर्म वाच्य बनाने के नियमों की तुलना:

1. हिन्दी में कर्तृ वाच्य में जो कर्ता कर्तृ-कारक में होता है उसे कर्म वाच्य में करण कारक में {से प्रत्यय के साथ} प्रयुक्त किया जाता है ।

इसी तरह मलयालम में कर्तृ कारक में प्रयुक्त संज्ञा को करण कारक में {आल् प्रत्यय के साथ} प्रयुक्त किया जाता है ।

	कर्तृवाच्य {कर्तरि प्रयोग}	कर्म वाच्य {कर्मणि प्रयोग}
हि:	वह गाता है	उससे गाया जाता है ।
	उसने गाया	उससे गाया गया ।
	वह लिखती है	उससे लिखा जाता है ।
	उसने लिखा	उससे लिखा गया ।
मल:	अवन् पाटुन्नु	अवनाल् पाटप्पेटुन्नु
	अवन् पाटि	अवनाल् पाटप्पेट्टु
	अवळ् एष़ुतुन्नु	अवळाल् एष़ुतप्पेटुन्नु
	अवळ् एष़ुति	अवळाल् एष़ुतप्पेट्टु

2. हिन्दी में कर्तृवाच्य का कर्म {को प्रत्यय सहित अथवा रहित} कर्म वाच्य में कर्ता बन जाता है । इसी तरह मलयालम में भी कर्तृवाच्य का कर्म {"ए" प्रत्यय सहित अथवा रहित} कर्म वाच्य में कर्ता बन जाता है ।

- -

हि: "को" प्रत्यय रहित	म: "ए" प्रत्यय रहित
माता ने एक कहानी कही ।	अम्म/ ओरु कथ/ परञ्ञु ।
माता से एक कहानी कही गयी ।	अम्मयाल् ओरु कथ/ परयप्पेट्टु ।
उसने एक खत लिखा ।	अवन् ओरु कत्तु एषुति ।
उससे एक खत लिखा गया ।	अवनाल् ओरु कत्तु एषुतप्पेट्टु ।
सीता ने एक साडी खरीदी ।	सीत/ ओरु सारि वाङ्ङि च्चु ।
सीता से एक साडी खरीदी गयी ।	सीतयाल् ओरु सारि वाङ्ङ क्कप्पेट्टु ।

"को" प्रत्यय सहित	"ए" प्रत्यय सहित
बिल्ली चूहे को पकड़ती है ।	पूच्च/ एलिये पिटिक्कुन्नु ।
चूहा बिल्ली से पकड़ा जाता है ।	एलि पूच्चयाल् पिटिक्कप्पेट्टुन्नु ।
बिल्ली से चूहे को पकडा गया ।	पूच्चयाल् एलिये पिटिक्कप्पेट्टु ।
पुलीस ने चोर को मारा ।	पोलीस कळ्ळने कोन्नु ।
चोर पुलीस से मारा गया ।	कळ्ळन पोलीसिनाल् कोल्लप्पेट्टु ।
पुलीस से चोर को मारा गया ।	पुलीसिनाल् कळ्ळने कोल्लप्पेट्टु ।
	{प्रत्यय सहित अस्वीकार्य}

5. क} कर्तृ वाच्य के वाक्य की मुख्य क्रिया कर्म वाच्य के वाक्य में भूतकालिक कृदन्त रूप में प्रयुक्त होती है और वह लिंग, वचन में कर्म वाच्य वाक्य के कर्ता के अनुसार होती है । पर उसके साथ को प्रत्यय हो तो पुल्लिंग एकवचन में होती है ।

ख} इस क्रिया के साथ "जा" क्रिया के विविध रूपों का प्रयोग किया जाता है यह क्रिया कर्तृवाच्य क्रिया के काल के अनुसार होती है और कर्म वाच्य कर्ता के लिंग वचनानुसार होती है अथवा उसके साथ "को" प्रत्यय हो तो पुल्लिंग

उदा: वह माँ की बात मानती है ।
उससे माँ की बात मानी जाती है ।
वह माँ की बात को मानता है ।
उससे माँ की बात को माना जाता है ।

मलयालम में कर्म वाच्य वाक्य की क्रिया हिन्दी की तरह कर्तृवाच्य क्रिया के काल को सुरक्षित रखती है, लेकिन लिंग, वचन में किसी का अनुसरण करने का प्रश्न नहीं उठता ।

उदा: अवन् अम्मयुटे वाक्कु अनुसरिक्कुन्नु (वर्तमान) ।
(वह माँ की बात मानता है ।)
अवनाल् अम्मयुटे वाक्कु अनुसरिक्कप्पेटुन्नु ।
(उससे माँ की बात माना जाता है)
अवन् अम्मयुटे वाक्कु अनुसरिच्चु । (भूत)
(उससे माता की बात मानी गयी ।)

मुख्य क्रिया के साथ सक, चुक आदि प्रकारार्थक क्रियायें हो तो वे क्रिया कर्म वाच्य सूचक "जा" के पहले आती है ।

उदा:- 1. वह काम कर सकता है ।
उससे काम किया जा सकता है ।
2. नौकर काम कर चुका है ।
नौकर से काम किया जा चुका है ।
3. मैं पाठ लिख चुकी हूँ ।
मुझसे पाठ लिख चुका है ।
4. मैं पाठ पढ़ सका ।
मुझसे पाठ पढ़ा जा सका ।

मलयालम में इस तरह प्रकारार्थक सहायक क्रियाओं का प्रयोग नहीं होता ।

एनिक्कु पाट्टु पाटान् कष़ियुन्नु ।

(मैं गीत गा सकती हूँ ।)

एन्नाल् पाट्टु पाटप्पेटान कष़ियुन्नु (अप्रयुक्त)

(मुझसे गीत गाया जा चुका है)

अवन् कत्तु एष़ुति कष़िञ्ञु ।

(वह खत लिख चुका ।)

अवनाल् कत्तु एष़ुतप्पेट्टु कष़िञ्ञु । (अप्रयुक्त)

(उससे पाठ लिखा जा चुका ।)

हिन्दी में अकर्मक क्रियाओं का भी कर्म वाच्य प्रयोग होता है जिसे भाव वाच्य कहते हैं । लेकिन मलयालम में इस तरह अकर्मक क्रियाओं का कर्मवाच्य नहीं बनता ।

हि: 1. यहाँ थोड़ी देर बैठें । (कर्तृ)

2. यहाँ थोडी देर बैठा जाय । (भाव)

3. अब थोड़ा चलें । (कर्तृ)

4. अब थोड़ा चला जाय । (भाव)

"र" और "म" के मलयालम रूप नहीं होते ।

4.6. प्रयोग - हिन्दी में

प्रयोग से आशय है - क्रिया का प्रयोग । वाक्य के कर्ता व कर्म के पुरुष, लिंग और वचन के अनुसार क्रिया का जो अन्वय होता है , उसे प्रयोग कहते हैं ।

- -

वैयाकरणों ने प्रयोग के तीन भेद माने हैं :-

1. कर्तरि प्रयोग
2. कर्मणि प्रयोग
3. भावे प्रयोग

4.6.1. कर्तरि प्रयोग :-

क्रिया का लिंग, वचन और पुरूष जब कर्ता के अनुसार होता है, तब उस क्रिया को कर्तरि प्रयोग कहते हैं ।

जैसे:- वह खाता है ।
वे खेलती हैं ।
लड़का पुस्तक पढ़ता है ।

क्रिया का लिंग, वचन और पुरूष निम्नांकित स्थितियों में कर्ता का अनुसरण करते हैं । --

अ) अकर्मक क्रिया के सभी कालों में

मोहन आया ।
बच्चा सोता है ।
लड़की आयी हैं ।
लडके आते थे ।

आ) एक कर्मक क्रिया के आने पर जब कर्ता के साथ "ने" का प्रयोग न हो :-

राधा दूध पीती है ।
मोहन रोटी खाता था ।
लड़के रोटियाँ खाते थे ।
लडकियाँ पुस्तक पढती हैं ।

ड़ॄ द्विकर्मक क्रिया के आने पर जब कर्ता के साथ "ने" का प्रयोग न हो ।

मोहन माता को चिट्ठी लिखता है ।

माँ मोहन को पत्र लिखता था ।

माँ मोहन को चिट्ठी लिखता है ।

4. 6. 2. कर्मणि प्रयोग :-

जिस क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कर्म के पुरुष, लिंग और वचन के अनुसार होते हैं - उसे कर्मणि प्रयोग कहते हैं ।

लड़के ने पुस्तक पढ़ी ।

राम ने रोटी खायी ।

कर्मणि प्रयोग दो प्रकार का होता है --

1. कर्तृवाच्य कर्मणिप्रयोग ॄ2ॄ कर्म वाच्य कर्मणि प्रयोग

4. 6. 2. 1. कर्तृवाच्य कर्मणि प्रयोग :-

कतृवाच्य कर्मणि प्रयोग वहाँ होता है, जहाँ कर्ता के साथ "ने" हो तथा सकर्मक क्रिया के भूतकालिक कृदन्त जनित कालों का प्रयोग हो । प्रस्तुत रूपान्तर से वाच्य का उद्देश्य क्रिया का कर्ता जाना जाता है । कर्तृवाच्य के कर्मणि प्रयोग में कर्ता कारक सप्रत्यय रहता है ।

मोहन ने पुस्तक पढी ।

मैं ने रोटी खाई ।

सीता ने आम खाया ।

लड़कों ने रोटियाँ खाईं ।

4.6.2.2. कर्मवाच्य कर्मणि प्रयोग :-

जहाँ कर्ता के साथ "से" या "के द्वारा" हो और सकर्मक क्रिया भूतकालिक कृदन्त रूप में हो वहाँ भी कर्मणि प्रयोग होता है । इसे कर्म वाच्य कर्मणि प्रयोग कहते हैं । इससे वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्म जाना जाता है और क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्म के लिंग वचन और पुरुष के अनुसार होते हैं ।

मुझसे पुस्तक पढ़ी गयी ।
मेरे द्वारा फल खरीदा गया ।
सीता से काम नहीं किया गया ।
मुझसे चित्र खींचा गया ।

4.6.3. भावे प्रयोग :-

जहाँ क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कर्ता या कर्म के अनुसार नहीं हो, बल्कि हमेशा पुल्लिंग अन्य पुरुष एकवचन में हो वहाँ भावे प्रयोग होता है।

पिताजी ने नौकर को बुलाया ।
मुझसे कहा नहीं जाता ।

भाव-वाच्य तीन प्रकार का होता है --

1. कर्तृवाच्य भावे प्रयोग
2. कर्म वाच्य भावे प्रयोग
3. भाव वाच्य भावे प्रयोग

4.6.3.1. कर्तृवाच्य भावे प्रयोग :-

जब वाक्य का उद्देश्य क्रिया के कर्ता के साथ "ने" प्रत्यय हो, और कर्म के साथ 'को' प्रत्यय हो अथवा कर्म लुप्त हो तब कर्तृवाच्य भावे प्रयोग होता

हम ने गरीब औरत को देखा है ।

लड़के ने पागल कुत्ते को मारा ।

हम ने नहाया ।

उसने देखा ।

6.3.2. कर्मवाच्य भावे प्रयोग :-

जहाँ वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्म जाना जाता है, और उसके साथ "को" प्रत्यय हो, वहाँ कर्म वाच्य भावे प्रयोग होता है ।

(मुझसे) लकड़ी को काटा जा रहा है ।

(मुझसे) इस काम को नहीं किया जा सकता है ।

6.3.3. भाव-वाच्य भावे प्रयोग :-

जहाँ वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्ता व कर्म न जाने जावे, तब क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता और कर्म के अनुसार न हो उसे भाव-वाच्य भावे प्रयोग कहते हैं ।

उदा: वहाँ बैठा नहीं जाता ।

मुझसे यह देखा नहीं जाता ।

..7. प्रकार-हिन्दी में

क्रिया के प्रकारों को ऐसे क्रिया परक रूप कहते हैं -- जो वस्तु स्थिति के प्रति वक्ता के अभिहित क्रिया के व्यापार या अवस्था का निर्देश करते हैं । क्रिया के प्रकार जो अर्थ देते हैं - उन्हें प्रकार कहते हैं ।[1]

---

1. दीमशित्स- हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा- पृ. 126

प्रकार से क्रिया के विधान, रीति, आज्ञा आदि का बोध होता है । उनके अनुसार क्रिया के जिस रूप से विधान करने की रीति का बोध होता है - उसे अर्थ कहते हैं । [1]

हिन्दी में क्रियाओं के मुख्य पाँच प्रकार माने जाते हैं --

1. निश्चयार्थ 2. संभावनार्थ 3. संदेहार्थ
4. आज्ञार्थ 5. संकेतार्थ -

4.7.1. निश्चयार्थ प्रकार:-

क्रिया के जिस रूप से किसी विधान का निश्चय जाना जाए, उसे निश्चयार्थक प्रकार कहते हैं । निश्चयार्थक प्रकार क्रिया का कोई विशेष रूप नहीं होता और इसकी विशेषता है कि उसके काल के रूप होते हैं । निश्चयार्थक प्रकार क्रिया के व्यापार की वास्तविकता को दर्शाता है और उसका वर्तमान, भूत या भविष्यत् काल से संबन्ध रहता है । जैसे--

कमला घर से आती है ।
लड़का पुस्तक नहीं लाया ।
मैं दिल्ली जाऊँगा ।
राम ने गीत गाया ।

4.7.2. संभावनार्थ :-

संभावनार्थक क्रिया से कार्य की संभावना, इच्छा और अनुमान का ज्ञान होता है । संभावनार्थक प्रकार क्रिया से व्यापार के संपादन के काल को सूचित नहीं करता । इस काल का प्रसंग से या समय विशेषता बोधक से पता चला करता है और यह वर्तमान, भूत तथा भविष्यत् में से किसी भी काल से संबन्धित हो सकता है ।

हो सकता है, कल यह कार्य समाप्त हो । (संभावना)

हमें बडों का आदर करना चाहिए । (कर्तव्य)

वह सदा सुहागिन रहे । (इच्छा)

न जाने बारिश होगी कि नहीं । (सन्देह)

4.7.3. सन्देहार्थक प्रकार:-

सन्देहार्थ क्रिया से कार्य के होने में सन्देह प्रकट होता है ।

जैसे:- वह दफ्तर से गया होगा ।

बहिन आती होगी ।

पिताजी दिल्ली से लौटते होंगे ।

4.7.4. आज्ञार्थक प्रकार:-

आज्ञार्थक प्रकार क्रिया के ऐसे व्यापार की प्रेरणा व्यक्त करता है जो अन्य व्यक्ति को सम्पादित करना होता है । आज्ञार्थक प्रकार से आज्ञा, उपदेश, निषेध, आदि का बोध होता है ।

उदा: उसे जाने दो (आज्ञा)

उसे बुलाओ ( )

किसी को हँसी उठाना नहीं चाहिए । (उपदेश)

वह यहाँ नहीं आवें (निषेध)

4.7.5. संकेतार्थ प्रकार:-

संकेतार्थ क्रिया से ऐसी दो घटनाओं की असिद्धि सूचित होती है जिसमें कार्य कारण का संबन्ध होता है ।

उसने अच्छीतरह पढा होता तो पास हुआ होता ।

यदि वह होती तो मेरी अच्छी होती

.8. प्रकारम् - मलयालम में

क्रिया के जिस रूप से विधान करने की रीति का बोध होता है उसे प्रकारम् (प्रकार) कहते हैं । अथवा क्रिया के संबन्ध में वक्ता के मनोभाव का द्योतन करने केलिए कृति (क्रिया) में जो रूप भेद किया जाता है उसे प्रकार कहते हैं । ¹

मलयालम व्याकरणकारों ने निम्नलिखित चार प्रकार माने हैं --

1. निर्देशक प्रकारम्
2. नियोजक प्रकारम्
3. विधायक प्रकारम्
4. अनुज्ञायक प्रकारम

3.1. निर्देशक प्रकारम्

धातु का केवल अर्थ प्रतिपादित करनेवाली रीति को निर्देशक प्रकार कहते हैं । निर्देशक प्रकार में केवल काल-सूचना होती है । इसका कोई प्रत्यय नहीं है ।

अवर्. वन्नु । (वे आये)

अवन् पत्रम् वायिच्चिरुन्नु । (वह अखबार पढा था)

आळुकळ् अम्पलत्तिल् पोयुक्कोण्टिरुन्नु ।

(लोग मन्दिर जा रहे थे)

3.2. नियोजक प्रकारम्

नियोजक प्रकार क्रिया के अर्थ में नियोग, अनुमति, आशंसा, प्रार्थना आदि को सूचित करता है ।

जैसे: आलुम, अट्टे, विन आदि इसके प्रत्यय है ।

ताड्.गळ् आश्वसिप्पालुम् । ‖नियोग‖
‖आप ‖पु‖ आश्वास कीजिए ‖

अवन् पोयक्कोळ्ळट्टे ‖अनुमति‖
‖वह जावे । ‖
अवळ् परायट्टे । ‖ ‖
‖ वह कह जावे । ‖
नेह्रू नीणाळ् वाषट्टे । ‖आशंसा‖
‖नेहरूजी दीर्घकाल जीते रहे । ‖
नीतिक्कुवेण्डि पोरुतुविन् ।
‖नीति केलिए लडो । ‖

3. विधायक प्रकारम :-

कर्तव्य या करणीय, अभ्यर्थना ‖विधि‖ आदि के अर्थ में इसका उपयोग किया जाता है । अण्म्, एण्म् आदि विधायक प्रकार को सूचित करनेवाले प्रत्यय है ।

नाम् नम्मुटे राज्यत्ते सेविक्कणम् ‖ कर्तव्य‖
‖हमें अपने राज्य की सेवा करनी है /करनी चाहिए ‖
गुरुक्कन्मारे बहुमानिक्कणम्
‖गुरुओं का आदर करना चाहिए ‖

4. अनुज्ञायक प्रकारम्

सहमति सूचित करने केलिए अनुज्ञायक प्रकार का प्रयोग होता

उदा: 1. आन् पोकाम् (मैं जाऊँ) (विधेयत्व)
आन् परःयाम् (मैं कहूँ)

2. वेळ्ळम् पोङ्ङ्येक्काम् (संभाव्यता)
(शायद) पानी बढें (बढ़ सकता है)

3. अवर्. पोयिरिक्कुम् ।
(वे गये होंगे ...)

8.5. हिन्दी और मलयालम प्रकारों (अर्थों) की तुलना

यद्यपि हिन्दी और मलयालम के व्याकरणकारों ने प्रकार की जो चर्चा की है उसमें तनिक अंतर है - तो भी दोनों भाषाओं में प्रयुक्त प्रकारों में काफी समानता है । हिन्दी क्रियाओं के प्रकारों के समानार्थक मलयालम प्रकार नीचे उदाहरण सहित दिये जाते हैं --

हिन्दी	मलयालम
1. निश्चयार्थक	निर्देशक
पक्षी उड़े ।	पक्षिकळ् परन्नु ।
हम फल खाते हैं ।	अङ्ङळ् पऴम् तिन्नुन्नु ।
लड़के स्कूल जायेंगे ।	आण्कुट्टिकळ् स्कूलिल पोकुम् ।
(निषेध)	
वह आज नहीं आता ।	अवन्. इन्नु वरुनिल्ला
मैं बंबई नहीं गया ।	आन् बोम्बेयिल् पोयिल्ल ।
सरला शाम को नहीं गायेगी ।	सरल वैकुन्नेरम् पाटुकयिल्ल ।

2. संभावनार्थक नियोजक

वह जावे ।	अवन् पोकट्टे / पोय्क्कोळ्ळट्टे ।
वह सदासुहागिन रहे ।	अवळ् एप्पोषुम सौभाग्यवतियायिरिक्कट्टे।

विधायक

वह गा सकती है ।	अवळ्क्कु पाटान कषियुम ।
क्या, तुम कल वहाँ जा सके	निङ्.ङ.ळ्क्कु इन्नले अविटे पोकान् कषिञ्ञो
तुम्हें यह किताब पढनी चाहिए	नी ई पुस्तकम् वायिक्कणम् / वायिक्कू ।
नेहरूजी दीर्घकाल जीते रहे ।	नेहरू नीणाळ् वाषट्टे ।
वह जल्दी जावें ।	अवन् वेगम् पोकट्टे ।

संदेहार्थ :-

मलयालम में अलग नाम नहीं दिया है ।

गाड़ी दिल्ली पहुँची होगी ।	वण्टि दिल्लियिल् एत्तियिरिक्कुम् / एत्तियिट्टुण्टाकुम् । एत्तियिट्टुण्टायिरिक्कुम् ।
पिताजी अखबार पढ़ते होंगे ।	अच्छन् पत्रम् वायिक्कुन्नुण्टाकुम् / वायिक्कुन्नुण्टायिरिक्कुम् ।

आज्ञार्थक	अनुज्ञायक
उसको जाने दो । (वह जावे)	अवन् पोकट्टे / पोकान् अनुवदिक्कू ।
वह यहाँ आवें ।	अवन् इविटे वरट्टे ।
नौकर को बुलाओ ।	वेलक्कारने विळिक्कू ।
आप चाय पीजिए ।	तांकळ चाय कुटिच्यालम ।

इस तरह हम देखते हैं कि दोनों भाषाओं के प्रयोग में काफी समानता है ।

उपर्युक्त अध्ययन से क्रिया के रूपांतर अथवा रूप रचना से संबन्धित निम्न लिखित बातें स्पष्ट होती है ।

काल के मुख्य रूपों में दोनों भाषाओं में पूर्ण समानता है । अन्य काल रूपों और रीतियों में दोनों भाषाओं की क्रियाओं में काफी अंतर है । दोनों भाषाओं में सहायक क्रियायें जोड़कर रीतियों को प्रकट किया जाता है ।

जहाँ मलयालम क्रियाओं में पुरुष, लिंग, वचन सूचना नहीं होती वहाँ हिन्दी क्रियाओं में इनका मुख्य स्थान है ।

हिन्दी और मलयालम में कर्तृ वाच्य और कर्म वाच्य प्राप्त है पर भाव-वाच्य केवल हिन्दी में है ।

प्रयोग की दृष्टि से देखा जाय तो हिन्दी में क्रिया के विविध प्रकार के अन्वयों के कारण कर्तरि प्रयोग, कर्मणि प्रयोग, भावे प्रयोग ऐसे तीन प्रयोग मिलते हैं ।

मलयालम क्रियाओं में ऐसे रूपान्तर और अन्वय न होने के कारण प्रयोग की परिकल्पना नहीं है ।

दोनों भाषाओं में क्रिया के अनेक प्रकार है जिनमें बहुत कुछ समानता है । लेकिन कहीं कहीं अंतर भी है । प्रकारों को सूचित करने केलिए मलयालम में बहुत से रूप हैं और उनके द्वारा अगणित अर्थ छायायें प्रकट किया जाता है । किंतु हिन्दी में ऐसे रूप सीमित हैं ।

xxxxxxxxxxxxxx

पाँचवाँ अध्याय

हिन्दी और मलयालम का कृदंत

पाँचवाँ अध्याय

हिन्दी और मलयालम का कृदंत

5.0. कृदन्त

क्रियाओं के कुछ रूप अन्य शब्द भेदों के रूप में प्रयुक्त होते हैं । क्रिया वाक्य के विधेय शब्द के रूप में आती है पर ऐसे रूप अन्य किसी रूप में प्रयुक्त होते हैं । इस तरह क्रिया से बनने वाले रूप कृदन्त है ।

5.1. हिन्दी कृदन्त

5.1.1. परिभाषा

हिन्दी व्याकरणकार कामता प्रसाद गुरु कृदन्त की परिभाषा इस प्रकार देते हैं -" क्रिया के जिन रूपों का उपयोग दूसरे शब्द भेदों के समान होता है उन्हें कृदन्त कहते हैं । जैसे चलना {संज्ञा}, चलता {विशेषण} चलकर {क्रिया विशेषण}, मारे, लिए {संबन्ध सूचक} इत्यादि ।[1]

धातु के साथ , उनसे अन्य शब्द भेद बनाने केलिए जो प्रत्यय लगाये जाते हैं उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं । जिन शब्दों के अंत में ये प्रत्यय आते हैं, उन्हें कृदन्त कहते हैं ।[2]

जैसे: जाना, करना, देखना आदि धातु नहीं है कृदन्त है,
क्योंकि ये जा, कर, देख, धातुओं के पीछे "ना" कृत् प्रत्यय लगाकर बनाये गये हैं ।

---

1. कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण- पृ. 230
2. दुनीचन्द, हिन्दी व्याकरण - पृ. 208

दीमशित्स ने संभवतः अंग्रेज़ी के "पार्टिसिपिल" [Participle] शब्द का पर्याय मानकर कृदन्त की परिभाषा इस प्रकार दी है - कृदन्त क्रिया का ऐसा रूप होता है जिसमें एक साथ क्रिया तथा विशेषण दोनों की विशेषतायें होती हैं इसलिए क्रिया को कभी कभी क्रियार्थक विशेषण कहते हैं । [1]

पर इसमें हिन्दी की कृदन्त संज्ञायें नहीं आतीं [चलना, देखना] कृदन्त विशेषण ही आते हैं ।

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि क्रिया से बने हुए शब्द, जो दूसरे शब्दों के समान [संज्ञाओं, विशेषणों, क्रिया विशेषणों के समान] प्रयोग में आते हैं वे कृदन्त है । जैसे:-

पढ़ना लाभकारी है । [सं]

पढा हुआ आदमी आदर पाता है । [वि.]

वह पढ़कर महान बन गया । [क्रि. वि.]

यहाँ रेखांकित शब्द क्रमशः संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण को सूचित करते हैं । "पढ़ना", "पढा हुआ", "पढकर" - ये शब्द क्रिया से बने हुए हैं और वाक्य में इनका प्रयोग क्रिया के रूप में नहीं होता बल्कि अन्य शब्दों के रूप में [संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण] होता है । क्रिया के इन रूपों को कृदन्त कहते हैं ।

---

1. दीमाशित्स, हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा- पृ. 20।

5. 1. 2. रूपान्तर के अनुसार कृदन्त के प्रकार

रूपान्तर के आधार पर कृदन्त दो प्रकार के होते हैं - 1. विकारी-कृदन्त §2§ अविकारी कृदन्त । प्रत्येक के अर्थ के अनुसार उनके कई भेद भी होते हैं - जैसे --

5. 1. 2. 1. विकारी | अविकारी

विकारी	अविकारी
1. क्रियार्थक संज्ञा	5. अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त
2. वर्तमानकालिक कृदन्त	6. पूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त
3. भूतकालिक कृदन्त	7. तात्कालिक कृदन्त
4. कर्तृवाचक कृदन्त	8. पूर्वकालिक कृदन्त

5. 1. 2. 1. 1. क्रियार्थक संज्ञा

क्रिया शब्दों के "ना" प्रत्यययुक्त रूपों का प्रयोग संज्ञा शब्दों के समान होता है जैसे-- आना, जाना, करना आदि । ऐसे रूप को क्रियार्थक संज्ञा कहा जाता है । हिन्दी व्याकरण में इसकी परिभाषा इस प्रकार है -- क्रियार्थक संज्ञा केवल क्रिया का नाम है, संज्ञा के समान इसका रूपांतर होता है, इसलिए यह उद्देश्य अथवा कर्म हो सकती है और संबन्ध सूचक के साथ इसके सामान्य रूप का प्रयोग किया जा सकता है । साधारण संज्ञा और क्रियार्थक संज्ञा में यह भेद है कि क्रिया होने के कारण उसका कर्म भी हो सकता है ।[1] इसका प्रयोग संज्ञा और क्रिया दोनों के समान होता है ।

---

1. दुनीचन्द, हिन्दी व्याकरण- पृ. 244

उदा: सबेरे नहाना अच्छा है ।

वहाँ जाना मैं पसन्द नहीं करता ।

5.1.2.1.1.1. क्रियार्थक संज्ञा की विशेषतायें :-

1. संज्ञा के समान क्रियार्थक संज्ञा के पहले भी विशेषण अथवा संबन्ध सूचक प्रत्यय आ सकते हैं ।

उदा: बच्चों को सुन्दर लिखने का अभ्यास करना चाहिए ।

मीठा बोलना सबको पसन्द आता है ।

यहाँ उसका आना मैं पसन्द नहीं करता ।

2. क्रिया का स्वभाव भी होने के कारण उसके सामने क्रिया विशेषण भी आ सकता है ।

उदा:- जल्दी जाने पर तुम उससे मिल सकोगे ।

यहाँ आना मना है ।

सबेरे नहाना तन्दुरुस्ती केलिए अच्छा है ।

3. क्रियार्थक संज्ञा वाक्य में कर्ता के रूप में या कर्म के रूप में आ सकता है ।

उदा:- तैरना एक अच्छा व्यायाम है । (कर्ता)

लता का गाना सब को पसन्द है । (कर्म)

उसका बोलना यहाँ सुनाई नहीं पडता । (कर्ता)

रमेश अपनी माँ का कहना मानता है । (कर्म)

4. क्रियार्थक संज्ञा के साथ विभिन्न कारक प्रत्यय भी आ सकते हैं ।

सोने से थकावट दूर होती है । (करण कारक)

भाई से मिलने केलिए वह रोज़ आता है । (संप्रदान)

उसके कहने पर वह मान जायेगा । (अधिकरण)

5. क्रियार्थक संज्ञा के विकृत अथवा अविकृत रूप का प्रयोग कई तरह की संयुक्त क्रियाओं में भी होता है । इसकी चर्चा अन्यत्र की गयी है । {दे अध्याय तीन 3.3.1.2.}

5.1.2.1.2. वर्तमानकालिक कृदन्त

वर्तमान-कालिक कृदन्त धातु के अंत में "ता" जोड़ने से बनता है । जैसे:- बोलता, आता, जाता आदि । विकल्प रूप में इसके साथ "हुआ" का प्रयोग हो सकता है ।

5.1.2.1.2.1. वर्तमानकालिक कृदन्त की प्रयोग-विशेषतायें

5.1.2.1.2.1.1. विशेषण के रूप में विशेषतायें

अ. वर्तमानकालिक कृदन्त का प्रयोग बहुधा विशेषण के समान होता है और आकारांत विशेषणों की तरह इसका भी विकार होता है ।

चलती {हुई} गाडी	बहता {हुआ} पानी ।
रोता {हुआ} बालक	उडती {हुई} चिडिया ।
चलते {हुए} आदमी,	पिसता {हुआ} मिट्टी ।

आ. यह कृदन्त सदा कर्तृवाच्य होता है अर्थात् वर्तमानकालिक कृदन्त कर्ता का ही विशेषण करता है ।

चलती गाडी,	भूँकता कुत्ता ।
सोते लडके ,	गाती लडकियाँ ।
खाते आदमी ,	खेलता बच्चा ।

5.1.2.1.2.1.2. संज्ञा के रूप में प्रयोग

संज्ञा के समान होती है । जैसे :-

डूबते को तिनके का सहारा ।

मरता क्या न करता ।

-उपर्युक्त वाक्यों में "डूबते" "मरता" कृदन्त का प्रयोग संज्ञा के समान है । लेकिन इस तरह के प्रयोग कुछ कहावत जैसे वाक्यों तक सीमित हैं । इसे एक सामान्य प्रयोग नहीं मान सकते ।

जाते को रोक लो ।

आते का सत्कार कीजिए ।

--ऐसे प्रयोग संभव नहीं है ।

1.2.1.2.1.3. क्रिया के रूप में विशेषतायें :-

1. वर्तमानकालिक कृदन्त के पहले क्रियाओं की तरह क्रिया विशेषण आ सकते हैं ।

उदा: तेज़ दौडता घोड़ा

धीरे धीरे बोलता वक्ता

क्रिया विशेषण कारक पद (संज्ञा + विभक्ति) के रूप में भी हो सकता है । जैसे :-

दिल्ली से आती हुई गाडी ।

शहर में रहते हुए लोग ।

2. वर्तमानकालिक कृदन्त की मूल क्रिया सकर्मक हो तो उसके साथ कर्म भी आ सकता है । जैसे :-

फल खाता हुआ बन्दर ।

गेंद खेलते हुए लडके ।

5.1.2.1.3. भूतकालिक कृदन्त :-

भूतकालिक कृदन्त धातु के साथ "आ" या "या" जोड़ने से बनता है। उसकी रचना निम्न प्रकार की होती है।

1. अकारांत धातु के अंत्य "अ" के स्थान में "आ" कार देते हैं।
"ऊ" कारांत धातु के "ऊ" को ह्रस्व बनाकर "आ" जोड़ा जाता है।

2. "आ" कारांत और "ओ" कारांत धातुओं के साथ "या" जोडा जाता है।
"ई" कारांत धातु के "ई" को ह्रस्व बनाकर "या" जोडा जाता है।

इसके साथ भी विकल्प रूप में "हुआ" क्रिया आ सकती है।

बोल्	- बोला (हुआ)	पा	- पाया (हुआ)
डर	- डरा (हुआ)	आ	- आया (हुआ)
कह	- कहा (हुआ)	खा	- खाया (हुआ)
मिल	- मिला (हुआ)	बो	- बोया (हुआ)
मार	- मारा (हुआ)	सो	- सोया (हुआ)
छु	- छुआ (हुआ)	पी	- पिया (हुआ)

(रूप रचना का विस्तृत विश्लेषण अन्यत्र किया गया है।
(देखिये क्रियाओं की रूप रचना पृ.)

5.1.2.1.3.1. भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग-विशेषतायें

अ. अकर्मक क्रिया का भूतकालिक कृदन्त कर्तृवाच्य होता है और सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक कृदन्त कर्मवाच्य। अर्थात् अकर्मक क्रिया का भूतकालिक कृदन्त रूप कर्ता-प्रधान और सकर्मक क्रिया का भूतकालिक कृदन्त रूप कर्म-प्रधान होता है।

अकर्मक	आया आदमी सोये बच्चे भीगी बिल्ली	कर्ता
सकर्मक :	लिखी चिट्ठी बनाया खाना सुनी कहानी	कर्म

1.2.1.3.1.1. विशेषण के रूप में विशेषतायें

1. भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग विशेषण के रूप में अधिक होता है और उसका विकार अन्य आकारान्त विशेषण की तरह होता है ।

अकर्मक
चली (हुई) गाडी ।
मरे (हुए) लोग ।
दौडा (हुआ) कुत्ता
रोया (हुआ) लड़का

सकर्मक
देखा (हुआ) आदमी
पढ़ी (हुई) किताब
खाए (हुए) फल
खरीदी (हुई) किताबें

विशेष उल्लेखनीय है कि जहाँ वर्तमान-कालिक कृदन्त सदा कर्ता का विशेषण करता है, वहाँ भूतकालिक कृदन्त (क) अकर्मक हो तो कर्ता का विशेषण करता है अतः कर्तृ वाच्य कहा जा सकता है और (ख) सकर्मक हो तो कर्म का विशेषण करता है और कर्म वाच्य कहा जा सकता है ।

भूतकालिक कृदंत	वर्तमान कालिक कृदंत
क) आया (हुआ) आदमी	क) आता हुआ आदमी
भागे (हुए) चोर	भागते हुए चोर
रुकी (हुई) गाडी	रुकती हुई गाड़ी
ख) लिखी (हुई) कहानी	ख) लिखती (हुई) लेखिका
सुनी (हुई) बात	सुनती (हुई) लडकी
देखी (हुई) चीज़	देखती (हुई) औरत
	देखता (हुआ) आदमी

1.2.1.3.1.2. संज्ञा के रूप में विशेषतायें

कभी कभी संज्ञा के रूप में भी इसका प्रयोग होता है, पर यह प्रयोग सीमित है, सामान्य नहीं ।

उदा:- मेरा कहा मानो ।
मरे क्यों मारते हो ।

1.2.1.3.1.3. क्रिया के रूप में विशेषतायें

1. भूत-कालिक कृदन्त के पहले भी क्रिया विशेषण आ सकते हैं ।

अभी आयी गाड़ी ।
कल लिखी (हुई) चिट्ठी

क्रिया [illegible]ण यहाँ भी कारक पद (संज्ञा + विभक्ति) हो सकता है ।

मद्रास से आये (हुए) लोग ।
मेज़ पर रखी (हुई) चीज़ें ।

2. भूतकालिक कृदन्त भी सकर्मक हो तो उसके बाद कर्म आ सकता है और

खरीदी हुई चीज़

खाया हुआ फल ।

पर वर्तमान-कालिक कृदन्त की तरह इसके पूर्व कर्म और बाद में कर्ता नहीं आ सकते । जैसे:-

फल खाया (हुआ) बन्दर

गेंद खेले (हुए) लड़के

गीत गायी (हुई) लड़की ।

-- ये रूप स्वीकार्य नहीं हैं ।

5. 1. 2. 1. 4. कर्तृवाचक संज्ञा

क्रियार्थक संज्ञा के विकृत रूप के साथ वाला प्रत्यय जोडकर कर्तृवाचक कृदन्त बनाया जाता है ।

इस कृदन्त का उपयोग (अ) संज्ञा अथवा (आ) विशेषण के समान होता है और आकारांत संज्ञा अथवा विशेषण के समान इसका विकार होता है ।

अ) लिखनेवाला कौन है ।

वहाँ रहनेवाले मेरे दोस्त हैं ।

यह गीत गानेवाली एक मशहूर गायिका है ।

आ) उधर जानेवाला लड़का कौन है ।

वहाँ खेलनेवाले लड़के कालेज के विद्यार्थी हैं ।

दिल्ली से आनेवाली गाडी पाँच बजे आती है ।

5. 1. 2. 1. 4. 1. कर्तृवाचक कृदन्त की विशेषतायें

5. 1. 2. 1. 4. 1. 1. संज्ञा के रूप में विशेषतायें

1. अन्य संज्ञाओं की तरह कर्तृवाच्य कृदन्त विभक्ति रहित और विभक्ति सहित हो सकता है ।

विभक्ति रहित

उदा: काम करनेवाला फल पाता है ।
कमाने वाले कमाते हैं , भोगनेवाले भोगते हैं ।
रेडियो में गानेवाली कौन है ।

विभक्ति सहित

उदा: वहाँ जाकर आनेवालों का स्वागत करो ।
हिंसा करनेवालों से क्या समझौता हो सकता है ?

2. उद्देश्य अथवा विधेय के रूप में इसका प्रयोग हो सकता है ।

उदा: इस स्कूल में पढनेवाले सब इस शहर के लडके हैं । {उद्देश्य}
बंबई से कुछ महिलायें यहाँ आनेवाली हैं । {विधेय}
आचार्य जी कल भाषण देनेवाले थे । {विधेय}

5. 1. 2. 1. 4. 1. 2. विशेषण के रूप में विशेषतायें

कर्तृवाचक कृदन्त जब विशेषण के रूप में आता है तब अन्य विशेषणों की तरह {अ} विशेषक विशेषण के रूप में अथवा {आ} विधेय विशेषण के रूप में आ सकता है ।

अ} खूब पढ़नेवाले लड़के अच्छे अंक पाते हैं ।

अच्छी तरह भाषण देनेवाले नेता लोगों को आकृष्ट करते हैं ।

आ) यह लड़का खूब काम करनेवाला है ।

वह आदमी कलकत्ते का रहनेवाला है ।

2.1.4.1.3. क्रिया के रूप में विशेषतायें

संज्ञा और विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने पर भी कर्तृ वाचक कृदन्त के क्रिया रूप के गुण नष्ट नहीं होते । क्रिया की निम्नलिखित विशेषतायें इसमें द्रष्टव्य है ।

1. तीनों कालों में इसका प्रयोग हो सकता है ।

क) हम ने स्वतंत्रता केलिए लड़नेवालों केलिए एक स्मारक बनाया । (भूत)
बन्द करनेवालों ने आनेवाली गाडियों को रास्ते में रोका । (भूत)

ख) ऐसे काम करनेवाले लोग बदमाश होते हैं । (वर्तमान)
मौसम में आनेवाली वर्षा से खेती अच्छी होती है । (वर्तमान)

ग) तुम यहाँ रहो और आनेवाले लड़कों को मेरे पास भेजो। (भविष्य)
अगले वर्ष इस कारखाने में आनेवाले मज़दूरों को ज़्यादा वेतन मिलेगा।
(भविष्य)

अन्य कृदन्तों के समान कर्तृवाचक कृदन्त मूल सकर्मक क्रिया हो तो उसके साथ कर्म आ सकता है ।

फल खानेवाले तन्दुरुस्त रहते हैं ।

खूब काम करनेवाले अच्छे वेतन पाते हैं ।

रोज़ मेहनत करनेवाले सुखी रहते हैं ।

कर्तृवाचक कृदन्त, क्रियार्थक संज्ञा का अर्थ देता है ।

क) क्रियार्थक संज्ञा सामान्य कर्तृ सूचक में प्रयुक्त होती है ।

उदा: खानेवाला लड़का।

खेलने वाले बच्चे ।

अच्छी तरह गानेवाली लड़की ।

ख) इसका प्रयोग निकट भविष्यत् की सूचना के लिए भी होता है ।

मेरा भाई शाम की सभा में बोलने वाले हैं ।

बंबई से मेरी सहेली कल आनेवाली है ।

1.2.2. अविकारी कृदन्त

1.2.2.1. अपूर्ण क्रिया द्योतक

यह वर्तमान कृदन्त का ही एक रूप है, लेकिन यह अविकारी है । वर्तमान कालिक कृदन्त के "ता" को "ते" करने से अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त बनता है ।

जैसे:- बोलते , देखते ।

करते चलते ।

पढते , खेलते ।

इससे मुख्य क्रिया के साथ होने वाले व्यापार की अपूर्णता सूचित होती है । [1]

जैसे:- मुझे घर लौटते रात हो जायेगी ।

तू अपनी विवाहिता को छोडते नहीं लजाता ।

---

1. कामता प्रसाद गुरु: हिन्दी व्याकरण - पृ. 234

5.1.2.2.1.1. विशेषतायें

1. क्रिया विशेषण के रूप में इसका प्रयोग होता है ।

जब दो क्रियाओं के द्वारा किये गये कार्य एक के बाद एक होता है, तब प्रथम क्रिया अपूर्ण क्रिया रूप में होती है ।

उसके लौटते रात हो गयी ।

कहानी कहते एक घण्टा बीत गया ।

2. अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत की द्विरुक्ति हो सकती है ।

बातें करते करते वह थक गया ।

वह गाते गाते नाचती है ।

3. यह कर्ता के साथ भी आ सकता है कर्म के साथ भी ।

तुम्हारी बात सुनते सुनते मैं ऊब गया । (कर्ता)

खेलते खेलते लड़के थक गये । (कर्ता)

उसको आते देखकर मैं चुप रह गया । (कर्म)

उषा को दौडते देखके सब दंग रह गये । (कर्म)

4. इस कृदंत के प्रयोग में कृदन्त तथा मुख्य क्रिया के कर्ता अलग अलग हो सकते हैं या एक हो सकता है ।

कहानी कहते एक घण्टा बीत गया । (अलग)

कहानी कहते मैं थक गया । (एक)

5.1.2.2.2. पूर्ण क्रिया द्योतक कृदंत

इस कृदन्त से बहुधा मुख्य क्रिया के साथ होनेवाले व्यापार की पूर्णता का बोध होता है । पूर्ण क्रिया द्योतक कृदंत अव्यय होता है और भूतकालिक कृदंत के अन्त्य "आँ" को "ए" आदेश करने से बनता है । अविकारी रूप से ही इसका प्रयोग होता है । जैसे- किए, गए, बीते, मारे, लिए आदि । उदा:-

इतनी रात गए तुम क्यों आये
इस बात को हुए कई वर्ष बीत गए । [1]

अपूर्ण क्रिया द्योतक तथा पूर्ण क्रिया द्योतक कृदन्तों का उपयोग प्राय: स्वतंत्र वाक्यांशों में होता है और कृदंत तथा मुख्य क्रिया के उद्देश्य अलग अलग होते हैं । जैसे--

साँस होते आस होनी चाहिए । [2]

अपूर्ण और पूर्ण क्रिया द्योतक कृदंत बहुधा कर्ता से संबन्ध रखते हैं पर कभी कभी उनका संबन्ध कर्म से भी रहता है, यह बात उनके अर्थ और स्थान क्रम से सूचित होती है । जैसे--

मैं ने लड़के को खेलते हुए देखा ।
सिपाही ने चोर को माल लिए हुए पकड़ा ।

-इन वाक्यों में कृदन्तों का संबन्ध कर्म से है ।

---

1. कामता प्रसाद गुरु- हिन्दी व्याकरण- पृ. 234
2. दुनीचन्द हिन्दी व्याकरण- पृ. 245

उसने चलते हुए नौकर को बुलाया ।

मैं ने सिर झुकाये हुए राजा को प्रणाम किया ।

-ये वाक्य यद्यपि द्वयार्थी जान पड़ते हैं तो भी "चलते हुए" और "झुकाये हुए " को पूर्ण क्रिया द्योतक रूप में लें तो इनमें कृदन्तों का संबन्ध कर्ता से हैं ।[1]

.2.2.2.1. विशेषतायें

1. एक क्रिया के कार्य के पहले दूसरी क्रिया शुरू की जाती है और दोनों के कार्य चलते हैं, तब इसका प्रयोग होता है ।

जैसे: माँ के बुलाये वह आ गया ।

सिर पर बोझ लादे पोर्टर जा रहा था ।

सेवकों ने सिर झुकाये राजा को प्रणाम किया ।

तुम क्यों सदा मुँह लटकाये रहते हो ?

2. इसकी भी द्विरुक्ति हो सकती है ।

बैठे बैठे क्या सोच रहे हो ।

वह लेटे लेटे टी.वी. देख रहा था ।

इसमें भी कृदन्त और मुख्य क्रिया के कर्ता अलग अलग हो सकते हैं या एक ।

जैसे:- दिन चढ़े हम लोग बाहर निकले । (अलग)

कई महीनों के बीते वह लौटा है । (अलग)

बैठे बैठे वह सो गया । (एक)

---

1. कामता प्रसाद गुरु- हिन्दी व्याकरण- पृ. 405

5.1.2.2.3. तात्कालिक कृदन्त

कामता प्रसाद गुरु- हिन्दी व्याकरण में तात्कालिक कृदन्त उसे मानते हैं -" जो अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त के अंत में "ही" जोड़ने से बनता है।
इस कृदन्त से मुख्य क्रिया के समय के साथ ही होनेवाली घटना का बोध होता है। जैसे :-

सूरज के निकलते ही वे लोग भागे।
लड़का मुझे देखते ही छिप जाता है।

--इसे एक अलग कृदंत मानना ठीक नहीं है।
दुनीचन्द के अनुसार -" कामता प्रसाद का कथन भ्रम मूलक प्रतीत होता है। इसे एक अलग कृदन्त मानना उचित नहीं क्योंकि इसका रूप अपूर्ण क्रिया द्योतक कृदन्त से भिन्न नहीं है। कृदंत और "ही" अव्यय - ये दो पद है", इसलिए इस पद समुदाय को वाक्यांश कहना ही उचित है। [1]

5.1.2.2.4. पूर्वकालिक कृदन्त

पूर्वकालिक कृदन्त धातु के अंत में "के", "कर", "करके" लगाकर बनाया जाता है। यह क्रिया की भाँति सकर्मक या अकर्मक हो सकता है।

धातु	पूर्वकालिक कृदन्त
लिख	लिखके, लिखकर, लिख करके
पढ़	पढ़के, पढ़कर, पढ़ करके
कह	कहके, कहकर, कह करके

1. दुनीचंद - हिन्दी व्याकरण- पृ. 172

पा	पाके , पाकर, पाकरके
जा	जाके, जाकर, जा करके
बैठ	बैठके , बैठकर, बैठ करके
आ	आके, आकर, आ करके [1]

1.2.2.4.1. विशेषतायें

हिन्दी में पूर्वकालिक कृदंत क्रिया का ऐसा अविकारी अपुरुष वाचक रूप होता है जिसमें एक साथ क्रिया तथा क्रिया विशेषण दोनों की विशेषतायें होती हैं । पूर्व कालिक कृदन्त वाक्य में विशेषण बोधक का कार्य करते हुए दूसरी क्रिया के पहले आता है, तथा उससे संबन्धित पूर्व व्यापार का निर्देश करता है । [1]

जैसे:-

§क§ पूर्व कालिक कृदन्त क्रिया की भाँति व्यापार का निर्देश करते हैं ।

जैसे:- मुझे <u>देखकर</u> वह भाग गया ।

उसने यह समाचार <u>सुनकर</u> किसी से बात तक नहीं की ।

§ख§ पूर्वकालिक कृदन्तों के साथ स्थान, समय आदि विशेषता बोधक प्रयुक्त हो सकते हैं - जैसे :-

वहाँ जाकर, आज आकर, समाचार पत्र जल्दी पढ़कर आदि ।

---

1. प्राय: जाकर, आकर आदि का प्रयोग ही मानक लिखित हिन्दी में होता है, "आके, आकर के" आदि का प्रयोग बोलचाल की भाषा में या कविता में होता है । "कर" क्रिया के लिए केवल "करके" रूप आता है ।

2. दीमशित्स, हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा- पृ. 119

ग. इस क्रिया से बहुधा मुख्य क्रिया के पहले होनेवाले व्यापार की समाप्ति का बोध होता है ।

हम काम करके आये हैं ।

वह सिनेमा देखकर लौटा ।

मैं चाय पी के आयी हूँ ।

घ. क्रिया विशेषणों की भाँति पूर्वकालिक कृदन्त अविकारी होते हैं तथा क्रिया से संबन्धित होते हैं । जैसे :-

पास आकर मैं बोला ।

पास आकर वह बोली ।

पास आकर हम बोले ।

ङ. पूर्वकालिक कृदन्त स्थान या काल-बोधक शब्द के साथ आकर क्रिया के स्थान या काल का बोध करा सकते हैं । जैसे

घर पहुँचकर वह चिट्ठी लिखने बैठ गया ।

दौड़कर जा और दौड़कर आ ।

च. कुछ क्रियाओं से बने पूर्व कालिक कृदन्त अपने अर्थ के अनुसार क्रिया विशेषण के ही समान हो गये हैं । जैसे :-

कई लड़कर दौड़कर बच गये ।

उसने झल्लाकर कहा ।

भाई साहब चिढ़कर बोले ।

छ. कई क्रियाओं से बने पूर्व कालिक कृदन्त अपनी क्रिया परक विशेषतायें (काल, वाच्य आदि) खो करके क्रिया विशेषण शब्द भेद के अंतर्गत आ जाते हैं -- जैसे :- मिलकर, खुलकर, छिपकर, छिपाकर

5.2. मलयालम में कृदंत

मलयालम व्याकरण कारों ने "कृदंत" नाम से किसी व्याकरण कोटि की चर्चा नहीं की है । इसके बदले में विविध प्रकार की अपूर्ण क्रियाओं (पर.रू-विन्) की चर्चा की है । प्रसिद्ध व्याकरणकार शेषगिरिप्रभु, केरलवर्मा आदि के व्याकरणों में कृदन्त शब्द की चर्चा नहीं है ।

"कृदंत" शब्द, उस शब्द की रचना (कृत् + अन्त) के आधार पर बना है, जब कि मलयालम के तत्संबन्धी शब्द उनके प्रयोग के स्थान या कार्य व्यापार के आधार पर बने हैं ।

मलयालम वैय्याकरणों ने क्रियाओं के दो प्रकार माने हैं, पूर्ण क्रिया (मुर.रू-विन्) और अपूर्ण क्रिया (पर.रू-विन्) पूर्ण क्रिया स्वतः पूर्ण होती है, वाक्य का मुख्य अंग (विधेय) होती है । अपूर्ण क्रिया अन्य क्रियाओं के पहले आती है और क्रिया तथा अन्य शब्द-भेदों का कार्य करती है । वह संज्ञा के साथ आकर उसका विशेषण करे तो संज्ञा विशेषण (पेरेच्चं) और क्रिया के पहले आकर उसका विशेषण करे तो क्रिया विशेषण (विनयेच्चं) कहा जाता है । दोनों प्रकार के विशेषणों (एच्चं) को कृदन्त मान सकते हैं । कुछ क्रियाओं के पूर्णक्रिया रूप, विशेषण रूप तथा क्रिया विशेषण रूप उदाहरण के रूप में नीचे दिये जाते हैं :-

पूर्ण क्रिया मुर.रू विन्	अपूर्ण क्रिया: पर.रू विन्	
	संज्ञा विशेषण (पेरच्च)	क्रिया विशेषण (विनयच्च)
वन्नु (आया)	वन्न (आया हुआ)।	वन्नु (आके) ।
ओटिच्चु (तोडा)	ओटिच्च (तोडा हुआ)।	ओटिच्चु (तोडकर) ।
अटिच्चु (पीटा) ।	अटिच्च (पीटा हुआ)।	अटिच्चु (पीटकर) ।

पोयि (गया) पोय/ (गया हुआ) पोयि (जाके)
चाटि (कूदा) चाटिय/ (कूदा हुआ) चाटि (कूदके)

भूतकाल के पूर्ण क्रिया रूप और क्रिया विशेषण रूप में अधिक अंतर नहीं है। भूतकाल रूप "उ"कारान्त हो तो उसको संवृत रूप (उँ) देकर दुर्बल रखें और आकांक्षा को बनाये रखें तो क्रिया विशेषण है और विवृत (उ) बनकर सबल रूप में समाप्त करें तो पूर्ण क्रिया (भूतकाल) है।
वन्नुँ (क्रिया विशेषण) - आकर, वन्नु (पूर्ण क्रिया) - आया।
चेन्नुँ (क्रिया) - जाकर, चेन्नु (") - गया।

भूतकाल रूप इकारान्त हो तो ध्वनि परक यह अंतर भी नहीं होता। केवल दुर्बलता और आकांक्षा होने पर क्रिया विशेषण है और सबल और पूर्ण हो तो पूर्ण क्रिया है। जैसे - पोयि (जाकर) पोयि (गया) इनकी चर्चा आगे की जायेगी।

क्रियार्थक संज्ञा :-

क्रियार्थक संज्ञा को मलयालम में नटुविनयेच्चं (मध्यम क्रिया विशेषण) कहकर क्रिया विशेषण कृदन्तों के अंतर्गत माना है। लेकिन केरल पाणिनि[1] और भट्टतिरि ने यह सूचित भी किया है कि क्रिया विशेषण का कार्य न करने के कारण इसे नटुविनयेच्चं (मध्यम क्रिया विशेषण) मानना अनुचित है।

-यहाँ उसकी अलग चर्चा की जाती है और हिन्दी की क्रियार्थक संज्ञा के समान स्थान दिया जाता है। (दे. 5.2.1.2.4)

---

1. ए.आर. राजराजवर्मा -केरल पाणिनीयम- पृ. 316

5.2.1. अपूर्ण क्रिया ॥पर. रु. विन ॥

5.2.1.1. संज्ञा विशेषण ॥पेरेच्चं॥ कृदन्त

सामान्य रूप में कहा जा सकता है कि क्रिया के विविध रूपों के साथ "आ" प्रत्यय जोड़कर ॥अथवा अंतिम स्वर को "आ" बनाकर॥ संज्ञा विशेषण बनाये जाते हैं । इसके चार भेद हैं ।

1. वर्तमानकालिक कृदन्त
2. भूतकालिक कृदन्त
3. संभव्यता सूचक कृदन्त
4. कर्तव्य सूचक अथवा

॥obligative or compulsive॥

2.1.1.1. वर्तमान कालिक कृदन्त:-

अ. क्रिया के वर्तमान काल के अंतिम "उ" को "अ" बनाने से वर्तमान कालिक कृदन्त बनता है ।

पर.युन्नु ॥कहता है ॥— पर.युन्न/ ॥कहता हुआ ॥
चेय्युन्नु ॥करता है॥ — चेय्युन्न/ ॥करता हुआ ॥
नोक्कुन्नु ॥ देखता है ॥— नोक्कुन्न/ ॥देखता हुआ ॥
पोकुन्नु ॥जाता है॥ — पोकुन्न/ ॥जाता हुआ ॥
उर.ङ्.ङु.न्नु ॥सोता है॥—उर.ङ्.ङु.न्न/ ॥सोता हुआ ॥

ा॥ यह कर्ता कर्म अथवा अन्य कारक रूपों का विशेषण कर सकता है ।

कळिक्कुन्न/ कुट्टिकळ् ॥खेलते लड़के॥ - कर्ता
अम्म/ पर.युन्न/ कथ/ ॥माँ जो कहानी कहती है॥- कर्म
आन् एषुतुन्न/ पेन/ ॥ मैं जिस कलम से लिखता हूँ ॥ -करण

अवन् कत्तु कोटुक्कुन्न/ पेण्णु -(संप्रदान)

(वह जिस लड़की को चिट्ठी देता है)

अवन् पुस्तकम वाङ्.ङ.क्कुन्न/ कट/ (अपादान)

(जिस दूकान से मैं किताब खरीदता हूँ)

ञङ्.ङ.ळ् तामसिक्कुन्न वीटु (अधिकरण)

(हम जिस घर में रहते हैं)

5.2.1.1.2. भूतकालिक कृदंत

क्रिया के भूतकाल के अंतिम "इ" अथवा "उ" के स्थान पर (संवृत्त उ) "अ" बनाने से अथवा "अ" जोडने से भूतकालिक कृदंत बनता है ।

कळिच्चु (खेला) - कळिच्च/ (खेला हुआ)

परञ्ञु (कहा) - परञ्ञ/ (कहा हुआ)

पोयि (गया) - पोय/ (गया हुआ)

ओटि (दौडा) - ओटिय/ (दौडा हुआ)

पाटि (गाया) - पाटिय/ (गाया हुआ)

यह कर्ता कर्म अथवा अन्य कारक रूपों का विशेषण कर सकता है ।

कळिच्च/ कुट्टिकळ् ।

(लड़के जो खेले) -(कर्ता)

अम्मा/ परञ्ञ/ कथ/ ।

(माता जी ने जो कहानी कही) - (कर्म)

ञान् एषुतिय/ पेन/ । -(करण)

(जिस कलम से मैं ने लिखा)

अवन् कत्तु कोटुत्त पेण्णु - §संप्रदान§
§उसने जिस लड़की को चिट्ठी दी । §
ञान् पुस्तकम् वाड्डि.ड.च्च्/ कट/ §अपादान§
§जिस दूकान से मैं ने किताब खरीदी §
ञड्.ड.ळ् तामसिच्च वीटु ।
§जिस घर में हम रहे § -§अधिकारण§

5.2.1.1.3. संभव्य सूचक कृदन्त

धातु के साथ "आवुन्न/" जोड़कर संभव्य सूचक कृदन्त बनाया जाता है ।

वर्. §आ§ - वरावुन्न/ §आने योग्य§
चेय् §कर§ - चेय्यावुन्न/ §करने लायक/योग्य§
कोटुक्क् §दे§ - कोटुक्कावुन्न/ §देने लायक/योग्य§

इससे क्रिया के होने की संभावना या हो सकने की भावना प्रकट होती है ।

उदा:- एळुप्पम् चेय्यावुन्न/ कार्यम् ।
§वह कार्य जिसे आसानी से करने की संभावना है §

वेगम् पठ्ठिक्कावुन्न/ पाठड्.ड.ळ् ।
§वे पाठ जिनकी जल्दी पढ़ सकते हैं §

5. 2.1.1.4. कर्तव्य बोधक

क्रिया धातु के साथ "एण्ड/", "एण्डुम्" अथवा "एण्डुन्न/" जोड़ कर के

कर्तव्य बोधक अथवा विवशता बोधक कृदन्त बनाया जाता है ।

उदा:- चेय् (कर)- चेय्येण्ट/ (करने लायक), चेय्येण्टुम्, चेय्येण्टुन्न/

पोक् (जा) - पोकेण्ट/ , पोकेण्टुम्, पोकेण्टुन्न/
(जाने का)

वरु - वरेण्ट/ , वरेण्टुम् वरेण्टुन्न/
(आ) (आने का)

-इनमें "एण्टुम्" वाला प्रयोग (वरेण्टुम्, पोकेण्टुम्, चेय्येण्टुम्) वर्तमान मलयालम में अधिक प्रयुक्त नहीं है । इनका अर्थ हिन्दी में सही रूप में देना संभव नहीं है । "पोकेण्ट/स्थलम" का अर्थ होगा "वह स्थान जहाँ जाना चाहिए" । संभवतः हिन्दी में "जाने का स्थान" कहा जा सकता है

चेय्येण्ट/ कार्यम् - चेय्येण्टुन्न/ कार्यम् , चेय्येण्टुम् कार्यम् ।
(वह काम जो किया जाना चाहिए)

पोकेण्ट इटम् - पोकेण्टुन्न/ इटम् , पोकेण्टुमिटम् ।
(वह स्थान जहाँ जाना चाहिए)

उपर्युक्त चारों कृदन्त संज्ञा विशेषणों के रूप में प्रयुक्त है । इनमें प्रथम दोनों के समान रूप हिन्दी में नहीं मिलते । अंतिम के रूप मिलते हैं ।

विशेषण

निर्देशक के समान अनुज्ञायक और विधायक के साथ भी "अ" प्रत्यय जोड़कर पेरच्चं बनाया जा सकता है ।

-

अनुज्ञापक   काणाम् (देख जायेगा) - काणावुन्न (देखने लायक)
              चेय्याम् (कर जायेगा) - चेय्यावुन्न (करने योग्य)
              परयाम् (कह जायेगा) - परयावुन्न (कहने योग्य)

विधायक   चेय्यणम् (करना है)
          चेय्येण्डिय (करना था)
          चेय्येण्डुन्न (जिसको करना चाहिए)

अनेक प्रकार के भेदों के साथ भी प्रत्यय जोड़कर "पेरेच्चं" बनाये जा सकते हैं ।

उदा:- चेय्याञ्ञ (जिसे नहीं किया), चेय्यात्त
      चेय्यानिरिक्कुन्न (जो करनेवाला है, करने को है)
      चेय्यरुतात्त (जो नहीं करना चाहिए)
      चेय्तु कूटात्त (जो नहीं करना चाहिए)
      चेय्येण्डात्त (   )
      चेय्यातिरिक्केण्डुन्न (जिसे नहीं करना चाहिए)

पेरेच्चं के साथ "अन्", "अळ्", "तु" आदि लिंग प्रत्यय जोड़कर संज्ञायें बनायी जाती है ।

चेय्युन्नवन्   चेय्युन्नवळ्,   चेय्युन्नतु ।
(करनेवाला)   (करनेवाली)   (जो करता है)

चेय्तवन् ,   चेय्तवळ् ,   चेय्ततु ।
(जिसने जो किया वह (पु))   (जिसने जो किया है वह (स्त्री))   (जिसने जिसको (क्रिया))

चेय्युन्नवन्   चेय्यावुन्नवळ्,   चेय्यावुन्नतु
(जो कर सकता है)   (जो कर सकती है)   (जिसे किया जा सकता है)

-ऊपर के विवेचन से ज्ञात होगा कि मलयालम में पेरेच्चं अथवा विशेषण कृदन्तों के रूप भी अनेक हैं और उनका प्रयोग भी अत्यंत व्यापक है ।

5.2.1.2. क्रिया विशेषण कृदंत [विनयेच्चं]

क्रिया के पहले आकर उसके अर्थ के साथ कोई और अर्थ जोड़नेवाले कृदंत रूप को क्रिया विशेषण कृदंत [विनयेच्चं] कहा जाता है । मलयालम में इसके पाँच भेद हैं ।

मलयालम नामों के हिन्दी अर्थ	-	हिन्दी कृदन्त रूप
1. मुन् विनयेच्चं - पूर्व क्रिया विशेषण	-	पूर्व कालिक कृदन्त
2. पिन् विनयेच्चं - पश्चक्रिया विशेषण	-	ध्येयार्थक अनुबोधक
3. तन् विनयेच्चं -स्व-क्रिया विशेषण	-	तात्कालिक कृदन्त
4. नटु विनयेच्चं - मध्यम-क्रिया विशेषण	-	क्रियार्थक संज्ञा
5. पाक्षिक विनयेच्चं - पाक्षिक क्रिया विशेषण	-	हेत्वर्थक कृदंत

मलयालम के विनयेच्चं के दो भेद दिये गये हैं -- वे स्थान और प्रकृति के आधार पर हैं । ऊपर उनके अर्थ पहले दिये गये हैं और उसके बाद में समान हिन्दी कृदन्तों के संभाव्य नाम । इन नामों के पूर्ण रूप से उचित माना जा सकता पर अन्य शब्दों के अभाव से उनका प्रयोग किया जाता है

5.2.1.2.1. मुन् विनयेच्चं [पूर्व कालिक कृदन्त]

पूर्ण क्रिया के पहले पूर्ण होनेवाली क्रिया को सूचित करनेवाला कृदन्त है "मुन् विनयेच्चं" । यह प्रायः क्रियाओं का भूत रूप ही है । याने यह आगे क्रिया के पहले होनेवाली क्रिया को सूचित करता है । यह भूतकाल

को ही नहीं सूचित करता बल्कि संस्कृत का "त्वा" §गत्वा§ य §प्रणम्य§ और हिन्दी के "कर" "कर के" आदि के समान पूर्व काल को सूचित करता है ।[1]

केरल पाणिनी के अनुसार मुन्-विनयेच्चं दिखाने केलिए पूर्ण क्रिया के भूत-काल रूप को दुर्बलान्त करके बनाया जाता है ।

"दुर्बलम् भूत-रूपम् तान्
स्वयं मुन् विनयेच्चमाम् "[2]

उनके मतानुसार क्रिया को दुर्बल बनाने केलिए संवृतीकरण, पर-द्वित्व आदि उपायों को स्वीकार करना चाहिए और क्रिया को सबल बनाने केलिए विवृतीकरण ।

उदा: ञङ्ङळ् इविटे वन्नु पेन्नु §संवृतीकरण§
§हम यहाँ आ पहुँचे §
ञान् अविटे पेन्नु नोक्कि §विवृतीकरण§

§ मलयालम में कृदन्त - पृ. 235 §

मुन् विनयेच्चं का प्रत्यय "इ" और "उ" है । इनके साथ विकल्प रूप में "इट्टु" भी आ सकता है । तब अर्थ स्पष्टतः "के बाद" होगा ।

---

1. वासुदेव भट्टतिरि- भाषा शास्त्रम् - पृ. 249

2. ए.आर. राजराजवर्मा - केरल पाणिनीयम्- पृ. 314

"इ"कारांत पूर्व कालिक कृदंत

"इ"कारांत भूतकालिक कृदन्तों के आगे के पद के आरंभ में क, च, त,
हो तो उनका द्वित्व होता है ।

उदा:- चाटि + कयरि. - चाटिक्कयरि.
(कूदा) (चढ़ा) (कूदकर चढ़ा)
आटि + कळिच्चु - आटिक्कळिच्चु
(झूमा) (खेला) (झूमकर खेला)
वाङ्ङि. + तन्नु - वाङ्ङि. त्तन्नु
(खरीदा) (दिया) (खरीदकर दिया)
पोयि + परञ्ञु - पोयिप्परञ्ञु
(गया) (कहा) (जाकर कहा)

"इ"कारांत क्रियाओं के आगे के पद के आरंभ में अन्य वर्ण हो तो द्वित्व नहीं होता याने कोई परिवर्तन भी नहीं होता ।

उदा:- पोयि + वन्नु - पोयि वन्नु
(गया) (आया) (जाकर आया)
इरङ्ङि. + ओटि - (इरङ्ङि. ओटि
(उतरा) (दौड़ा) (उतरकर दौड़ा)
कशक्कि + एरिञ्ञु - कशक्कि एरिञ्ञु
(पिसा) (फेंका) (पीसकर फेंका)

"उ"

वन्निट्टु परञ्ञु - आकर कहा (आने के बाद)
कण्टिट्टु पोयि - देखकर गया (देखने के बाद)
कळिच्चिट्ट पोयि - नहाकर गया (नहाने के बाद गया)

"उ" कारांतों को "मुन् विनयेच्चं बनाने केलिए "उ" कार को संवृत स्वर बनाना चाहिए। बाद में आनेवाले क, च, त, प का द्वित्व नहीं होता।

उदा:- वन्नु + परञ्ञु - वन्नु परञ्ञु {आकर कहा}
{आया} {कहा}
पोन्नु + कण्टु - पोन्नु कण्टु
{गया} देखा {जाकर देखा}
नटन्नु + पोन्नु - नटन्नु पोन्नु
{चला} {गया} {चलता हुआ गया}
परन्नु + पोयि - परन्नु पोयि
{उडा} {गया} {उड़ता हुआ गया}
एटुत्तु + कोटुत्तु - एटुत्तु कोटुत्तु
{ले} {लिया} {लेता हुआ लिया}

5.2.1.2.2. पिन् विनयेच्चं {ध्येयार्थक या संकेतार्थक कृदन्त}

पिन् विनयेच्चं प्रधान क्रिया के पहले आकर उसका विशेषण करता है। यह कृदंत बाद में आनेवाली पूर्ण क्रिया के होने की ओर संकेत करता है अथवा ध्येय को सूचित करता है।

इसे भावि विनयेच्चं भी {भावि क्रिया न्यूनम्} कहा जाता है। लेकिन यह भविष्यत् का सूचक नहीं काल-निरपेक्ष है और तीनों कालों की पूर्ण क्रियाओं के पहले आकर पूर्ण क्रिया को ध्येय रूप में व्यक्त कर सकता है।

इसका प्रत्यय "आन्" है और इसका प्रयोग क्रिया-धातु के साथ और भविष्य मूल के साथ होता है।

- -

1. वासुदेव भट्टतिरि: अभिनव मलयालम् व्याकरणम्- पृ. 213

अ. <u>धातु के साथ</u>

पोक् (जा) - पोकान् (जाने को, जाने केलिए)
वर् (आ) - वरान् (आने को, आने केलिए)
परय् (कह) - परयान् (कहने को, कहने केलिए)
केळ् (सुन) - केळ्क्कान् (सुनने को, सुनने केलिए)
कर्. (रो) - करयान् (रोने को, रोने केलिए)

आ. <u>भविष्य मूल के साथ</u>

चेय्यु- (कर) - चेय्युवान (करने को, करने केलिए)
कोटुक्कु- (दे) - कोटुक्कुवान् (देने को, देने केलिए)
करयु- (रो) - करयुवान (रोने को, रोने केलिए)
अरियु- (जान्) - अरियुवान (जानने को, जानने केलिए)

इ. मलयालम में कुछ भविष्यकाल रूप है जो क्रिया-धातु के साथ मध्यवर्ती प्रत्यय के रूप में म्, व्, प्प् जोड़कर फिर काल-प्रत्यय "उ" जोड़ा जाता

उदा:- (म्) काणुम् (देखेगा) - तिन्म् (खायेगा)
(व्) चेय्वू (करेगा)
(प्) कोटुप्पू (देगा), वय्प्पू (रखेगा)

"व्", "प्प्" आदि कुछ स्थानों में इटनिलां (मध्यवर्ती) के रूप है । याने व्, प्प्, म् आदि के साथ आनेवाले भविष्यत् का "उ"कार जोड़ने पर लोप हो जाता है ।

उदा:- कोटुप्प् (देगा) + आन् - कोटुप्पान् (देने को)
चेय्व् (करेगा) + आन् - चेय्वान् (करने को)
काणुम् (देखेगा)+ आन् - काणुमान् (देखने को)

इस भविष्य काल रूप में "ऊ" के स्थान पर "आन्" प्रत्यय जोड़ने प कृदन्त रूप बनते हैं । यह उद्देश्य, लक्ष्य आदि को व्यक्त करता है । अधिक बल देने केलिए इसके साथ "वेण्डि", "आयि", "आयिट्टु" आदि जाते हैं ।

उदा:- पठिक्कान् वेण्टि / आयि/आयिट्टु पोयि ।
§पढ़ने केलिए गया§
कळिक्कान् वेण्टि/आयि/आयिट्टु पोयि ।
§खेलने केलिए गया §
केळ्क्कानायिट्टु/आये/वेण्टि परञ्ञु ।
§सुनने केलिए कहा§
एटुक्कान् वेण्टि/आयि/आयिट्टु वन्नु ।
§लेने केलिए आया§
विळिक्कान् वेण्टि/आयि/आयिट्टु पेन्नु
§बुलाने केलिए चला §

5.2.1.2.3. तन् विनयेच्चं §तात्कालिक कृदंत§

प्रधान क्रिया के साथ आनेवाले अपूर्ण वर्तमान कालिक कृदंत को तन् विनयेच्चं §तात्कालिक कृदंत§ कहते हैं । पूर्ण क्रिया का व्यापार जब चल है, तब उसी के साथ चलने वाले व्यापार को यह कृदंत सूचित करता है ।

व्याकरणकार वासुदेव भट्टतिरि के अनुसार पूर्ण क्रिया के समकालि क्रिया को ही तन्विनयेच्चं सूचित करता है ।[1] इसके प्रत्यय है "ए" अ "अवे" ।

1. वासुदेव भट्टतिरि- भाषा शास्त्रम्- पृ. 25।

उदा: ञान् परये/{परयवे}/अवन् केट्टु ।

{मेरे कहते वह सुना}

अवन् इरिक्के {इरिक्कवे} ञान् वरिल्ल ।

{उसके रहते मैं नहीं आऊँगा }

अवळ् केळ्क्के {केळ्क्कवे} ञान् परञ्ञु ।

{उसके सुनते मैं ने कहा}

--इस तरह के प्रयोग वर्तमान मलयालम में कम चलते हैं । बोलचाल की भाषा में बिलकुल नहीं । उसके स्थान पर भविष्य काल-रूप के साथ काल सूचक "पोळ्" {तब} प्रत्यय जोड़कर रूप बनाये जाते हैं जिनको कृदन्त नहीं मान सकते ।

जैसे:- ञान् परयुम्पोळ् अवन् केट्टु ।

{मेरे कहते उसने सुना}

अवन् इरिक्कुम्पोळ् ञान् वरिल्ला ।

{उसके रहते मैं नहीं आऊँगा}

उणङ्ङुम्पोळ् ननयक्कुका ।

{सूखे जाने पर सींचना}

अवने काणुम्पोळ् ञान् परयुकयिल्ला ।

{ उसको देखते मैं नहीं कहूँगा }

5.2.1.2.4. नटु विनयेच्चं [क्रियार्थक संज्ञा]

पहले बताया जा चुका है नटुविनयेच्चं को क्रिया विशेषण कृदन्तों के अंतर्गत माना जाता है और उसको यहाँ हिन्दी की क्रियार्थक, संज्ञा के समान स्थान दिया जाता है । {दे.पृ.235]

इसका प्रत्यय है -"क", "उक " और "अ" । इन प्रत्ययों में "उक " सभी धातुओं के साथ जोडा जाता है । "अ" के सभी धातुओं के साथ नहीं जोडे जाते ।

<u>उक/</u>

पर/ (कह) - परयुक/ (कहना)
चेय् (कर) - चेय्युक/ (करना)
वर् (आ) - वरिक/ (आना)
तिन् (खा) - तिन्नुक/ (खाना)
पो (जा) - पोकुक/ (जाना)
केळ्क्क् (सुन) - केळ्क्कुक/ (सुनना)
ताष़्त्त् (डूबो) - ताष़्त्तुक/ (डुबोना)

<u>क/</u>

कारित धातुओं के साथ "क" नहीं जोडा जाता । अन्य धातुओं के साथ उक/ के विकल्प में "क" भी आ सकता है ।

उदा:- पर/ (कह) - परक/ (कहना)
पो (जा) - पोक/ (जाना)
चेय् (कर) - चेय्क/ (करना)

<u>अ</u>

"अ" प्रत्यय कुछ धातुओं के साथ जोडा जाता है ।

जैसे:- चेय् - चेय्य/ (करना)
केळ्क्क् - केळ्क्क/ (सुनता)
कोटुक्क् - कोटुक्क/ (देता)
वयुक्क् - वयुक्क/(रखता)

5.2.1.2.5. पाक्षिका विनयेच्चं (हेत्वर्थक कृदन्त)

पाक्षिक विनयेच्चं हेतु अथवा संभावना को सूचित करता है अथवा प्रधान क्रिया के आश्रित अपूर्ण संभव्य क्रिया रूप को पाक्षिक विनयेच्चं कहते हैं। शेषगिरि प्रभु ने इसे "संभावना" संज्ञा दी है।[1]

पाक्षिक विनयेच्चं का प्रत्यय है - इल्, किल्, उकिल्।

विशेषतायें

नटुविनयेच्चं (क्रियार्थक संज्ञा) में अंतिम "अकार" का लोप करके "इल्" जोड़ा जाता है।

चेय्युं (करते) - चेय्यियल् (करे तो)

चेय्क (करना) - चेय्किल् (करे तो)

चेय्युक (करें) - चेय्युकिल् (करते तो)

-उपर्युक्त रूपों का प्रयोग आधुनिक मलयालम में लुप्त-प्रचार हो गया है। पद्य में यह देखा जाता है। भूत रूप के साथ "आल्" जोड़कर ही प्रयोग अब चलता है। जैसे :-

चेय् (कर) - चेय्ताल् (करता तो, करें तो)

अरि. (जान) - अरिञ्ञाल् (जानता तो, जाने तो)

केळ् (सुन) - केट्टाल् (सुनता तो, सुने तो)

विळि (पुकार) - विळिच्चाल् (पुकारता तो, पुकारे तो)

उपर्युक्त रूपों का प्रयोग काल-निरपेक्ष है। तीनों कालों में इसका प्रयोग हो

---

1. शेषगिरि प्रभु व्याकरण मित्रम्- पृ. 161

उदा:- नी अविटे पोयाल् अवने काण्मायिरुन्नु ।

§तू वहाँ जाते तो उससे मिलते §

इतु कण्डाल् एनिक्कु देष्यम् वरुन्नु ।

§यह देखे तो मुझे गुस्सा आता है ।

नी परञ्ञाल् ञान् पोकुम्

§तुम कहो तो मैं जाऊँगा §

'आल्' प्रत्यय जोड़कर बने हुए विनयेच्चं को शेषगिरि प्रभु ने "पहली संभावन और "इल्" प्रत्यय जोड़कर बने हुए विनयेच्चं को "दूसरी संभावना" संज्ञा दी है ।

पाक्षिक विनयेच्चं या हेत्वर्थक कृदंत के रूपों के अतिरिक्त कुछ अन्य रूप भी होते हैं जो क्रिया के विविध काल रूपों के साथ "एंकिल्" §जो§ जोड़कर बनाये जाते हैं । ऐसे रूप काल-सूचक होते हैं । विविध कालों की क्रिया के साथ "एंकिल्" जोड़ने पर इस कृदंत के रूप बनते हैं ।

उदा:- वर्तमान: चेय्युन्नेंकिल् §करता हो तो §

उरङ्ङुन्नेंकिल् §सोता हो ता §

कळिक्कुन्नेंकिल् §खेलता हो तो §

भूतकाल चेय्तेंकिल / चेय्तिरुन्नेंकिल §किया हो तो §

उरङ्ङियेंकिल्/उरङ्ङियिरुन्नेंकिल §सोया हो तो §

कळिच्चेंकिल्/कळिच्चिरुन्नेंकिल् §खेला हो तो §

- -

भविष्यत्   चेय्युमेंकिल् § करेगा तो §

उरङ्ङुमेंकिल् §सोयेगा तो §

कळिक्कुमेंकिल् §खेलेगा तो §

विधि, अनुज्ञा, निषेध आदि सूचित करनेवाले क्रिया रूपों के साथ भी "एंकिल्" का प्रयोग हो सकता है ।

§1§ पोकणमेंकिल् §जाना है तो §

पोकेंटेंकिल् §नहीं जाना है तो §

§2§ पोकामेंकिल् §जायेगा तो §

पोकत्तेंकिल् §नहीं जायेगा तो §

§3§ पोकात्तेंकिल §नहीं गया तो §

5.3. हिन्दी और मलयालम कृदंतों की तुलना

दोनों भाषाओं में कृदंतों का प्रचुर प्रचार है, पर उनके प्रयोगों की अपनी अपनी विशेषतायें हैं । रूप रचना में, रूप विकार में, अर्थ व्याप्ति में, अन्वय में तथा वाक्य रचना में अन्तर दृष्टव्य है । इन अंतरों को स्पष्ट करने का प्रयास यहाँ किया जाता है ।

5.3.1. रूप रचना और विकार की तुलना

दोनों भाषाओं में विभिन्न कृदन्तों का निर्णय कैसे किया जाता है उनका विशद अध्ययन प्रस्तुत किया जा चुका है । यहाँ रूप रचना, तथा विकार की तुलना की जाती है ।

	हिन्दी कृदंत	समानार्थक मलयालम कृदन्त
1.	क्रियार्थक संज्ञा	नटुविनयेच्चं
2.	वर्तमान कालिक कृदंत	वर्तमान कालिक कृदंत
3.	भूतकालिक कृदंत	भूतकालिक कृदंत
4.	कर्तृवाचक कृदंत	
5.	अपूर्ण क्रिया द्योतक	
6.	पूर्ण क्रिया द्योतक	
7.	तात्कालिक कृदंत	तन् विनयेच्चं
8	पूर्वकालिक कृदंत	मुन् विनयेच्चं

	मलयालम कृदंत	समानार्थक हिन्दी कृदंत
	संज्ञा विशेषक	
1.	वर्तमान कालिक कृदंत	वर्तमान कालिक
2.	भूत कालिक कृदंत	भूतकालिक
3.	संभव्यता सूचक कृदंत	
4.	कर्तव्य सूचक	
	क्रिया विशेषक	
5	मुन् विनयेच्चं	पूर्वकालिक कृदंत
	पिन् विनयेच्चं	ध्येयार्थक (अनुबोधक)
7.	तन् विनयेच्चं	तात्कालिक कृदंत
8.	नटु विनयेच्चं	क्रियार्थक संज्ञा
9.	पाक्षिक विनयेच्चं	हेत्वर्थक कृदंत

5. 3. 2. रूप रचना की भिन्नता

दोनों भाषाओं में कृदंतों की रूप रचना में जो भिन्नता है उसे नीचे की तालिका में दिखाया गया है । एक भाषा के कृदंतों के समान कृदंत दूसरी भाषा में न हो तो वहाँ खाली जगह छोड़ी गयी है । अर्थ की समानता और विषमता के आधार पर तुलना अगली तालिका में की जायेगी

रूप रचना की भिन्नता

	नाम	मूल	प्रत्यय	विकार	उ
हिन्दी	वर्तमान कालिक	धातु	ता	विकारी	जाता, जाती,
मलयालम	वर्तमान कालिक	वर्तमानकाल रूप	उ>अ	अविकारी	पोकुन्न
हिन्दी	भूतकालिक	धातु	आ/या	विकारी	चला, चली, आया, आयी
मलयालम	भूतकालिक	भूतकाल रूप	इ>अ उ>अ	अविकारी	पाटिय कळिञ
हिन्दी	कर्तृवाचक	क्रियार्थक संज्ञा के विकृत रूप	वाला	विकारी	वाला ट
मलयालम					
हिन्दी	अपूर्ण क्रिया-द्योतक	वर्तमान कालिक कृदन्त	ते	अविकारी	ज
मल:					

	नाम	मूल	प्रत्यय	विकार	उदाहरण
हिन्दी	पूर्ण क्रिया द्योतक	धातु	ते+ हुए	अविकारी	खिलते हुए
मल:					
हिन्दी	पूर्वकालिक	धातु	के/कर/करके	अविकारी	देखकर, देखके, देखकरके
मल:	मुन् विनयेच्चं	पूर्वकालिक कृदंत	इ/उ/इट्टु	अविकारी	पोयि वन्नु वन्निट्टु
हि					
मल:	संभव्य सूचक	धातु	आकुन्न/	अविकारी	वरावुन्न/
हि					
मल:	कर्तव्य बोधक	धातु	एण्ट/, एण्टुम एण्टुन्न/	अविकारी	चेय्येण्ट/ चेय्येण्टुम चेय्येण्टुन्न/
हि:	ध्येयार्थक {संकेतार्थक}				
म:	पिन् विनयेच्चं	धातु	आन्	अविकारी	पोकान् पोकुवान्
हि:	हेत्वर्थक कृदंत				
मल:	पाक्षिक विनयेच्चं	धातु	इल/किल/ उकिल	अविकारी	चेय्यिल् चेय्किल् चेय्युकिल् चेय्तील चेय्युमेंकि
हि:	क्रियार्थक संज्ञा	धातु	ना	विकारी	सोना, सं
मल:	नटु विनयेच्चं	धातु	क/उक/	अविकारी	पर्क/ पर्युक/

5.3.3. अर्थ की तुलना

पहले के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि दोनों भाषाओं के कृदन्तों के अर्थों और प्रयोगों में काफी भिन्नता है। जो कृदंत दोनों भाषाओं में हैं (याने समान नाम रखते हैं) उनके अर्थ में भी कभी कभी भिन्नता होती है। अत: एक भाषा के कृदंत के अर्थ को दूसरी भाषा में सदा कृदंत के द्वारा प्रकट नहीं कर सकते। प्राय: अन्य प्रकार की वाक्य रचनाओं के द्वारा प्रकट करना पड़ता है।

(नोट: हिन्दी के विकारी रूपों में एक ही दिया जाता है।)

5.3.3.1. हिन्दी कृदंतों के मलयालम अर्थ

हिन्दी कृदंत	मलयालम अर्थ	
	कृदंत रूप में	अन्य रूप में
1. वर्तमान कालिक	वर्तमान कालिक	——
आता, आते, आती	वरुन्न	
2. भूतकालिक कृदंत	भूतकालिक	——
आया, आये, आयी	वन्न	
3. अपूर्ण क्रिया द्योतक	तात्कालिक	
आते	वरवे	वरुम्पोळ्, वन्नुकोण्डिरिक्कुम्बोळ्
4. पूर्ण क्रियाद्योतक	पूर्वकालिक कृदंत	
आये	वन्नु	वन्निट्टु, वन्नितिनुशेषम्

	हिन्दी कृदंत	मलयालम अर्थ — कृदंत रूप में	अन्य रूप में
5.	कर्तृवाचक	वर्तमानकालिक एवं भविष्यकालिक	
	आनेवाला	वरुन्न	——
	आनेवाले	भूतकालिक	
	आनेवाली	वन्न	
	(संज्ञा)		
	आनेवाला	वर्तमान कर्तृवाचक	
	आनेवाले	वन्नवन्, वरुन्नवळ्, वन्नतु	——
		भूतकालिक	
	आनेवाली	वन्नवन्, वन्नवळ्, वन्नतु	
6.	तात्कालिक कृदंत	तन् विनयेच्चं	वन्न उटने ।
	आते ही	वरवे (तन्ने)	वन्नप्पोळ् तन्ने।
7.	पूर्व कालिक	मुन् विनयेच्चं	वन्निट्टु,
	आकर, आके, आ करके	वन्नु	वन्नतिनु शेषम्
			वन्नु कषिञ्ञु
8.	क्रियार्थक संज्ञा	नटु विनयेच्चं	वरवु
	आना	वरक	वरुन्नतु
			वन्नतु

5.3.3.2. मलयालम कृदंतों के हिन्दी अर्थ

	मलयालम कृदंत	हिन्दी अर्थ — कृदंत रूप में	अन्य रूप में
1.	वर्तमान कालिक वरुन्न	वर्तमानकालिक आता	आता हुआ, आती हुई आते हुए
2.	भूतकालिक	भूतकालिक	आया हुआ /

	मलयालम कृदंत	हिन्दी अर्थ	
		कृदंत रूप में	अन्य रूप में
3.	संभव्य सूचक वरावुन्न्		आने योग्य आने लायक
4.	कर्तव्य बोधक वरेण्ट्		
5.	मुन् विनयेच्चं वन्नुँ	पूर्वकालिक आकर	आकर आ करके
6,	पिन् विनयेच्चं वरान्	ध्येयार्थक या संकेतार्थक आने	आने को, आने केलिए
7.	तन् विनयेच्चं वरवे	तात्कालिक आते	आते हुए आते ही आते रहने पर
8.	नटुविनयेच्चं वरुक्	क्रियार्थक संज्ञा आना	
9.	पाक्षिक् विनयेच्चं वरुकिल्	हेत्वर्थक कृदंत	आवें तो आता तो

. 3. 4. अन्वय की तुलना

हिन्दी और मलयालम कृदंतों के अन्वय में भी स्पष्ट अंतर दिखाई पड़ता है । मलयालम के सभी कृदंत रूप अव्यय है और उनके रूपांतर नहीं होते । हिन्दी के कृदंतों में कुछ विकारी है और कुछ अविकारी । विकारी कृदंतों

का अन्वय सदा एक ही तरह से नहीं होता । कुछ का अन्वय कर्ता के साथ होता है और कुछ का कर्म के साथ ।

5.3.4..1. वर्तमान कालिक कृदंत

अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाओं के वर्तमानकालिक कृदंत रूपों का अन्वय कर्ता के साथ होता है ।

हिन्दी विकारी रूप	मलयालम अविकारी रूप
अक: आता (हुआ) लड़का ।	वरुन्न/ आण्कुट्टि ।
आती (हुई) लड़की ।	वरुन्न/ पेण्कुट्टि ।
आते (हुए) लड़के ।	वरुन्न/ आण् कुट्टि कळ् ।
सक: खाता (हुआ) लड़का ।	कषिक्कुन्न/ आण् कुट्टि ।
खाती (हुई) लड़की ।	कषिक्कुन्न/ पेण् कुट्टि ।
खाते (हुए) लड़के ।	कषिक्कुन्न/ आण्कुट्टिकळ् ।

5.3.4.2. भूतकालिक कृदंत

अकर्मक क्रिया के भूतकालिक कृदंत का अन्वय कर्ता के साथ होता है और सकर्मक क्रिया के भूतकालिक कृदंत का अन्वय कर्म के साथ होता है । जैसे :-

5.3.4.2.1. कर्ता के साथ अन्वय

हिन्दी	मलयालम
हि: आया (हुआ) लड़का ।	मल: वन्न/ पय्यन् ।
गिरा (हुआ) पत्ता ।	वीण/ इल/ ।
मरी (हुई) औरत ।	मरिच्च/ स्त्री ।

5.3.4.2.2. कर्म के साथ अन्वय

हि: लिखा [हुआ] खत । मल: एषुतिय/ कत्तु ।
लिखी [हुई] पुस्तक । एषुतिय/ पुस्तकम् ।
पढ़े [हुए] पाठ । पठिच्च/ पाठङ्ङळ् ।
सुनी [हुई] कहानी । केट्ट/ कथ/ ।
सुना [हुआ] गीत । केट्ट/ पाट्टु ।

5.3.4.3. कर्तृवाचक कृदंत

हिन्दी कर्तृवाचक कृदंत का प्रयोग विशेषण के रूप में अथवा संज्ञा के रूप में हो सकता है । विशेषण के रूप में प्रयोग हो तो कर्तृ संज्ञा के साथ उसका अन्वय होता है । आकारांत विशेषणों के समान ही उसकी रूप रचना होती है ।

मलयालम में कर्तृवाचक कृदंत विशेषण के रूप में प्रयुक्त हो तो अविकारी है, अतः अन्वय की समस्या नहीं उठती ।

जैसे: आने वाला लड़का - वरुन्न/ आण्कुट्टि /
वन्न/ आण्कुट्टि ।
आनेवाली लड़की - वरुन्न/ पेण्कुट्टि /
वन्न/ पेण्कुट्टि ।
आनेवाले लड़के - वरुन्न/ आण्कुट्टिकळ् / वन्न/ आण्कुट्टिकळ् ।

हिन्दी क्रियार्थक संज्ञा का प्रयोग जब संज्ञा के रूप में होता है तब लिंग वचनानुसार उसका विकार अन्य आकारांत संज्ञाओं के समान होता है ।

मलयालम क्रियार्थक संज्ञा, संज्ञा के रूप में प्रयुक्त हो तो विकारी है । पुल्लिंग सूचित करने केलिए अन्, स्त्रीलिंग केलिए अळ्, नपुंसक केलिए "तु" मानव सूचक बहुवचन केलिए "अर्." अन्य बहुवचनों केलिए "अव् " जोडा जाता है ।

हि:	आनेवाला	—	वरुन्नवन्, वन्नवन्, वरुन्नतु ।
	आनेवाली	—	वरुन्नवळ्, वन्नवळ्, वन्नतु ।
	आनेवाले	—	वरुन्नवर्., वन्नवर्., वन्नतु ।
	आनेवाले	—	वरुन्नव, वन्नव ।

अन्य कृदंत अविकारी है और उनके अन्वय की समस्या नहीं उठती । जैसे :-

5. 3. 4. 4. अपूर्ण क्रिया द्योतक

हि	लौटते	लाते,	कहते ।
म:	मटङ्ङुन्नतु,	पोकुन्नतु,	परयुन्नतु ।

5. 3. 4. 5. पूर्ण क्रिया द्योतक

हि:	गये,	लिए,	मारे ।
म:	पोय	एडुत्त,	कोन्न ।

5. 3. 4. 6. तात्कालिक कृदंत

हि:	देखते ही,	पढते ही,	सुनते ही ।
म:	नोक्कवे,	पठिक्कवे,	केळ्क्कवे (तन्ने) ।

5. 3. 4. 7. पूर्वकालिक

हि:	लेकर,	जाकर,	सुनकर ।

मलयालम क्रिया की तरह कृदंत भी अविकारी है और उनके अन्वय की समस्या नहीं उठती

5.3.5. वाक्य रचना की तुलना

वाक्य रचना की दृष्टि से देखा जाय तो मलयालम कृदंत-बहुल भाषा है । हिन्दी में कृदंतों के होने पर भी उनका प्रयोग उतना व्यापक नहीं है । एक तो हिन्दी में कृदंतों की संख्या कम है, दूसरे विविध कृदंतों में प्राप्त रूपों की संख्या भी कम है । अतः यह स्वाभाविक है कि वाक्य रचना करते समय जहाँ मलयालम में कृदंतों का प्रयोग होता है वहाँ हिन्दी में सीमित रूपों में कृदंत प्रयोग होता है । अन्य स्थानों में अन्य प्रकार की संरचनाओं का उपयोग किया जाता है । प्रायः ऐसी दशा में मलयालम कृदंतों के स्थान पर हिन्दी में संबन्ध वाची उपवाक्यों (Relative Clauses) का उपयोग किया जाता है ।

कृदन्त और उदाहरण वाक्य

5.3.5.1. वर्तमान कालिक कृदन्त

हिन्दी	मलयालम
(केवल कर्ता का विशेषण करता है)	(सभी कारक संज्ञाओं का विशेषण करत
गाती (हुई) लड़की ।	पाटुन्न/ पेण्कुट्टि (कर्ता) ।
जो कलम मैं ने खरीदी ।	आन् वाङ्ङिच्च/ पेन/ (कर्म) ।
जिस कलम से मैं लिखता हूँ ।	आन् एषुतुन्न/ पेन/ (करण) ।
जिस लड़की को मैं किताब देता हूँ ।	आन् पुस्तकम् कोटुक्कुन्न/ कुट्टि (संप्रदा

जिस दूकान से वह फल खरीदता है	अवन् पषम् वाङ्ङि.ङ. क्कुन्न/कट/ (अपादान)
जिस घर में वह रहता है	अवन् तामसिक्कुन्न/ वीट्ट (अधिकरण)

2. भूतकालिक कृदन्त

हिन्दी	मलयालम
(अकर्मक क्रिया का भूतकालिक कृदन्त कर्ता का विशेषण करता है)	(सभी कारक संज्ञाओं का विशेषण करता है)
आया (हुआ) लड़का ।	वन्न कुट्टि (कर्ता) ।
खरीदी (हुई) किताब ।	वाङ्ङि.ङ.च्च पुस्तकम् (कर्म)
गिरे (हुए) फल ।	एष़ुतिय/ पेन/ (करण)
सोया (हुआ) आदमी ।	पुस्तकम् कोट्टुत्त/ कुट्टि (संप्रदान)
लाये (हुए) फल ।	पषम् वाङ्ङि.ङ.च्च/कट/ (अपादान)
गायी (हुई) लड़की ।	तामसिच्च/ वीट्ट (अधिकरण) ।
(सकर्मक क्रिया का भूतकालिक कृदन्त कर्म का विशेषण करता है)	(सभी कारक संज्ञाओं का विशेषण करता है)
पढा (हुआ) पाठ	
लिखी (हुई) चिट्ठी	
खाये (हुए) फल	
पढी (हुई) कहानी	
लिखा (हुआ) खत	

अन्य कृदन्तों के प्रयोग में हिन्दी और मलयालम की वाक्य रचनाओं में इतना अंतर नहीं है । अर्थ की दृष्टि से दोनों भाषाओं के कृदन्तों में जो

अंतर है वह पहले दिखाया जा चुका है । [पृ. 5.5.3] दे उससे स्पष्ट है कि हिन्दी के कुछ कृदन्त रूपों के स्थान में मलयालम में कृदंत का अन्य रूपों का प्रयोग किया जाता है । वाक्यों में इन प्रयोगों के उदाहरण नीचे दिये जाते हैं ।

3.5.3. कर्तृवाचक कृदन्त

हि: उसने वहाँ रहकर आनेवालों का स्वागत किया ।

म अवन् अविटे तामसिच्च् वरुन्नवरे स्वागतम् चेय्तु ।

हि: बन्द करनेवाले लोग आनेवाली गाड़ियों को रास्ते में रोक देता है ।

म समरम् नटत्तुन्न/आळुकळ् वरुन्न/वण्टिकळे वषियिल तटञ्ञु निरुत्तुन्नु ।

हि: मैं कल वहाँ जाकर आनेवाले अतिथियों का स्वागत करूँगा ।

म : ञान् नाळे अविटे पोयिट्टु वरुन्न/अतिथिकळे स्वागतम् चेय्युम् ।

3.5.4. अपूर्ण क्रिया द्योतक

हि: उसके लौटते रात हो गयी ।

म: अवन् वन्नप्पोळ् रात्रि आयि ।

हि: गीत सुनते एक घण्टा बीत गया ।

म: पाट्टु केट्टु ओरु मणिक्कूर कषिञ्ञु / आयि ।

हि: तुम्हारी बात सुनते सुनते मैं थक गया ।

म निन्टे सम्सारम् केट्टु केट्टु ञान् मटुत्तु ।

हि: उसको आते देखकर मैं चुप गया ।

म अवन वरुन्नतु कण्टिट्टु ञान् मिण्टातिरुन्नु ।

[अवन्टे वरवु कण्टिट्टु ञान् मिण्टातिरुन्नु]

3.5.5. पूर्ण क्रिया द्योतक

हि: उसने चलते हुए नौकर को बुलाया ।
अवन् नटन्नुकोण्टु/नटक्कुम्पोळ्/नटक्कवे/ वेलक्कारने विळिच्चु ।

•5.6. तात्कालिक कृदन्त

हि: सूरज के निकलते ही लोग जाग उठे ।
म सूर्यन् उदिक्कवे / जनङ्ङळ् उणर्न्नु ।
सूर्यन् उदिक्कवे तन्ने / उदिक्कुम्बोळ् तन्ने जनङ्ङळ् उणर्न्नु ।

हि: अध्यापक के देखते ही लड़के चुप हो गये ।
म अध्यापकने कण्टप्पोळ् / कण्टप्पोषियुक्कुम/ कण्टप्पोळ् तन्ने कुट्टिकळ्
मिण्टातिरुन्नु ।

3.5.7. पूर्वकालिक कृदन्त

हि: हम फिल्म देख के आये ।
म: अङ्ङळ् फिल्म कण्टिट्टु वन्नु ।
हि: घर पहुँचकर वह चिट्ठी लिखने बैठा ।
म: वीट्टिलॆ एत्तियिट्टु अवन् कत्तेषुतान् इरुन्नु ।
हि: वह काम पूरा करके खेलने दौड़ गया ।
म अवन् जोलि तीर्त्तिट्टु कळिक्कान ओटिप्पोयि ।
हि: उसकी कहानी सुनके सब अचरच में पड़ गये ।
म अवन्टे कथ/ केट्टिट्टु एल्लावरुम् अतिशयिच्चिरुन्नुपोयि ।

--इस तरह हम देखते हैं कि दोनों भाषाओं में कृदन्तों का प्रचुर प्रयोग होता है और दोनों में मुख्य कृदन्त लगभग समान है । फिर भी कुछ

कृदन्तों में अंतर भी दिखाई पड़ता है । विशेषकर मलयालम में ऐसे अनेक कृदन्त रूप हैं जिनके समानार्थक रूप हिन्दी में नहीं है । उनके अर्थों को सूचित करने केलिए या तो संबन्ध बोधक वाक्यों का प्रयोग किया जाता है अथवा क्रिया विशेषण आदि शब्दों का । हिन्दी की तुलना में मलयालम को कृदन्त बहुल भाषा माने तो अनुचित नहीं होगा ।

****

छठा अध्याय

हिन्दी और मलयालम क्रियाओं का अन्वय

छठा अध्याय

हिन्दी और मलयालम क्रियाओं का अन्वय

6. 1. हिन्दी और मलयालम क्रियाओं का अन्वय

हिन्दी और मलयालम क्रियाओं का सबसे बड़ा अंतर उनके अन्वय में है । हिन्दी क्रियाओं की एक विस्तृत अन्वय पद्धति है । पर मलयालम क्रियाओं में लिंग, वचन और पुरुष सूचित न होने के कारण उनके अन्वय की समस्या ही नहीं उठती । केवल विधि रूप अपवाद है जिसमें पुरुष व वचन का अन्वय मिलता है ।

हिन्दी क्रियाओं के अन्वय के बारे में कई बातें उल्लेखनीय है ।

1. विविध कालों की क्रियाओं का अन्वय विविध प्रकारों में होता है ।
2. जिन शब्दों के साथ अन्वय होता है {कर्ता, कर्म आदि} उनमें भिन्नता होती है ।
3. अन्वय की परिस्थितियाँ भिन्न होती है ।

6. 1. 1. विविध कालों के अन्वय :-

हम देख चुके हैं कि हिन्दी क्रिया रूप में कभी मूल क्रिया मात्र होती है और कभी एक या दो सहायक क्रियायें होती है । इस तरह बननेवाले रूपों के अन्वय भी भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं ।

6. 1. 1. 1. विधि रूप

6. 1. 1. 1. 1. हिन्दी

विधि रूप की क्रियाओं का अन्वय केवल वचन और आदर सूचकता में होता है । लिंग में नहीं होता ।

जैसे :- तू जा। {एकवचन आदर रहित}

तुम जाओ। { एकवचन या बहुवचन आदर रहित }

आप जाइए। {एकवचन, बहुवचन और आदर सूचक}

. 1. 2. मलयालम

मलयालम क्रियाओं के विधि रूपों में भी क्रिया कर्ता के पुरुष व वचन के अनुसार बदलती है ।

नी पोकू / पोकुक {तू जा}- एकवचन, आदर रहित

निङ्ङळ् पोकू/पोकुक {तुम जाओ}- एकवचन {सामान्य}

निङ्ङळ् पोकुविन् {तुम जाओ}- बहुवचन {सामान्य}

ताङ्ङळ् पोयालुम् {आप जाइए}- एकवचन, बहुवचन {आदर सहित}

1. 2. संभव्य भविष्य

1. 1. 2. 1. हिन्दी

संभव्य भविष्यत् क्रिया रूपों में पुरुषान्वयन और वचनान्वयन होता है, लिंगान्वयन नहीं होता ।

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष:	लडके जावे ।	लडके जावें ।
	लड़की जावे ।	लड़कियाँ जावें ।
मध्यम पुरुष	तुम जाओ ।	आप जावे ।
	तुम जाओ {स्त्री}	आप जावें {स्त्री}
उत्तम पुरुष	मैं जाऊँ ।	हम जावें ।
	मैं जाऊँ {स्त्री}	हम जावें {स्त्री}

द्रष्टव्य है कि इन में कहीं भी लिंग सूचना नहीं है ।

6. 1. 1. 2. 2. मलयालम

मलयालम में सभी कर्ताओं के लिए पोकट्टे (जावें), पोयाल् (जावें तो), पोयेक्कुम् (जावे) संभावना, या सन्देह आदि रूप है । पर उनका कर्ता से अन्वय नहीं होता ।

6. 1. 1. 3. वर्तमान कालिक कृदन्त

वर्तमान कालिक कृदन्तों से बननेवाले क्रिया रूपों में पुरुष, लिंग, वचन, तीनों का अन्वय हो सकता है । लेकिन यह (क) केवल मूल क्रिया हो तो अन्वय लिंग वचनों में होता है ।

6. 1. 1. 3. 1. मूल क्रिया

6. 1. 1. 3. 1. 1. हिन्दी

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	लड़का जाता ।	लड़के जाते ।
	लड़की जाती ।	लड़कियाँ जातीं ।
मध्यम पुरुष	तू जाता ।	तुम जाते ।
	तू जाती ।	तुम जाती ।
		आप जाते ।
		आप जाती
उत्तम पुरुष	मैं जाता ।	हम जाते ।
	मैं जाती ।	हम जाती ।

• 1. 3. 1. मलयालम

मलयालम में सभी कर्ताओं केलिए "पोयेंकिल" (जाता) "पोयाल", "पोयिरुन्नेंकिल" आदि रूप है -- पर उनका कर्ता से अन्वय नहीं होता ।

1. 3. 2. मूल क्रिया + सहायक क्रिया

(ख) मूल क्रिया के साथ सहायक क्रिया "है" आवे तो मूल क्रिया का अन्वय लिंग, वचनों में होता है, सहायक क्रिया है का अन्वय पुरुष और वचन में होता है क्रिया के पूर्ण रूप का अन्वय पुरुष, लिंग, वचन में होता है ।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुषः	आदमी जाता है (पु)	आदमी जाते हैं (पु) ।
	महिला जाती है ।	महिलाएँ जाती हैं (स्त्री) ।
मध्यम पुरुष	तू जाता है ।	तुम जाते हो, आप जाते हैं ।
	तू जाती है ।	तुम जाती हो आप जाती हैं ।
उत्तम पुरुषः	मैं जाता हूँ ।	हम जाते हैं ।
	मैं जाती हूँ	हम जाती हैं ।

मलयालम में सभी कर्ताओं के साथ "पोकुन्नु" का प्रयोग होता है ।

(ग) मूल क्रिया के साथ सहायक क्रिया "था" आवे तो मूल क्रिया तथा "था" में लिंग वचन का अन्वय होता है । पुरुष का नहीं ।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुषः	लड़का आता था	लड़के आते थे ।
	लड़की आती थी	लड़कियाँ आती थीं ।

मध्यम पुरुष	तू आता था ।	तुम आते थे, आप आते थे ।
	तू आती थी ।	तुम आती थी, आप आती थी ।
उत्तम पुरुष	मैं आता था ।	हम आते थे ।
	मैं आती थी ।	हम आती थी ।

मलयालम में सभी कर्ताओं के साथ "वरुन्नुण्टायिरुन्नु" का प्रयोग होता है ।

(घ) मूल क्रिया के साथ सहायक क्रिया "होगा" आवे तो मूल क्रिया का अन्वय लिंग वचन में होता है "होगा" का अन्वय पुरुष, लिंग, वचन तीनों में होता है ।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	लड़का आता होगा ।	लड़के आते होंगे ।
	लड़की आती होगी ।	लड़कियाँ आती होंगी ।
मध्यम पुरुष	तू आता होगा ।	तुम आते होगे ।
	तू आती होगी ।	तुम आती होगी ।
		आप आते होगे ।
		आप आती होंगी ।
उत्तम पुरुष:	मैं आता हूँगा ।	हम आते होंगे ।
	मैं आती हूँगी ।	हम आती होंगी ।

मलयालम में सभी कर्ताओं के साथ "वरुन्नुण्डायिरुन्नु" का प्रयोग होता है ।

1.4. भूतकालिक कृदन्त

भूतकालिक क्रिया रूपों से बननेवाले कृदंतों में पुरुष लिंग वचन तीनों का अन्वय हो सकता है । केवल मूल क्रिया हो तो अन्वय लिंग वचन में होता है ।

1.4.1. केवल मूल क्रिया

क) पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	लड़का आया ।	लडके आये ।
	लड़की आयी ।	लडकियाँ आयी ।
मध्यम पुरुष	तू आया ।	तुम आये , आप आये ।
	तू आयी ।	तुम आयी, आप आयी ।
उत्तम पुरुष	मैं आया ।	हम आये ।
	मैं आयी ।	हम आयीं ।

मलयालम में सर्वत्र "वन्नु" का प्रयोग होता है ।

1.4.2. मूलक्रिया + सहायक क्रिया

ख) मूल क्रिया के साथ सहायक क्रिया "है" आये तो मूल क्रिया का अन्वय लिंग वचनों में होता है, सहायक क्रिया "है" का अन्वय पुरुष और वचन में होता और क्रिया के पूर्ण रूप का अन्वय पुरुष लिंग और वचनों में होता है ।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष:	लडका आया है ।	लडके आये हैं ।
	लडकी आयी है ।	लडकियाँ आयी हैं ।

मध्यम पुरुष	तू आया है ।	तुम आये हो । आप आये हैं ।
	तू आयी है ।	तुम आयी हो , आप आयी हैं ।
उत्तम पुरुष	मैं आया हूँ ।	हम आये हैं ।
	मैं आयी हूँ ।	हम आयी हैं ।

मलयालम में सब क्रियाओं के साथ वन्निरिक्कुन्नु या वन्निट्टुण्ट् का प्रयोग होता है ।

(ग) मूल क्रिया के साथ सहायक क्रिया "था" आवे तो मूल क्रिया तथा "था" का अन्वय लिंग वचन में होता है ।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	लड़का आया था ।	लडके आये थे ।
	लड़की आयी थी ।	लडकियाँ आयी थी ।
मध्यम पुरुष	तू आया था ।	तुम आये थे , आप आये थे ।
	तू आयी थी ।	तुम/आप आयी थी ।
उत्तमपुरुष	मैं आया था ।	हम आये थे ।
	मैं आयी थी ।	हम आयी थीं ।

लम में सब क्रियाओं के साथ "वन्निरुन्नु", "वन्निट्टुण्टायिरुन्नु" का प्रयोग होता है ।

(घ) मूल क्रिया के साथ सहायक क्रिया "होगा" आवे तो मूल क्रिया का अन्वय लिंग वचन में होता है "होगा" का अन्वय पुरुष, लिंग वचन तीनों में होता है ।

ुरुष	एकवचन	बहुवचन
्न्य पुरुष	लड़का आया होगा ।	लडके आये होंगे ।
	लडकी आयी होगी ।	लडकियाँ आयी हुोंगी ।
ध्यम पुरुष:	तू आया होगा ।	तुम आये होगे ।
	तू आयी होगी ।	तुम आयी होगी ।
		आप आये होंगे । आप आयी होंगी
त्तम पुरुष	मैं आया हूँगा ।	हम आये होंगे ।
	मैं आयी हूँगी ।	हम आयी होंगी ।

क्रिया धातु के साथ "रहा" और अन्य कोई सहायक क्रिया (है, था, ेगा) जोड़कर जो क्रिया रूप बनाये जाते हैं उनमें भी पुरुष लिंग और चन का अन्वय होता है । लेकिन "रहा" का अन्वय लिंग वचन में होता ।

(सहायक क्रिया "है" हो तो अन्वय पुरुष और वचन में होता है । जैसे:-

ुरुष	एकवचन	बहुवचन
्न्य पुरुष	लड़का आ रहा है ।	लडके आ रहे हैं ।
	लड़की आ रही है ।	लडकियाँ आ रही हैं ।
ध्यम पुरुष	तू आ रहा है ।	तुम आ रहे हो ।
	तू आ रही है ।	तुम आ रही हो । आप आ रहे हैं । आप आ रही हैं ।

त्तम पुरुष मैं आ रहा हूँ । हम आ रहे हैं ।

मैं आ रही हूँ । हम आ रही हैं ।

नयालम में सब क्रियाओं के साथ "वरुन्नु" "वन्नुकोण्टिरिक्कुन्नु" का
योग होता है ।

) सहायक क्रिया "था" हो तो "रहा" और "था" का अन्वय लिंग और
चन में होता है ।

एकवचन	बहुवचन
लड़का आ रहा था ।	लडके आ रहे थे ।
लड़की आ रही थी ।	लडकियाँ आ रही थी ।
तू आ रहा था ।	तुम/आप आ रहे थे ।
तू आ रही थी ।	तुम/आप आ रही थी ।
मैं आ रहा था ।	हम आ रहे थे ।
मैं आ रही थी ।	हम आ रही थी ।

यालम में सब क्रियाओं के साथ "वरिकयायिरुन्नु" "वन्नुकोण्टिरिक्कुकयायिरुन्नु"
प्रयोग होता है ।

सहायक क्रिया "होगा" हो तो "रहा" का अन्वय लिंग वचन में होता है
र "होगा" का अन्वय पुरुष लिंग वचन तीनों में होता है ।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष (पु)	वह लड़का आ रहा होगा ।	वे लड़के आ रहे होंगे ।
	वह लड़की आ रही होगी ।	वे लड़कियाँ आ रही होंगी ।
मध्यम पुरुष (पु)	तू आ रहा होगा ।	तुम आ रहे होगे ।
(स्त्री)	तू आ रही होगी ।	तुम आ रही होगी ।
(पु)		आप आ रहे होंगे ।
(स्त्री)		आप आ रही होंगी ।
उत्तम पुरुष:	मैं आ रहा हूँगा ।	हम आ रहे होंगे ।
	मैं आ रही हूँगी ।	हम आ रही होंगी ।

मलयालम में सभी क्रियाओं के साथ "वरिकयायिरिक्कुम्", वरुन्नुण्टायिरिक्कुम" का प्रयोग होता है ।

भविष्यत् काल के साथ क्रिया रूपों का अन्वय पुरुष लिंग और वचन में होता है ।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष (पु)	वह आयेगा ।	वे आयेंगे ।
(स्त्री)	वह आयेगी ।	वे आयेंगी ।
मध्यम पुरुष	तू आयेगा ।	तुम आओगे ।
	तू आयेगी ।	तुम आओगी ।
		आप आयेंगे ।

तम पुरुष मैं आऊँगा । हम आयेंगे ।

मैं आऊँगी । हम आयेंगी ।

यालम में सभी क्रियाओं के साथ "वस्म" का प्रयोग होता है ।

. अन्वय से संबन्धित शब्द और परिस्थितियाँ

हिन्दी क्रियाओं का अन्वय सदा कर्ता के साथ नहीं होता । वय कभी (1) कर्ता के साथ होता है (2) कभी कर्म के साथ होता है) और कभी किसी के साथ नहीं होता है ।

1. (क) कर्ता के साथ क्रिया का अन्वय

अकर्मक क्रियाओं का अन्वय क सभी कालों में कर्ता के साथ होता है ।

1. 1. वर्तमान काल :-

1. 1. 1. सामान्य वर्तमान काल

f: पुल्लिंग एकवचन	पुल्लिंग बहुवचन
लड़का बोलता है ।	लडके बोलते हैं ।
तू खेलता है ।	तुम खेलते हो, आप खेलते हैं
मैं खेलता हूँ ।	हम खेलते हैं ।
': स्त्रीलिंग एकवचन	स्त्रीलिंग बहुवचन
लडकी खेलती है ।	लड़कियाँ खेलती हैं ।
तू खेलती है ।	तुम खेलती हो, आप खेलती हैं ।

1.2.1.1.2. संदिग्ध वर्तमानकाल

कर्ता: पुल्लिंग एकवचन	पुल्लिंग बहुवचन
वह आता होगा ।	वे आते होंगे ।
तू आता होगा ।	तुम आते होगे, आप आते होंगे ।
मैं आता होऊँ ।	हम आते होऊँ ।

कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन	कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन
वह आती होगी ।	वे आती होंगी ।
तू आती होगी ।	तुम आती होगी ।
	आप आती होंगी ।
मैं आती हूँगी ।	हम आती होंगी ।

1.2.1.1.3. तात्कालिक वर्तमान

कर्ता पुल्लिंग एकवचन	कर्ता पुल्लिंग बहुवचन
लड़का बोल रहा है ।	लड़के बोल रहे हैं ।
तू बोल रहा है ।	तुम बोल रहे हो ।
	आप बोल रहे हैं ।
मैं बोल रहा हूँ ।	हम बोल रहे हैं ।

कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन

लड़की बोल रही है
तू बोल रही है
मैं बोल रही हूँ

कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन

लड़कियाँ बोल रही हैं
तुम बोल रही हो, आप बोल रही हैं
हम बोल रही हैं

1.2.1.2. भूतकाल

1.2.1.2.1. सामान्य भूत

कर्ता पुल्लिंग एकवचन

आदमी आया ।
तू आया ।
मैं आया ।

कर्ता पुल्लिंग बहुवचन

आदमी आये ।
तुम आये, आप आये ।
हम आये ।

कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन

औरत आयी ।
तू आयी ।
मैं आयी ।

कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन

औरतें आयीं ।
तुम आयी, आप आयीं ।
हम आयीं ।

1.2.1.2.2. आसन्न भूत

कर्ता पुल्लिंग एकवचन

वह चला है ।
तू चला है ।
मैं चला हूँ ।

कर्ता पुल्लिंग बहुवचन

वे चले हैं ।
तुम चले हो, आप चले हैं ।
हम चले हैं ।

स्त्रीलिंग एकवचन | कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन

गाडी चली है । | गाडियाँ चली हैं ।
तू चली है । | तुम चले हो आप चले हैं ।
मैं चली हूँ । | हम चले हैं ।

1.2.3. पूर्ण भूत

पुल्लिंग एकवचन | कर्ता पुल्लिंग बहुवचन

वह खेला था । | वे खेले थे ।
तू खेला था । | तुम खेले थे, आप खेले थे ।
मैं खेला था । | हम खेले थे ।

स्त्रीलिंग एकवचन | कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन

वह खेली थी । | वे खेली थीं ।
तू खेली थी । | तुम खेली थी, आप खेली थीं ।
मैं खेली थी । | हम खेली थीं ।

.2.4. अपूर्ण भूत

पुल्लिंग एकवचन | कर्ता पुल्लिंग बहुवचन

ा रोता था । | लडके रोते थे ।
ोता था । | तुम रोते थे, आप रोते थे ।
ोता था । | हम रोते थे ।

:स्त्रीलिंग एकवचन | कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन

लडकी रोती थी । | लडकियाँ रोती थीं ।
तू रोती थी । | तुम रोती थी, आप रोती थीं ।

6.1.2.1.2.5. संदिग्ध भूत

कर्ता: पुल्लिंग एकवचन

खत आया होगा ।

तू आया होगा ।

मैं आया हूँगा ।

कर्ता: पुल्लिंग बहुवचन

खत आये होंगे ।

तुम आये होगे, आप आये होंगे ।

हम आये होंगे ।

कर्ता: स्त्रीलिंग एकवचन

चिट्ठी आयी होगी ।

तू आयी होगी ।

मैं आयी हूँगी ।

कर्ता: स्त्रीलिंग बहुवचन

चिट्ठियाँ आयी होंगी ।

तुम आयी होगी, आप आयी होंगी

हम आयी होंगी ।

6.1.2.1.2.6. हेतुहेतुमद् भूत

कर्ता: पुल्लिंग एकवचन

वह बोलता तो-

तू बोलता तो

मैं बोलता तो-

कर्ता पुल्लिंग बहुवचन

वे बोलते तो -

तुम बोलते तो आप बोलते तो

हम बोलते तो

कर्ता: स्त्रीलिंग एक वचन

वह बोलती तो-

तू बोलती तो

मैं बोलती तो"-

कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन

वे बोलती तो -

तुम बोलती तो - आप बोलती तो

हम बोलती तो-

6. 1. 2. 1. 2. 7. पूर्ण संकेतार्थ

कर्ता पुल्लिंग एकवचन	कर्ता पुल्लिंग बहुवचन
लड़का चला होता ।	लड़के चले होते ।
तू चला होता ।	तुम चले होते, आप चले होते ।
मैं चला होता ।	हम चले होते ।

कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन	कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन
लड़की चली होती ।	लड़कियाँ चली होतीं ।
तू चली होती ।	तुम चली होतीं, आप चली होतीं ।
मैं चली होती ।	हम चली होतीं ।

1. 2. 1. 3. भविष्यत् काल

1. 2. 1. 3. 1. सामान्य भविष्यत्

कर्ता पुल्लिंग एकवचन	कर्ता पुल्लिंग बहुवचन
बच्चा सोयेगा ।	बच्चे सोयेंगे ।
तू सोयेगा ।	तुम सोओगे, आप सोयेंगे ।
मैं सोऊँगा ।	हम सोयेंगे ।

कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन	कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन
बच्ची सोयेगी ।	बच्चियाँ सोयेंगी ।
तू सोयेगी ।	तुम सोओगी, आप सोयेंगी ।

6.1.2.1.3.2. संभाव्य भविष्यत्

कर्ता पुल्लिंग एकवचन	कर्ता ब पुल्लिंग बहुवचन
बच्चा सोये/सोवे/ सोए ।	बच्चे सोयें ।
तू सोये ।	तुम सोओ, आप सोयें ।
मैं सोऊँ ।	हम सोयें ।

कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन	स्त्रीलिंग बहुवचन
बच्ची सोये ।	बच्चियाँ सोयें ।
तू सोये ।	तुम सोओ, आप सोयें ।
मैं सोऊँ ।	हम सोयें ।

6.1.2.1.4. सकर्मक क्रियाओं के वर्तमान कालिक कृदन्त अथवा धातु

सकर्मक क्रियाओं के वर्तमान कालिक कृदन्त से अथवा धातु से बननेवाले काल रूपों का भी अन्वय कर्ता के साथ होता है ।

सामान्य वर्तमान काल

कर्ता पुल्लिंग एकवचन	कर्ता पुल्लिंग बहुवचन
वह खाता है ।	वे खाते हैं ।
तू खाता है ।	तुम खाते हो आप खाते हैं ।
मैं खाता हूँ ।	हम खाते हैं ।

कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन	कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन
वह खाती है।	वे खाती हैं।
तू खाती है।	तुम खाती हो, आप खाती हैं।
मैं खाती हूँ।	हम खाती हैं।

संदिग्ध वर्तमान काल

कर्ता पुल्लिंग एकवचन	कर्ता पुल्लिंग बहुवचन
आदमी लिखता होगा।	आदमी लिखते होंगे।
तू लिखता होगा।	तुम लिखते होगे, आप लिखते होंगे।
मैं लिखता हूँगा।	हम लिखते होंगे।

कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन	कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन
औरत लिखती होगी।	औरतें लिखती होंगी।
तू लिखती होगी।	तुम लिखती होंगी, आप लिखती होंगी।
मैं लिखती हूँगी।	हम लिखती होंगी।

तात्कालिक वर्तमान

कर्ता पुल्लिंग एकवचन	कर्ता पुल्लिंग बहुवचन
नौकर खरीद रहा है।	नौकर खरीद रहे हैं।
तू खरीद रहा है।	तुम खरीद रहे हो, आप खरीद रहे हैं।
मैं खरीद रहा हूँ	हम खरीद रहे हैं।

कर्ता स्त्रीलिंग एकवचन	कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन

ᶜ पुल्लिंग एकवचन

गाता था ।
ाता था ।
ाता था ।

कर्ता पुल्लिंग बहुवचन

वे गाते थे ।
तुम गाते थे, आप गाते थे ।
हम गाते थे ।

ᶜ स्त्रीलिंग एकवचन

गाती थी ।
ाती थी ।
ाती थी ।

कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन

वे गाते थे ।
तुम गाती थी, आप गाती थी ।
हम गाती थीं ।

विष्यत्

f पुल्लिंग एकवचन

ка पढ़ेगा ।
ढ़ेगा ।
ढ़ूँगा ।

कर्ता पुल्लिंग बहुवचन

लड़के पढ़ेंगे ।
तुम पढ़ोगे, आप पढ़ेंगे ।
हम पढ़ेंगे ।

f स्त्रीलिंग एकवचन

की पढ़ेगी ।
ढ़ेगी ।
ें पढ़ूँगी ।

कर्ता स्त्रीलिंग बहुवचन

लडकियाँ पढ़ेंगी ।
तुम पढ़ोगी, आप पढ़ेंगी ।
हम पढ़ेंगी ।

.2.3. कर्म के साथ अन्वय

सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक कृदन्त से बननेवाले काल-रूपों का अन्वय कर्म के साथ होता है (जब कर्ता के साथ "ने" प्रत्यय हो और कर्म के साथ कारक चिह्न "को" न हो)

सामान्य भूत

कर्म पुल्लिंग एकवचन	कर्म पुल्लिंग बहुवचन
लड़की ने पाठ पढ़ा ।	लड़की ने पाठ पढ़े ।
सीता ने फल खाया ।	सीता ने फल खाये ।
मैं ने खत लिखा ।	मैं ने खत लिखे ।

कर्म स्त्रीलिंग एकवचन	कर्म स्त्रीलिंग बहुवचन
लड़के ने रोटी खायी ।	लड़के ने रोटियाँ खायीं ।
तू ने चिट्ठी लिखी ।	आप ने चिट्ठियाँ लिखीं ।
मैं ने कहानी पढ़ी ।	मैं ने कहानियाँ पढ़ीं ।

आसन्न भूत

कर्म पुल्लिंग एकवचन	कर्म पुल्लिंग बहुवचन
लड़की ने पाठ पढ़ा है ।	लड़की ने पाठ पढ़े हैं ।
सीता ने फल खाया है ।	सीता ने फल खाये हैं ।
मैं ने खत लिखा है ।	मैं ने खत लिखा है ।

कर्म स्त्रीलिंग एकवचन	कर्म स्त्रीलिंग बहुवचन

ूर्ण भूत

र्म पुल्लिंग एकवचन | कर्म पुल्लिंग बहुवचन

सने आम खाया था। | उसने आम खाये थे।
ुम ने पत्र पढा था। | उसने पत्र पढ़े थे।
म ने फिल्म देखा था। | हम ने फिल्म देखे थे।

र्म स्त्रीलिंग एकवचन | कर्म स्त्रीलिंग बहुवचन

नौकर ने तरकारी खरीदी थी। | नौकर ने तरकारियाँ खरीदी थीं।
उस ने बात की थी। | उसने बातें की थीं।
मैं ने कोशिश की थी। | मैं ने कोशिश की थीं।

ंदिग्ध भूत

र्म पुल्लिंग एकवचन | कर्म पुल्लिंग बहुवचन

उसने आम खाया होगा। | उसने आम खाये होंगे।
ुम ने पत्र पढा होगा। | तुमने पत्र पढ़े होंगे।
म ने फिल्म देखा होगा। | हम ने फिल्म देखे होंगे।

र्म स्त्रीलिंग एकवचन | कर्म स्त्रीलिंग बहुवचन

नौकर ने तरकारी खरीदी होगी। | नौकर ने तरकारियाँ खरीदी होंगी।
उसने बात की होगी। | उसने बातें की होंगी।
मैं ने कोशिश की होगी। | मैं ने कोशिशें की होंगी।

अन्वय रहित प्रयोग

यदि वाक्य में कर्ता के साथ "को" प्रत्यय हो अथवा कर्म लुप्त हो, क्रिया का अन्वय किसी के साथ नहीं होता, वह पुल्लिंग एकवचन में रहेगा।

1. "को" प्रत्यय सहित

सामान्य भूत

मैं ने उस लड़की को नहीं देखा।
लड़कियों ने बच्चों को बुलाया।
मैं ने इस कहानी को पढा।

आसन्न भूत

उन्होंने नौकर को बाज़ार भेजा है।
मैं ने उस तसवीर को फाडा है।
लड़की ने किसी को नहीं देखा है।

भूत

मैं ने पिताजी को बुलाया था।
लड़कों ने कुत्ते को मारा था।
पुलीस ने चोर को पकड़ा था।

संदग्ध भूत

उसने उस भिखारी को देखा होगा।
पुलीस ने चोर को पकड़ा होगा।
बन्द करने वालों ने गाड़ियों को रोका होगा।

2. लुप्त कर्मक

सीता ने खाया।
गोपाल ने कहा।

2) लड़के ने देखा है ।
लड़कों ने गाया है ।
लड़कियों ने पढ़ा है ।
लड़कों ने चला है ।

3) लड़कियों ने गाया था ।
माताजी ने सुनाया था ।
अध्यापकों ने पढाया था ।

4) पिताजी ने गया होगा ।
उन्होंने कहा होगा ।
लडकी ने खरीदा होगा ।

जहाँ अकर्मक क्रियाओं का प्रयोग कर्तव्य या निश्चय सूचक काल रूप में प्रयोग है
वहाँ भी क्रिया का अन्वय किसी के साथ नहीं होता और वह पुल्लिंग एक-वचन में रहेगा ।

"को" प्रत्यय रहित

1) मुझे वहाँ जाना है ।
उसको बाज़ार जाना है ।

2) आपको सभा में बोलना था ।
उनको चिट्ठी भेजना था ।

3) मुझे क्लास जाना होगा ।
आपको कहानी लिखना होगा ।

3.3. "को" प्रत्यय रहित

मुझे फल खाना है/था/होगा ।

तुम्हें यह कहानी पढ़नी है/थी/होगी ।

मुझे कुछ कपड़े खरीदने हैं /थे/होगी ।

मुझे कुछ साड़ियाँ खरीदनी है /थी/होगी ।

3.3.2. कर्म "को" प्रत्यय सहित

तुझे इस फल को खाना है/था/होगा ।

तुम्हें इस कहानी को पढ़ना है/था/होगा ।

मुझे इस कपड़े को खरीदना है/था/होगा ।

मुझे इस साड़ियों को खरीदना है/था/होगा ।

.3.3.3. लुप्त कर्मक

तुझे खाना है /था/होगा ।

तुम्हें लिखना है/था/होगा ।

आपको खेलना है/ था/ होगा ।

लड़कों को पढ़ना है/था/होगा ।

लड़की को गाना है/था/होगा ।

तुम्हें देना है/था/होगा ।

.4. हिन्दी की संयुक्त क्रियाओं -"पड़ना, "चाहिए" के साथ अन्वय

जब "पड़ना", और "चाहिए" आदि से युक्त संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग हो तब भी विविध परिस्थितियों में कर्ता अथवा कर्म के साथ क्रिया

4.1. अकर्मक क्रिया :- क्रिया सदा पुल्लिंग एकवचन में रहती है और अन्वय नहीं होता ।

चाहिए — मुझे वहाँ जाना चाहिए/चाहिए था ।

आप को वहाँ जाना पड़ता है/था/होगा ।

लड़की को वहाँ जाना पड़ा है/था/होगा।

सब को वहाँ जाना पड़ा/पड़ा है/था/होगा ।

4.2. सकर्मक क्रिया :- कर्म के साथ अन्वय

सीता को यह पाठ पढ़ना चाहिए ।

हमें फल खाना चाहिए । चाहिए था ।

मुझे दवा खानी चाहिए ।

बीमार को दवा खानी पड़ी है/थी/होगी ।

सीता को यह कविता लिखनी चाहिए ।

मीरा को कर्ज़ लेना पड़ा है /था/होगा ।

सकर्मक क्रिया :- कर्म के साथ "को" प्रत्यय, क्रिया का अन्वय नहीं होता वह पुल्लिंग एकवचन में रहती है ।

तुम्हें इस दवा को खाना चाहिए ।

उन्हें भी इस दवा को खाना पड़ा।

हमें अब खाना चाहिए ।

आप को मुसीबतों को झेलना पड़ेगा ।

उन्हें चूहे को मारना पड़ा ।

इस तरह हम हिन्दी में क्रिया रूपों के अन्वय की एक संकुल स्थिति है । कभी मुख्य क्रिया का अन्वय, और कभी मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया का अन्वय होता है । अन्वय कभी लिंग, वचन मात्र का होता है, कभी पुरुष

उपसंहार

पिछले अध्यायों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि हिन्दी और
लम क्रियाओं की संरचना में काफी भिन्नतायें हैं । एक भाषा का
भाषा में अनुवाद करते समय व्याकरण संबन्धी और भाषा संबन्धी
कठिनाइयाँ सामने आती हैं और कई प्रकार का भ्रम पैदा होने
ा है । इस अध्ययन से भाषाध्ययन एवं अनुवाद में जो भ्रामक
गाएँ हैं उन का समाधान हो सकेगा और भ्रमों का दूरीकरण होगा
आशा है ।

साधारणत: यह देखा जा सकता है कि भाषाध्ययन में बहुभाषा
प्रभाव द्वितीय भाषा पर पड़ता है । दोनों भाषाओं के व्याकरण
ो यह प्रभाव स्वाभाविक है । यद्यपि क्रिया, लिंग, वचन, पुरुष
द में कुछ समता होती है तो भी उसकी संरचना, प्रयोग आदि की
ा करने पर उसमें समानताएँ, भिन्नताएँ, तथा एक-एक भाषा की
ो विशेषताएँ ज्ञात होती हैं । दोनों भाषाओं की क्रियाओं की
नात्मक विश्लेषण और उनपर पड़नेवाले मुख्य व्याकरणिक समानताएँ
अंतर निम्न प्रकार हैं।

व्युत्पत्ति के अनुसार हिन्दी और मलयालम भाषाओं में क्रिया
दो प्रकार की होती हैं -- मूल और व्युत्पन्न । दोनों में व्युत्पन्न
ाओं के तीन भेद होते हैं --सकर्मक तथा प्रेरणार्थक, नाम धातु तथा
त धातु । दोनों के प्रयोग में काफी अंतर होते हुए भी सकर्मक तथा
ार्थक, नाम धातुएँ, संयुक्त धातुएँ - आदि क्रियायें बनाने की जो रीति,
संरचना में अधिक समानताएँ दिखाई पड़ती हैं । संज्ञा, विशेषण ,

क्रिया विशेषण के साथ प्रत्यय जोड़कर हिन्दी और मलयालम की क्रियाओं
ी संरचना होती है । इनका शून्य प्रत्यय युक्त (प्रत्यय रहित) प्रयोग
ी दोनों में बराबर है ।

अर्थानुसार हिन्दी और मलयालम दोनों भाषाओं में क्रियाओं के
ख्य दो भेद माने जाते हैं -- अकर्मक और सकर्मक । अकर्मक और सकर्मक
ी परिकल्पनाएँ यद्यपि दोनों भाषाओं में हैं तो भी उनमें काफी अंतर
ृष्टिगत होते हैं । प्रयोग की दृष्टि से देखा जाय तो मलयालम में अकर्मक
ौर सकर्मक में प्रधानतया मुख्य अंतर यह है कि अकर्मक क्रिया में कर्म की
ाकांक्षा होती है याने क्रिया का विषय अथवा कर्म है अलग हो सकता है
ह सकर्मक है । हिन्दी की विशेषता है कि सकर्मक क्रियाओं के भूतकालीन
प में प्रयोग जहाँ हो वहाँ कर्ता के साथ "ने" प्रत्यय की ज़रूरत पड़ती है।
ब क्रिया लिंग, वचनों में कर्म का अनुसरण करती है ।

से:- हि: आण्कुट्टि करयुन्नु (अकर्मक वर्तमान)
(लड़का रोता है)
आण्कुट्टि करञ्ञु (अकर्मक भूत)
(लड़का रोया)

ञान् कत्तु एषुतुन्नु (सकर्मक वर्तमान)
(मैं चिट्ठी लिखता हूँ)

ञान् कत्तु एषुति (सकर्मक भूत)
(मैं ने चिट्ठी लिखी ।

लडका रोता है (अकर्मक वर्तमान)
लडका रोया (अकर्मक भूत)

मलयालम के प्रयोगों में ऐसा अंतर नहीं दिखाई पडता है । वर्तमान और भूतकालीन संरचनाएँ मलयालम में समान हैं । हिन्दी की अपनी और एक विशेषता है कि, अगर प्रत्यक्ष रूप से कर्म की उपस्थिति न हो, तो भी सकर्मक क्रियायें सकर्मक ही बनी रहती है-- ऊपर बताया गया नियम यहाँ अनिवार्य होता है ।

उदा:- राम खाता है {वर्तमान}
सीता खाती है { }
राम ने खाया {भूत }
सीता ने खाया { भूत }

उपर्युक्त प्रयोगान्तर मलयालम में नहीं है ।

रामन कषिक्कुन्नु {वर्तमान}
सीत कषिक्कुन्नु {वर्तमान}
रामन् कषिच्चु {भूत }
सीता कषिच्चु {भूत }

दोनों भाषाओं में कुछ क्रियायें अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में प्रयुक्त की जाती हैं । हिन्दी में ऐसे प्रयोगों में अकर्मक और सकर्मक क्रिया के रूप समान होते हैं जब कि मलयालम में इनकी रूप रचना में अंतर है । अगर मलयालम में जब अकर्मक से सकर्मक बनाते हैं तब क्रियाओं के साथ भिन्न-भिन्न प्रत्यय जोडा जाता है ।

जैसे:- हि: कुआँ भरता है । {अकर्मक}, नौकर पानी भरता है {सकर्मक}
छड़ी घिसती है । { }, पुजारी चंदन घिसता है { }

मल: वातिल् अटयुन्नु ‖अकर्मक‖ कुट्टि वातिल अटय्क्कुन्नु ‖सकर्मक‖
‖दरवाज़ा बन्द होता है ‖ ‖बच्चा दरवाज़ा बन्द करता है ‖

पंका करङ्ङुन्नु ‖अकर्मक‖ लीला पंका करक्कुन्नु ‖सकर्मक‖
‖पंखा चलता है ‖ ,‖लीला पंखा चलाती है ‖

प्रेरणार्थक या प्रयोजक क्रियाएँ दोनों भाषाओं में होती है । प्रेरणार्थक क्रियायें बनाने की रीति में हिन्दी और मलयालम भाषाओं में अनेक समानतायें हैं । मूल धातु या क्रियाओं के साथ प्रत्यय जोडकर प्रेरणार्थक क्रिया बनायी जाती है । लेकिन दोनों भाषाओं में प्रेरणार्थक क्रियायें बनाने की याने प्रत्यय जोड़ने की जो व्यवस्था है उसमें मौलिक अंतर है । हिन्दी में अकर्मक या सकर्मक क्रिया धातु के साथ "अ" जोड़कर सकर्मक और "वा" जोड़कर प्रेरणार्थक क्रिया बनायी जाती है । लेकिन मलयालम में प्रेरणार्थक बनाने केलिए विविध प्रत्ययों को जोड़ना पड़ता है । जैसे-"क्क्" प्पि, त्तु, व्यंजन का द्वित्तीकरण आदि ।

हि: पढ़ना - पढ़ाना - पढ़वाना
चलना - चलाना - चलवाना

मल: एरि. - एरियिक्क् - एरियिप्पिक्क्
‖फेंक-‖ ‖फेंक दे- ‖ ‖फेंक दे - ‖

काण् - काट्टिक्क् - काट्टिप्पिक्क् -
‖देख ‖ ‖दिखा- ‖ ‖दिखला ‖

वर् - वरुत्ति वरुत्तिप्पिक्क्
‖आ‖ ‖आ‖ ‖आ‖

अकल् - अकलत्तु - अकरि.र.क्क्
§दूर हो§ §दूर कर§ §दूर कर- §

मलयालम की अपनी और एक विशेषता है - कारित और अकारित क्रियाओं का प्रयोग । केवल क्रियाओं में वर्तमान और भविष्य प्रत्यय ोड़ने के पहले "क्कु" आता है वे कारित कहा जाता है और जिन ातुओं में "क्कु" का प्रयोग नहीं, वे अकारित माना जाता है ।

से:- ओर· §याद§ ओरक्क् §
कर·/ §दुह- § करक्क् - § कारित

आद §झूल§ - आटु - §
पोक् §जा§ - पोक् - § अकारित

हिन्दी तथा मलयालम व्याकरणों में सहायक क्रिया की चर्चा भिन्न प्रकार से होती है । फिर भी यहाँ समानवाले ज़्यादा दीख पडती । दोनों भाषाओं में काल सूचक, प्रकार सूचक और प्रकर्षार्थक सहायक क्रियाएँ हैं । यद्यपि दोनों भाषाओं की क्रियाएँ और उनके प्रयोगों में भिन्नता है तो भी एक भाषा की सहायक क्रियाओं को दूसरी भाषा की सहायक क्रियाओं के द्वारा प्रकट किया जा सकता है । कहने की ज़रूरत नहीं कि हिन्दी की सहायक क्रियाएँ लिंग, वचन पुरुषानुसार बदलता है जब कि मलयालम में सिर्फ काल भेद होता है लिंग वचनानुसार बदलाव नहीं हो सकता ।

हिन्दी में काल तथा रीतियों को सूचित करने केलिए प्रत्ययों और सहायक क्रियाओं का उपयोग किया जाता है । तब कठिनाई यह हो

जाती है कि किस प्रत्यय या सहायक क्रिया से काल सूचना होती है । ऐसी दशा में प्रत्यय, सहायक क्रिया दोनों को मिलाकर ही अर्थ निर्णय करना पड़ता है । §पृ. 3. 3. 1. 1.§

मलयालम में काल सूचना केलिए "इरि" §हो§ कोण्टिरि §रहा हो§ इट्टु + उण्टु §-या हो-§ उण्डु + आयी+ इरि §- या हो § आ- §आकु/हो§ आदि का प्रयोग किया जाता है ।

प्रकार्षार्थक सहायक क्रियाएँ दोनों भाषाओं में समान हैं । ये मुख्य क्रिया के साथ आकर उसे करने की शक्यता अथवा समाप्ति को सूचित करती हैं । हिन्दी में "सक", "चुक", "पा", "चाह", "चाहिए", "पड़ना", "होना" आदि ऐसी सहायक क्रियाएँ हैं । इनके समान प्रत्यय युक्त क्रियाओं §धातुओं§ के साथ आनेवाली मलयालम की प्रकार सूचक सहायक क्रियाएँ हैं --कष़ियुक §सकना§ आग्रहिक्कुक §चाहना§, तुटड्.डुक §लगना§ आदि । दोनों भाषाओं में विविध कालों में इसका प्रयोग संभव है । अर्थ की समानता दोनों में होती है तो भी प्रयोग में पर्याप्त अंतर देखा जाता है । उल्लेखनीय है कि "सक" और "चुक" के लिए मलयालम में कष़ियुक एक ही रूप है पर दोनों के प्रयोगों में अंतर है । "सक" के अर्थ में कष़ियुक का प्रयोग धातु + आन् §ध्येयार्थक या संकेतार्थक कृदंत § के साथ होता है । "चुक" के साथ उसका प्रयोग भूतकालिक कृदन्त के साथ होता है । प्रकार्षार्थक क्रियाओं का यह अंतर देखा जाता है कि जहाँ हिन्दी में ऐसी क्रियाओं का प्रयोग क्रियाधातु के साथ होता है, मलयालम में भूतकालीन कृदंत के साथ होता है ।

हिन्दी	मलयालम
] + सहायक क्रिया	भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया
ः गया	मरिच्चु पोयि
ार पडा	वीणु पोयि
ाथ लिया	एडुति एटुत्तु
ार डाला	कोन्नुकळञ्ञु

दोनों भाषाओं में क्रिया संयोग होता है - विभिन्न कृदंतों, ायों एवं कृदन्तों के साथ अन्वय क्रिया जोडकर यह बनाया जा सकता । र क्रियाएँ भी दोनों में समान रूप से प्राप्त होती हैं । हिन्दी में जो र क्रियाएँ हैं उनमें अधिकांश सामान्य क्रियाओं के रूप में मलयालम में क्त होती हैं ।

-का सम्मान करना --आदरिक्कुक

की पूजा करना -- पूजिक्कुक

की याद करना -- ओरःमिक्कुक

हिन्दी और मलयालम में निषेधात्मक प्रयोग है, लेकिन हिन्दी की ना में मलयालम निषेध सूचक अधिक वैविध्य पूर्ण और जटिल है । हिन्दी विधि रूप में "मत" और अन्य रूपों में "नहीं" का प्रयोग किया जाता । मलयालम में इनके कई रूप हैं -- जैसे इल्ल, अरुतु, कूट, पाटिल्ल टा, ओला आदि । वर्तमान, भूत, भविष्यत् आदि कालों, विधिरूप

ौर विधायक, अनुज्ञायक, नियोजक आदि प्रकारों में इनका भिन्न
भिन्न प्रयोग किया जाता है ।

क्रिया का रूपान्तर कई स्तरों पर हो सकता है याने विकारी
ाब्दों में इसका मुख्य स्थान है । हिन्दी और मलयालम दोनों में यद्यपि
क्रिया विकारी रूप में प्रयुक्त होती है तो भी उनके विकारों तथा प्रयोगों
ं कई तरह की असमानताएँ दिखाई पड़ती हैं । मलयालम की क्रिया
चना पद्धति अत्यंत सरल है कि उसमें पुरुष लिंग और वचन के अनुसार
रिवर्तन नहीं होते । हिन्दी क्रिया रचना पद्धति काफी जटिल है कि
क्रिया में पुरुष लिंग वचनानुसार विकार होता है ।

क्रिया के रूपान्तरों का मुख्य आधार काल है । दोनों भाषाओं
ा तीन काल - भूत, वर्तमान और भविष्य- स्वीकार किया है । हिन्दी
ं रीति की सूचना भी काल सूचना के साथ होती है और इनके विभिन्न
ाद भी हैं । मलयालम में मूलत: रीति या aspect न होने के कारण
मलयालम में इसकी विशेष चर्चा या अध्ययन व्याकरण में नहीं मिलता ।
ाने तीनों कालों के भेदों की चर्चा कहीं नहीं मिलती । लेकिन हिन्दी
ा काल रूपों की अभिव्यक्ति के लिए अलग क्रियाओं {सहायक} का प्रयोग
किया जाता है । ऐसी क्रियाओं के साथ जो काल रूप बनते हैं उनसे
हिन्दी के विविध काल रूपों के अर्थों की अभिव्यक्ति मलयालम में
ंभव है ।

सामान्य वर्तमान काल केलिए हिन्दी में धातु + ता है जोडा
ाता है और मलयालम में धातु + उन्नु । जहाँ हिन्दी में इस काल में

संयुक्त अर्थात् एक सहायक क्रिया सहित क्रियायें आती हैं वहाँ मलयालम में सरल क्रियाएँ अर्थात् एक पद की क्रियाएँ आती हैं ।

हिन्दी और मलयालम में भूतकालिक रचना में रूपों के वितरण आदि की दृष्टि से मौलिक अंतर है । हिन्दी में धातु के साथ "आ" या "वा" लगाकर भूतकाल रूप बनाया जाता है । यह कहना उचित होगा कि मलयालम का भूतकाल रूप काफी जटिल है । भूतकाल की सूचना के लिए अनेक प्रत्यय हैं । प्रायः क्रिया धातुओं के ध्वनि रूपों के अनुसार अलग-अलग प्रत्यय जोड़े जाते हैं । लेकिन कभी कभी नियम भी सदा लागू नहीं हो सकता, अनेक अपवाद भी हैं ।

जैसे :- वर् - (आ) + तु - वन्नु (आया)

पोक् -(जा) + इ - पोयि (गया)

पोङ्. (उठा) + इ - पोक्कि (उठाया)

एण् - (गिन्) + तु - एण्णि (गिना)

नीळ् (लम्बा हो) + तु - नीण्टु (लंबा किया)

दोनों में भविष्यत् काल की रचना केलिए मुख्य क्रिया से भविष्यत् काल के प्रत्यय लगाये जाते हैं । हिन्दी में अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं में लिंग वचन पुरुष इन तीनों का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है । मलयालम में इन सभी का अभाव है ।

कर्तृ वाच्य और कर्म वाच्य का प्रयोग दोनों में बराबर है । हिन्दी में कर्तृवाच्य का कर्म ("को" प्रत्यय सहित अथवा रहित) कर्म वाच्य

में कर्ता बन जाता है । इसी तरह मलयालम में भी कर्तृवाच्य का कर्म, §"ए" प्रत्यय सहित अथवा रहित§ कर्म वाच्य में कर्ता बन जाता है । हिन्दी में कर्म वाच्यीय रचना में कर्ता के साथ "से" परसर्ग याने "द्वारा" "के द्वारा" अव्यय आता है जब कि मलयालम में कर्ता के साथ हमेशा "आल्" प्रत्यय ही आता है । हिन्दी में अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं से भाव वाच्य बनता है । भाव वाच्य रचना का कर्ता चेतन और अचेतन- दोनों हो सकते हैं । वाच्य में दोनों भाषाओं का मुख्य अंतर यह है कि मलयालम में भाव वाच्य नहीं है । अकर्मक क्रियाओं का कर्म-वाच्य में जो प्रयोग होता है वही हिन्दी में कर्मवाच्य है । मलयालम में अकर्मक क्रियाओं का कर्म वाच्य नहीं बनता है ।

जैसे:- अब थोडा चले

अब थोडा चला जाता - आदि के मलयालम रूप नहीं हैं ।

पहले बताया जा चुका है हिन्दी वाच्य और प्रयोग मलयालम में अलग-अलग नहीं है एक ही है । हिन्दी में दोनों को §वाच्य, प्रयोग§ अलग-अलग इसलिए माना है कि क्रिया का संबन्ध कर्ता से होते हुए भी - कर्तृवाच्य होते हुए भी क्रिया का रूप कर्म के अनुसार §कर्मणि् प्रयोग§ हो सकता है अथवा किसी के अनुसार न होने पर पुल्लिंग एकवचन में §भावे-प्रयोग§ रहता है । लेकिन मलयालम में कर्ता के कारक रूप से , क्रिया के साथ आनेवाले कर्तृवाच्य रूप से वाच्य का बोध होता है । लिंग वचनानुसार परिवर्तित न होने के कारण कर्ता और कर्म के साथ अन्वय की समस्या भी नहीं उठती ।

दोनों भाषाओं में प्रयुक्त प्रयोगों में काफी समानता है ।

मलयालम में प्रकारों की सूचना के लिए बहुत से रूप हैं और विविध प्रकार के "अर्थ" प्रकट किये जाते हैं । हिन्दी में ऐसे रूप सीमित हैं ।

वाक्य में क्रिया का प्रयोग संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि अनेक रूपों में होते हैं जिन्हें हिन्दी में "कृदन्त" कहते हैं । मलयालम में इसकी विस्तृत चर्चा या प्रयोग व्याकरण में नहीं है और उनके स्थान पर विविध प्रकार की अपूर्ण क्रियाओं का प्रयोग ही प्राप्त होते हैं । अपूर्ण क्रियायें अन्य क्रियाओं के पहले आती हैं और क्रिया तथा शब्द भेदों का कार्य करती हैं । यदि संज्ञा के साथ आकर उसका विशेषण करें तो संज्ञा विशेषक (पेरेच्चं) और क्रिया के साथ आकर उसका विशेषण करें तो क्रिया विशेषण (विनयेच्चं) कहा जाता है --और ऐसे विशेषणों को "कृदन्त" माना है । दोनों भाषाओं में ऐसे अनेक कृदन्तों का प्रयोग है । लेकिन प्रयोगों और निर्माण या रीति में दोनों की अपनी अपनी विशेषतायें हैं और दोनों में अनेक भिन्नतायें हैं ।

उदा:- <u>वर्तमान कालिक कृदन्त:</u>

हि: धातु + ता (विकारी) जाता - जाते, जाती
म: वर्तमान काल रूप - उ > अ (अविकारी)- पोकुन्नु

हि: धातु + आ/या (विकारी)- चला, चले, चली
म भूतकाल रूप - इ > अ (अविकारी) पोयि
उ > अ

दूसरा अंतर यह होता है कि एक भाषा के कृदंतों के समान कृदन्त दूसरी भाषा में नहीं हो सकती । एक ओर जहाँ कर्तृवाचक कृदन्त, अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त, पूर्ण क्रिया द्योतक का समानार्थक कृदन्त मलयालम में नहीं दूसरी ओर मलयालम का संभाव्य सूचक कृदन्त और कर्तव्य सूचक कृदन्त का समानार्थक कृदन्त हिन्दी में नहीं । कृदंतों के अर्थों और प्रयोगों में भी काफी भिन्नता है । याने जो कृदंत दोनों भाषाओं में समान हो (अथवा समान नाम रखते हो) उनके अर्थ में भी अनेक भिन्नताएँ दृष्टिगत होती हैं । उल्लेखनीय है कि एक भाषा के कृदन्त के अर्थ को दूसरी भाषा में सदा कृदंत के द्वारा प्रकट नहीं कर सकते । प्रायः अन्य प्रकार की वाक्य रचनाओं के द्वारा प्रकट करना पड़ता है । उदाहरण केलिए हिन्दी की अपूर्ण क्रिया द्योतक कृदंत का मलयालम में पूर्वकालिक कृदन्त का अर्थ होता है । (अन्य कृदंतों की भिन्नता के लिए देखिए -पृ. 5. 3. 3. 1.)

जैसे:- हि: अपूर्ण क्रिया द्योतक "आते"
म पूर्व कालिक कृदंत अर्थ - "वरवे"

अन्य रूप में इसका प्रयोग होता है -- "वरुम्पोऴ्", "वन्नुकोण्टिरिक्कुम्पोऴ्" आदि ।

कृदन्तों के अन्वय में भी स्पष्ट अंतर दिखाई पड़ता है । मलयालम के सभी कृदन्तरूप अव्यय हैं और उनके रूपान्तर नहीं होते । हिन्दी के कृदन्तों में कुछ विकारी है और कुछ अविकारी - कुछ का अन्वय कर्ता के साथ होता है और कुछ का कर्म के साथ ।

हिन्दी विकारी रूप	मलयालम अविकारी	
आता (हुआ) लड़का	वरुन्न/	आण्कुट्टि
आती (हुई) लड़की	वन्नुकोण्टिरिक्कुन्न	पेण्कुट्टि
आते (हुए) लड़के	"	आण्कुट्टिकळ्
आती (हुई) लड़कियाँ	"	पेण्कुट्टिकळ्

अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाओं के वर्तमान कालिक कृदन्त रूपों का अन्वय कर्ता के साथ होता है - अकर्मक क्रिया के भूतकालिक कृदन्त का अन्वय कर्ता के साथ होता है और सकर्मक क्रिया के भूतकालिक कृदन्त का अन्वय कर्म के साथ होता है ।

वाक्य रचना की दृष्टि से देखा जाता तो मलयालम में कृदन्तों का प्रयोग जितना व्यापक है कि हिन्दी में उनका प्रयोग उतना व्यापक नहीं । वाक्य रचना में सीमित रूपों में ही कृदन्तों का प्रयोग होता है और उनके स्थान पर हिन्दी में संबन्धवाची उपवाक्यों (Relative clauses) का उपयोग किया जाता है ।

हिन्दी और मलयालम क्रियाओं का सबसे बडा अंतर उनके अन्वय में है । हिन्दी क्रियाओं की अन्वय पद्धति बहुत विशाल है । लेकिन मलयालम क्रियाओं में लिंग वचन पुरुष सूचित न होने के कारण उनके अन्वय की समस्या नहीं उठती । मलयालम में अपवाद स्वरूप केलिए विधिरूप में पुरुष व वचन का अन्वय मिलता है ।

जैसे नी कषिक्कू / नी कषिक्कुक (एकवचन आदर रहित)

..../-

निङ्ङळ् कषिक्कू / कषिक्कुक {एकवचन- सामान्य}
ताङ्कळ् कषिच्चालुम् / कषिक्कुक {एकवचन, आदर सहित}

संभाव्य भविष्यत् क्रिया रूपों में पुरुष और वचन में अन्वयन होता है लिंग में नहीं । लडके आवे, लड़की आवे, मैं आऊँ, आप आवें आदि । मलयालम में इन सब केलिए - पोकट्टे {पोयाल्/जावें, पोयेक्कुम् जावे, आदि रूप हैं । उनका कर्ता से अन्वयन नहीं होता ।

वर्तमानकालिक कृदन्तों से बने क्रियारूपों में पुरुष लिंग वचन तीनों का अन्वय होता है । केवल मूल क्रिया हो तो अन्वय लिंग वचनों में होता है और मूल क्रिया के साथ सहायक क्रिया "है" आवें तो मूल क्रिया का अन्वय लिंग वचनों में होता है सहायक क्रिया "है" का अन्वय पुरुष लिंग वचन में होता है । अन्य रूपों में भी यह अन्वयन देखा जाता है । जैसे :-

हिन्दी	मलयालम
जाता है / जाती/ जाते	पोकुन्नु
जाता था/ जाती थी/ जाते थे	पोयिरुन्नु/पोयिट्टुण्टायिरुन्नु
जाता होगा/जाती होगी/जाते होंगे	वरुन्नुण्टायिरिक्कुम्

भूतकालिक क्रिया रूपों से बनने वाले कृदन्तों में भी पुरुष लिंग वचन तीनों का अन्वय हो सकता है । केवल मूल क्रिया हो तो अन्वय लिंग वचन में होता है । सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक कृदन्त से बनने वाले काल रूपों का अन्वय कर्म के साथ होता है । {कर्ता के साथ "ने" प्रत्यय,

और कर्म के साथ कारक चिह्न "को" न होता है । 8 यद्यपि वाक्य में कर्ता के साथ "को" हो अथवा कर्म लुप्त हो , तो क्रिया का अन्वय किसी के साथ नहीं होता । वह सदा पुल्लिंग एकवचन में रहेगा ।

इन व्याकरणिक विशेषताओं पर एवं संरचनात्मक विशेषताओं पर ध्यान रखना द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी या मलयालम के अध्ययन केलिए अनिवार्य है । मलयालम में क्रियाओं का लिंगान्वयन न होने से और हिन्दी में अत्यन्त संकुल अन्वय होने से भाषा सीखनेवालों को उस पर विशेष ध्यान देना पड़ेगा ।

÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

सहायक ग्रंथ सूची

क्र.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नाम	वर्ष
1	2	3	4	5
1	अम्बा प्रसाद सुमन	भाषा विज्ञान-सिद्धांत और प्रयोग	सस्ता साहित्य-भंडार, दिल्ली	1982
2	अम्बा प्रसाद सुमन	हिन्दी और उसकी-उपभाषाओं का स्वरूप	हिन्दी साहित्य-सम्मेलन , प्रयाग	1966
3	अम्बादास देशमुख	हिन्दी और मराठी-की व्याकरिणिक कोटियाँ	अतुल प्रकाशन, कानपुर	1990
4	अमर बहादुर सिंह	भाषा शास्त्र प्रवेशिका	रामनारायणवेनी-प्रसाद, इलाहाबाद	1963
5	अनन्त चौधरी	हिन्दी व्याकरण का इतिहास	बिहारी हिन्दी - ग्रन्थ अकादमी, पटना	1972
6	इबोहल सिंह काङ्.जम	हिन्दी मणिपुरी क्रिया-संरचना	प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली	1989
7	उदयनारायण तिवारी	संसार की भाषाओं का वर्गीकरण		1961
8.	उदयनारायण तिवारी (अनु.)	एक-माक्समूलर भाषा विज्ञान		1970
9	उदय नारायण तिवारी	"हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास"	सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग	सं. 2018 (तृ. सं.)
0	उदयनारायण तिवारी	हिन्दी भाषा का - उद्गम और विकास	भारती भण्डार, लीडर प्रेस,	सं. 2026

1	2	3	4	5
11	उदयनारायण तिवारी	"भारत का भाषा-सर्वेक्षण" (द्वि. सं.)	प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश	1927
12	कामताप्रसाद गुरु	हिन्दी व्याकरण	नागरी प्रचारिणी-सभा, वाराणसी	1977
13	कामताप्रसाद गुरु	मध्य हिन्दी व्याकरण	नागरी प्रचारिणी-सभा, काशी	सं. 2018 (तेरहवाँ संस्करण)
14	किशोरीदास वाजपेयी	हिन्दी की वर्तनी तथा शब्द विश्लेषण (प्र. सं.)	राजधानी ग्रंथागार, नई दिल्ली	1968
15	कुंजिरामन	हिन्दी और मलयालम-के आधुनिक खण्डकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन (प्र. सं.)	दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार सभा, मद्रास	1979
16	कृष्ण गोपाल रस्तोगी	हिन्दी क्रियाओं का अर्थ परक अध्ययन	अर्चना प्रकाशन	1973
17	कृपाशंकर सिंह, चतुर्भुज सहाय	आधुनिक भाषा विज्ञान	नाशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली	1977
18	कैलाश चन्द्र भाटिया	"हिन्दी में अंग्रेजी के - आगत शब्दों का भाषा तात्त्विक अध्ययन"	हिन्दुस्तानी अकाडमी इलाहाबाद	1967
19	गणेश खरे	सामान्य हिन्दी ज्ञान	शांति प्रकाशन, इलाहाबाद	1986
	चन्द्रभान रावत	हिन्दी भाषा विकास और विश्लेषण		[illegible]

1	2	3	4	5
21	जगदीश प्रसाद कौशिक	व्यावहारिक हिन्दी-व्याकरण	साहित्यागार, जयपुर	1985
22	जगतपाल शर्मा	मंडियाली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन	प्रवीण शर्मा, शब्द और शब्द, दिल्ली	
23.	जयकुमार "जलज"	ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान सिद्धांत और व्यवहार		1972
24	जयेन्द्र त्रिवेदी आचार्य	हिन्दी रूप रचना	लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद	1988
25	जीवनाथ शास्त्री तथा धर्मपाल शास्त्री	सुगम हिन्दी-व्याकरण	राजपाल एण्ड-सन्स, दिल्ली	
26	सनसुखराम गुप्त, ओमप्रकाश शर्मा	सरल हिन्दी-व्याकरण	हिन्दी पुस्तक भवन, दिल्ली	1989
27	दुनीचंद	हिन्दी व्याकरण	विश्वेश्वरानन्द-वैदिक अनुसन्धानालय-प्रेस, साधु आश्रम, होश्यापुर	संवत् [illegible] ॥प्र. सं.
28	दंगल झाल्टे	"प्रयोजनमूलक हिन्दी"	विद्या विहार, नई दिल्ली	198[illegible] ॥प्र. स
29	धीरेन्द्र वर्मा	ब्रजभाषा	हिन्दुस्तानी-[illegible]	

1	2	3	4	5
0	धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दी भाषा का - इतिहास	हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग	1973
1	दीमशित्स	हिन्दी व्याकरण की- रूपरेखा	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1966
2	नारायण पिळ्ळै. टी. के.	हिन्दी एवं मलयालम में आगत संस्कृत शब्दावली §व्यतिरेकी अध्ययन§	केंद्रीय हिंदी- संस्थान, आगरा	1984
3	प्रतापनारायण चतुर्वेदी	हिन्दी व्याकरण और- रचना	भारतवासी प्रेस इलाहाबाद	1955
4	प्रेम नारायण टंडन	व्रज भाषा-व्याकरण- की रूपरेखा §प्र. सं. §	लखनऊ विश्व- विद्यालय, लखनऊ	1962
5	बलभीम राज गोरे	हिन्दी अध्ययन-स्वरूप एवं समस्याएँ	संचयन, कानपुर	1985 §प्र. सं. §
6	बलभीमराज गोरे	हिन्दी भाषा व - साहित्य:स्वरूप एवं सिद्धांत	विकास प्रकाशन, कानपुर	1990 §प्र. सं.§
7	बलदेव राजगुप्त	भाषा विज्ञान - भाषिकी	आर्यानी - पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1984
8	बालमुकुन्द	हिन्दी क्रिया:स्वरूप और विश्लेषण	आनन्द पुस्तक - भवन वाराणसी	1970

1	2	3	4	5
39	बाबूराम सक्सेना	अवधी का विकास	हिन्दुस्तान अकाडमी इलाहाबाद	1972
40	बाबूराम सक्सेना	सामान्य भाषा-विज्ञान	हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग	1965
41	बिन्दु माधव मिश्र	हिन्दी भाषा का - परिचय ﴾प्र. सं.﴿	राजेश पुस्तक केन्द्र, दिल्ली	1975
42	ब्रज मोहन	मानक हिन्दी	दि मैकमिलन-कंपनी आफ इंडिया - लिमिटेड, नई दिल्ली	1979
43	भगीरथ मिश्र	"भाषा विवेचन"	इलाहाबाद	1990 ﴾प्र. सं.﴿
44.	भास्करन नायर. के.	मलयालम साहित्य का इतिहास	प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश	1961 ﴾द्वि. सं.﴿
45	भोलानाथ तिवारी	हिन्दी भाषा की-संरचना	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली	1988 ﴾द्वि. सं﴿
46	भोलानाथ तिवारी	हिन्दी भाषा की - रूप संरचना	साहित्य सहकार, दिल्ली	1986
47	भोलानाथ तिवारी	भाषा विज्ञान	﴾सत्रहवाँ संस्करण﴿ किताब महल, इलाहाबाद	1984
48	भोलानाथ तिवारी	शब्दों का अध्ययन		

1	2	3	4	5
49	भोलानाथ तिवारी, किरणबाला	हिन्दी भाषा की शब्द संरचना	साहित्य सहकार दिल्ली	1985
50	भोलानाथ तिवारी	व्यतिरेकी भाषा विज्ञान	आलेख प्रकाशन, दिल्ली	1983 (प्र. सं.)
51	भोला शंकर व्यास	संस्कृत का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन	भारतीय ज्ञानपीठ-प्रकाशन, नईदिल्ली	1971 (च. सं.)
52	मुरारी लाल उप्रैती	हिन्दी में प्रत्यय-विचार	विनोद पुस्तक-मन्दिर, आगरा	1964
53	मोती बाबू	हिन्दी विधि-शब्दावली	हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग	1969 (प्र. सं.)
54	मोहनलाल तिवारी	हिंदी भाषा पर - फारसी और अरबी का प्रभाव (प्र. सं.)	नागरी प्रचारिणी-सभा, वाराणसी	सं. 2026
55	यज्ञदत्त शर्मा	हिन्दी भाषा का - रचनात्मक व्याकरण	लाइब्रेरी बुक सेन्टर दिल्ली	1985
56	रविवर्मा. के	हिन्दी के साथ दक्षिणी भाषाओं का तुलनात्मक-व्याकरण	दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार सभा, मद्रास	1963
57	रामकुमार वर्मा	हिन्दी भाषा और-साहित्य	भारतीय भाषाओं	

1	2	3	4	5
58	राजेन्द्र मोहन भटनागर	आधुनिक हिन्दी-व्याकरण	सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली	1989 (प्र. सं.)
59	रामलोचन शरण	हिन्दी व्याकरण-चन्द्रोदय	पुस्तक भण्डार, पटना	1968
60	रामविलास शर्मा	भाषा और समाज	राजकमल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली	1977 (द्वि. सं.)
61	रामदेव	व्याकरण प्रदीप	हिन्दी भवन, इलाहाबाद	1974
62	लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय	भारतीय आर्य भाषा	सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग	1963
63	लोकनाथ द्विवेदी सिलाकारी	"हिन्दी व्याकरण-कौमुदी"	साथी प्रकाशन सागर मध्यप्रदेश	1966
64	वचनदेव कुमार	"व्याकरण भास्कर"	भारती भवन, पटना	1971
65	व्यथित हृदय	सरल व्याकरण और रचना	श्रीराम मेहरा एण्ड-कम्पनी, आगरा	
66	शिवराम वर्मा. एस. वी.	"हिन्दी तेलुगु व्याकरणों का एक तुलनात्मक - अध्ययन"	आंध्र प्रदेश साहित्य अकादमी, हैदराबाद	1967 (प्र. सं.)

1	2	3	4	5
67	शिवशंकर प्रसाद वर्मा	"हिन्दी भाषा की - भूमिका" (प्र. सं.)	भारती भवन, पाटना	1969
68	श्याम प्रकाश	ब्रजभाषा की क्रियापद- संरचना	स्नेह प्रकाशन, लखनऊ	1986
69	सतीश कुमार रोहरा	भाषा एवं हिन्दी- भाषा	हिन्दी प्रचारक - संस्थान, वाराणसी	1972
70	सदाविजय आर्य, रमेश मिश्र	हिन्दी भाषा का उद्गम एवं विकास		1971
71	सत्यनारायण त्रिपाठी	"हिन्दी भाषा और लिपि- का ऐतिहासिक विकास" (प्र. सं.)	विश्वविद्यालय- प्रकाशन, वाराणसी	1964
72	सरयू प्रसाद अग्रवाल	हिन्दी में संयुक्त- क्रिया का विकास		
73	सुधाकर पांडेय करुणापति त्रिपाठी	पं. कामताप्रसाद गुरु- शती स्मृति ग्रंथ	नागरी प्रचारिणी- सभा, वाराणसी	1932
74	सुकुमार सेन (अनु. महावीर प्रसाद- लखेडा)	पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, तुलनात्मक व्याकरण (प्र. सं.)	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद	1969
75	सुनीतिकुमार चाटर्जी	भारतीय आर्य भाषा- और हिन्दी	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	1954

1	2	3	4	5
76	सुनीति कुमार चाटुर्ज्या	भारत की भाषाएँ और भाषा संबन्धी-समस्याएँ (द्वि. सं.)	हिन्दी भवन, इलाहाबाद	
77	सूरजभान सिंह	हिन्दी का वाक्यात्मक-व्याकरण	साहित्य सहकार, दिल्ली	1985 (प्र. सं.)
78	संतोष जैन	हिन्दी और बंगला-भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन	शब्दकार, दिल्ली	1974
79	हरदेव बाहरी	व्यावहारिक हिन्दी-व्याकरण	लोकभारती - प्रकाशन, इलाहाबाद	1972 (प्र. सं.)

मलयालम पुस्तकें

80	अर्जुनन् वेल्लायणि	गवेषण मेखला	एन. बि. एस., कोट्टयम	1972
81	आन्टणि. सि. एल.	केरल पाणिनीयम भाष्यम्	•	1973
82	आन्द्रूस कुट्टि	भाषा साहिति		
83	कुंजनपिल्ला शूरनाट्टु	लीलातिलकम्	वि. वि. बुक्डिप्पो तिरुवनन्तपुरम	1957
84	कुंजन पिल्ला इलंकुलम्	साहित्य चरित्र संग्रहम	एन. बि. एस. कोट्टयम	1962

1	2	3	4	5
85	कुंजन पिळ्ळा-इलंकुळम्	लीलातिलकम् मणिप्रवाल-लक्षणम्	साहित्य प्रवर्तक-सहकरण संघम् कोट्टयम	1964
86	कुंजुण्णिराजा	भाषागवेषणम्	मंगलोदयम् प्राइवट-लिमिटेड, ट्रिचूर	1962
87	कृष्णपिल्ला. एन.	"कैरलियुटे कथा" {साहित्य चरित्रम्}	साहित्य प्रवर्तक-सहकरण संघम् कोट्टयम	
88	गोपिनाथ पिल्ला. एन. आर.	रामचरितवुम्-प्राचीन मलयालवुम्	एन. बि. एस., कोट्टयम	1972
89	गोपिनाथ पिल्ला - वट्टप्परम्पिल	मलयाल व्याकरणवुम्-रचनयुम्	एच. सी. पब्लिशिंग-हाउस, ट्रिचूर	1990
90	चुम्मार. टि. एम.	भाषा गद्य साहित्य-चरित्रम	एन. बि. एस., कोट्टयम	196
91	जोर्ज मात्तन्	मलयाण्मयुटे व्याकरणम्		1969
92	जोर्ज के. एम.	तमिल साहित्यम्	केरल साहित्य-अकादमी	1977
93	जोण कुन्नाप्पळ्ळि	शब्द सौभगम्	पोंटिफिकल् - इन्स्टिट्यूट-पब्लिकेशन्स, आलवाय	197

1	2	3	4	5
94	पद्मकुमारी. जे.	भाषा चरित्रम	एन. बि. एस. कोट्टयम	1974
95	परमेश्वर अय्यर. एस. उळ्ळूर	केरल साहित्य-चरित्र	केरल विश्वविद्यालय	1979
96	प्रभाकर वारियर. के. एम. रवीन्द्रन. पि. एन.	मलयालम भाषा-पठनड्.ड.ळ्	केरल भाषा-इन्स्टिट्यूट-तिरुवनन्तपुरम	1974
97	प्रभाकर वारियर. के. एम.	द्रविड भाषा शास्त्र-पठनड्.ड.ळ्	डिपार्टमेंट ऑफ लिंग्विस्टिक्स अण्णामलै यूनिवेर्सिटी	1976
98	प्रभाकर वारियर. के. एम.	पाच्चु मूत्तातिन्टे-केरल भाषा-व्याकरणम्	मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास	1981
99	बालकृष्णन नायर. टि. पी.	भाषा प्रदीपम्	एन. बि. एस. कोट्टयम	1972
100	मूस्सात. एन. एन.	द्राविड भाषा शास्त्रम्		1973
101	राजराजवर्मा	केरल पाणिनीयम	साहित्य प्रवर्तक-सहकरण संघम्, कोट्टयम	1895
102	रोबर्ट काल्ड्वेल्	द्राविड भाषा व्याकरण अनु. एस. के. नायर	केरल भाषा-इन्स्टिट्यूट, तिरुवनन्तपुरम	1976

1	2	3	4	5
103	वासुदेव भट्टतिरि. सि. वी.	अभिनव मलयालम-व्याकरणम्	एन. बी. एस. कोट्टयम	1980
104	वासुदेव भट्टतिरि	केरलपाणिनीयत्तिलूटे	गीता पब्लिकेशन्स पन्तलम्	1972
105	वासुदेव भट्टतिरि	भाषा शास्त्रम	करन्ट बुक्स, त्रिचूर	1970
106	वेलायुधन पिल्ला. पि. वी.	मध्यकाल मलयालम्	एन. बी. एस. कोट्टयम	1966
107	शेषगिरि प्रभु	व्याकरण मित्रम्	केरल साहित्य-अकादमी, त्रिचूर	1983
108	सुकुमारपिळ्ळै. के.	आधुनिक मलयाल-व्याकरणम्	उषा पब्लिकेशन्स चटयमंगलम्	1968
109	हर्मन गुंडर्ट	मलयालम व्याकरणम्	साहित्य प्रवर्तक संघम	

अंग्रेजी पुस्तक

110.	Agasthialingom.S	A Synthatical treatment of must in dravidian	Third seminar on dravidian linguistics, Annamalai University	1
111.	Charles.J.Fillmore	'The Case for Case'	Universals in Linguistic theory. Emmon Batch and Rober T.Harms	]
112.	Eswari.M	A comparative study of the	Department of Hindi, Cochin University	

114.	Gung.P.D	Anuction tcative ph	Poona Oriental Book House, Poona-2	1958
115.	Kellogg.S.K.	A of the Higuage	Routledge & Kegan Paul Ltd., Broadway House,68-74 Carter Lane, London E.C.4	1875 (Firs Edition) 1893,1938, 1955,1965(printed)
116.	Kripasankar Singh	Rein Hindi Uruistics	National Publishing House, New Delhi	1978
117.	Prabhakar Variar.K.M.	Thdn the or: Malaya-laage. Stu Dravidian Lirs.	Ed.S.Vaidyanadhan Pubjab University, Patiala.	1980
118.	Kamaswamy Ayyar.L.V.	Thtion of Mal Morpho-loç	The Ramavarma Research Institute Comm..itte, Trichur	1936
119.	Roy.C.J.	Inbry Mal	Department of Malayalam, Madurai University, Madurai.	1976
120.	Sharma.A	A rammar of Hindi	Central Hindi Directorate, New Delhi	1972
121.	Subba Rao K.V	Comation in yntax	Academic Publication, Delhi.	1984
122.	Velayudhan Pillai.P.V.	Earyalam Proudy.	University of Kerala, Trivandrum.	1974
123.	Yamuna Kachru	Asp Hindi Grai	Motilal Banarasi Das	1966

पत्र-पत्रिकाएँ तथा लेख

1.	गणेशन. एस. एन.	हिन्दी क्रिया की जटिलता	कोचिन विज्ञान व- प्रौद्योगिकी विश्व- विद्यालय संगोष्ठी में प्रस्तुत लेख	दिसंबर 1990
2.	राजमणी शर्मा	व्यतिरेकी भाषा विज्ञान- समस्याएँ एवं समाधान	भाषा: त्रैमासिक, केन्द्रीय हिन्दी - निदेशालय, दिल्ली	मार्च 1989
3.	राजमणि शर्मा	"व्यतिरेकी भाषा- विज्ञान- समस्यायें एवं समाधान	केन्द्रीय हिन्दी- निदेशालय, शिक्षा- विभाग, भारतसरकार नई दिल्ली	भाषा त्रैमासिक मार्च 1989
4.	सूरजभान सिंह	(हिन्दी की अकर्मक - क्रियाओं का लक्षण- विश्लेषण)	"गवेषणा" केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा	जुलाई 1974
5.	लीलावती. एम.	अकर्मक सकर्मक और केवल- प्रयोजक विज्ञान कैरली		
6.	~~सत्येन्द्र मोहन भटनागर~~	~~आधुनिक व्याकरण~~	~~सामयिक प्रकाशन दिल्ली~~	1989

कोश:-

7.	गोविन्द चातक	आधुनिक हिन्दी शब्द कोश	तक्षशिला- प्रकाशन, नई- दिल्ली	1968

8. वामन शिवराम आप्टे संस्कृत हिन्दी कोश मोतीलाल बनारसी-दास, दिल्ली 1966

9. शब्द सागर नागरी प्रचारिणी सभा, दिल्ली

10. पद्मनाभ पिल्ला. जि. - श्रीकण्ठेश्वरम् शब्दतारावली साहित्य प्रवर्तक सहकरण संघम्, कोट्टयम 1964

11. नारायण पणिक्कर. आर. नवयुग भाषा निघण्टु रेड्डियार प्रेस-आन्ट बुक डिप्पो तिरुवनन्तपुरम 1951

12. (ले.) (**स्वर्गीय**) - सर जार्ज **अब्राहम ग्रियर्सन** (अनु.) नारायण तिवारी (द्वि. सं.) "भारत का भाषा सर्वेक्षण प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश